AGINISHIKHA 1976 G.K.V.

Samaj Foundation Chenn

om

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079508

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

Stock Verification-2024

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079508

COMPILED

गुरुकुल कांगड़ी

२२।६।६३

RT 085

079508

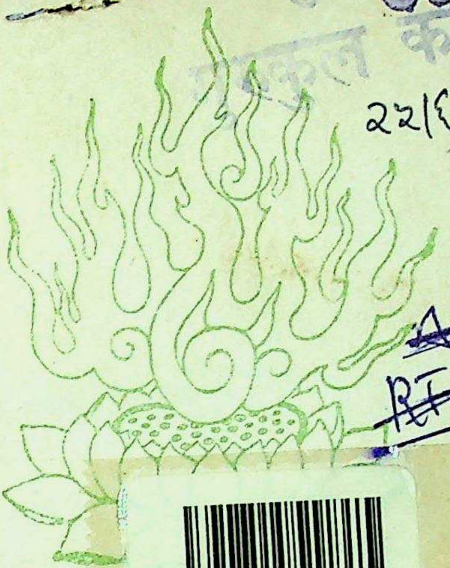

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

जनवरी १९७६ वर्ष ६, अंक ६, पूर्णांक ६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द सोसायटी और [illegible] मासिक पत्रिका

सूची

[illegible] पत्र : पढ़ना-लिखना और मानसिक शिक्षा		[illegible]
श्रीमाताजीकी बातचीत — राष्ट्रीय समस्याएं, [illegible] जीवन, विद्यार्थियोंके बीच, [illegible] होना		३
श्रीमातृवाणी : श्रद्धाकी कसौटी, साधनाके [illegible] बेचैनी		८
[illegible] कहानियां — परिवार — १		१५
[illegible] पं० नेहरू	ऋषभचंद	२०
[illegible]		२४
[illegible] औषधियां		२६
[illegible] एक और पग — ध्यान	अनुबेन	[illegible]
[illegible] समाचार		३३

वार्षिक चंदा : ६ रुपये एक प्रतिका : ६० पैसे
आजीवन : १०० रुपये

संपादक : [illegible]
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी-[illegible]
मुद्रक : [illegible] श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पांडिचेरी [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदके पत्र :

पढ़ना-लिखना और मानसिक शिक्षा

[हम साधारणतया पढ़ने-लिखनेको ही विद्याप्राप्ति मान लेते हैं, लेकिन बहुत बार यह भी देखते हैं कि एक अनपढ़ बहुत-से पढ़े-लिखोंके कान काट सकता है और पढ़ा-लिखा निरा गंवार होता है। पढ़ने-लिखनेका अपना महत्त्व है पर है एक हदतक ही। यहां श्रीअरविन्द इसके विषयमें कुछ बताते हैं।—सं०]

प्रशिक्षित बुद्धि और अध्ययन, दो अलग-अलग चीजें हैं। ऐसे बहुत-से लोग मिल जायेंगे जिन्होंने बहुत पढ़ रखा है लेकिन उनकी बुद्धि प्रशिक्षित नहीं होती।

*

पढ़ना और अध्ययन करना जानकारी प्राप्त करने और आंकड़े, सामग्री आदिके बारेमें अपनी जानकारी बढ़ानेके काम आ सकता है। लेकिन अगर तुम्हारे अंदर, उन्हें समझनेकी, दाने और छिलकेको अलग करनेकी, निर्णय लेनेकी, और चीजोंके अंदर और पीछे देखनेकी क्षमता न हो तो उसका कोई मूल्य नहीं।

*

समझदारी इसपर निर्भर नहीं है कि तुमने कितना पढ़ा है, यह मनका एक गुण है। अध्ययन उसे काम करनेकी सामग्री देता है, जीवन भी यही करता है। ऐसे लोग हैं जो लिखना-पढ़ना नहीं

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानते परंतु बहुत-से अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे लोगोंकी अपेक्षा जीवनको तथा अन्य चीजोंको ज्यादा अच्छी तरह समझते हैं। साथ ही पढ़ने-लिखनेसे अच्छी समझ अपने-आपको विकसित कर सकती है क्योंकि इससे उसे काम करनेके लिये ज्यादा सामग्री मिलती है। वह कसरत करके ज्यादा बढ़ती है और घूमने-फिरनेके लिये ज्यादा बड़ा क्षेत्र पा लेती है। लेकिन किताबी ज्ञान अपने-आपमें सच्ची चीज नहीं है, उसका समझकी सहायताके लिये उपयोग किया जा सकता है, परंतु बहुत बार यह मूर्खता और अज्ञानमें ही सहायक होता है— अज्ञान, क्योंकि अगर तुम उनका सच्चा मूल्य न जान सको तो तथ्यों-की जानकारी बेकार चीज है।

*

मानसिक शिक्षामें आ जाता है पढ़कर चीजोंके बारेमें जानना, ठीक-ठीक यथार्थ जानकारी प्राप्त करना, अपने-आपको न्याय-संगत ढंगसे सोचने योग्य बनाना, प्रश्नके सभी पक्षोंको बिना किसी आवेग के देख सकना, जल्दीमें किये गये अनुमानों और निष्कर्षोंको त्यागना, चीजोंको स्पष्ट रूपमें और पूरी तरहसे देखना।

शिक्षा और अभिव्यक्ति

अपनी बातको स्पष्ट रूपसे अभिव्यक्त करना एक और ही चीज है। रामकृष्ण पढ़े-लिखे न थे और बुद्धिवादी भी न थे फिर भी उनकी ज्ञानकी अभिव्यक्ति इतनी पूर्ण होती थी कि बड़े-बड़े बुद्धिमान उनके आगे सिर नवाते थे।

*

अपने-आपको अभिव्यक्त करनेकी क्षमता उस स्रोतके साथ संबंध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापित करनेसे आती है, जहांसे ये सब चीजें आती हैं। इनके प्रवाहके लिये शांत और नीरव मन बहुत सहायक है परंतु वह अपने-आप प्रवाहको ले आता है और इसके लिये अनिवार्य है।

*

जो कुछ अभिव्यक्त होता है वह अपने पीछे स्थित अव्यक्तका एक छोटा-सा भाग है। और उस अव्यक्तको भाषामें व्यक्त करना संभव भी नहीं है।

श्रीअरविंदकी बातचीत

१ जुलाई, १९२६, शाम

जो राष्ट्रीय संस्थाएं जीनेभरके लिये संघर्ष कर रही हैं उनके लिये क्या करना चाहिये ?

छात्रोंकी संख्या चाहे जितनी कम हो अगर कार्यकर्ताओंको काममें रस हो, उत्साह हो और वे आर्थिक दृष्टिसे काम चला सकते हों तो उन्हें चलने देना चाहिये। साधारणतः इन संस्थाओंमें सरकारी शिक्षाकी पुनरावृत्ति ही होती है, क्योंकि शिक्षक और किसी शिक्षाको नहीं जानते। वर्तमान शिक्षा-पद्धति सड़ी हुई है। वह विद्यार्थियोंके व्यक्तित्वकी परवाह न करके उनपर अधिकारियोंद्वारा यंत्रवत् तैयार किये गये कार्यक्रमको लाद देती है। यह पद्धति विद्यार्थियोंके अच्छे गुणोंको दबा देती और नष्ट कर देती है। जिनके अंदर विशेष प्रतिभा होती है वे हर प्रकारकी बाधाओंके होते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर उठ आते हैं। पर ऐसोंकी संख्या कम होती है। और वे भी ठीक पद्धतिमें जितने चमक पाते, उसकी तुलनामें खराब ही रहते हैं।

आजकल लोग सिर्फ रोजी चाहते हैं और कुछ नहीं। इसलिये वे ऐसी संस्थाओंको अपनाते हैं जो नौकरियों और पेशोंके लिये दरवाजा खोलती हैं। और फिर समुचित शिक्षा देनेके लिये राष्ट्रीय संस्था खोलनी हो तो पैसा भी काफी चाहिये। इन परिस्थितियोंमें अभी राष्ट्रीय संस्थाएं खोलना उचित नहीं है।

लेकिन जिन लोगोंने ऐसी संस्थाएं शुरू कर रखी हैं, जिनमें उत्साह है, जिनके पास साधन हैं, उन्हें काम जारी रखना चाहिये। उन्हें अपने मनमें तीन बातें रखनी चाहिये : (क) उन्हें इस बातका ख्याल रखना होगा कि केवल रटते नहीं, समझते हैं; (ख) उन्हें प्रयास करना चाहिये कि अध्यापक विद्यार्थियोंको पढ़ाएं, इसकी जगह विद्यार्थी ही अपने-आपको पढ़ा सकें; (ग) वे विद्यार्थियोंमें रस उत्पन्न कर सकें।

अगर इन मौलिक बातोंका ख्याल रखा जाय तो एक अच्छा प्रारंभ हो जायगा। पश्चिमी देशोंमें ये चीजें प्राप्त करनेके लिये बहुत-से परीक्षण हो रहे हैं। वहां लोगोंमें जीवन है जब कि हमारे देशमें जीवन नहीं है, इसलिये सर्जन संभव नहीं है।

हमारे लोगोंमें जीवन कैसे लाया जा सकता है ?

अपने-आप सजीव होकर। जीवन ही जीवन लाता है।

क्या असहयोग आंदोलनने देशको जीवन नहीं दिया ?

तुम उसे जीवन कहते हो ? वह मिथ्यात्वपर आधारित था। तुम उससे सर्जनकी आशा कैसे कर सकते हो ? सूत कातकर स्वराज्य स्थापनाकी कोशिश की गयी थी। क्या कोई चीज ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झूठे आदर्शोंसे आ सकती है? बंगालकी स्वदेशी हलचलने कुछ जान फूंकी थी। यह जाननेके लिये कि उस हलचलने क्या किया तुम्हें उससे पहलेके बंगालका परिचय होना चाहिये। उस समय हमने जो रूप और आदर्श दिये थे उनका विघटन हो गया है। अब उन रूपोंको अपनाकर बिगाड़ दिया गया है। महात्मा गांधीमें एक प्रकार-की शक्ति है, उसके सहारे वे कुछ आगे बढ़ते हैं लेकिन प्रतिक्रियामें उससे बहुत दूर पीछे जा पड़ते हैं। हमें लोगोंको कुछ मंत्र देने चाहिये और उन्हें अपने ढंगसे काममें लगने देना चाहिये। उनकी क्रियाओंपर सब प्रकारके प्रतिबंध लगानेकी जरूरत नहीं। स्वदेशी आंदोलनके दिनोंमें 'बंदे मातरम्'ने सचमुच मंत्रका काम दिया था।

सत्याग्रह आंदोलन केवल महात्मा और उन जैसे कुछ लोगोंके लिये है। उसे सारी जनतापर ठूंसनेकी जरूरत नहीं है।

लोग ग्राम संगठनकी बात करते हैं — वे पहले ग्रामोंमें जीवन तो लाएं, संगठन अपने-आप हो जायगा।

ग्रामोंमें जीवन केवल लड़ाई-झगड़ोंमें ही प्रकट होता है।

यह जीवन नहीं, जीवनका अभाव है।

वे छोटी-छोटी लड़ाइयोंमें बहुत शक्ति दिखाते हैं।

यह शक्तिका विघटन है।

क्या सबके लिये सामान्य शिक्षाका कोई फायदा है?

यह तुम्हारी दृष्टिपर निर्भर है। अगर तुम आधुनिक अर्थों-में राष्ट्र बनाना चाहते हो तो सामान्य शिक्षा जरूरी है ताकि सभी लोग समान उद्देश्यके लिये मिलकर काम कर सकें लेकिन व्यक्तिके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकासके लिये इस प्रकारकी सामान्य शिक्षा लाभकी जगह हानि ही पहुंचाती है।

भारतमें सामान्यतः विद्यार्थियोंमें बहुत क्षमता होती है परंतु शिक्षा-पद्धति उसे दबाती और नष्ट कर देती है। कक्षाकी पद्धतिकी ओर नजर डालो — विद्यार्थियोंको वहां इतने घंटे बैठकर किताबोंको घोटना चाहिये। यह बहुत हानिकर है। जिस चीजकी जरूरत है वह है वातावरण, सीखनेका व्यापक वातावरण। विद्यार्थी उसे पी जायें, अपनी-अपनी क्षमताका पता लगायें और अपने-अपने मार्गपर विकसित हों। उन्हें लिखना-पढ़ना सिखा दिया जाय और फिर अपने-आपको पढ़ानेके लिये खुला छोड़ दिया जाय। समुचित शिक्षा-प्रणालीमें व्यक्ति और राष्ट्र दोनोंकी आवश्यकताओंका मेल हो सकता है। मैं यह नहीं कहता कि ऐसा समन्वय अभी व्यावहारिक हो सकता है परंतु यदि देशको प्रगति करनी है तो भावी शिक्षा ऐसी ही होगी। अध्यापकको केवल इसी बातपर ध्यान नहीं देना चाहिये कि विद्यार्थी कुछ सीखे, उसे यह भी देखना होगा कि उसकी समझ विकसित हो रही है, उसकी सभी शक्तियां विकसित हो रही हैं। अगर तुम विद्यार्थियोंको अपनी क्षमताओंको, अपने जीवनको सचमुच विकसित करनेमें सहायता दे सको तो वे संसारमें अपना स्थान बना सकेंगे।

जुलाई, १९२६

भारतीय विद्यार्थियोंके बहुत-से दोष दिखाये गये हैं।

भारतीय विद्यार्थी स्वभावसे बहुत तेज होते हैं, उनमें जो दोष दिखायी देते हैं वे दोषपूर्ण शिक्षाके कारण हैं। सामान्य वस्तुओंके बारेमें उनका अज्ञान इस कारण है कि वे हमेशा अमरीका और इंग्लेंडके बारेमें पुस्तकें पढ़ते रहते हैं और फिर शिक्षाका माध्यम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजी है। बच्चोंके लिये, जिन्हें विदेशी भाषाका बोध नहीं होता, विदेशी भाषामें शिक्षा पानेसे बढ़कर हानिकर कुछ नहीं हो सकता। लेकिन छोटी आयुमें कोई भी विदेशी भाषा सीखनेमें कोई हर्ज नहीं है। भारतीय बालकोंकी शिक्षाका विषय जितना हास्यास्पद है उतना ही शोचनीय। चलो, अब किसी और विषयपर बात करें।

क्या अस्वस्थ होना चैत्य अनुभूतियोंके लिये सहायक होता है?

नहीं, ऐसी अवस्थामें जो चैत्य अनुभूतियां कहलाती हैं वे सच-मुच प्राणमय जगत्की अनुभूतियां होती हैं। जब शरीर बहुत ही ज्यादा अनगढ़ हो तब उच्चतर अनुभूतियोंके लिये उसकी कुछ उलट-पलट जरूरी हो सकती है। लेकिन ऐसे लोग अपवाद रूप होते हैं।

क्या अधिक मात्रामें तरमाल खाना आध्यात्मिक जीवनके लिये हानिकर है?

मैं इसके लिये कोई सामान्य नियम नहीं बनाना चाहता। हर एक व्यक्तिके मामलेमें अलग-अलग निश्चय करना होगा। जहां-तक मेरा अनुभव है, मेरे लिये अपने भोजनमें हेर-फेर करनेसे कोई फर्क नहीं पड़ा।

(अनिलवरणकी दैनन्दिनीसे)

सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः काममवाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु॥

भावार्थ:—सभी लोग संकटोंको—कठिनाइयोंको पार कर जायं। सब लोग शुभका ही दर्शन करें। सब लोग वांछित भोग प्राप्त करें। सब लोग सर्वत्र प्रसन्न रहें॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमातृवाणी :

दीक्षाकी कसौटी

२२ मार्च, १९५७

निम्नलिखित कहानी श्रीमांने एक शुक्रवारकी कक्षामें सुनायी थी।

आज मैं तुम्हें एक छोटी-सी कहानी पढ़कर सुना रही हूं जो मुझे काफी बोधप्रद लगी है। यह पुराने समयकी कहानी है और बताती है कि उन दिनों क्या हुआ करता था जब छापेखाने नहीं थे, पुस्तकें नहीं थीं और ज्ञान केवल गुरु या दीक्षित व्यक्तिके पास ही हुआ करता था और गुरु पात्रके सिवाय किसीको नहीं देता था; और उसकी दृष्टिमें, सामान्यतः "पात्र" होनेका अर्थ था जो कुछ सीखा हो उसे जीवनमें उतारना। वह तुम्हें एक सत्य देता और आशा करता था कि तुम उसपर आचरण करोगे। और जब तुम उसे आचरणमें ले आते तभी वह अगला ज्ञान देनेके लिये राजी होता।

अब चीजें बिलकुल और तरह होती हैं। सब कोई और जो चाहे पुस्तक प्राप्त कर सकता और उसे पूरे-का-पूरा बांच सकता है और उसपर आचरण करने या न करनेके बारेमें अपनी मरजी मुताबिक पूरी तरह स्वतंत्र है। यह सब ठीक है। परन्तु इससे बहुतोंके मनमें कुछ भ्रांति पैदा हो जाती है। जो लोग बहुत-सी पुस्तकें पढ़ लेते हैं वे सोचते हैं कि इतना पर्याप्त है और चूंकि उन्होंने बहुत पढ़ लिया है इसलिये अब उनके साथ सब प्रकारकी चमत्कारिक बातें होनी चाहिये, उन्हें उसपर आचरण करनेका कष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठानेकी कोई जरूरत नहीं है। इसलिये वे अधीर हो जाते हैं और कहते हैं: "यह कैसी बात है कि मैंने इतना सब पढ़ा और फिर भी मैं वह-का-वही हूं! — मेरी कठिनाइयां भी वहीं हैं, कोई सिद्धि भी नहीं मिली?" ऐसी टिप्पणियां मैं प्रायः ही सुनती हूं।

वे एक महत्त्वपूर्ण बात भूल जाते हैं कि उन्होंने जो ज्ञान — बौद्धिक, मानसिक ज्ञान — प्राप्त किया है वह अधिकारी होनेसे पहले ही, अर्थात् पढ़े हुए ज्ञानको आचरणमें लानेसे पहले ही, प्राप्त कर लिया है, और इससे स्वभावतः उनकी चेतनाकी स्थिति और विचारोंके (ज्ञानके) बीच एक संघर्षकी स्थिति है, वे इस ज्ञानकी चर्चा तो आरामसे कर सकते हैं लेकिन इसपर आचरण नहीं किया।

तो, मैं यह कहानी अधीर व्यक्तियोंको यह बतानेके लिये पढ़ रही हूं, कि पुराने जमानेमें क्या हुआ करता था, जब न कोई पुस्तक मिलती थी और न उसे पढ़ना संभव था; जब ज्ञान पानेके लिये गुरु या दीक्षित व्यक्तिपर निर्भर रहना होता था क्योंकि ज्ञान केवल उसीके पास होता था और उसे यह किसी और गुरु या शिक्षकसे मिला होता था और वह तुम्हें यह ज्ञान तभी देता था जब उसकी खुशी होती, अर्थात् जब वह तुम्हें इसका अधिकारी समझता।

तो, मेरी कहानी इस प्रकार है **(श्रीमां पढ़ती हैं:)**

दीक्षाकी एक कहानी

(गुजरातीसे अनूदित)

किसी ज़मानेमें एक बड़े तपस्वी और बड़े ज्ञानी महात्मा थे। वे आयु और बुद्धि दोनोंमें बड़े थे और सब उनका मान करते थे। उनका नाम था जुनून। और बहुत-से बालक, किशोर और युवक उनसे दीक्षा लेनेके लिये उनके पास आते थे, उन्हींके आश्रममें ठहरते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और लंबे समयतक गुरुगृहमें रहकर विद्याभ्यास करते और बादमें जब स्वयं विद्वान् बन जाते तो घरोंको लौट जाते।

एक दिन एक युवक उनके पास आया, जिसका नाम था यूसुफ हुसैन। महात्माकी इच्छा हुई कि उसे अपने पास ही रख लें, उन्होंने उससे यह भी न पूछा कि तुम हो कौन। इस प्रकार चार साल बीत गये। तब एक दिन जुनूनने यूसुफको बुलवाया और पहली बार उससे पूछा: "तुम यहां क्यों आये हो?" यूसुफने बिना सोचे-विचारे उत्तर दिया: "धार्मिक दीक्षा लेने।" जुनून कुछ न बोले। उन्होंने सेवकको बुलाया और उससे पूछा: "तुमने बक्सा तैयार कर लिया, जैसा मैंने कहा था?"

—"जी हुजूर, बिलकुल तैयार है।"

—"तो तुरत ले आओ", जुनून बोले।

सेवकने बड़ी सावधानीके साथ बक्सा महात्माजीके सामने रख दिया; उन्होंने उसे लिया और यूसुफको देते हुए बोले: "देखो, मेरे एक मित्र हैं जो उधर दूर नील नदीके किनारे रहते हैं, जाओ, यह बक्सा उन्हें मेरी ओरसे दे आओ। परन्तु देखो भाई, रास्तेमें कोई भूल न करना। इस बक्सेको सावधानीसे रखना और निश्चित व्यक्तिको ही देना। जब तुम वापस आओगे तो मैं तुम्हें दीक्षा दूंगा।" उन्होंने एक बार फिर अपनी सीख दोहरायी और उसे वह रास्ता बताया जिससे होकर उसे नील नदीपर पहुंचना था। यूसुफने गुरुचरणोंमें प्रणाम किया, बक्सा उठाया और अपने रास्तेपर चल दिया।

वह निर्जन एकान्त-स्थान जहां महात्माके मित्र रहते थे बड़ा दूर था और उन दिनों कोई सवारी या रेलगाड़ी भी न थी। अतः यूसुफ पैदल ही जा रहा था। वह सारे सवेरे चलता रहा, चलते-चलते दोपहरी हो गयी, गर्मी बहुत तेज थी और चारों ओर चिलचिलाती धूप पड़ रही थी, वह थक गया। सो, वह जरा सुस्तानेके लिये सड़कके किनारे एक पुराने वृक्षकी छायामें बैठ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बक्सा बहुत छोटा था और उसमें ताला नहीं था। यूसुफने भी इधर कोई ध्यान नहीं दिया था। गुरुजीने बक्सा अपने मित्रके पास पहुंचानेके लिये कहा था और वह कुछ पूछे बिना उसे लेकर चल पड़ा था।

पर अब, दोपहरीमें आराम करते समय, यूसुफने सोचना शुरू किया। उसका मन फुर्सतमें था, और किसी चीजसे घिरा न था ...ऐसा बहुत कम ही होता होगा कि ऐसी हालतमें कोई मूर्खतापूर्ण विचार मनमें न घुस आता हो...ऐसेमें उसकी आंखें बक्सेपर पड़ीं। उसने उसे देखना शुरू किया। "अच्छा, बढ़िया, छोटा-सा बक्सा!...हैं, इसपर तो ताला भी नहीं दीखता...कितना हलका है! इसके अंदर कुछ हो ऐसा हो सकता है भला? इतना हलका ...शायद खाली है?" यूसुफने हाथ बढ़ाया कि खोल ले। एकाएक विचार बदल गया: "परंतु नहीं...भरा हो या खाली, इसके अंदर कुछ भी हो वह मेरा विषय नहीं है। गुरुजीने अपने मित्रके पास इसे ले जानेके लिये कहा है, बस, इतना ही। बस, इतना भर ही मेरा काम है। मुझे किसी और चीजके बारेमें नहीं सोचना चाहिये।"

कुछ देरतक तो यूसुफ शांत होकर बैठा रहा। पर उसका मन शांत नहीं होता था। बक्सा अब भी उसकी आंखोंके सामने था। बढ़िया, छोटा-सा बक्सा। "लगता है बिलकुल खाली है।" उसने सोचा: "खाली बक्सेको खोलनेमें हर्ज ही क्या है?...यदि ताला लगा होता तो मैं समझता कि हां, यह बुरा है...पर जिस बक्सेपर ताला ही नहीं उसके लिये यह अधिक गंभीर बात नहीं। मैं, बस, क्षणभरके लिये ही तो खोलूंगा और फिर बंद कर दूंगा।"

यूसुफका विचार उस बक्सेके चारों ओर चक्कर काट रहा था। उसके लिये अपने-आपको उससे अलग करना असंभव था, उस विचारपर काबू पाना असंभव था जो उसके अंदर घुस आया था: "देखें तो, बस, एक उड़ती नजर, एक झलक भर।" एक बार फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने हाथ बढ़ाया और इस बार भी वापस खींच लिया और दुबारा शांत होकर बैठ रहा। पर सब व्यर्थ। अंतमें यूसुफने निश्चय कर लिया और आहिस्तासे, बहुत आहिस्तासे उस बक्सेको खोला। अभी मुश्किलसे खुल ही पाया था कि बस! एक चुहिया फुदकी ...और गायब हो गयी। उस बेचारी चुहियाने जो इस बक्सेमें बुरी तरह घुट रही थी, स्वतंत्रताकी ओर लपकनेमें एक सैकिंडकी भी देरी नहीं की!

यूसुफ बहुत शर्मिंदा हुआ। उसने आंखें फाड़कर बार-बार देखा...बक्सा वहां खाली पड़ा था। अब उसका दिल बुरी तरह दुःखसे धड़कने लगा: "देखा, महात्माने केवल एक चूहा, एक छोटी-सी चुहिया भेजी थी और मैं उसे भी सुरक्षित उसके मुकामतक न पहुंचा सका। सचमुच, मुझसे भारी भूल हुई है। अब क्या करूं?"

यूसुफ पश्चात्तापसे भरा था। पर अब कुछ किया भी न जा सकता था। व्यर्थ ही उसने वृक्षका चक्कर लगाया, व्यर्थ ही उसने सड़कपर खोजा। चुहिया सचमुच उड़नछू हो गयी थी... कांपते हाथोंसे यूसुफने ढक्कन बंद किया और घबराहट और निराशा-से भरा फिर अपनी यात्रापर चल पड़ा।

जब वह नील नदीपर अपने गुरुके मित्रके घर पहुंचा तो उसने महात्माका उपहार उनको भेंट किया और जो भूल उससे हुई थी उसके कारण एक कोनेमें चुपचाप प्रतीक्षा करने लगा। यह व्यक्ति एक बड़े संत थे। उन्होंने बक्सा खोला और तुरन्त समझ गये कि क्या बात है। "अच्छा यूसुफ," उन्होंने उस दीक्षार्थी युवककी ओर मुड़कर कहा, "चुहिया तो तुमने खो दी, अब...मुझे खेद है कि महात्मा जुनून तुम्हें दीक्षा नहीं देंगे, क्योंकि परम ज्ञानका पात्र होनेके लिये व्यक्तिको अपने मनपर पूरा अधिकार होना चाहिये। तुम्हारे गुरुको, स्पष्ट ही, तुम्हारी संकल्प-शक्तिके बारेमें कुछ सन्देह था इसीलिये तुम्हारी परीक्षा लेनेके लिये उन्हें इस युक्ति से काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेना पड़ा। और जब तुम इस नगण्य-सी बातको भी पूरा नहीं कर सके, एक छोटी-सी चुहियाको बक्सेमें नहीं रख सके तो भला तुम कैसे आशा करते हो कि तुम महान् विचारोंको अपने सिरमें और सच्चे ज्ञानको अपने हृदयमें संभालकर रख सकोगे? यूसुफ, कोई भी चीज नगण्य नहीं है। अच्छा, अब अपने गुरुके पास वापस जाओ। चरित्रकी दृढ़ता सीखो और अनथक प्रयत्न करना सीखो। विश्वास-योग्य बनो, ताकि एक दिन उस महान् 'आत्मा'के सच्चे शिष्य बन सको।"

हतोत्साह यूसुफ महात्माके पास वापस लौट आया और अपना अपराध स्वीकार किया। "यूसुफ," उन्होंने कहा, "तूने एक अपूर्व अवसर खो दिया। मैंने तुझे केवल एक निकम्मी-सी चुहिया संभालनेके लिये दी थी, तू उतना न कर सका। तो भला तू कैसे आशा करता है कि तू सब संपदाओंमें सबसे बहुमूल्य, भागवत सत्य-को संभालकर रख सकेगा? उसके लिये तुझमें आत्म-संयमका होना जरूरी है...। जा और सीख, मनपर प्रभुत्व पाना सीख, क्योंकि उसके बिना कोई बड़ी चीज प्राप्त नहीं की जा सकती।"

लज्जित और नतसिर यूसुफ चला आया। तबसे उसके मनमें बस एक ही विचार था: आत्म-प्रभुत्व प्राप्त करना... इसके लिये उसने सालों-साल अनथक प्रयास किया, कठोर और कठिन तपस्या की और अंतमें अपनी प्रकृतिका स्वामी बननेमें सफल हुआ। तब आत्म-विश्वाससे भरा यूसुफ अपने गुरुके पास वापस आया। महात्मा उसे फिर वापस आया देखकर और तैयार पाकर बहुत प्रसन्न हुए। और इस प्रकार यूसुफने महात्मा जुनूनसे महान् दीक्षा प्राप्त की।

कई वर्ष बीत गये, यूसुफका ज्ञान और प्रभुत्व बढ़ते गये और वह इस्लामके बहुत बड़े और गिने-चुने संतोंमेंसे एक हुए हैं।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(**श्रीमां बच्चोंसे कहती हैं**) तो, यह कहानी बताती है कि व्यक्तिको अधीर नहीं होना चाहिये, बल्कि यह समझना चाहिये कि सच्चे रूपमें ज्ञान पानेके लिये, वह चाहे जो भी हो, उसे व्यवहारमें लाना जरूरी है अर्थात् अपनी प्रकृतिपर प्रभुत्व पाना जरूरी है ताकि तुम उस ज्ञानको क्रियामें अभिव्यक्त कर सको।

तुम सबको, जो यहां आये हो, बहुत-सी बातें बतायी गयी हैं, तुम्हें सत्यके संसारके संपर्कमें रखा गया है। तुम ठीक उसीके बीच रहते हो, जो हवा तुम श्वासके साथ अपने अंदर लेते हो वह उससे भरी है, फिर भी तुममेंसे कितने कम हैं जो यह जानते हैं कि इन सत्यों-का मूल्य केवल तभी है जब उन्हें आचरणमें लाया जाय और चेतना, ज्ञान, आत्मिक समता, वैश्व-भाव, असीमता, अनंतता, परम सत्य, भागवत उपस्थिति और ... इस तरहकी जो भी चीजें हैं उनके बारेमें बातें करनेका तबतक कोई अर्थ नहीं होता जबतक तुम इन चीजोंको जीनेका स्वयं कोई प्रयास नहीं करते और उन्हें ठोस रूप-में अपने अंदर अनुभव नहीं करते। अपने-आपसे यह मत कहो कि : "ओह! मैं इतने वर्षोंसे यहां हूं और कितना अधिक चाहता हूं कि अपने प्रयत्नोंका फल पा सकूं।" तुम्हें यह जान लेना चाहिये कि अपनी प्रकृतिकी एक जरा-सी दुर्बलतापर, जरा-सी तुच्छतापर, जरा-सी क्षुद्रतापर विजय पानेके लिये भी बहुत अधिक दृढ़ अध्य-वसाय और अटूट धैर्यकी आवश्यकता होती है। दिव्य प्रेमके बारे-में बातें करनेसे क्या लाभ यदि व्यक्ति बिना अहंभावके प्रेम नहीं कर सकता? और अमरताके बारेमें बातें करनेसे क्या फायदा यदि व्यक्ति अपने भूत और वर्तमानके साथ मजबूतीसे चिपटा रहे और सब कुछ पानेकी खातिर कुछ भी छोड़ना न चाहे?

तुम सब अभी बहुत छोटे हो, पर तुम्हें अभीसे ही यह सीख लेना चाहिये कि लक्ष्यपर पहुंचनेके लिये यह ज्ञान होना जरूरी है कि कीमत कैसे अदा की जाती है और यह कि परम सत्योंको समझनेके लिये उन्हें दैनंदिन व्यवहारमें लाना जरूरी है। अच्छा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार

मराकशमें एक यात्रीने देखा कि हर शाम जब भेड़ों और मैमनोंके झुंड इकट्ठे होते हैं तो सारे दिनके बिछुड़े हुए जानवर इधर-उधर ढूंढते दिखायी देते हैं। हर भेड़ अपने मैमनेको ढूंढती थी और हर मैमना अपनी मांको।

एक बंदरियाके कई बच्चे थे और वह उनसे प्यार करती थी लेकिन उसका प्यार एक फुहारे जैसा था जो केवल अपने बच्चोंकी प्यास ही नहीं बुझाता था बल्कि औरोंको भी लाभ पहुंचाता था। वह और बन्दरोंके बच्चोंपर भी लाड़ किया करती थी। इतना ही नहीं, वह बिल्लीके बच्चों और कुत्तेके पिल्लोंको भी इकट्ठा कर लेती थी मानों वे उसीके बच्चे हों। वह अपने बच्चोंके साथ-ही-साथ उन्हें भी खाना दिया करती थी।

मां-चिड़िया अंडोंको गरम रखनेके लिये उन्हें सेती है और बाप उसके लिये दाना चुगता फिरता है। अधिकतर चिड़ियोंमें यही रिवाज है। हां, दूध पिलानेवाले जानवरोंमें यह रिवाज है कि बाप प्रायः बच्चोंको मांकी निगरानीमें छोड़ देता है। लेकिन हमेशा यही बात नहीं होती। अफ्रीकाका गोरिला अपनी मादा और बच्चोंके साथ परिवार बनाकर रहता है। बनमानुष भी यही करता है। बाप पेड़पर घोंसला-सा बना देता है जिसमें मां अपने बच्चोंको रख देती है और बाप रातके समय चीतेसे रक्षा करनेके लिये पहरा देता है।

जब हमारे जानवर-रिश्तेदार अपने बच्चोंके लिये इतना प्रेम दिखाते हैं और परिवारकी रक्षा करते हैं तो फिर इसमें आश्चर्यकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात ही क्या है कि जंगली आदमी भी पति, पत्नी और बच्चोंके साथ परिवार बनाकर रहते थे।

मां बच्चेसे प्यार करना कब शुरू करती है? उसके जीवनके आरंभसे ही।

और बच्चा मांसे प्यार करना कब शुरू करता है? उसी समय नहीं क्योंकि पहले तो उसे अनुभव करना, सोचना और क्रिया करना सोचना पड़ता है। तब वह मां-बापसे प्यार करना सीखता है। हमने सत्रह महीनेकी बच्चीकी कहानी सुनी है जो बापसे कुछ दिनके लिये बिछुड़ गयी थी। बापके लौटनेपर वह दौड़कर उसके पास गयी, उसपर हाथ फेरती रही और उसे अपने खिलौने उपहारमें दिये।

लोगोंको उपहार पाकर कितनी खुशी होती है! हम खलीफा मामूनके बारेमें पढ़ते हैं कि उन्होंने अपनी पत्नीको सोनेका कालीन दिया और एक बड़े बरतनमेंसे उसपर मोती लुढ़काये। वहां काम करनेवाली हर स्त्रीने एक-एक मोती ले लिया फिर भी वहां चमकदार मोतियोंका एक ढेर बचा रहा।

और एक अच्छी मां अपने बच्चेको क्या उपहार देती है? वह देती है अच्छा स्वास्थ्य, सुडौल अंग, वाणी और ईमानदारीके लिये प्रेम। अगर मां बच्चेकी ओरसे लापरवाह हो तो उसका स्वास्थ्य बिगड़ जायगा, उसका शरीर टेढ़ा-मेढ़ा हो जायगा, वह अच्छे शब्द न बोलेगा और वह सद्-व्यवहार और सद्-विचार न सीख पायेगा। क्या ये उपहार सोनेके कालीन और बहुत-से मोतियोंसे अधिक मूल्यवान नहीं हैं?

जो मां अपने बच्चेको अच्छे उपहार देती है वह समझती है कि उसका अपना जीवन उसकी सन्तानमें है और उसका हृदय बच्चेको स्वस्थ देखकर खुशीसे फूल उठता है और उसकी बीमारी या मृत्यु देखकर दुःखसे भर जाता है। यहां एक तमिल गीतमें मांकी आवाज सुनो:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे दिलमें बसा वह कहां गया ?
  मेरे बाल, हे मेरे बाल,
किसने लिया मेरा सोनेका खिलौना
  मेरे बाल, हे मेरे बाल,
मीठी बोलीमें वह पुकारता था, अम्मा अम्मा
  मेरे बाल, हे मेरे बाल,
कभी न देखा ऐसा मुखड़ा
  मेरे बाल, हे मेरे बाल
वह मेरे घुटनोंपर खेला करता था
  हाय हाय रे मेरे बाल
बाप उसे देखकर खुशीसे फूल उठता था
  हाय मेरे बाल, मेरे बाल
उसके माथेपर सौभाग्य रेखाएं खिची थीं
  हाय मेरे बाल, हे मेरे बाल
ठहरो बेटा ठहरो ठहरो आती हूं मैं बस मैं भी साथ
  हाय मेरे बाल, हे मेरे बाल
आओ आओ, छोड़ न जाओ
  हाय मेरे बाल, हे मेरे बाल।

एक अच्छे पिताका हृदय भी अपने बालकके प्राणमें रहता है और उसकी मृत्युसे घायल होता है।

जब हजरत मुहम्मदका छोटा बच्चा इब्राहीम मरा तो उनके हृदयको कैसा आघात लगा होगा। प्राचीन ग्रथोंमें कहा गया है कि वह पन्द्रह या सोलह महीनेका होकर ही मर गया था लेकिन एक मशहूर नाटक 'हसन और हुसैन' से लगता है कि वह काफी बड़ा होकर मरा था। इस नाटकमें इजराईल (मौतका फरिश्ता) हजरत मुहम्मदके घर आकर बच्चेकी मांग करता है। हजरत बहुत दुःखी होकर कहते हैं, मैं निवेदन करता हूं कि इसे कल सवेरे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक मेरे पास रहने दिया जाय। फरिश्ता थोड़ी देरके लिये ठहर जाता है। उसी समय हजरतके कानोंमें बच्चेकी आवाज आती है जो पास ही मकतबमें कुरानका पाठ कर रहा है। "मैं शैतानसे बचनेके लिये अल्लाहकी शरणमें जाता हूं। हे आरामसे रहनेवाली आत्मा, अल्लाहके नामपर जो दयालु और कृपालु हैं, खुश होकर, खुश करता हुआ अपने मालिकके पास आ जा, मेरे सेवकोंमें भरती हो जा, मेरे स्वर्गमें निवास कर।"

हजरत मुहम्मदके कानोंके लिये कितने मधुर शब्द थे!

मां-बापके लिये अपना पाठ दोहराते हुए बेटे-बेटियोंकी आवाज कितनी मीठी होती है। यहां हम इब्राहीमके अंतिम क्षणोंका पूरा दृश्य नहीं दे रहे। तुम्हें बस यही बताना है कि उसकी मां, मरियम, कितने प्रेमसे उसे ताकती है, अध्यापक कितनी कृपाके साथ अपने छोटे विद्यार्थीको देखता है, इब्राहीमकी बहन, फातिमा, कितने स्नेहसे उससे बातें करती है, और पैगम्बरका धेवता, हुसैन, कैसे उसका सिर अपनी गोदमें रख लेता है और कैसे इब्राहीमका प्राणांत होनेपर उसके पिता रोते हैं।

*

क्या मां-बाप केवल बुद्धिमान और चालाक बच्चोंसे ही प्रेम करते हैं? नहीं, उनकी भुजाएं सभी बच्चोंको कस लेती हैं।

एक दिन हमें किसी कस्बेकी एक झोंपड़ीमें जानेका मौका मिला। बाप जूतोंकी मरम्मत करता था। वह एक जूतेमें नया तला लगानेके लिये उसे पीट रहा था। मां रसोई-घर साफ कर रही थी। दोनों मेरे साथ अपने बच्चेके बारेमें बात करनेके लिये रुक गये। बेचारा बच्चा लगभग गूंगा था। मैं उसके शब्दोंका अर्थ न समझ सकता था पर उसके मां-बाप उसकी चीखोंका भाव समझ लेते थे। उसमें इतनी समझ भी न थी कि अपने-आप खा ले या कपड़े पहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले। उसके मां-बापको सारे समय निगरानी रखनी पड़ती थी कि कहीं वह अपने-आपको चोट न लगा ले या किसी दूसरेको नुकसान न पहुंचाये। और यह सिलसिला सात-आठ वर्षसे जारी था। इन सब तकलीफोंके बावजूद उन्हें अपने बच्चेसे प्यार था।

रामायणका कवि बच्चोंके लिये बापके प्रेमके बारेमें कहता है, "एक बापके कई बच्चे हैं, हर एककी आत्मा अलग है, स्वभाव अलग है और चाल-ढाल अलग है। एक विद्यार्थी है, दूसरा अध्यापक जो उपवास करता है, एक पैसा कमाता है या उदार योद्धा या चतुर संसारी आदमी है, या नम्र साधु है। बापके अंदर सबके लिये समान प्रेम होता है। एक और बालक पढ़ाई-लिखाई-में मंद होते हुए मन, कर्म, वचनसे बापका भक्त हो सकता है, बाप इसे अपनी आत्मा मानता है।"

प्यारी मांकी आंखें और आंखोंकी अपेक्षा कुछ ज्यादा देखती हैं। वे आंखें उन विशेषताओं और क्षमताओंको देख सकती हैं जिन्हें और लोग नहीं देख पाते।

इसी तरह भगवान् रामकी मां कौशल्याने अपने पुत्रकी महिमा-का अंतर्दर्शन पाया था। एक बार उनके देखते-देखते उनका बालक बदल गया था। एक क्षण वह नन्हा बालक था और दूसरे क्षण 'रोम-रोमपर राजहिं, कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड', उसके शरीरमें अनगिनत सूर्य-चन्द्र चमक रहे थे, नदियां, पहाड़, सागर और भूमि भी अनगिनत संख्यामें उसके शरीरपर विद्यमान थे; प्रकृतिकी सभी शक्तियां उस छोटे-से बालकके शरीरमें समायी हुई थीं। रानीने हाथ जोड़ लिये और चुपचाप खड़ी रह गयी। वह आंखें बंद करके रामके पैरोंपर झुकी। फिर जो आंखें खुलीं तो सामने वही छोटा बच्चा था।

हम देख आये हैं कि जानवर अपने बच्चोंको बड़े सरल ढंगसे प्रेम दिखाते हैं, कि मां-बाप बच्चेके पैदा होते ही उससे प्रेम करते हैं। वह बीमार हो या स्वस्थ, भला-चंगा हो या मर रहा हो वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमेशा उससे प्यार करते हैं और उनमें, विशेषकर मांमें बच्चेकी आत्माको देखनेकी दृष्टि होती है।

परिवार मानव-जातिके लिये बहुत मूल्यवान चीज है। वही सच्चा घर है। लकड़ी, पत्थर, घास-फूस, बकरेके वाल या संगमर-मरके महल घर नहीं है। परिवारका प्रेम ही घर बनाता है जो बड़े-छोटे सभीको मां-मुरगीकी तरह अपने पक्षमें ले लेता है।

श्रीअरविंदाश्रममें पं० नेहरू

"...उनपर बहुत-बहुत कोमल और विशुद्ध चरित्रकी छाप है, उनकी प्रकृति उच्चतम सात्त्विक प्रकारकी है जिसमें आर्जव और गौरवकी उच्चतम भावना भरी है। वे विशुद्ध ब्राह्मणत्वके प्रारूप हैं और साथ ही यूरोपीय शिक्षा, जो अच्छे-से-अच्छा दे सकती है, वह भी मिला हुआ है।..."

(पं० नेहरूके बारेमें श्रीअरविंदके एक पत्रसे उद्धृत)

पं० जवाहरलाल नेहरू पांडिचेरी राज्यके भारतके साथ मिल जानेके बाद पहली बार १६ जनवरी, १९५५ को पांडिचेरी आये। नगरमें चारों ओर खुशियां मनायी जा रही थीं। जिधर निकल जाओ यही लगता था कि मेला भरा है। लोग जनताकी आंखोंके तारेको देखनेके लिये हजारोंकी संख्यामें सड़कोंपर, चौराहोंपर, भवनों और पेड़ोंपर जमा थे।

दिनके ग्यारहके लगभग पं० नेहरू आश्रम आये। आश्रमके मुख्य द्वारसे माताजीके कमरेतक बूढ़े, बच्चे, वयस्क, स्त्री-पुरुष, सभी तरहके लोग जो आश्रमके शारीरिक शिक्षणमें भाग लेते थे उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर देनेके लिये पंक्तियां बनाये खड़े थे। उनकी हरी, लाल, नीली, खाकी, सफेद वर्दियां सारे वातावरणकी शोभा बढ़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थीं। मुख्यद्वारपर श्री सुरेन्द्र मोहन घोषने पं० नेहरूसे आश्रमके सचिव श्री नलिनीकांत गुप्तका परिचय कराया। २६ जनवरीका समारोह पास ही था। उसके लिये आश्रमके कलाकारोंने एक सुन्दर प्रतीकात्मक प्रस्तरका मॉडल तैयार किया था। वह मॉडल एक नौकामें रखा था और नौका पांडिचेरी राज्यके समुद्र-तटपर खड़ी थी। भारतकी चार शक्तियोंके प्रतीक, चार सिंह नौकाकी रक्षा कर रहे थे। बीचमें एक मंच था जिसे चार मूर्तियां सहारा दे रही थीं। इनमें आसनस्थ बुद्ध एशियाके, पालास एथिनी यूरोपकी, मिस्रकी आइसिस, अमरीकाकी स्वाधीनताकी मूर्ति अमरीकाकी प्रतिनिधि थी। लाल और सफेद कमलके आठ स्तम्भ उस आध्यात्मिक शक्तिके प्रतीक थे जो मानव-जातिकी नियतिको सफलताके साथ नजदीक लानेकी कोशिश कर रही थी। मंचपर धरतीका गोला था जिसके एक ओर एक भारतीय नारी तालकी शाखा लिये खड़ी थी जो विजयका प्रतीक है, दूसरी ओर एक फरासीसी नारी जैतूनकी शाखा लिये खड़ी थी जो शांतिका प्रतीक है। गोलेके ऊपर शांतिकी फाख्ता उतर रही थी। गणतंत्र दिवसकी परेडमें कुछ ही दिन बचे थे और इतने कम समयमें इसे दिल्ली पहुंचाना संभव न था परंतु पं० नेहरूको यह मॉडल पसन्द आ गया और उन्होंने उसे अपने संग्रहालयमें जोड़ लिया।

079508

उसके बाद पं० नेहरू श्रीअरविंदकी समाधिपर पुष्पांजलि भेंट करके गार्ड ऑफ ऑनर देखते हुए माताजीके कमरेमें गये। वहांसे लौटते हुए आश्रमके शारीरिक प्रशिक्षण विभागके निदेशक श्री प्रणवने उन्हें शामको शारीरिक शिक्षाके प्रदर्शन देखनेका निमंत्रण दिया। उनका पूरा कार्यक्रम बन चुका था और समय निकालना बहुत कठिन था। उन्होंने कहा, "कोशिश करूंगा।" आश्रमसे वे श्रीअरविंद पुस्तकालय और गोलकुण्ड देखने गये जिसके बारेमें कहा जाता है कि सरल सौंदर्यकी दृष्टिसे वह भारतमें अपने ढंगकी पहली इमारत है।

दिनका कार्यक्रम समाप्त होते-न-होते पंडितजीकी मोटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रमके क्रीड़ांगणकी ओर मुड़ गयी। आश्रमवासी उनकी प्रतीक्षामें थे। उनको देखते ही सबके चेहरे खिल उठे। उनका राष्ट्रीय-गानके साथ स्वागत किया गया, फिर श्रीअरविंदकी पुस्तक 'दि मदर' के कुछ उद्धरण अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, हिंदी और फ्रेंचमें सुनाये गये और फिर उन्होंने माताजीके साथ बैठकर उनके मानमें तैयार किया गया शारीरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम देखा जिसके अंतमें हमेशाकी तरह सब लोगोंने नीरव, एकाग्र ध्यान किया। फिर आश्रम वाद्यदलने 'जन गण मन' के साथ अपने प्रिय प्रधान मंत्रीको विदा दी।

पंडितजी दूसरी बार उसी वर्ष (१९५५) २९ सितंबरको आये। इस बार इन्दिरा जी भी उनके साथ थीं। इस बार पांडिचेरीको सिर्फ कुछ घंटे मिले थे। इसलिये सरकारी कार्यक्रम बनानेवालोंने आश्रमका नाम नहीं रखा। इन्दिरा जी सवेरे समाधि-पर फूल चढ़ाकर माताजीसे मिलने गयी थीं। शामके समय इन्दिरा जी और लाल बहादुर शास्त्री क्रीड़ांगणमें माताजीसे बातचीत कर रहे थे कि अचानक पं० नेहरू आ पहुंचे। माताजीने उनकी शेर-वानीपर सोनेका श्रीअरविंदका प्रतीक लगा दिया। थोड़ी देर बैठकर पंडित जी 'जन गण मन' सुनकर चले गये।

तीसरी बार पंडितजी १३ जून, १९६३ को आये। पांडि-चेरीमें उनका सबसे पहला काम था माताजीका दर्शन। वे बहुत थके हुए थे, शायद चीनके कारण अंदरसे टूट चुके थे। माताजीके पास जाकर वे चुपचाप बैठे रहे। कुछ देरके लिये ध्यान हुआ और वे लौट गये। रास्तेमें ही ताराने उन्हें 'स्पोर्ट्स' ग्राउण्ड आनेका निमंत्रण दे दिया। पंडितजीने कहा, "कार्यक्रम देखकर निश्चय करूंगा।"

आश्रमके मुख्य भवनसे वे श्रीअरविंद अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा-केंद्र देखने गये, वहां विद्यार्थियोंसे प्रश्न करते रहे, फिर जैविकीकी कक्षाएं देखीं और अपने कार्यक्रमके अनुसार आगे बढ़ गये।

शामको पंडितजी बड़े अनौपचारिक ढंगसे 'स्पोर्ट्स' ग्राउण्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ पहुंचे। सारा मैदान भरा हुआ था। अलग-अलग जगहोंपर अलग-अलग तरहकी कसरतें हो रही थीं, पंडितजी काफी देरतक बड़ी एकाग्रतासे सारी चीजको देखते रहे।

शायद उनके अंदरका आदर्शवादी स्वप्नद्रष्टा यहांपर उठते हुए भारतकी एक झलक देख रहा था। आते समय ताराने पंडितजीको आनेके लिये धन्यवाद दिया था, लौटते समय कप्तान मोनाने कहा, "आप आये इसके लिये हम कृतज्ञ हैं।" पंडितजीने उत्तर दिया, "नहीं, मैं बहुत खुश हूं कि मैं यहां आ सका।"

उसी दिन एक सार्वजनिक सभामें उन्होंने भाषण देते हुए कहा, "श्रीअरविंद आश्रममें जिस शिक्षा-पद्धतिका प्रयोग हो रहा है वह बहुत अच्छी मालूम होती है, उसमें शारीरिक शिक्षणपर भी बहुत जोर दिया जाता है। लेकिन शायद उसे हमारे विद्यालयों-में चलाना कठिन हो।" दूसरे दिन मद्रासमें भी उन्होंने यही बात दोहरायी।

दिल्ली जाकर उन्होंने अपनी एक सरकारी टिप्पणीमें लिखा, "क्या भारतमें इस प्रकारकी शिक्षण-संस्थाओंकी स्वाधीनताकी रक्षा करते हुए उन्हें सरकारी सहायता देनेकी कोई तरकीब नहीं हो सकती?" इसके परिणामस्वरूप हमारी शिक्षण-संस्थाको शिक्षा-विभागसे कुछ अनुदान मिलने लगा।

जवाहरलाल अपने यौवनके कल्पनाशील मस्तिष्कके आदर्श चंद्रगुप्त और अशोकके समकक्ष थे। वे मनुष्योंमें हिमालय थे।

उनकी मृत्युपर आश्रमके सूचना पट्टपर माताजीके अपने हाथसे लिखी हुई एक सूचना लगायी गयी जिसमें कहा गया था, नेहरूने अपना शरीर छोड़ दिया लेकिन उनकी आत्मा भारतकी शाश्वत आत्माके साथ एक है। (२७-५-१९६४)

—ऋषभचंद

(हमारे पास कोई प्रमाण तो नहीं है पर बहुत पहले, शायद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कल्याण'में पं० मदन मोहन मालवीयके हवालेसे एक घटना छपी थी। पं० मोतीलालजीके कोई पुत्र न होनेके कारण बहुत चिंतित थे। मालवीयजी उन्हें किसी बड़े महात्माके पास ले गये। महात्माने कहा, "आपके भाग्यमें पुत्रका योग नहीं है।" मालवीयजीने बहुत प्रार्थना की, तो महात्माजी चुप हो गये। कहते हैं उसी रात महात्माने अपना शरीर त्याग दिया और वे ही पं० जवाहरलालके रूपमें उत्पन्न हुए।

सच झूठ तो भगवान् जाने पर बात असंभव नहीं है। —सं०)

श्रद्धा

प्र०—एक ओर हमसे कहा जाता है कि मजहबमें अकलका दखल नहीं, दूसरी ओर हमें यह बताया जाता है कि जो बात न्याय-संगत नहीं है उसे माननेकी जरूरत नहीं। इन दोनोंमेंसे कौन-सी बात ठीक है?

उ०—दोनों ही बातें अपनी-अपनी हदतक ठीक और उसके बाहर गलत। मुश्किल यह है कि हम एक बातको लेते हैं जो अमुक परिस्थितियोंमें अमुक व्यक्तिसे कही गयी थी और उसे रामबाण मानकर हर व्यक्तिके लिये हर परिस्थितिमें लगाना चाहते हैं। इन दोनों बातोंके बारेमें भी यही हुआ है।

मनुष्य बुद्धि-प्रधान प्राणी है। वह सोच-समझ सकता है, तर्क-वितर्क और कुतर्क कर सकता है और हर बातकी खाल उतार सकता है। वह यही मान लेता है कि बुद्धि ही सबसे बड़ी वस्तु है। और वह जीवनमें आनेवाली हर समस्याको बुद्धिकी सहायतासे हल करनेकी कोशिश करता है।

लेकिन बुद्धि ही सबसे ऊंची चीज नहीं है। हमारे हृदयमें चैत्य पुरुष भी निवास करता है और वह बुद्धिकी सहायताके बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तर्क, परीक्षण, अनुभव वगैराके बिना जानता है। सच्ची श्रद्धा अंतरात्मासे, चैत्य पुरुषसे आती है। उसे किसी बातको सिद्ध करनेकी जरूरत नहीं होती। श्रद्धा कहती है : मैं अपने पक्षमें प्रमाण नहीं दे सकती, दलीलें करना मेरा काम नहीं है, लेकिन मेरी बात है सच्ची, इसका मुझे पूरा विश्वास है।

सामान्यतया हम जिसे अंध श्रद्धा कहते हैं वह श्रद्धा नहीं होती। जैसा कि हमने कहा, श्रद्धा चैत्य पुरुषसे या अंतरात्मासे आती है जब कि ये अंध विश्वास भौतिक मनकी उपज होते हैं या प्राणी-की कमजोरियोंमें जन्म लेते हैं। किसीने दो-चार बार देखा कि अमुक साधुको पैसा देनेसे इच्छा-पूर्ति हो गयी, बस उसे विश्वास हो गया कि यह साधु महात्मा है जो इच्छाएं पूरी करना जानता है। और उसपर चढ़ावे चढ़ने लगे। हम इस समय इस प्रकारकी श्रद्धाकी बात नहीं कह रहे।

श्रद्धा अगर सच्ची हो तो श्रद्धा करनेवाले और श्रद्धेय दोनोंको लाभ पहुंचाती है। हम कई संतोंकी जीवनीमें पढ़ते हैं कि उन्होंने बिना जाने सड़कपर रुलते हुए पत्थरकी पूजा की और उसमेंसे भगवान्‌के दर्शन पाये। यह उनकी अडिग श्रद्धाके कारण ही संभव हो सका है। चैत्य या अंतरात्माकी चीज है श्रद्धा और इस कारण वह हमेशा सत्य रहा है लेकिन वह हमेशा उच्चतर आध्यात्मिक चीजोंमें ही रस लेती है। मनुष्यकी बाहरी सत्ता यदि श्रद्धाके अंदर अपनी इच्छाओं, कामनाओं और वासनाओंको मिला दे तो श्रद्धाका सच्चा रूप नहीं रह जाता और तब उसकी त्रुटियोंके लिये श्रद्धाको दोष नहीं दिया जा सकता। सच्ची श्रद्धा स्वार्थ सिद्ध करना नहीं चाहती। जहां स्वार्थ आया वहीं श्रद्धाका रूप बिगड़ा, और उसकी शक्ति कम हुई।

शरीर, प्राण और मनकी अपनी-अपनी श्रद्धा भी होती है लेकिन इन सबका बल तभी अमोघ हो सकता है जब वे चैत्य श्रद्धाका साथ दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब लोग कहते हैं कि मजहबमें अकलका दखल नहीं तो वास्तवमें उनका मतलब यह होता है कि धर्म श्रद्धाका विषय है तर्कका नहीं, परंतु सच्ची बात यह है कि श्रद्धा और उससे आनेवाले ज्ञानकी कहीं सीमा नहीं। जबतक श्रद्धाद्वारा सच्चा ज्ञान आये तभीतक बुद्धिका उपयोग जरूरी है लेकिन जब आंतरिक ज्ञान आ जाय तो फिर बुद्धिका उपयोग गौण हो जाता है। उसका काम सत्यके पथपर चलना-चलाना रह जाता है। कहते हैं: श्रद्धया सत्यमाप्नुते — श्रद्धासे ही सत्य प्राप्त होता है।

यदि आपके अंदर श्रद्धा है तो वह हर प्रश्नका उत्तर लाकर सामने रख देगी। आप चिकित्सक हैं तो श्रद्धा आपको निदान और उपचारमें सहायता देगी, आप इंजीनियर हैं तो श्रद्धा आपकी बड़ी-बड़ी समस्याओंको हल करनेमें सहायता देगी।

लेकिन इस बातपर जितना जोर दिया जाय उतना कम है कि श्रद्धा तभी सफल हो सकती है जब वह सत्यपर आधारित हो, स्वार्थ-सिद्धि, दिखावा, लोलुपता वगैराका काम है श्रद्धाको बिगाड़ना, उसकी टांग पकड़कर सच्ची श्रद्धा भगवान्की कृपासे ही आती है। हां, हम उसके लिये प्रयास तो कर ही सकते हैं।

स्वापक औषधियां

राजस्थानसे एक मित्र लिखते हैं कि वे उच्चतर जीवनका रस लेना चाहते हैं। उन्होंने बहुत अधिक भांग पी और लगभग मरणासन्न हो गये। उन्हें ऐसा लगा कि कोई चीज नाभिके आस-पाससे निकलकर सिरकी ओर चढ़ी और उससे उन्हें बहुत आनंद हुआ और बहुत देरतक सूक्ष्म रीतिसे काम-क्रीड़ा जैसी अनुभूति होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही। वे जानना चाहते हैं कि इस सारी चीजका आध्यात्मिकताके साथ कोई संबंध है या नहीं।

खेदका विषय है कि आजका भारतीय युवक यूरोपकी अंधी नकल करनेमें ही गौरवका अनुभव करता है। हमारे देशमें पहले भी भांग, गांजे आदिका चलन तो था परंतु इस प्रकारका मान न था जैसा उन्हींके यूरोपसे लौटे हुए रूपोंको — हाशिश, एल. एस. डी० मारजुआना आदि — प्राप्त है। शिवरात्रि, होली आदिके अवसरोंपर थोड़ी-बहुत भांग पी जाती थी पर लोग जानते थे कि वे चुल्लूमें उल्लू बन जाते हैं। नागा साधु आदि भले गांजा, चरस, धतूरा आदिका उपयोग करते हों पर साधारण समाजमें इन चीजोंको कभी मान नहीं मिला। लेकिन जबसे ये चीजें यूरोप और अमरीकाकी सैर कर आयी हैं तबसे इनकी प्रतिष्ठा बढ़ गयी है और अच्छे-भले पढ़े-लिखे लोग और छोटी-बड़ी अवस्थाके विद्यार्थी भी इनका उपयोग करने लगे हैं, और समाजमें इस चीजको बुरा नहीं समझा जाता।

आजके मनुष्यका जीवन बहुत उत्तेजनापूर्ण हो गया है और उसके साथ-ही-साथ उसका सगा भाई अवसाद भी लगा रहता है। कभी यह सामने तो कभी वह सामने। भांग, गाजा आदि स्वापक चाहे धोती पहने हों चाहे कोट पतलून, मनुष्यकी बाह्य चेतनाको धुंधला बना देते हैं और कभी हर्षका तो कभी विषादका अनुभव देते हैं और इस अनुभवके कारण आदमी अपनी परिस्थितियोंको भूल जाता है। कहा है —

एक गूना बेखुदी मुझे दिन रात चाहिये।

लेकिन यह कोई अच्छी चीज नहीं है। इसमें चेतना ऊपर नहीं उठती, नीचे जा गिरती है। यह आनंद नहीं हर्षातिरेक होता है जो अपने पीछे थकान, निराशा और दुःख छोड़ जाता है। इस स्थितिमें आदमी जो सूक्ष्म चीजें देखता है वे आध्यात्मिक अंतर्दर्शन नहीं होते। निम्न प्राणके दृश्य होते हैं। इनमें फंसकर आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे, नीचे और नीचे जानेके लिये उत्सुक हो उठता है। काम-वासना भी वहींकी पौध है। काम-वासना भौतिक रूप ले या न ले वह अपने चारों ओर निम्न शक्तियोंको बटोरती रहती है और आध्यात्मिक क्षेत्रसे दूर ले जाती है। वह हमारी सूक्ष्म शक्तियोंको भोथरा कर देती है।

साधारण गृहस्थ-जीवन बितानेवालोंके लिये काम भले क्षम्य हो परंतु स्वापक तो उनके लिये भी वर्जित हैं और आध्यात्मिक जीवनके स्वप्न लेनेवालोंको तो इनके नजदीक भी न फटकना चाहिये। ये चीजें चेतनाको नीचे गिरानेके साथ-साथ यह भ्रम पैदा कर देती हैं कि व्यक्ति ऊपर उठ रहा है। इनके अधिक उपयोगसे संकल्प-शक्ति भी नष्ट हो जाती है और व्यक्ति व्याव-हारिक रूपसे भी, और उच्चतर जीवनके लिये भी निकम्मा हो जाता है। उसके पास बस, दिवा स्वप्नोंकी ही पूंजी रह जाती है।

इधर-उधरके विचार :—

एक और मित्र लिखते हैं, "मेरे मनमें हमेशा ऊट-पटांग विचार आते रहते हैं और मैं बेचैन हो उठता हूं। मुझे लगता है कि मुझे इसके लिये कुछ करना चाहिये, पर क्या करूं यह समझमें नहीं आता। मैं उन्हें दबानेकी कोशिश करता हूं तो वे और भी उछलते हैं।"

साधारण मनुष्यका मन एक बाजार जैसा होता है जहां हर तरहका विचार बे-रोक-टोक घुस आता है और जो मरजी करता है। कई बार तो ऐसा लगता है मानों सिरके अंदर गिंजाइयां चल रही हैं। आप जितनी ही रोक-टोक करेंगे, उनकी शक्ति बढ़ती जायेंगी।

इसका एक सरल-सा उपाय है:

"हरि मूरति नैननि बसी, पर छवि कहां समाय,
भरी सराय रहीम लखि, पथिक आप फिर जाय।"

आप उन विचारोंको हटानेके लिये उखाड़-पछाड़ करनेकी जगह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने अंदर माताजीकी या भगवान्‌के किसी रूपकी स्थापना कीजिये, तब मनमें औरोंके लिये जगह न बचेगी। शुरू-शुरूमें आप माताजी या श्रीअरविंदके नामका जप कर सकते हैं या फिर प्राचीन कालसे चले आये ओ३म्‌की रट लगा सकते हैं। इस तरह आपके मनमें ऊट-पटांग विचारोंके लिये स्थान नहीं रहेगा।

हो सकता है कि जब आप अपने-आपको एकाग्र कर रहे हों उस समय भी इधर-उधरके विचार आते रहें। उनकी परवाह मत कीजिये। जब वे देखेंगे कि उनकी ओर कोई ध्यान नहीं देता तो वे अपने-आप आना बंद कर देंगे। यह ठीक ऐसे ही है जैसे आप अपने घरमें बैठे काम कर रहे हैं। बाहर शोरगुल मचाते हुऐ ऊधमी लोगोंका जुलूस निकल रहा है। आप चुपचाप अपने काममें लगे रहिये, जुलूस अपने-आप निकल जायगा। आप अपना काम छोड़कर उन्हें रोकने जाइये, आपका काम तो चौपट होगा ही उधर हुड़दंग भी बढ़ जायगा। ये विचार आपके अंदरसे नहीं उठते, बाहरसे आते हैं। उन्हें सहारा न मिले तो अपने-आप आना बंद कर देंगे।

हां, आध्यात्मिक क्षेत्रकी हर छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी उपलब्धिके लिये दो चीजें बहुत जरूरी हैं — दिलकी सचाई और धीरज। यहां भी इन दोनोंका होना जरूरी है।

उसकी ओर एक और पग :

ध्यान

उमेशने अपने-आपको 'मॉड' समझ रखा था। वह आधुनिक ही नहीं अति-आधुनिक बनना चाहता था। जैसे ही कोई नया फैशन चलता वह उसकी नकल करना अपना कर्तव्य मान लेता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लम्बे बाल रखना, फैशनके अनुसार कपड़े पहनना, अपनी शामें किसी खास अंधेरे डिस्कोथकमें नाचते-चीखते बिताना, यह सब तो करता ही था, लेकिन साथ-साथ विचारोंके जगत्की उथल-पुथलसे भी परिचित रहनेकी कोशिश करता था। मानसिक रूपसे वह पूरी सचाईके साथ 'मॉड' से नाता जोड़नेके लिये प्रयत्नशील था।

कारण ?

उसने परिवारमें चलते ढोंग देखे थे। समाजकी पोल खुलती कई बार देख चुका था। बड़ोंकी 'पोथीके बेंगन'-सी नैतिकतासे वह तंग आ गया था।

'मॉड' जगत्में उसे ज्यादा सचाई दिखी।

हर एक अपने असली रंगमें रहनेकी कोशिश करता।

बेबाकीसे चर्चा होती, राय दी जाती।

एक बार किसी यूरोपीय हिप्पीसे मुलाकात हुई।

उसके गलेमें रुद्राक्षकी माला देखकर वह हैरान रह गया। उसका नाम था बॉब।

एक दिन शामको बॉब कहीं न दिखा। उमेशने अपनी मित्र रीताको बुलाया। दोनोंने ठीक किया कि कुतुब जाकर बससे उतर पड़ेंगे। और फिर पैदल चलते-चलते जमनाके किनारे जा बैठेंगे और आते-जाते लोगोंसे बातें करके एक नये 'रोमान्स', नये 'थ्रिल' का मजा लेंगे। रीता सारे रास्ते बोलती गयी, बोलती गयी कॉलेजकी बातें, घरकी बातें और मेहमानोंकी बातें, सुनते-सुनते उमेशके कान पक गये।

जमनाके किनारे चलते-चलते वे एक स्थानपर जा रुके। उमेश चौंका। सामने पद्मासन लगाए बॉब बैठा था। रीता और उमेशने देखा और देखते रह गये।

शायद आधे घंटेके बाद बॉबने आंखें खोलीं। उमेशको देखकर मुस्कुराया। उमेशने आगे बढ़कर रीतासे उसका परिचय करवाया। रीता 'हैण्ड शेक' करनेके लिये आगे बढ़ी। बॉब मुस्कराकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोला, 'रीता, मुझे अभिवादनका भारतीय ढंग अधिक पसन्द है, आशा है तुम बुरा न मानोगी।' रीताने जवाबमें हाथ जोड़ दिये।

कुछ दिन बाद उमेशको अवसर मिला। उसने पूछा, 'बॉब, बुरा न मानो तो एक व्यक्तिगत बात पूछूं?' बॉबने उत्तर दिया, 'बुरा भला क्यों मानने लगा? लेकिन हो सकता है मैं जवाब न दूं। तब तुम भी बुरा न मानना।'

उमेशने पूछा, 'तुम्हें योगकी ओर आकर्षण कैसे हुआ? तुम लोगोंका जीवन इतना समृद्ध है कि...' उमेश बोलते-बोलते रुक गया।

बॉबने वाक्य पूरा किया, 'फिर तुम्हें इसका विचार ही क्यों आया, है न?'

वह रुका, फिर गंभीर होकर बोला, 'तुम्हें हमारे जीवनके खोखलेपनका ख्याल नहीं आ सकता। मैंने कॉलेजमें साइकालौजी चुनी थी। दूसरे लोग उससे सन्तुष्ट थे किन्तु मेरा दिमाग फ्रॉयड, युंग वगैरहके थोथे विचारोंसे सन्तुष्ट न हो पाया। मेरे मनमें नये-नये प्रश्न जागते गये जिनके उत्तर उनके पास न थे।

'मैंने चारों ओर एक भगदड़-सी देखी। हमारी भाषामें उसे 'रैट रेस' कहते हैं। मेरे घरवाले पड़ोसीसे अपनी तुलना करते रहते। यही देखते कि हम कहीं उनसे उन्नीस तो नहीं हैं? जोनके घर नयी कार आयी तो मेरे पिताजीको भी नयी खरीदनी ही चाहिये, डोरोथीने एक नये फैशनकी पोशाक खरीदी तो मांको पीछे न रहना चाहिये। सारा जीवन इस तरहकी होड़में बीतता है। अन्तमें हाथ क्या आता है? परेशानी, निराशा, अवसाद और कुण्ठा। मैं अपना जीवन यों बरबाद नहीं करना चाहता था।

'एक दिन मेरा मित्र जोसेफ मिला। लम्बे बाल, गन्दे कपड़े, अजीबो-गरीब भाषा! मैंने देखा कि इस सबके बावजूद उसके चेहरेपर सन्तोष था, सच्ची मुस्कान थी। उसके साथ बात की तो देखा कि उसे कुछ नया करनेका सन्तोष था। मैंने भी उसके तौर-तरीके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनाये। कुछ दिन अच्छा लगा, फिर एक स्वप्न देखा। एक साफ-सुथरे कमरेको हवाका झोंका मिट्टी और गन्दे कागजोंसे भर गया। लगातार तीन दिनतक यही स्वप्न देखता रहा। अपने प्रोफेसरकी सहायतासे मैंने स्वप्नको समझा। स्वप्न बार-बार मेरे मनकी अस्तव्यस्त स्थितिका चित्र मेरे सामने ला रहा था। मैं ठीक न कर पा रहा था कि अब क्या किया जाय कि अचानक एक दिन मेरे डैडी एक भारतीय सज्जनको घर ले आये। तुम्हें पता नहीं तुम लोगोंकी वेश-भूषा, तुम्हारा सुन्दर वर्ण, तुम्हारे चेहरेके हाव-भाव हमें कितने आकर्षक लगते हैं। हां, तो उनका नाम था विवेक। उनसे सामान्य बातचीत करते-करते न जाने कब जीवन-संघर्ष, आदर्श और भगवान् घुस पड़े इसका पता न चला। किन्तु मैंने नयी खोज की। मैंने समझा कि सबसे पहले यह जानना चाहिये कि मैं धरतीपर क्यों हूं। विवेकसे मेरी घनिष्ठता बढ़ती गयी। उसने मुझे ध्यान करना सिखाया। वह कहता, "जबतक तुम अपने-आपको नहीं जानते, तबतक यह कैसे जान सकते हो कि तुम धरतीपर क्यों आये? ध्यानसे मनुष्य अपने-आपको पहचानना सीखता है।" ध्यानके बाद ही मैंने देखा कि मैं, बॉब नामक एक व्यक्ति नहीं हूं। मैं कई व्यक्तियोंका समूह हूं। उनमेंसे हर एक मेरे सारे व्यक्तित्वपर अधिकार जमाना चाहता है। अब धीरे-धीरे मैंने उनकी चिल्ल-पोंमेंसे एककी आवाजको सुनना और चुनना शुरू किया है। यह अभी पहला कदम है, आगे न मालूम क्या रोमांचक घटनाएं घटेंगी। जीवन रसमय हो उठा है। एक क्षण-के लिये भी बोर नहीं होता। तुम विश्वास करोगे, मैंने न जाने कितने बॉब देखे! एक बॉब अतुल धनराशि चाहता है, एक कला-कार बनकर नाम और अमरता चाहता है, एक और है जो घर बसाकर सुन्दर पत्नी और नन्हें-मुन्नोंके साथ सुख और प्रेमके सपने देखता है। इस भीड़में यह जानना मुश्किल हो जाता है कि सच्चा बॉब कौन-सा है और वह क्या चाहता है। ध्यानके मौनमें कभी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी अपने सच्चे 'स्व'की कुछ झांकियां पा जाता हूं। सच्चे रास्ते-का आभास-सा पा लेता हूं, लेकिन कठिनाई यहीं समाप्त नहीं हो जाती। अभीतक मेरे अन्दर बहुत-से बॉब हैं जिनमेंसे हर एक अपनी डगरपर चलना चाहता है और मुझे भी घसीटता है। मैं मौन होकर बाहरसे आनेवाले राहगीरोंको मनमें घुसनेसे रोकता हूं और अपने हृदयमें झांकता हूं। वहां कभी-कभी एक हल्की-सी लौ दिखायी देती है। विवेकका कहना है कि यह लौ ही मुझे सच्चा रास्ता दिखा सकती है, कि यह हर एकके अन्दर होती है पर हम लोग इसपर ऊट-पटांग चीजोंका कूड़ा-कबाड़ डालकर इसे बुझानेकी कोशिश करते हैं। इसके आगे सब बॉबोंको झुकना पड़ेगा। यही सच्चा बॉब है। मुझे लगता है कि जीवन 'जेट'की गतिसे दौड़ रहा है। कितना करना है, कितना समझना है! सचमुच, समय बहुत कम है और काम अधिक! इतना समय बिता देनेके बाद मुझे इस पहले पगका पता चला है। तुम लोग कितने भाग्यवान हो! ये बातें तुम्हें घुट्टीमें ही मिल गयी थीं! भारतमें जन्म लेना कितना बड़ा सौभाग्य है!'

—अनुबेन

सोसायटी समाचार

*माताजीने १७ नवम्बर १९७३ को शरीर त्यागा था और उनका शरीर २० तारीखको समाधिस्थ किया गया। १९७५में १७ और २० को सवेरे समाधिके चारों ओर और शामको खेलके मैदान-में ध्यान हुआ। १७ नवम्बरको आश्रमवासी और दर्शनार्थी माता-जीके कमरेमें गये थे और २० की शामको भारत सरकारकी श्री-अरविन्द और माताजीके समाधिस्थ किये जानेकी फिल्में दिखायी गयीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*२४ नवम्बर सिद्धि-दिवस है। उस दिन लोग श्रीअरविन्दके कमरेमें गये और समाधिके चारों ओर ध्यान हुआ।

*१ दिसम्बर श्रीअरविन्द अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्रका बत्तीसवां जन्म-दिन था। उस दिन श्रीअरविन्दका नाटक 'एरिक' मंचपर दिखलाया गया और दूसरी तारीखको स्पोर्ट्स ग्राउण्डमें नाना प्रकारके खेल-कूदके प्रदर्शन हुए।

*हर वर्षकी भांति इस वर्ष भी श्रीअरविन्दाश्रम, दिल्ली शाखाके विद्यार्थियों और अध्यापकोंका दल आश्रम आया था।

*आंध्र प्रदेशके ताड़पत्रीके 'श्रीअरविन्द शताब्दी विद्यालय'के शिशु विद्यार्थी भी आश्रम आये थे। उन्होंने अपनी ड्रिल, लेजिम, कलाबाजियां वगैरा दिखलायीं।

*५ और ९ दिसम्बरको श्रीअरविन्दकी महासमाधिके उपलक्ष्यमें ध्यान हुआ और ५ को श्रीअरविन्दके कमरेके दर्शन हुए।

*१६ दिसम्बरको श्रीअरविन्द शिक्षा केन्द्रके नये सत्रका आरंभ हुआ।

केंद्र और शाखाएं

रीवा जिलेमें श्रीअरविन्दग्राम एक छोटा-सा गांव है। वहां बहुत सुन्दर मां-मन्दिरका निर्माण हुआ है जिसका उद्घाटन श्रीअरविन्द सोसायटीके सभापति नवजातजीने किया। वहांपर श्रीअरविन्दके पवित्र अवशेष भी प्रतिष्ठित किये गये हैं। ग्रामवासियोंका उत्साह सराहनीय था।

*हमारी रांचीकी शाखाने अपना २१वां जन्म दिन मनाया। इस अवसरपर डा० माहेश्वरीका भाषण हुआ।

*शान्तिपुर केन्द्रने श्रीअरविन्दके बारेमें बंगला व्याख्यान-मालाकी व्यवस्था की है।

*सोसायटीकी जयपुर शाखाने शान्तिनिकेतनके प्रा० शिशिर कुमार घोष तथा श्री माहेश्वरीके भाषणोंकी व्यवस्था की। २० अक्तूबर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को सोसायटीके सक्रिय सदस्योंकी एक बैठक हुई जिसमें श्री किशोरी लाल ढांढणिया और श्री त्रिभुवन शुक्लने भी भाग लिया। बैठक-में श्रीअरविन्दका सन्देश जनतातक पहुंचानेके लिये विविध उपायोंके बारेमें विचार किया गया। माताजी, श्रीअरविन्दके बारेमें वार्ता-लाप, व्यक्तिगत संबंध, पुस्तकालयोंमें आश्रम साहित्य और पत्रि-काओंका क्रम, सोसायटी केन्द्रोंमें युवा कक्ष, नारी कक्ष आदिकी व्यवस्था, विद्यालयों, महाविद्यालयोंमें प्रदर्शनी, प्रादेशिक सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन, इन सब कामोंके लिये धन संग्रह आदि विषयों-पर विचार विमर्श हुआ।

*किशोरी लालजीने राजस्थान विश्व-विद्यालयमें भाषण देते हुए बताया कि श्रीअरविन्दका योग पलायन नहीं जीवनकी पूर्णताको अपना लक्ष्य बनाना है।

*मथुरामें श्रीअरविन्द स्वाध्याय केन्द्रने तीन दिनके अध्ययनका कार्यक्रम रखा था जिसमें डा० माहेश्वरीने योगमय जीवन, आदर्श समाजकी ओर और शिक्षाका सच्चा स्वरूप — इन तीन विषयोंपर भाषण दिये। स्थानीय कालिजोंने भी डा० माहेश्वरीको भाषण देनेके लिये निमंत्रित किया था।

*हनमकुण्डामें केन्द्रने डा० मनमोहन रड्डीके दो भाषणोंकी व्य-वस्था की।

*मद्रासके 'सरला कला केन्द्र'ने ओरोवीलके डिजाइनोंकी प्रदर्शनी की जिसका उद्घाटन न्यायमूर्ति सूर्यमूर्तिने किया।

अनुबेन पुराणीने तीन सप्ताहके लिये गुजरातकी यात्रा की जिसमें अरेरा, महमदाबाद, अहमदाबाद, सूरत, नडियाद, बड़ौदा आदिके केन्द्रोंमें श्रीअरविन्द और उनके मार्गके सम्बन्धमें लोगोंके प्रश्नोंके उतर दिये।

*अमरीकामें ओहिओ, वाशिंगटन और लिंडिसफार्नमें और केनेडाके मोंट्रिअलमें भी सभाएं हुईं जहां माताजी श्रीअरविन्दका साहित्य पढ़ा गया और ओरोवील तथा आश्रमकी बातें बतायी गयीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

For Love there is no other curtain than ignorance.

The Mother

Inland Carriers (Bombay)

For **Safe, Speedy & Efficient Movement of Cargo**

Head Office :

Takhatmal Estate, P. O. Box No. 12, AMRAVATI

Branches :

112, Sarang Street, BOMBAY-3, Phone : 327710
Bhistiwad, AHMEDABAD, Phone : 34098

Daily parcel Service to & from

Bombay, Ahmedabad, Baroda, Poona, Sholapur, Ichalkaranji, Bangalore, Nagpur, Amravati, Raipur & Malegaon (Dist. Nasik)

THE CARRIERS WITH A DIFFERENCE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70.
REGD. No. M. 8731

Let the past
be past.
Concentrate only
on the
Eternal
blessings

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी
२५/६/७६

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

मार्च १९७६

वर्ष ६, अंक ८, पूर्णांक ६८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(श्रीअरविन्द सोसायटी और ऑरोविलकी सम्मिलित मासिक पत्रिका)

सूची

श्रीअरविन्दके पत्र : समर्पण
माताजीकी वाणी :
    [illegible]
    जीवित अभिवृत्तिकी शक्ति
    [illegible]
    [illegible] मूल
सुन्दर कहानियाँ — परिवार (३)
[illegible] — नलिनीकांत गुप्त
[illegible] एक अप्रकाशित पत्र
माताजीकी बातचीतके आधारपर :
    [illegible]नाका रहस्य
    विश्व-इतिहासका आलेख
सोसायटी समाचार

वार्षिक चंदा : ६ रुपये   एक प्रतिका : ६० पैसे
आजीवन : १०० रुपये

संपादक : रवीन्द्र
प्रकाशक : श्रीअरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदके पत्र :

समर्पण

समर्पण और निजी प्रयास : पूर्ण समर्पण केवल ध्यानकी एक अनुभूति नहीं, सारे जीवन, सभी विचारों, भावनाओं, संवेदनों और क्रियाओंको चलानेवाला तथ्य होना चाहिये। जबतक यह न हो जाय तबतक अपनी इच्छा-शक्ति और अपने प्रयासकी जरूरत रहती है। लेकिन प्रयासमें भी समर्पण की भावना होनी चाहिये। भगवान्‌की शक्तिका आवाहन करना चाहिये कि वह आकर इच्छा-शक्ति और प्रयासकी सहायता करे और सफलता या असफलताको बाधक न बनने दे। जब भगवान्‌की शक्ति साधनाको अपने हाथमें ले ले तो प्रयास बंद हो सकता है लेकिन तब भी सत्ताकी निरंतर स्वीकृति और सावधानीकी आवश्यकता रहती है ताकि कहींसे मिथ्या शक्ति प्रवेश न करने पाये।

तपस्या : जब संकल्प-शक्ति और ऊर्जाको एकाग्र करके मन, प्राण और शरीरका नियंत्रण करनेके लिये या उन्हें बदलनेके लिये उच्चतर चेतनाको उतारने या किसी यौगिक उद्देश्यके लिये काममें लाया जाय तो उसे तपस्या कहते हैं।

समर्पण और निष्क्रियता : जबतक पूर्ण समर्पण सिद्ध न हो जाय तबतक बिल्लीके बच्चे[1]की वृत्तिको अपनाना असंभव है -- वह समर्पणके रूपमें तामसिक निष्क्रियता होती है। शुरूमें पूर्ण समर्पण संभव नहीं है। इसका अर्थ यह है कि व्यक्तिगत प्रयास जरूरी है।

---

[1]साधनामें बंदरके बच्चे और बिल्लीके बच्चेकी वृत्ति। बंदरका बच्चा अपने प्रयाससे मांको पकड़े रहता है जब कि बिल्लीका बच्चा अपने-आपको मांके ऊपर छोड़ देता है, वह जहां चाहे ले जाय। (अनुवादक)

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण आत्म-निवेदन: जबतक चैत्य पुरुष प्राणसे ज्यादा बलवान् होकर सत्तापर अधिकार न कर ले तबतक अपने-आपको छोटे बच्चेकी तरह भगवान्के सुपुर्द कर देना संभव नहीं है।

केंद्रीय समर्पण: जब चैत्य सत्ता, हृदय और चिंतनशील मन समर्पण कर दें तो फिर बाकी काम तो प्रक्रिया और समयका प्रश्न रह जाता है और तब घबरानेकी कोई बात नहीं रहती। इसके साथ केंद्रीय और प्रभावशाली समर्पण पूरा हो जाता है।

समर्पण और प्रेम-भक्ति: समर्पण और प्रेम-भक्ति एक-दूसरेसे उलटे नहीं हैं। वे साथ-साथ रह सकते हैं। यह सत्य है कि शुरूमें मनके ज्ञानके द्वारा भी समर्पण किया जा सकता है लेकिन इसका मतलब होता है मानसिक भक्ति। जैसे ही समर्पण हृदय-तक पहुंचता है कि भक्ति भावनाके रूपमें प्रकट होने लगती है और भक्तिकी भावनाके साथ ही प्रेम भी आ जाता है।

निराकारके प्रति समर्पण: समर्पण हमेशा अच्छा होता है, परंतु निराकारके प्रति समर्पण काफी नहीं है क्योंकि वह आंतरिक अनुभूतितक ही सीमित रहेगा और बाह्य प्रकृतिका रूपांतर नहीं करेगा।

निराकार भगवान्के प्रति समर्पण सत्ताके भागोंको अहंकार और गुणोंके अधीन छोड़ देगा क्योंकि निश्चल भाग निराकारमें स्वाधीन होंगे पर क्रियात्मक प्रकृति गुणोंकी क्रीड़ामें लगी रहेगी। कुछ लोग समझते हैं कि वे अहंसे मुक्त हो गये हैं क्योंकि वे निराकार सत्ताको अनुभव कर पाते हैं परंतु वे यह नहीं देखते कि उनके काम अब भी अहंके अधीन रहते हैं।

गुरुके प्रति समर्पण: गुरुके प्रति समर्पण सभी समर्पणसे परे, सबसे बड़ा समर्पण माना जाता है क्योंकि इसके द्वारा तुम केवल निराकार भगवान्के प्रति ही नहीं साकारके प्रति भी समर्पण करते हो; केवल आत्मामें बसे भगवान्के प्रति नहीं अपने चारों ओर व्याप्त भगवान्के प्रति भी। तुम्हें केवल अपनी आत्माके अंदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश करके — जहां अहंका अस्तित्व नहीं है — अहंसे छुटकारा पानेका अवसर नहीं मिलता, बल्कि बाहरी प्रकृतिमें भी अहंसे छुटकारा पा सकते हो जहां उसका राज्य है। यह समग्र भगवान्‌के प्रति पूर्ण समर्पणके संकल्पका चिह्न है। हां, यह सब सच होनेके लिये जरूरी है कि वह सच्चा आध्यात्मिक समर्पण हो।

भगवान् और गुरुके प्रति समर्पण : नहीं, भगवान्‌के प्रति समर्पण और गुरुके प्रति समर्पण एक ही चीज नहीं है। गुरुके प्रति समर्पण करते हुए तुम गुरुके अंदर स्थित भगवान्‌को समर्पण करते हो — अगर केवल मानव सत्ताके प्रति समर्पण हुआ तब तो वह प्रभाव-शून्य होगा। भागवत सत्ताकी चेतना ही गुरुको सच्चा गुरु बनाती है इसलिये यदि शिष्य उसे केवल मानव सत्ता मानकर ही उसके आगे समर्पण करे तो भी वह सत्ता इस समर्पणको सफल बनायेगी।

सौदाबाजीकी वृत्ति : तुम जो अनुभव कर रहे हो वह निम्न प्राण, उसकी मांगों और इच्छाओंका लौट आना है। उसका कहना है, "मैं योग तो करूंगा पर एक मूल्यपर। मैंने जीवन, प्राणिक इच्छाओं और संतुष्टियोंका जीवन छोड़ दिया है लेकिन छोड़ा है माताजीसे घनिष्ठता पानेके लिये। अपने-आपको दुनियासे संतुष्ट करनेकी जगह मैं भगवान्‌से संतुष्ट होना चाहता हूं, भगवान् मेरी इच्छाएं पूरी करें। अगर मुझे माताजीसे घनिष्ठता नहीं मिलती, और वह तुरंत और जिस रूपमें मैं चाहता हूं उस रूपमें, तो फिर मैं पुरानी चीजोंको किसलिये छोड़ दूं?" और स्वाभाविक रूपसे पुरानी चीजें फिरसे शुरू हो जाती हैं। तुम्हें प्राणकी इस क्रिया-पद्धतिको देख सकना और पूरी तरह छोड़ सकना चाहिये। भगवान्‌के साथ निकटका संबंध चैत्यके पूर्ण आत्म-समर्पणके तरीकेसे ही स्थापित हो सकता है। पूर्ण आत्म-समर्पणसे ही भगवान्‌के साथ एकता आ सकती है। वह दूसरी चीज प्राणिक अहंकारकी क्रिया है। वह केवल चेतनाका पतन और गड़बड़ ला सकती है।

प्राणिक मांग और अंतरात्माका आत्म-निवेदन : तुमने प्रति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रियाओंका जो वर्णन किया था उसीके आधारपर मैंने कहा था कि इसमें प्राणिक मांग है। शुद्ध चैत्य या आध्यात्मिक आत्म-निवेदनमें इस प्रकारकी प्रतिक्रियाएं नहीं होतीं। वहां निराशा या विषाद नहीं होता, यह प्रश्न नहीं उठता कि भगवान्‌की खोजमें मैंने क्या पाया? क्रोध, विद्रोह, अभिमान, चले जानेकी इच्छा — जिन चीजोंका तुमने उल्लेख किया है — आदि न होने चाहिये। इनकी जगह पूर्ण विश्वास, सब परिस्थितियोंमें, चाहे जो भी हो, भगवान्‌से लगे रहनेमें हठ, उनको पकड़े रहनेका आग्रह — ये चीजें हैं जो तुम्हारे अंदर होनी चाहिये। यही एक आधार है जिसपर आदमी कठिनाइयों और प्रतिक्रियाओंसे बच सकता है और बिना बाधाके आगे बढ़ सकता है।

परंतु क्या यह चीजें अंतरात्माके आत्म-निवेदनका चिह्न हैं? अगर प्राणका मिश्रण नहीं है तो तुम्हें लिखते समय, तुम्हें रास्ता दिखानेका प्रयास करते हुए लिखते समय, यह सब क्यों उभर रहा है?

इस भागको जब उसकी प्रकृति दिखायी जाती है और उसे बदलनेके लिये कहा जाता है तो यही पहली गति होती है।

कठिन है? हमारी साधनाका पहला नियम ही यह है कि समर्पण है पूर्णताप्राप्तिका साधन और जबतक अहंकार या प्राणिक मांगों और इच्छाओंको पोसा जायगा तबतक पूर्ण समर्पण असंभव है, आत्म-निवेदन अपूर्ण है। हमने यह बात कभी छिपाकर नहीं रखी। यह चीज कठिन हो सकती है और है लेकिन यह साधनाका निश्चित तत्त्व है। चूंकि यह कठिन है इसलिये इसे धीरजके साथ, लगकर करना चाहिये और काम पूरा होनेतक करते रहना चाहिये।

जब-जब प्राणिक मिश्रण आये तब-तब उसे अस्वीकार करते जाना होगा। अगर तुम उसे त्यागनेपर डटे रहो तो वह अपना बल अधिकाधिक खोता जायगा और अंतमें गायब हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका अर्थ है कि यह पुरानी गति-विधिका बेतुका और मशीन की तरह चलते रहनेवाला हठी भाग है। वास्तवमें पुरानी चीजें इसी तरह टिकी रहना चाहती हैं। अगर तुम इसे नया जीवन न दे दो तो इन्हें जाना ही पड़ेगा।

मुझे इसके बारेमें कोई शंका नहीं है, तुम बातको ठीक तरह समझ लो तो तुम सीधे, ठीक स्थानपर पहुंच सकोगे।

साधनाका एकमात्र सच्चा आधार : प्राणका यह वही हिस्सा है जो पहले ठीक दिशामें था और अब माताजीके विरुद्ध हो गया है। कारण स्पष्ट है। पहले वह माताजीके साथ था क्योंकि उसने सोचा था कि वह अपनी इच्छाओंको पूरा कर सकेगा। जब उसने देखा कि उसकी इच्छाओंको नहीं पोसा जा रहा तो वह उनका विरोधी बन बैठा। साधारण मनुष्य और साधारण जीवनमें यही गति होती है पर योगमें इसके लिये कोई जगह नहीं है। साधकोंने योगमें इस मनोवृत्तिको मिला दिया और यह चीज डटी रही इसीलिये माताजीको पीछे हटना पड़ा। अब तुम्हें करना यह चाहिये कि इन भागोंको यह समझा दो कि वे अपने लिये नहीं, भगवान्के लिये अस्तित्व रखते हैं। उन्हें बिना किसी छल-कपटके, बिना किसी प्रकारके दावेके, बिना मनमें चोर बिठाये, पूरी तरहसे भगवान्के लिये निष्ठा रखनी चाहिये, उनके साथ लगा रहना चाहिये। इस समय साधनामें यही सबसे बड़ी बात है क्योंकि अगर यह हो सके तभी भौतिक चेतना बदल सकती है और अवतरणके योग्य बन सकती है। वरना सत्ताके किसी-न-किसी भागमें यह उठा-पटक चलती रहेगी — कम-से-कम देरी, अस्त-व्यस्तता और उलझन पैदा होगी। सत्य चेतनामें स्थिर होने और साधनाका रास्ता साफ रखनेका बस यही तरीका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोग

'संयोग' शब्दसे हम क्या समझते हैं? संयोग व्यवस्था औ सामंजस्यका उल्टा हो सकता है। सच्चा सामंजस्य केवल एक ही है और वह है अतिमानसिक सामंजस्य — सत्यका राज्य, भागवत विधानकी अभिव्यक्ति। इसलिये अतिमानसमें संयोगका को स्थान नहीं होता लेकिन निचली प्रकृतिमें परम सत्य धुंधला जात है और इस कारण उद्देश्य और कर्मकी दिव्य एकताका अभाव हो जात है और इन्हींसे तो सुव्यवस्था बनती है। प्रकृतिके ऊपर उसका राज है जिसे हम संयोग कह सकते हैं। अर्थात् वह एक ऐसा क्षेत्र है जहां एक और सुनिश्चित लक्ष्य न रखनेवाली शक्तियां आपसमे टकराती हुई मिलती हैं। इस प्रकार साथ-साथ दौड़-भाग करती हुई शक्तियोंसे जो पैदा होता है वह अस्त-व्यस्तताके बेसुरेपन औ मिथ्यात्वका परिणाम, संयोगकी उपज होता है। संयोग किस चीजके कारण न जाननेवाले अज्ञानको ढकनेके लिये एक धारणामात्र नहं है। वह निम्न प्रकृतिके अनिश्चित-से झमेलेका नाम है जिसम भागवत सत्यकी शांत एकाग्रता नहीं होती। जगत् अप भागवत स्रोतको भूल गया है और अहंकारकी शक्तिकी रणस्थल बन गया है लेकिन अब भी उसके लिये यह संभव है सत्यकी ओर खुले, अपनी अभीप्साके द्वारा उसे नीचे उतार ला और संयोगके भंवरमें परिवर्तन ला सके। अपने मानसिक संयोज अनुभव और सामान्य अनुमान करनेके तरीकेके कारण लोग जि घटनाओंका यांत्रिक परिणाम मानते हैं वह सचमुच विभिन्न सू शक्तियोंके द्वारा लाया जाता है जिनमेंसे हरएक अपनी इच्छा पू करनी चाहती है! जगत् इन अदिव्य शक्तियोंके इतने आधी हो गया है कि युद्ध किये बिना सत्यकी विजय नहीं हो सकती उसका विजयपर अधिकार नहीं है, उसे मिथ्यात्व और विकारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाता तोड़ना होगा। इस विकृतिका एक सामान्य अंश यह धारणा है कि चूंकि अंततोगत्वा सभी चीजोंका मूलस्रोत भगवान् हैं इसलिये सभी सामयिक क्रियाएं भी सीधी भगवान्से ही आयी हैं। तथ्य यह है कि यहां निम्न प्रकृतिमें भगवान् एक वैश्व अविद्याके परदेसे ढके हुए हैं और यहां जो कुछ होता है वह सीधा भागवत ज्ञानसे नहीं आता। यह कहना कि हर चीज समान रूपसे भगवान्की इच्छासे है बहुत आसान है और यह उन विरोधी प्रभावोंका सुझाव है जो चाहते हैं कि सृष्टि उसी कुरूपता और अव्यवस्थाके साथ जोरसे चिपकी रहे जिसमें उसे पहुंचा दिया गया है। तुम पूछोगे फिर क्या किया जाय? सुनो, ऊपरसे प्रकाशको नीचे बुलाओ और अपने-आपको रूपांतरकी शक्तिके प्रति खोलो। अनगिनत बार तुम्हें दिव्य शांति दी जा चुकी है और अनगिनत बार ही तुम उसे खो चुके हो क्योंकि तुम्हारे अंदर कोई चीज अपने अहंकारमय तुच्छ नित्यक्रमको समर्पित करनेसे इनकार करती है। अगर तुम सदा जागरूक न रहो तो ऊपरसे आनेवाले सत्यसे भर जानेके बाद भी तुम्हारी प्रकृति अपनी पुरानी पुनरुद्धार-वंचित आदतोंकी ओर वापिस चली जायगी। प्राचीन और नवीनका संघर्ष ही योगकी मुख्य पहेली है लेकिन अगर तुम अपने अंदर प्रकट किये जानेवाले परम विधान-व्यवस्थाके प्रति निष्ठा रखनेके लिये कटिबद्ध हो तो धीरे-धीरे तुम्हारे वे भाग जो संयोगके क्षेत्रसे संबंध रखते हैं परिवर्तित होते जायंगे और दिव्य बन जायंगे।

(मातृवाणी, खंड ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित अभिवृत्तिकी शक्ति

प्र० — क्या सचमुच जो कुछ होता है अच्छे-से-अच्छा ही होता है ?..

उ० — यह तो स्पष्ट ही है कि जो कुछ हुआ है उसे होना ही था, इससे भिन्न न हो सकता था — वैश्व नियतिके कारण उसे होना ही था। लेकिन यह बात हम तभी कह सकते हैं जब वह हो चुके, उससे पहले नहीं। क्योंकि 'जो हो सकता है उसमें अच्छे-से-अच्छे' की समस्या व्यक्तिगत समस्या है, यह व्यक्ति भले एक मनुष्य हो अथवा एक राष्ट्र। सब कुछ व्यक्तिगत अभिवृत्तिपर निर्भर है। यदि जो होनेवाला है उसकी परिस्थितिमें तुम अपने लिये संभव अधिक-से-अधिक ऊंची अभिवृत्ति अपना सको, अर्थात् यदि तुम अपनी चेतनाको अपनी पहुंचकी ऊंची-से-ऊंची चेतनाके संपर्क में ला सको तो, पूरी तरह निश्चय रखो, जो होगा वह, जो हो सकता है उसमें, अच्छे-से-अच्छा होगा। लेकिन जैसे ही तुम उस चेतनासे निचले स्तरपर गिर पड़ो हो वैसे ही जो होगा वह स्पष्टत अच्छे-से-अच्छा न होगा और कारण स्पष्ट है — तुम अपनी अच्छी-से-अच्छी चेतनामें नहीं हो . . . मैं निश्चयपूर्वक यहांतक कह सकता हूं कि हर एकके तात्कालिक प्रभावके क्षेत्रमें उचित अभिवृत्ति इतनी शक्ति होती है कि हर परिस्थितिको लाभदायक बना सके, इतना ही नहीं, वह स्वयं परिस्थितिको बदल सकती है। उदाहरण के लिये, अगर कोई तुम्हें मारने आये उस समय तुम यदि साधारण चेतनामें रहो और डरकर होश-हवास खो दो तो संभवतः वह जो कुछ करनेके लिये आया है उसमें सफल हो जायगा। अगर तुम जरा ऊपर उठ सको और डरसे भरे होते हुए भी भागवत सहायताको बुलाओ तो वह जरा-सा चूक जायगा या तुम्हें जरा-सी चोट ही पहुंचा पायेगा। लेकिन अगर तुम्हारे अंदर उचित अभि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृत्ति हो और तुम्हारे चारों ओर हर जगह भागवत उपस्थितिकी पूरी चेतना हो तो वह तुम्हारे विरुद्ध उंगली भी न उठा सकेगा।

यह सत्य रूपांतरकी सारी समस्याकी ठीक चाबी है। हमेशा भागवत उपस्थितिके साथ संबंध बनाये रखो, उसे नीचे उतारनेकी कोशिश करो तो हमेशा अच्छे-से-अच्छी चीज ही होगी। पर हां, सारा जगत् एकदम नहीं बदल जायगा लेकिन वह जितनी तेजी कर सकता है उतनी तेजीसे आगे बढ़ेगा। यह न भूलो कि यह तभी होगा जब तुम योगके सीधे मार्गपर चलते रहोगे, उस अवस्था-में नहीं, जब तुम रास्ता छोड़कर जिधर मुंह उठे उधर भटकते फिरो या असहाय बनकर अजाने जंगलमें घूमते रहो।

अगर तुममेंसे हरएक अधिक-से-अधिक प्रयास करे तो ठीक सहयोग होगा और परिणाम बहुत अधिक जल्दी आ सकेगा। मैंने उचित अभिवृत्तिकी शक्तिके अनेक उदाहरण देखे हैं। मैंने देखा है कि अकेले आदमीकी उचित अभिवृत्तिके कारण जनसमूह महाविपत्तिसे बच गये हैं। लेकिन यह ऐसी अभिवृत्ति होनी चाहिये जो शरीर-को अपनी साधारण प्रतिक्रियाओंमें छोड़कर कहीं किन्हीं ऊंचाइयों-पर नहीं रहती। अगर तुम इस तरह ऊंचाईपर रहो और कहो, 'भगवान्‌की इच्छा पूरी हो' तो हो सकता है कि इसके होते हुए तुम मारे जाओ। क्योंकि हो सकता है कि तुम्हारा शरीर बिलकुल अदिव्य हो और भयसे कांपता रहे। जरूरी बात यह है कि सत्य चेतनाको स्वयं शरीरके अंदर प्रतिष्ठित रखा जाय, जरा भी भय न हो, और सत्तामें भागवत शांति भरी हो। तब वास्तव-में कोई खतरा नहीं है। इस हालतमें मनुष्योंके आक्रमणसे बचा जा सकता है, इतना ही नहीं, बल्कि पशुओं और पंचतत्त्वोंपर भी प्रभाव डाला जा सकता है। मैं एक छोटा-सा उदाहरण दे सकती हूं। तुम्हें वह तूफानी रात याद है जब बहुत जोरकी गड़गड़ाहट हुई थी और चारों ओर झड़ी लगी थी? मैंने सोचा मैं श्रीअरविंद-के कमरेमें जाकर खिड़कियां बन्द करनेमें उनकी मदद करूं। मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका दरवाजा खोला तो देखा वे चुपचाप अपनी मेजपर बैठे लिख रहे हैं। कमरेमें ऐसी ठोस शांति थी कि कोई कल्पना भी न कर सकता था कि बाहर इतने जोरका तूफान चल रहा है। सभी खिड़कियां पूरी-पूरी खुली थीं लेकिन एक बूंद भी अंदर नहीं आ रही थी।

(मातृवाणी, खंड ३)

श्रद्धा

बाहरी चेतनाका प्रत्यक्ष दर्शन चैत्य पुरुषके दर्शनका खण्डन कर सकता है लेकिन चैत्य पुरुषके पास सच्चा ज्ञान होता है — एक अंतर्भासात्मक सहज ज्ञान। वह कहता है, 'मैं जानता हूं, मैं कारण नहीं दे सकता पर मैं जानता हूं।' क्योंकि उसका ज्ञान मानसिक नहीं होता, अनुभवपर आधारित या प्रमाणित सत्य नहीं होता। वह दलीलें दिये जानेके बाद नहीं मानता, श्रद्धा अंतरात्माकी गति है जिसका ज्ञान सहज और सीधा होता है। सारी दुनिया भले विरोध करे या विपक्षमें हजारों प्रमाण दे, फिर भी वह आंतरिक ज्ञानके द्वारा जानता है, उसे दर्शन होता है जो हर विरोधका सामना कर सकता है, उसे तादात्म्यके द्वारा दर्शन होता है। चैत्य पुरुषका ज्ञान निश्चित, वास्तविक और ठोस होता है। तुम उसे अपने मन, अपने प्राण और अपने शरीरमें भी उतार सकते हो और तब तुम्हारे अंदर समग्र श्रद्धा होगी, ऐसी श्रद्धा जो सचमुच पहाड़ोंको भी हिला सके। लेकिन तब सारी सत्तामें कोई भी चीज ऐसी न होनी चाहिये जो आकर कहे, 'नहीं, यह ऐसा नहीं है,' कोई चीज प्रमाणकी मांग न करे। जरा-सा अर्ध विश्वास भी सारे मामलेको बिगाड़ सकता है। अगर श्रद्धा पूर्ण और अचल न हो तो परम प्रभु कैसे अभिव्यक्त हो सकते हैं? श्रद्धा अपने-आपमें हमेशा अचल होती है वरना वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धा ही नहीं होती। कोई आदमी एक योगीके पास आ सकता है और अचानक उसके अंदर यह श्रद्धा हो सकती है कि यह आदमी मुझे लक्ष्यतक पहुंचा सकेगा। वह नहीं जानता कि उसमें ज्ञान है या नहीं। उसे एक चैत्य धक्का-सा लगता है और वह जान लेता है कि उसे अपना गुरु मिल गया। वह लंबे मानसिक ऊहापोहके बाद या चमत्कार देखकर विश्वास नहीं करता और यही वह श्रद्धा है जिसका मूल्य है। तुम अगर तर्क करना शुरू कर दो तो हमेशा अपनी नियतिको खोते रहोगे। कुछ लोग बैठकर यह सोचने लगते हैं कि चैत्य प्रेरणा युक्तिसंगत है या नहीं।

लोग प्रायः उस चीजके कारण धोखेमें नहीं आते जिसे अंध श्रद्धा कहा जाता है। वे प्रायः कहते हैं, 'आह ! मैंने इस आदमीपर या उस आदमीपर विश्वास किया लेकिन उसने मुझे धोखा दिया' लेकिन वास्तवमें दोष उस आदमीका नहीं, विश्वास करनेवालेका होता है। यह उसकी अपनी कमजोरीके कारण होता है। अगर वह अपनी श्रद्धा बनाये रखता तो उस आदमीको भी बदल देता। चूंकि वह अपनी श्रद्धा-चेतनामें न रह सका इसलिये उसे विश्वासघातका अनुभव हुआ और वह उस आदमीको वैसा न बना सका जैसा उसे चाहता था। अगर उसके अंदर समग्र श्रद्धा होती तो वह उस आदमीको बदलनेके लिये वाधित करता। हमेशा श्रद्धाके द्वारा ही चमत्कार हुआ करते हैं। एक आदमी किसी दूसरेके पास जाता है और वहां जाकर दिव्य उपस्थितिके साथ नाता जोड़ता है। अगर वह इस नातेको शुद्ध और स्थिर बनाये रख सके तो वह दिव्य चेतनाको अत्यंत भौतिक रूपमें अभिव्यक्त होनेके लिये बाधित करेगा। लेकिन सब कुछ तुम्हारी सचाई और तुम्हारे मानकपर निर्भर है। तुम भौतिक रूपसे जितने अधिक तैयार होगे, उतने ही अधिक सच्चे स्रोत और सच्चे गुरुके पास ले जाये जाओगे। चैत्य और उसकी श्रद्धा हमेशा सच्चे होते हैं लेकिन अगर तुम्हारी बाहरी सत्तामें कपट है, अगर तुम आध्यात्मिक जीवन नहीं, व्यक्तिगत शक्तिकी खोजमें हो तो तुम धोखेमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ सकते हो। तुम्हारी श्रद्धा नहीं, कपट तुम्हें धोखा देता है। श्रद्धा अपने-आपमें शुद्ध होती है लेकिन वह तुम्हारी सत्तामें निचली गति-विधियोंसे घुल-मिल सकती है और तब तुम गलत रास्तेपर ले जाये जा सकते हो।

(मातृवाणी, खंड ३)

व्याधिका मूल

[व्याधियोंका मूल कारण और उनका स्वभाव; योग-साधनाके आरंभमें भौतिक बेचैनीका अनुभव क्यों; आंतरिक सत्ताकी प्रगति और स्थूल जड़तामें सामंजस्य अनिवार्य]

क्या समस्त व्याधियोंका मूल कारण मनकी किसी अव्यवस्थामें खोजा जा सकता है? यदि हां, तो घमौरी और गला बैठना जैसे रोग मनकी किस प्रकारकी अव्यवस्थाके कारण पैदा होते हैं?

जितनी संख्या बीमार पड़नेवालोंकी होती है रोगके उतने ही कारण हो सकते हैं, अतएव प्रत्येक रोगके कारणका हिसाब भिन्न-भिन्न होगा। यदि तुम मुझसे पूछो कि 'मुझे अमुक रोग क्यों हुआ?' तो मैं तुम्हारे अंदर देखकर उसका कारण बता सकती हूं, किंतु इस विषयमें कोई सर्वसाधारण नियम नहीं है।

शारीरिक व्याधियां सदा मनकी अव्यवस्था, असामंजस्य या कुप्रवृत्तियोंके कारण ही नहीं होतीं। हो सकता है कि किसी रोगका मूल कारण मनमें हो, हो सकता है कि वह प्राणमें हो अथवा यह भी हो सकता है कि वह कम या अधिक मात्रामें निरा भौतिक ही हो, जैसे कि बाह्य संसर्गके द्वारा पैदा होनेवाले रोग। योगकी क्रियाके कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी रोग हो सकता है और इस हालतमें भी अनेक कारण संभव हैं।

हम जरा योगके कारण पैदा होनेवाले रोगोंके विषयमें विचार करें, कारण हमारा सीधा और गाढ़ा संबंध इन्हींसे है। इस क्षेत्रमें, यद्यपि किसी विशेष रोगके संबंधमें कोई एक ही कारण नहीं बताया जा सकता, फिर भी जिन कारणोंसे व्याधियां उमड़ती हैं उनके अनुसार विभिन्न वर्ग बनाये जा सकते हैं।

योग-साधना करनेवाले व्यक्तिके अंदर जो शक्ति अवतरित होती है और जो उसके रूपांतरके कार्यमें उसकी सहायता करती है, वह अनेक प्रकारसे कार्य करती है, और इस शक्तिकी क्रियाके परिणाम इसे ग्रहण करनेवाले स्वभावपर तथा उसके अंदर जो कार्य किया जानेवाला है उसपर निर्भर हैं। सबसे पहले यह शक्ति साधकमें जो कुछ रूपांतरित होनेके लिये तैयार है उस सबके रूपांतरमें एक वेग ले आती है। यदि उसका मन खुला हुआ और ग्रहणशील हो तो इस योग-शक्तिका स्पर्श पाकर वह शीघ्रतापूर्वक परिवर्तित होने और प्रगति करने लगता है। इसी प्रकार यदि उसकी प्राणमय चेतना तैयार हो तो उसका भी, यहांतक कि उसके शरीरका भी, परिवर्तन उसी वेगके साथ होने लगता है। परंतु योगकी रूपांतर करनेवाली शक्ति शरीरमें एक हदतक ही काम करती है, क्योंकि शरीरकी ग्रहणशीलता सीमित है। विश्वकी अत्यंत जड़-प्राकृतिक भूमिकाकी अभीतक यह अवस्था है कि उसमें ग्रहणशीलताके साथ-साथ प्रतिरोध भी बहुत अधिक मात्रामें मिला हुआ है। परंतु सत्ताके एक भागमें जो तीव्र प्रगति होती है उसका यदि दूसरे भागोंकी तदनुरूप प्रगतिद्वारा अनुसरण न हो तो प्रकृतिमें एक असामंजस्य पैदा हो जाता है, कहींपर श्रृंखलाभंग हो जाता है। और जहां कहीं या जब कभी यह श्रृंखलाभंग होता है तो वह किसी-न-किसी व्याधिका रूप धारण कर सकता है। इस श्रृंखलाभंगके स्वभावपर ही रोगका स्वभाव निर्भर है। एक प्रकारके असामंजस्यका असर मनपर पड़ता है और इससे जो विक्षोभ होता है उसके कारण उन्मादतक हो सकता है, दूसरा असामंजस्य ऐसा होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जिसका असर शरीरपर पड़ता है और उसके फलस्वरूप ज्वर, घमौरी तथा दूसरे छोटे-बड़े रोग हो सकते हैं।

एक ओर तो योग-शक्तियोंके कार्य द्वारा सत्ताके उन भागोंमें, जो अपने ऊपर कार्य करनेवाली शक्तिको ग्रहण करने और उसका प्रत्युत्तर देनेके लिये तैयार हैं, रूपांतरकी गति बढ़ जाती है। और इस प्रकार योग समयकी बचत करता है। सारा जगत् उत्तरोत्तर रूपांतरकी प्रक्रियामें है; और यदि तुम योग-साधना करनेका निश्चय करते हो तो अपने अंदर होती हुई इस प्रक्रियामें एक तेजी ले आते हो। जिस कामको साधारण रीतिसे करनेमें वर्षों लगेंगे वही योगके द्वारा चंद दिनोंमें, यहांतक कि चंद घंटोंमें किया जा सकता है। परंतु तुम्हारी आंतर चेतना ही इस शीघ्रगामी आवेगके अधीन होती है; कारण तुम्हारे आधारके उच्चतर भाग ही योगकी द्रुत और एकाग्र गतिका तत्परताके साथ अनुसरण करते हैं और इस गतिके कारण उन्हें जो सतत रूपसे उसके साथ एकरस होने और अनुकूलता स्थापित करनेकी आवश्यकता रहती है उसे अधिक सुगमताके साथ करते रहते हैं। दूसरी ओर शरीर है जो साधारणतया स्थूल, तमोगुणी और शिथिल है। यदि तुम्हारे इस भागमें कोई चीज ऐसी है जो उपर्युक्त गतिका प्रत्युत्तर नहीं देती, यदि वहां कोई प्रतिरोध होता है, तो इसका कारण यह है कि आधारके अन्य भाग जिस तेजीके साथ चल सकते हैं उसी तेजीके साथ शरीर नहीं चल सकता। इसे समय लगता है, जिस चालसे यह साधारण जीवनमें चलता है उसी चालसे यौगिक जीवनमें भी चलना चाहता है। और वैसा ही होता है जैसे जवान लोग बच्चोंके साथ तेजीसे चल रहे हों, उन्हें समय-समयपर रुक जाना पड़ता है ताकि लड़के, जो पिछड़ गये हैं, उनसे आ मिलें। आंतरिक सत्ताकी प्रगति और स्थूल शरीरकी जड़ताका विरोध बहुधा शरीरमें श्रृंखलाभंग कर देता है और रोगके रूपमें प्रकट होता है। यही कारण है कि योग-साधना करनेवाले आरंभमें अक्सर किसी-न-किसी प्रकारकी भौतिक बेचैनी या गड़बड़का अनुभव करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि ये लोग चौकसी रखें और सावधान रहें तो ऐसा होना जरूरी नहीं है। अथवा यदि शरीर बहुत अधिक और असाधारण रूपसे ग्रहणशील हो तो भी इन लोगोंकी रोगसे रक्षा हो जाती है। परंतु इतनी निर्मल ग्रहणशीलता पाना बहुत कठिन है जो भौतिक अंगोंको भी आंतरिक रूपांतरके वेगके साथ-साथ लगातार चला सके, हां, यदि शरीरको भूतकालमें यौगिक प्रक्रियाके लिये तैयार किया जा चुका हो तो और बात है।

मनुष्यके साधारण जीवनमें इस शृंखलाभंगका उत्तरोत्तर बढ़ते जाना ही नियम है। मनुष्यकी मनोमय सत्ता और प्राणमय सत्ता तो विश्वव्यापी शक्तियोंकी गतियोंका भरसक अनुसरण करती हैं और जगत्के आंतरिक रूपांतर तथा विकासकी धारा उन्हें कुछ दूरतक आगे बढ़ा देती है। किंतु शरीर, जो जड़-प्राकृतिक नियमोंसे बंधा हुआ होता है, बहुत ही सुस्त चालसे चलता है। कुछ वर्षोंके बाद, सत्तर या अस्सी, सौ या दो सौ वर्षों बाद — और यही शायद अधिक-से-अधिक अवधि है — यह शृंखलाभंग इतना अधिक बढ़ जाता है कि, बाह्य सत्ता टुकड़े-टुकड़े हो जाती है। मांग और उत्तरमें अंतर होनेके कारण तथा शरीरकी उत्तरोत्तर बढ़ती हुई असमर्थता और अप्रत्युत्तरकारिताके कारण मृत्युकी घटना आ उपस्थित होती है। योग-साधना करनेसे सृष्टिके आंतरिक रूपांतरकी धीमी पर अनवरत प्रक्रिया अधिक तीव्र और द्रुतगामी हो जाती है, किंतु बाह्य रूपांतरकी चाल साधारण जीवन जितनी ही रहती है। फलतः, यदि सावधानी न रखी जाय और ऐसा संरक्षण न प्राप्त कर लिया जाय जिसके द्वारा शरीरको आंतरिक प्रगतिके यथासाध्य साथ-साथ चलनेमें सहायता मिले, तो योग-साधना करनेवालेकी आंतरिक और बाह्य सत्ताके बीचका यह असामंजस्य और भी बढ़ जाना चाहता है। फिर भी शरीरका स्वभाव ही ऐसा है कि वह तुम्हें पीछेकी ओर खींचता है। यही कारण है कि बहुतोंको हमें यह कहनेके लिये मजबूर होना पड़ता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मत खींचो, जल्दबाजी मत करो, शरीरको अनुसरण करनेके लिये तुम्हें समय देना ही पड़ेगा।' कुछ साधकोंको तो वर्षों रोक रखना और अधिक साधना करनेसे अथवा अधिक आगे बढ़नेसे मना करना, आवश्यक हो जाता है। कभी-कभी इस असमतोलतासे बचना असंभव हो जाता है। और तब तुममें गड़बड़ी पैदा होती ही है, जिसके भिन्न-भिन्न स्वरूप होते हैं; यह तुम्हारे प्रतिरोधके स्वभावपर और तुमने जितनी सावधानी रखी है या जितनी अवहेलना की है उसके परिमाणपर, निर्भर है। यह भी एक कारण है जिससे यह होता है कि जब-जब प्रगतिकी ओर तीव्र गति होती है तब-तब उसके बाद प्रायः निरपवाद रूपसे एक स्थावरताका काल आता है, और इस कालमें, उन लोगोंको जिन्हें सावधान नहीं कर दिया गया है ऐसा मालूम होता है मानों वह केवल जड़ता, अवरोध और निरुत्साहका अभिशापित काल हो, जिसमें समस्त प्रगति रुक गयी हो। और वे व्याकुल होकर सोचने लगते हैं, 'अरे! यह क्या हो रहा है? मेरा समय नष्ट तो नहीं हो रहा? कुछ भी उन्नति नहीं हो रही।' परंतु सच तो यह है कि आत्मसात् करनेका काल होता है, यह विश्राम इसलिये लिया जाता है कि शरीर अपने-आपको अधिक खोल दे और अधिक ग्रहणशील बन जाय तथा आंतर चेतना जिस भूमिकामें ऊपर उठ चुकी है उसके अधिक समीप पहुंच जाय। मां-बाप बहुत अधिक आगे बढ़े जा रहे थे, उन्हें रुकना पड़ेगा ताकि पिछड़ा हुआ लड़का दौड़कर उनका हाथ पकड़ सके; इसके बाद ही वे फिरसे एक साथ ही यात्रा आरंभ कर सकेंगे।

शरीरका प्रत्येक स्थान किसी-न-किसी आंतरिक गतिका प्रतीक होता है, यहां सूक्ष्म अनुकूलता और सादृश्यका एक जगत् ही है। परंतु यह एक लंबा और जटिल विषय है और हम अभी इसके ब्योरेवार चर्चामें नहीं उतर सकते। शरीरके जिस विशिष्ट स्थलपर रोगका असर हुआ है वह इस बातका सूचक है कि अंदर का असामंजस्य किस प्रकारका है। यह व्याधिके उद्गमस्थानके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखा देता है, रोग किस कारणसे हुआ है उसका यह एक चिह्न होता है। इसके अतिरिक्त, यह इस बातको भी प्रकट कर देता है कि जो प्रतिरोध हो रहा है, जिसके कारण समग्र सत्ता समान तेज चालसे चलनेमें असमर्थ हो गयी है, वह किस प्रकृतिकी है। यह संकेत कर देता है कि औषधि और उपचार क्या है। यदि कोई ठीक-ठीक समझ जाय कि भूल कहांपर है, इस बातका पता लगा ले कि कौन-सा अंग ग्रहणशील नहीं रहा है, उस अंगको खोल दे और उसमें शक्ति और प्रकाशका प्रवेश कराये तो जो कुछ बेसुरा हो गया है उसे क्षणभरमें ही फिरसे सुरमें ले आना संभव हो जायगा और रोग तुरंत भाग जायगा।

किसी रोगका उद्‌गम मनमें हो सकता है, प्राणमें हो सकता है, सत्ताके किसी भी भागमें हो सकता है। एक ही रोग अनेक कारणोंसे हो सकता है और विभिन्न व्यक्तियोंमें असामंजस्यके विभिन्न स्रोतोंमेंसे उमड़ सकता है। और यह भी हो सकता है कि रोगके-से लक्षण दिखायी देते हों, किन्तु असलमें कोई रोग है ही नहीं। और इस अवस्थामें, यदि तुम पर्याप्त रूपसे सचेतन हो, तो यह देख पाओगे कि कहींपर कोई रगड़भर लग गयी है और इस कारण प्रगतिका प्रवाह कहींपर रुक-सा गया है और यदि तुम इस रगड़को ठीक कर लो तो तुरंत चंगे हो जाओगे। ऐसे रोगका — जब वह शरीरपर असर करता हुआ-सा दिखायी देता हो तब भी — कहीं कोई सत्य कारण नहीं होता। यह बहुत कुछ कल्पित होता है और जड़ प्रकृतिपर इसका कब्जा वैसा नहीं होता जैसा कि किसी सच्चे रोगका होता है।

संक्षेपमें, यों समझो कि रोगके कारण बहुत प्रकारके और पेचीदा होते हैं; प्रत्येक रोगके बहुत-से कारण हो सकते हैं; किंतु इससे सदा यह पता चल जाता है कि सत्तामें दुर्बल भाग कौन-सा है।

(श्रीमातृवाणी, खंड ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर कहानियां :

परिवार

रंगनाथ और उसका बाप

१८३१ में चित्तूर डिस्ट्रिक्ट जजके दरवाजेपर बारह वर्षके एक बालकने दस्तक दी। वह एक गरीब किसानका बेटा था। बाप लगान न देनेके कारण जेलमें डाल दिया गया था। किसानने कुछ सरकारी जमीन ली थी परंतु फसल बिगड़ गयी और उन दिनोंके कानूनके अनुसार उसे जेलकी हवा खानी पड़ी। बाप अभी जेलमें ही था कि उसका जन्म दिन आ गया। मां रो-रोकर हलाकान हो गयी। इसीलिये रंगनाथने जजके घरपर दस्तक दी थी।

जजने सारी बात सुनकर कहा, "मैं तुम्हारे बापको जमानतके बिना नहीं छोड़ सकता। इस बातकी जमानत देनी होगी कि वह मुकदमेके लिये वापिस आ जायगा।" बेटेने कहा, "हमारे पास पैसा तो नहीं है लेकिन मैं स्वयं जमानत बननेको तैयार हूं, जबतक बाप लौट न आये मैं जेलमें रहूंगा।"

जजका हृदय भर आया। उन्होंने एक कागजपर हस्ताक्षर कर दिये जिसपर किसानको जेलसे छोड़नेका हुकुम था। रंगनाथ हरिणकी तरह दौड़ता हुआ जेल जा पहुंचा और वहांसे अपने बापको साथ लिये बड़ी रात बीते घर पहुंचा।

यही लड़का बादमें चलकर रंगनाथ शास्त्री कहलाया जो पंद्रह भाषाओंमें पढ़ और बोल सकता था।

सफेद हाथी

हिमालयके जंगलोंमें अस्सी हजार हाथियोंका दल घूमा करता था। एक विशालकाय सफेद हाथी उनका राजा था।

राजाकी मां अंधी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर कभी राजा अपने दलके साथ दूर निकल जाता था तो भी उसे मांका ध्यान बना रहता था और वह सेवकोंके हाथ उसके लिये फल भेजा करता था। लेकिन खेदकी बात यह है कि सेवक फल अपने-आप खा लेते थे और प्रेमोपहार अंधी मां तक न पहुंच पाते थे।

जब राजाको इस धोखेबाजीका पता लगा तो उसने दलको छोड़ देनेका निश्चय किया ताकि अच्छी तरह मांकी सेवा और रक्षा कर सके। वह मांको लेकर किसी कंदरामें रहने लगा जिसके पास ही एक झील थी।

एक बार बनारसका एक आदमी उधर आ निकला। वह अपना रास्ता भूल गया था और सात दिनसे इधर-उधर निराश होकर भटक रहा था।

हस्तीराजने उसके आगे झुककर उसे अपनी पीठपर बिठा लिया और बनारसकी सड़कपर छोड़ आया और आगेका रास्ता भी दिखा दिया।

लेकिन हां, मनुष्य बुरे दिलवाला था। उसने बनारसके राजाको बता दिया कि उस कंदराके पास एक सुन्दर सफेद हाथी मिल सकता है। राजाने उसके साथ कई शिकारी कर दिये और हाथीको पकड़ लानेका हुकुम दिया।

शिकारियोंने देखा सफेद हाथी झीलमें खड़ा है। उन्होंने उसे जा पकड़ा। उसने कोई विरोध नहीं किया। वे उसे पकड़कर बनारस ले आये।

जब सफेद हाथी नहीं लौटा तो उसकी मांको बहुत दुःख हुआ। उसने कहा, "चीढ़, कुटज, कनेर, कुमुदसे लेकर घासतक सब सुखी हैं पर मेरा बेटा कहां है? कहां है वह?"

इधर हाथीको एक बहुत बड़ी, फूलोंसे सजी गजशालामें रखा गया। राजा अपने-आप उसे खिलाने आता था। लेकिन हाथी कुछ न खाता था। उसने कहा, "मेरी मां यहां नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजाने कहा, "लो, सीधी तरह खाओ। मेरे दोस्त बनो।" हाथीने कहा, "लेकिन वह बेचारी अंधी कंदरामें रो रही होगी।" राजाने कहा, "तुम्हारा मतलब क्या है?" हाथीने कहा, "मेरी मां मेरे लिये रो रही होगी।"

राजाने हाथीको छोड़ देनेका हुकुम दिया। हाथी तेजीसे भागा और रास्तेमेंसे सूंडमें पानी भरकर ले गया और जाते ही मांके ऊपर छिड़कने लगा। मांने रोकर कहा, "हाय,! वर्षा हो रही है। मेरी देखभालके लिये मेरा बेटा यहां नहीं है।"

"मां, मैं आ गया, राजाने मुझे वापिस भेज दिया।"

समय आनेपर बूढ़ी हथिनी मर गयी और सफेद हाथी भी मर गया। राजाने उनकी समाधि बनवायी और उसपर हाथीकी पत्थरकी मूर्ति बनवा दी। हर वर्ष भारतके कोने-कोनेसे लोग वहां हाथीका उत्सव मनानेके लिये आने लगे।

मधुर मां

— नलिनीकांत गुप्त —

मुझसे आशा की जा रही है कि मैं तुम्हें माताजीके बारेमें कुछ बताऊं, कुछ उनकी जीवनीके बारेमें और कुछ उनके कामके बारेमें।

तुम सभी जानते हो कि उनके जीवनका पहला भाग फ्रांसमें गुजरा था। वे फ्रांसमें ही, पेरिसमें, पैदा हुई थीं; स्वभावतः बहुत बार लोग उन्हें फरासीसी और यूरोपीय कहते थे लेकिन माताजी हमेशा इसका विरोध करती और कहती थीं, "मैं फरासीसी नहीं हूं, मैं यूरोपीय नहीं हूं।" शायद तुम्हें यह सुनकर कुछ अजीब-सा लगे कि उनका परिवार मिस्रसे आया था। उनके जन्मसे एक वर्ष पहले ही उनका परिवार फ्रांस आया था। और मिस्रमें उनका घराना बहुत पुराना और प्रतिष्ठित माना जाता था, शायद उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबंध वहांके राजाओं और फरओनके साथ था। उनका लालन-पालन भले यूरोपमें हुआ हो पर वे यूरोपीय नहीं थीं। वास्तवमें उनका घराना मध्य पूर्वका कहा जा सकता है, यानी उस भागका जो पश्चिमी एशिया और पूर्वीय यूरोपको मिलाता है। इसका मतलब हुआ यूरोप और एशियाका मेल, दोनोंका समन्वय और यह समन्वय माताजीके जीवन और उनकी नियतिका एक अंग रहा है।

जैसा कि मैंने कहा, उन्होंने अपने जीवनके पहले कुछ वर्ष फ्रांसमें बिताये, लेकिन फ्रांसमें ही क्यों? इस चुनावका भी कुछ प्रयोजन था। आज हम उनके जीवनके आधारभूत अर्थ, उनके जीवन-ध्येय और उनके कार्यके बारेमें कुछ जानते हैं। वे एक नयी ज्योति उतारनेके लिये आयी थीं। वे एक नया जगत् चाहती थीं, वही पुराने स्वभाव, पुरानी संस्कृतिवाला जगत् नहीं, एक नयी मानव-जाति, एक नया संसार। वे अपने साथ उस नयी ज्योतिको लायी थीं जो नया सर्जन करेगी, मानव और संसारको नया रूप देगी। लेकिन नये मानव और फ्रांसमें क्या संबंध था? नयी ज्योतिके यहां प्रकट होनेके लिये पहली जरूरत यह है कि तुम पहले मनमें उसे ग्रहण कर सको, यानी उसे मनसे देखकर पहचानो कि यह नयी ज्योति है और उसे बुलाओ। मनुष्यके अंदर सबसे ऊंचा पात्र मन ही है। शायद तुम्हें धम्मपदकी शुरूकी पंक्तियां याद हों जिनमें बुद्धने कहा है कि मन ही मानव क्षमताओंमें सबसे ऊंचा है और साथ ही सबको अपनेमें समाये हुए है। जब यह ज्योति नीचे उतरती है तो सबसे पहले तुम्हारे सिरको, यानी मनको छूती है। तुम उसे देखते हो और उसके बारेमें सचेतन रहते हो। आजके जगत्में फ्रांस मानवजातिके मनके उच्चतम रूपका प्रतिनिधित्व करता है, मानव सभ्यता और संस्कृतिका फूल है। माताजीका फ्रांसका जीवन वहांके उच्च कुलीन वर्गोंके साथ बीता। अपने समयके बड़े-बड़े वैज्ञानिक, कलाकार, कवि, निर्मल अभिरुचिवाले लोगोंके साथ उनका परिचय रहा। वे उन लोगोंसे इसलिये हिलती-मिलती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं ताकि उनके द्वारा इन लोगोंको नयी ज्योतिका संपर्क मिल सके। इस उद्देश्यको सामने रखते हुए उन्होंने एक छोटा-सा दल बनाया जिसका नाम था 'कॉस्मिक' या वैश्व। माताजी जो काम कर रही थीं वह सभीके लिये, पूरब-पश्चिमके लिये, सबके लिये, हर एक व्यक्तिके लिये था। माताजीकी चेतना सारे संसारको अपने अंदर लिये रहती थी। वे एक नये प्रकारका मनोमय लोक बना रही थीं जो उच्चतम मानसिक विकासके द्वारा और भी अधिक विस्तृत मनतक जा पहुंचता था, जो अहंकारमय मनसे परे है। जैसा कि मैंने कहा, मनुष्यका मस्तिष्क या मन ही सबसे ऊंचा भाग है और उसके लिये नयी ज्योतिको ग्रहण करना अपेक्षाकृत ज्यादा आसान है। इस संबंधमें श्रीअरविन्दकी कविता 'दि गोल्डन लाइट' याद आती है जिसमें बताया गया है कि वह कैसे ऊपरसे नीचे उतरती है। मस्तिष्कमें आकर विचारोंको आलोकित करती है, बुद्धिका विकास करती है, उसे तीक्ष्ण और गभीर बनाती है। लेकिन समझना ही काफी नहीं है, तुम्हें उससे प्यार होना चाहिये, तभी तुम उसे पा सकोगे। फिर स्वर्णिम ज्योति तुम्हारे हृदयमें घुसती है। उसके बाद वह और अधिक सक्रिय और ठोस रूपमें उतरकर प्राणमय लोकमें आती है और अंतमें वह तुम्हारे चरणोंपर उतरती है, यानी तुम्हारे भौतिक शरीरको पकड़ लेती है। वह ठोस रूप लेती है और मानों तुम्हारे शरीरमें ही भर जाती है। यह शरीरको सुन्दर बनाती है।

इस प्रकार माताजी मानवताके मस्तिष्कमें उच्चतम सोपानपर स्वर्णिम ज्योति लाती हैं। कह सकते हैं कि उन्होंने मानवजातिको दिव्य जीवनकी दीक्षा देनेका काम फ्रांसमें शुरू किया। अपने कामके अगले चरणके लिये वे जापान गयीं। जापानमें उन्होंने पूरे पांच वर्ष बिताये। जापान ज़ेन पद्धतिके ध्यानका देश है। यह आंतरिक चेतनामें प्रवेश करनेका एक विशेष उपाय है। यह मानसिक चेतना नहीं, एक अधिक संवेदनशील गुह्य लोक है। जापानी जाति एक संवेदनशील और कलात्मक जीवन-शक्तिवाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजा है जो जीवनकी हर गति-विधिमें सुव्यवस्था और सौंदर्यकी खोज करती है। स्वर्णिम ज्योति इस भौतिक जगत्में प्रकट होकर शरीरको अपने हाथमें ले सके इसके लिये यह जरूरी है कि वह इस प्रकारकी जीवन-शक्तिको अपनाए। जापानी पहलवान अपनी जीवन-शक्तिके लिये प्रसिद्ध होते हैं। शायद तुमने चित्रोंमें देखा हो उन सबकी तोंद बड़ी हुआ करती है। उनकी मान्यता है कि बड़ी तोंद जीवन-शक्तिका भंडार होती है। इसका यह मतलब नहीं है कि मैं तुम्हें तोंद बड़ी करनेकी सलाह दे रहा हूं। नहीं, बात उल्टी है। खैर, शुद्ध रूपसे भौतिक क्रियाओंमें भी केवल भौतिक बलसे काम नहीं चलता, प्राणिक बल या जीवन-शक्तिकी जरूरत होती है। जापानियोंका प्राण बलवान्, सुव्यवस्थित, संवेदनशील और नियंत्रित होता है। तुम्हें शायद माताजीकी पुस्तक 'प्रार्थना और ध्यान'की दो-एक प्रार्थनाएं याद हों जिनमें वे चेरीके पेड़की बात कहतीं हैं। जापानकी कलात्मक-भावना, सौंदर्य-भावना, शुद्ध निरीक्षण, असंस्कृत, अपरिपक्व और उद्दाम प्राण नहीं बल्कि सुरुचिपूर्ण, सुखद, आत्मीय संवेदन, सुव्यवस्थित आह्लादका प्रतीक है चेरी कुसुम। माताजीने अपने एक अंतर्दर्शनका भी उल्लेख किया है जिसमें वे एक जापानी मां और उसके शिशुका सुन्दर शब्द-चित्रण करती हैं। वह मानवजातिमें जन्मे एक नवजात शिशुका बिंब है। इस प्रकार चेरी कुसुमके देशमें समस्त जगत्के लिये एक नये प्राण-लोकने जन्म लिया।

माताजी सर्जक चेतना हैं। वे जहां भी हों, उनकी उपस्थिति ही नव-सर्जन शुरू कर देती है। एक नये लोकको देश और कालके अनुसार चेतनाके एक नये आयामको जन्म देती है। वे एक नये जगत्को जन्म देती हैं और वह स्थायी रहता है। वह मानव-विकासक्रममें एक नयी उपलब्धि होता है।

हम जिस शुद्ध बलिष्ठ प्राणकी बात कर रहे हैं उसके आवासके लिये, उसकी अभिव्यक्तिके लिये उसीके अनुकूल शरीर भी तो चाहिये। स्वर्णिम ज्योतिको चरणोंतक उतारना होगा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी यहांपर यही काम कर रही थीं। इसीके लिये उन्होंने आश्रमका निर्माण किया था। तुम जानते ही हो कि वे शारीरिक शिक्षणको कितना अधिक महत्त्व देती थीं। यह इसीलिये था कि शरीर और इंद्रियां स्वर्णिम ज्योतिको ग्रहण करने योग्य बन जायं। वे हमेशा कहा करती थीं कि शारीरिक शिक्षण नयी चेतना, नयी ज्योतिके लिये आधार तैयार करता है। नयी ज्योति बहुत बलवान है उसे धारण करनेके लिये बलिष्ठ, सुन्दर और सहनशील शरीर जरूरी है। वह केवल ज्योति ही नहीं है, शक्ति भी है। हमें उसे धारण करके उसकी आज्ञाके अनुसार चल सकना चाहिये।

वास्तवमें वे यहां इस दिव्य ज्योतिको पार्थिव शरीर, एक ठोस भौतिक रूप देनेके लिये आयी थीं। लेकिन सुन्दर शरीर अपने-आपमें कोई लक्ष्य या उपलब्धि नहीं है। उसके लिये सुन्दर प्राणका होना बहुत जरूरी है और इन दोनोंकी प्राप्तिके लिये सुन्दर मन नितांत आवश्यक है। माताजीने यहां जिस शारीरिक शिक्षणकी व्यवस्था की है वह सुन्दर शरीरतक पहुंचानेके लिये है और जिस विद्यालयका संगठन किया है वह सुन्दर मनके प्रशिक्षणके लिये है, लेकिन सुन्दर मनका यह अर्थ नहीं है कि उसमें सब प्रकारकी सूचनाओंका भंडार हो, किताबोंका निचोड़ हो। उसका मतलब है मनकी शुद्धि, मानसिक तत्त्वकी शुद्धि और चेतनाको इतना ऊंचे उठाना कि वह ज्योतिकी खोज करे और उसे पहचान सके। मैंने अभी कहा है कि तुम्हें नयी ज्योति पहले मस्तिष्कके द्वारा प्राप्त करनी होगी लेकिन उसे हृदय और प्राण-शक्तिके द्वारा सक्रिय रूपमें भी प्राप्त करना होगा। तुम केवल उसे देख और पहचान ही न सको, तुममें उसके लिये प्रेम और निष्ठा भी हो। और यहीं माताजीका मुख्य काम आता है, हमारे लिये उनका मुख्य उपहार, उनकी कृपा यही है। कहा जाता है कि जब तुम किसी चीजसे प्यार करते हो तो यह हृदयके द्वारा होता है लेकिन, प्रेमके अंदर एक और प्रेम है, हृदयके अंदर एक और हृदय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। सच्चा प्रेम, वह प्रेम जो दिव्य होता है, इसी हृदयके अंदर स्थित हृदयमें, तुम्हारी अंतरात्मामें निवास करता है। यह अंतरात्मा ही तुम्हारी सच्ची सत्ता है और इस अंतरात्माका बाहर आना, हमारी परिभाषामें उसका सामने आना ही माताजीका विशेष उपहार है, यहांपर उपस्थित हर व्यक्तिपर उनकी विशेष कृपा है। उन्होंने तुम्हारी अंतरात्मा दी है। मैं बहुत बार कहा करता हूं कि यहां रहनेवाले प्रत्येक व्यक्तिके लिये, हमारे, तुम्हारे और सबके लिये यह एक बहुत बड़ा सौभाग्य है कि हमारे अंदर यह अंतर सत्य, निकटस्थ व्यक्ति, यह दिव्य बालक उपस्थित है। यह दिव्य बालक ही तुम्हारे दिव्य व्यक्तित्वका निर्माण कर रहा है। यही तुम्हें सुन्दर मन, सुन्दर प्राण और सुन्दर शरीर देगा, आवश्यकताके अनुसार सब कुछ देगा जो पूर्ण, निर्दोष और सुन्दर होगा। यहां 'सावित्री'की यह पंक्ति याद कर लो जो शायद तुमने माताजीके मुंहसे ही सुनी हो जिसका भाव है: स्वर्ग सेतु बन गया है, ज्वाला शिशुने जन्म ले लिया है।

स्वयं माताजीने यह स्वर्ण सेतु बनाया है और स्वर्णिम बालक आ चुका है। तुममेंसे हर एकमें यह स्वर्णिम शिशु है। तुम्हें उसे खोजना और पहचानना होगा, यही तुम्हारे जीवनका लक्ष्य है, तुम धरतीपर जो कुछ करना चाहते हो उस सबका ध्येय है। तुममेंसे कुछने अवश्य ही इस शिशुकी उपस्थितिका अनुभव किया होगा। ये चीजें, जिन्हें मुलाकातें कह सकते हैं, प्रायः स्वप्नमें आती हैं। मैं कम-से-कम कुछ लोगोंको जानता हूं जिन्होंने मुझे इस प्रकारकी चमत्कारी अनुभूतियोंकी बातें सुनायी हैं। यह तुममेंसे हर एकके लिये संभव है अगर तुम उसे देख पाओ तो पहचानकर पकड़ रखो, स्नेह और प्रेमसे जकड़ लो। माताजी आज भी जीवित हैं और हम लोगोंमें कार्य कर रही हैं, उनकी दिव्य उपस्थिति हमारे साथ है, वे मूर्त्त रूपमें भी उपस्थित हैं क्योंकि तुममेंसे हर एकके अंदर दिव्य शिशु मौजूद है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं इस वार्ताको एक प्रार्थनाके साथ समाप्त करता हूं। कुछ समय पहले मैंने यह प्रार्थना क्रीडांगनके छोटे बच्चोंके लिये लिखी थी:

"मधुर मां, तुम्हारे क्रीडांगनके बालक देवदूत हैं। वे दिव्य नहीं बने हैं लेकिन वे देवदूत, पार्थिव देवदूत हैं। उन्हें सदा अपनी आंखोंके आगे, अपनी प्रेमभरी चेतनाकी गोदमें रखना।"

तुम लोगोंकी ओरसे मैंने माताजीसे यह प्रार्थना की थी और मुझे विश्वास है कि उनका उत्तर स्वीकारात्मक ही होगा।

(४ अप्रैल १९७५को आश्रमके बालकोंके सामने दी गयी वार्ता)

माताजीका एक अप्रकाशित पत्र

१५ मई, १९३४

देखो, मेरे बच्चे, यह बड़े खेदकी बात है कि तुम अपनेमें ही बहुत अधिक व्यस्त रहते हो। तुम्हारी आयुमें मैं पूरी तरह अपनी पढ़ाईमें लगी रहती थी, मैं अपना समय अपने-आपको शिक्षित करने, उस सबको सीखने, समझने तथा जाननेमें बिताती थी। मुझे इसीमें रस आता था, बल्कि मुझे यह रोमांचित कर देता था। मेरी मां मुझे और मेरे भाईको बहुत प्यार करती थीं, वे हमें कभी बुरी मनोवस्था या असंतोष और आलस्यकी अवस्थामें नहीं जाने देती थीं। यदि हम कभी उनसे किसी बातकी शिकायत करते और कहते कि हम खुश नहीं हैं तो वे हमारी हंसी उड़ातीं या हमें डांट देतीं और कहतीं: "क्या मूर्खता है यह! इतनी बेतुकी बात मत करो जाओ, अपना काम करो, इसकी चिंता मत करो कि तुम इस समय बुरी मनोवस्थामें हो या अच्छीमें। मुझे इसमें जरा भी रुचि नहीं है।"

मेरी मांका यह कहना बिलकुल ठीक था और उन्होंने मुझे ऐसे अनुशासनकी तथा काममें एकाग्र होनेके समय अपने-आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूल जानेकी आवश्यकताकी जो शिक्षा दी उसके लिये मैं सदा उनकी आभारी रही हूं।

मैंने तुम्हें यह सब इसलिये बताया है कि जिस चिताकी तुम बात कर रहे हो उसका मूल कारण यह तथ्य है कि तुम अपनेमें बहुत अधिक व्यस्त रहते हो। अधिक अच्छा तो यह होगा कि तुम अपने कामको, जो तुम कर रहे हो (चित्रकला और संगीतको), अधिक सुधारनेकी ओर ध्यान दो, तुम्हें अपने मस्तिष्कका भी विकास करना है जो अभीतक बिलकुल असंस्कृत है और उतना ज्ञान प्राप्त करना है जितने की एक मनुष्यको, यदि वह अज्ञानी और असंस्कृत व्यक्ति नहीं बना रहना चाहता, आवश्यकता होती है।

यदि तुम दिनमें ८ या ९ घंटे काम करोगे तो तुम्हें भूख भी अच्छी लगेगी, खाना ठीकसे खाओगे, नींद भी आयेगी और रात्रिमें शांतिपूर्वक सो भी सकोगे। तब तुम्हारे पास यह सोचनेके लिये समय नहीं होगा कि तुम्हारी मनोवस्था अच्छी है या बुरी। मैं यह सब तुम्हें प्रेमवश ही कह रही हूं और मुझे आशा है कि तुम इसे समझ लोगे।

तुम्हारी मां जो तुम्हें प्यार करती है

माताजीकी बातचीतके आधारपर :

सत्ताका रहस्य

क्या तुमने कभी अपने-आपसे यह पूछा है कि आखिर यह विश्व है ही क्यों? कम-से-कम यह धरती जिसके साथ हमारा इतना संबंध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, जो हमारे लिये इतनी प्रामाणिक है और हमें वास्तविक लगती है किसलिये है? अगर तुमने यह नहीं पूछा तो शायद बहुत बुद्धिमानी की। मैंने तुमसे बहुत बार तेओंकी बात की है। वे अपनी तरहके एक सच्चे संत थे। लोग उनके पास आकर प्रश्न पूछा करते थे। बहुत-से पूछते थे: "यह विश्व क्या है?" उनका उत्तर होता था: "तुम्हें इससे क्या?" कई पूछते थे: "यह विश्व ऐसा क्यों है?" इसके उत्तरमें वे कहा करते थे: "विश्व जैसा है वैसा है, इससे क्या आता-जाता है?" कुछ और लोग कहते: "हमें यह जगत् संतोषजनक नहीं लगता।" यहां हम मतलबकी बातपर आते हैं। जिन लोगोंको जगत् संतोषजनक नहीं लगता उनसे मैं कहूंगी: बस, कामपर लग जाओ, उसे बदलनेकी कोशिश करो! ऐसा रास्ता ढूंढो जिससे यह और तरहका हो सके, ज्यादा अच्छा हो सके। चीजें जैसी हैं वैसी हैं, उनके बारेमें अनुमान लगानेका क्या लाभ, चिंतित होनेसे क्या फायदा? कोई उपाय ढूंढो ताकि चीजें वैसी हो सकें जैसी होनी चाहिये। चीजें जैसी हैं वैसी क्यों हैं? ऐसी बात नहीं है कि कारण जाना ही नहीं जा सकता, लेकिन हम उसके बारेमें हमेशा निश्चित नहीं हो सकते। करने लायक सबसे अच्छी बात यह है कि जो है, जैसा है वैसा ले लो और जैसा होना चाहिये वैसा बनानेकी कोशिश करो। अब मजेदार बात यह है कि यदि तुम सच्चे हो, यदि सचाईसे जानना चाहो और ईमानदारीसे काम करो तो तुम जान जाओगे कि चीजें ऐसी क्यों हैं, उनका कारण, उनका मूल, उनकी पद्धति, सब कुछ जान जाओगे, क्योंकि ये सब एक ही हैं। सभी चीजोंके आधारमें एक ही सत्य है और वह न हो तो कुछ भी न होगा। अगर तुम उस सत्यको पकड़ सको तो तुम साथ-ही-साथ सृष्टिके मूल और उसके बदलनेके तरीके जान जाओगे। दूसरे शब्दोंमें कहें तो, यदि भगवान्‌के साथ तुम्हारा संबंध है — भगवान् ही तो वह आधार है — तो तुम्हारे पास सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीजोंकी चाबी है। तुम 'क्यों' और 'कैसे' का उत्तर जानते हो और बदलनेकी तरकीब भी जानते हो। तब करने लायक काम बस यही है: काममें लग जाओ। शायद तुम कहो: "यह तो बहुत बड़ा काम है, बहुत कठिन है। संसारके लिये या संसारपर क्रिया करना मेरे बसका काम नहीं है।" अच्छा, तो अपने-आपसे शुरू करो। तुम पदार्थका एक लौंदा हो, सारे विश्वका प्रतीक या प्रतिनिधि हो। बस, तुम्हारा काम यही हो कि इस अंशका सुधार करो, उसपर एकाग्रता रखो, अपने अंदर जाओ, तुम अपने इस छोटे-से व्यक्तिके अंदर ही उस चाबीको पा जाओगे जिसे खोज रहे हो।

विश्व-इतिहासका आलेख

धरतीपर जो कुछ हुआ है, सृष्टिके आरंभसे आजतक, बिना अपवादके, उस सबका अभिलेख किसी विशेष लोकमें या चेतनाके किसी स्तरपर मौजूद है। मनुष्यने जो कुछ सोचा-विचारा है, जो कुछ खोज या गवेषणा की है वह सब बड़ी सावधानीसे संचित है। अगर तुम धरतीके पिछले इतिहासके बारेमें या किसी विशेष समय या स्थानकी घटना जानना चाहो तो बस तुम्हें अपने-आपको उस लोकमें ले जाना होगा और तुम देख सकोगे।

वह एक बड़ी अजीब-सी जगह है, कुछ-कुछ पुस्तकालय जैसी। वहां मानों बहुत सारे कोषाणु हैं, हर एकके अंदर किसी विशेष विषयकी जानकारी भरी है। वे देखनेमें चौखूंटे लगते हैं और प्रायः बंद रहते हैं। अगर तुम किसी विशेष चौकोणको देखना चाहो, तो तुम्हें एक बटन दबाना होता है और अंदरसे एक खरीता निकल आता है। तुम उसे खोलकर जो कुछ जानना चाहो जान सकते हो। वहां ऊपर-नीचे, इधर-उधर, इस तरहके लाखों, करोड़ों,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरबों कोषाणु और खरीते हैं। सौभाग्यवश मानसिक जगत्में तुम जहां चाहो, जैसे चाहो घूम-फिर सकते हो। वहां ऊपर-नीचे जानेके लिये सीढ़ी या लिफ्टकी जरूरत नहीं होती।

लेकिन सवाल यह है कि वहां पहुंचा कैसे जाय? लो। सबसे पहली चीज तो यह है कि अपने-आपको पूरी तरहसे नीरव बनाओ। मानसिक चिंतन, हलचल वगैराको पीछे छोड़ दो। तुम्हारी चेतनामें कोई विचार न आये। वह शांत पानीकी चादरकी तरह शांत और स्थिर रहे और दर्पणकी तरह चिकनी और परिष्कृत रहे। मैंने पुस्तकालयका जो वर्णन किया है वह तो एक बिंब है, असली चीज इससे कुछ अलग होती है। लेकिन फिर भी इससे तुम्हें कुछ अंदाज तो मिल ही जाता है जिससे तुम आगेकी ओर चल सकते हो। तुम अपने नीरव मनमें चेतनाका एक बिंदु बनाते हो और उसे अपना एलची बनाकर अपनी जानकारी प्राप्त करनेके लिये भेजते हो। इस बिंदुको पूरी तरह अनासक्त और स्वतंत्र होना चाहिये ताकि वह जहां चाहे जा सके, क्योंकि अगर वह कहीं किसी तरह तुम्हारे मनके साथ बंधा रहेगा तो तुम अपने मनकी साधारण गतिसे अलग न हो सकोगे और तुम्हारे दिमागमें जो कुछ है उससे आगे न बढ़ पाओगे। तुम्हारा दिमाग एकदम खाली होना चाहिये, तुम्हारे मनमें अपनी समस्याके बारेमें कोई पहलेसे बनी हुई धारणा न होनी चाहिये कि उसका हल ऐसा या वैसा होना चाहिये। जैसा कि मैंने कहा, तुम्हारा मन कोरे कागज या साफ सिलेटके जैसा होना चाहिये जिसपर कुछ भी न लिखा हो, कहीं कोई निशानतक न हो। इसके सत्यको जाननेकी सच्ची निष्कपट अभीप्सा हो। पहलेसे ऐसी धारणा न बनाओ कि वह कैसा होगा वरना तुम अपने दिमागकी रचनाको ही पाओगे। तुम्हें अपनी आंतरिक खोजसे जो सूचनाएं मिलें उन्हें तुम अपनी बाहरसे प्राप्त सूचनाओंके द्वारा, दूसरोंके अनुभवों और शास्त्रोंकी रोशनीमें जान सकते हो। आंतरिक ज्ञानको बाहरी ज्ञानका स्थान नहीं लेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये, दोनों एक-दूसरेकी सहायता करते और एक-दूसरेकी पूर्ति करते हैं। लेकिन एक प्रकारके मिश्रणसे तुम्हें सावधान रहना चाहिये। तुम्हारे नीरव मन और आंतरिक चेतनाको ज्ञान प्राप्त होता है लेकिन जैसे ही तुम उसे साधारण भाषामें व्यक्त करना चाहो वैसे ही तुम्हारा मस्तिष्क सक्रिय हो जाता है और हो सकता है, बल्कि साधारणतः होता यह है, कि दिमाग अपनी ही सामग्री और अपनी ही रचनाएं देने लग जाता है जिससे भौतिक ज्ञान विकृत हो जाता है। कभी-कभी तुम ऐसा कर सकते हो, तुम जो कुछ देखो उसे ठीक-ठीक लिखवाते जाओ और दूसरा जो कुछ सुने उसे जैसा-का-वैसा लिखता जाये।

मैंने पुस्तक पढ़नेका रूपक दिया है पर यह रूपक ही है। वास्तवमें जो चीज होती है, वह एक प्रकारका बोध है और वह बोध बिंबके रूपमें हो सकता है या वर्णनके रूपमें भी हो सकता है। और कभी वह एक प्रश्न, सीधे-सादे उत्तरके रूपमें भी हो सकता है। तुम जिस चेतनामें प्रवेश करते हो उसके अनुसार, स्तरके अनुसार नाना प्रकारके अभिलेख हो सकते हैं।

स्वभावतः यह प्रक्रिया बहुत आसान नहीं और हर एकको प्राप्त नहीं हो सकती, एक साधारण किताबकी तरह नहीं मिल सकती। इसके लिये विशेष अभिरुचि और विशेष तपस्याकी जरूरत है।

सोसायटी समाचार

*पहली जनवरी १९७६ को आश्रममें प्रातः ६ बजे श्री सुनीलका नये वर्षका संगीत सुनाया गया था, कुछ देर बाद श्रीमांके चित्र-वाले नये कलेण्डर बांटे गये और शामको प्लेग्राउण्डमें इसी दिनके उपलक्षमें 'मार्च पास्ट' हुआ। फिर चौथे सत्रकी प्रतियोगिताओंके विजयी खिलाड़ियोंको विजय-कार्ड बांटे गये तथा अंतमें ध्यान हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*६ जनवरीको बाल विहारके बालकोंने आश्रमकी रंगशालामें 'नैरकलम्', एक संस्कृत नाटक किया। निरकलाकी जिज्ञासा और खोज उसे 'उस' तक ले जाती है जो सर्वव्यापी है।

*२७ जनवरीको आकाशवाणीने श्री नवजातजीकी एक वार्ता 'मृत्यु और अमरता' प्रसारित की।

*श्री पी. पी. मल्लिकने, अपनी दिल्ली यात्राके दौरान, २८ जनवरीको दिल्लीकी सोसायटी शाखामें 'श्रीअरविंदकी दृष्टिमें योग तथा जीवन' पर भाषण दिया।

*अमरावती (महाराष्ट्र) की सोसायटी शाखाने २० जनवरीको एक सार्वजनिक बैठककी व्यवस्था की। इस वैठकके अध्यक्ष थे श्री शिवाजी राव पटवर्धन। इसमें काफी लोग आये थे। सोसायटी हर महीने इस तरहकी सार्वजनिक वार्ताएं और बैठकें करनेका विचार रखती है।

*बड़ौदा शाखाने ३ दिन, २४ से २६ जनवरी, के शिविरकी टाउन हॉलमें व्यवस्था की। इन बैठकोंमें श्री अनिरुद्ध स्मार्तने श्रीअरविंद शिक्षाके बारेमें बताया। विषय थे: जीवन, योग, पूर्णयोग, साधना, रूपांतर तथा सावित्री। शिविरके अध्यक्ष थे नड़ियादके श्री गोवर्धन भाई पटेल। अहमदाबादके श्री राम भाई अमिन भी इन भाषणोंके समय उपस्थित थे।

घोषणा: श्रीअरविंद सोसायटीके शिक्षण, अन्वेषण तथा प्रगति विभागने अध्यापक-प्रशिक्षणका कार्यक्रम बनाया है। यह पहली मईसे १५ जुलाईतक दो सत्रोंमें चलेगा[१]। यह मुख्य रूपसे इस-लिये किया गया है कि अध्यापक श्रीअरविंद तथा माताजीकी शिक्षा-पद्धतिके बारेमें जान सकें। यह कार्यक्रम श्रीअरविंदके 'योग समन्वय'की मनोवैज्ञानिक संरचना तथा उनकी सर्वांगीण दृष्टिके

---

[१]लेकिन जिनके पास इतना समय न हो वे पहले सत्रमें १ मई से ३१ मईतक सम्मिलित हो सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधारपर होगा जो मानव व्यक्तित्वके शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, चैत्य तथा आध्यात्मिक पहलुओंको सम्मिलित करती है। इस कार्यक्रममें शिक्षा, परियोजना, खोज आदि शैक्षणिक परीक्षणोंमें भाग लेना होगा। इसमें भाषण, वाद-विवाद, प्रदर्शन आदि होंगे। जीवनमें कला (संगीत, नाटक, नृत्य) का उपयोग तथा हठयोगका प्रारंभिक अध्ययन कराया जायगा।

खाने-पीने, रहने-सोनेके बारेमें आवेदन पत्रोंमें लिखा जायगा। पत्र-व्यंवहार इस पतेपर करिये :

शिक्षा अन्वेषण प्रगति विभाग, श्रीअरविंद सोसायटी,
पांडिचेरी-६०५००२।

आवेदन पत्र १५ अप्रैल १९७६ तक ही स्वीकार किये जायंगे।

*तपोगिरि श्रीअरविंद अध्ययन सेमिनार: 'मां जिसकी हम आराधना करते हैं' विषयपर एक अध्ययन सेमिनार होगा जो २ जूनसे ६ जून तक चलेगा। पता है:

तपोगिरि, रामगढ़ तल्ला, नेनीताल, यू. पी.

जिन्हें इसमें रस हो उनका स्वागत है। रहने-खानेको व्यवस्था का खर्च ५/- प्रतिदिन होगा। सेमिनारकी निश्चित तारीखसे पहले जाने तथा सेमिनारके बाद कुछ दिन रहनेकी भी व्यवस्था की जा सकती है। अधिक जानकारीके लिये लिखिये :

डा. इंद्रसेन, तपोगिरि, रामगढ़, जिला नैनीताल – २७३१५८; यू. पी.।

*माताजीकी सभी पुस्तकें हिंदीमें 'मातृवाणी'के नामसे १५ खंडों-में छपने वाली है। तीन खंड तैयार हैं और दो खंड प्रेसमें हैं।

आप ग्राहक बन गये ? जानकारीके लिये लिखें :

शब्द, श्रीअरविंद आश्रम, पांडिचेरी-६०५००२

पुरोधाके मार्च अंकसे श्रीअरविंदकी उपनिषदोंकी टीका हिंदी रूपमें आनी शुरू हो रही है। आपको रस हो तो ८ रुपये भेज-कर पुरोधाके ग्राहक बन जायं :

पुरोधा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी – ६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

For Love there is no other curtain than ignorance.

The Mother

Inland Carriers (Bombay)

For **Safe, Speedy & Efficient Movement of Cargo**

Head Office :

Takhatmal Estate, P. O. Box No. 12, AMRAVATI

Branches :

112, Sarang Street, BOMBAY-3, Phone : 327710
Bhistiwad, AHMEDABAD, Phone : 34098

Daily parcel Service to & from

Bombay, Ahmedabad, Baroda, Poona, Sholapur, Ichalkaranji, Bangalore, Nagpur, Amravati, Raipur & Malegaon (Dist. Nasik)

THE CARRIERS WITH A DIFFERENCE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

NOTICE

To all the members of Sri Aurobindo Society

The Annual Meeting of the members of Sri Aurobindo Society will be held on Tuesday, the 20th April 1976, at 5-30 p.m. at Sri Aurobindo Bhavan, 8, Shakespeare Sarani, Calcutta, to transact the following business: —

1. To confirm the minutes of the last meeting,

2. To consider and approve the audited Balance Sheet and Income and Expenditure account of the Society for the year ending 31. 12. 74,

3. To consider and adopt the Executive Committee's annual report of the Society for the year 1974,

4. To appoint an auditor for the Society for the year 1975,

5. Consideration of the proposal for alteration of Memorandum of Association and the rules and regulations of the Society.

6. To create new categories of membership on such terms and conditions as deemed fit, and

7. To consider any other matter with the permission of the Chair.

6th March 1976 CHAIRMAN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

True love, that which fulfils and illumines, is not the love one receives but the love one gives.

The Mother

Indian Transport Agency

Approved carriers of Government of Assam,

Tea Industries and renowned concerns

24, Ganesh Chandra Avenue

CALCUTTA-13

Phones 23-1488 23-9652 23-3157

Branches :

ALL OVER ASSAM

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Statement about ownership and other particulars about Hindi Monthly (Agnishikha), to be published in the first issue every year after the last day of February.

FORM IV (See Rule 8)

1. Place of Publication :	Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry
2. Periodicity of its publication :	Monthly
3. Printer's Name :	Amiyo Ranjan Ganguli
Nationality	Indian
Address	Sri Aurobindo Ashram Press, Pondicherry-605002
4. Publisher's Name :	Secretary, Sri Aurobindo Society
Nationality	Indian
Address	Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry-605002
5. Editor's Name :	Ravindra
Nationality	Indian
Address	Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry-605002
6. Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one per cent of the total capital :	Sri Aurobindo Society, Pondicherry-605002

I, Navajata hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date : 1st March, 1976

(Sd/) Navajata
Signature of Publisher

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Madho reaps in abundance the fruits of his labour— thanks to Shriram Urea!

Like Madho, you also can reap a richer harvest. Your best efforts alone are not enough — you need the best fertilisers too. Shriram Urea improves the fertility of your soil ... has maximum nitrogen content (46.4%)... can be used effectively for all crops even under adverse soil, climatic and water management conditions, because it is ideal for foliar spraying.

Contact your nearest Shriram authorised distributor dealer or cooperative society for your requirements of Shriram fertilisers.

Your efforts + Shriram fertilisers = bumper harvests and profits!

SHRIRAM

SHRIRAM CHEMICALS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

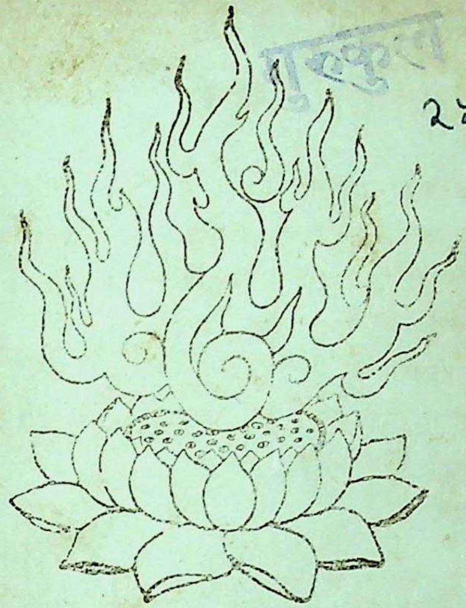

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

अप्रैल १९७[illegible] वर्ष [illegible], अंक [illegible], पूर्णांक [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका

सूची

श्रीअरविन्दके पत्र : अभीप्सा

श्रीमातृवाणी (प्रत्येक घटना पूर्वनिश्चित ? दृष्टिकोणपर निर्भर, चेतनाके सत्य, योगका ध्येय, विश्व एक गति)

सुंदर कहानियां — बनाना और तोड़ना 1[illegible]

पांडिचेरीमें श्रीअरविन्द — ऋषभचंद 1[illegible]

देर हो रही है, दूर जाना है 2[illegible]

बच्चोंमें कंजूसी — अंजना शर्मा 28

सोसायटी समाचार 3[illegible]

वार्षिक चंदा ६.०० आजीवन सदस्य १००.००

हमारे अन्य प्रकाशन

मासिक 'पुरोधा' — वार्षिक ८.०० आजीवन १५०.००

बच्चोंके श्रीअरविन्द ००.३५

हमारी मां १.२५

उनकी राह पर १.२५

दिलका आईना १.२५

श्रीअरविन्द जीवन और दर्शन ४.००

संपादक : रवींद्र

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदके पत्र :

अभीप्सा, परिवर्तन, आंतरिक उपलब्धि और रूपांतर

जो यहां आते हैं उनमें एक अभीप्सा और संभावना होती है—उनकी चैत्य सत्तामें कोई ऐसी चीज होती है जो उन्हें आगे धकेलती है। अगर वे उसके बताये रास्तेपर चलें तो ठीक जा पहुंचेंगे, परंतु यह परिवर्तन नहीं है। परिवर्तन है सत्ताका निचली चीजोंसे मुंह मोड़कर भगवान्‌की ओर चलना।

★

अभीप्सा तुम्हें परिवर्तनकी ओर ले जा सकती है परंतु अभीप्सा परिवर्तन नहीं है।

माताजीने तीन अलग-अलग चीजोंकी बात कही थी : परिवर्तन—अंतरात्माका निश्चित रूपसे भगवान्‌की ओर मुड़ना—भगवान्‌की आंतरिक उपलब्धि—प्रकृतिका रूपांतर। पहली दो चीजें तेजीसे और तुरंत हो सकती हैं और एक बारमें हो सकती हैं परंतु तीसरीमें हमेशा समय लगता है, यह झटकेके साथ, क्षणभरमें नहीं की जा सकती। व्यक्ति रूपांतरके ब्योरेमें एक या दूसरी चीजमें तेजीसे होनेवाले परिवर्तन अनुभव कर सकता है लेकिन यह भी लंबी साधनाका परिणाम होता है।

★

आत्म-निवेदन : आत्म-निवेदन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति चेतनाको अपने-आपको भगवान्‌के अर्पण करना सिखाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन परिवर्तन चेतनाकी एक सहज क्रिया है जिसमें तुम निम्न प्रकृतिसे हटकर भगवान्‌की ओर मुड़ते हो। यह ऊपर या भीतरसे आ सकता है या वहांके एक स्पर्शका परिणाम हो सकता है। आत्म-निवेदन उस स्पर्शकी ओर अपने-आपको खोलनेमें सहायता दे सकता है या वह स्वयमेव आ सकता है। लेकिन परिवर्तन भी अभीप्सा और तपस्याकी लंबी साधनाके बाद आ सकता है। इन चीजोंमें कोई बंधा नियम नहीं होता। अगर चैत्य पुरुष सामने आ जाय तो परिवर्तन आसान हो जाता है, अचानक परिवर्तन हो सकता है और यह भी संभव है कि परिवर्तन ही चैत्य सत्ताको सामने लाये। यहां भी कोई नियम नहीं है।

रूपांतर क्रमशः आता है लेकिन रूपांतरके लक्ष्यको सिद्ध करनेके लिये पहले आंतरिक उपलब्धिका होना जरूरी है।

*

श्रद्धा : कठिनाईके समय भगवान्‌के संरक्षणपर विश्वास रखो और उसीका आवाहन करो। हर समय यह श्रद्धा बनाये रखो कि भगवान् जो चाहते हैं वही सबसे अच्छा होता है।

जो कुछ तुम्हें भगवान्‌की ओर ले जाता है उसीको अपने लिये अच्छा मानो — और जो कुछ तुम्हें भगवान्‌से विमुख करता है वही तुम्हारे लिये खराब है।

*

चाहे जैसी कठिनाइयोंका सामना करना पड़े, साहसके साथ उनका सामना करो और वे गायब हो जायंगी। और तुम्हें भगवान्‌की सहायता मिलेगी। जीवन और कार्यमें हमेशा श्रद्धा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहस बनाये रखो — यही सच्चा मनोभाव है। आध्यात्मिक अनुभूतिमें भी यही बात है।

*

श्रद्धा (फेथ) : सक्रिय, संपूर्ण विश्वास और स्वीकृति।

विश्वास (बिलीफ) : केवल बौद्धिक स्वीकृति।

प्रतीति (कनविकशन) : ऐसी बातोंपर आधारित विश्वास जो अच्छे कारण प्रतीत हों।

निर्भरता (रिलायंस) : किसी चीजके लिये किसी दूसरेपर, उसपर भरोसा होनेके कारण आश्रित होना।

भरोसा (ट्रस्ट) : दूसरेकी सहायता मिलनेकी सुनिश्चित आशा-का भाव तथा उसके वचन, चरित्र आदिपर निर्भरता।

विश्वासिता (कॉनफिडेन्स) : भरोसेके कारण उत्पन्न संरक्षणका भाव।

*

योगमें सफलताके लिये श्रद्धा और दृढ़ संकल्पकी आवश्यकता : तुम्हारे पिछले पत्रमें जो प्रश्न किया गया है उसका बस एक ही उत्तर हो सकता है : एकनिष्ठ श्रद्धा या दृढ़ संकल्प ही तुम्हें योग-का खुला मार्ग दे सकते हैं। तुम्हारे विचार और तुम्हारी इच्छा-शक्ति हमेशा डांवाडोल और अस्थिर रहते हैं और इसलिये तुम सफल नहीं हो पाते। निश्चित मन और इच्छा-शक्ति अधूरी श्रद्धाके साथ काम चला सकते हैं और ऐसी अनुभूतियां दे सकते हैं जिनसे अनिश्चित श्रद्धा निश्चितिमें बदल जाय।

इसीलिये अलग-अलग विकल्पोंके बारेमें तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तर देना मेरे लिये कठिन है। मैं कह सकता हूं कि गीताका मार्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे योगका एक भाग है और जिन्होंने उसका अनुसरण किया है — चाहे आरंभके लिये या एक स्थितिके रूपमें — उनका आधार औरोंकी अपेक्षा ज्यादा मजबूत है। उसे कोई अलग या घटिया चीज समझना ठीक नहीं है। लेकिन जो कुछ भी हो, अपने लिये स्वयं तुम्हें चुनाव करना है, कोई और नहीं कर सकता। जो यहांसे जाते-आते रहते हैं उन्हें लाभ हो सकता है यदि वे निश्चय कर चुके हैं और उसपर दृढ़ हैं। जब वे यहां आते हैं तो योगके लिये ही आते हैं, जब वे कहीं और होते हैं तब भी योगके लिये संकल्प बना रहता है। तुम्हें अपने निरंतर तर्कसे पीछा छुड़ाना चाहिये और यह देखना चाहिये कि तुम योगकी प्रेरणाके बिना रह सकते हो या नहीं। अगर तुम उसके बिना नहीं रह सकते तो साधारण जीवनके बारेमें सोचना बेकार है। तुम्हारी प्रकृति तुम्हें योगकी खोज करनेके लिये बाधित करेगी, चाहे यह खोज तुम्हें सारे जीवन करनी पड़े, चाहे परिणाम न के बराबर क्यों न आये। लेकिन तुच्छ परिणाम हमेशा मनके कारण आया है जो हमेशा अपने तर्क लेकर रास्तेमें बाधक हुआ है और प्राणकी कमजोरियां उसके तर्कोंकी सहायताके लिये आ गयी हैं। अगर तुम दृढ़ निश्चय कर लो तो उससे तुम्हें एक अवसर मिल सकता है, फिर इससे कम ही फर्क पड़ता है कि अगला काम तुम यहां रहकर करते हो या कहीं और रहकर।

('लेटर्स ऑफ श्रीअरविन्द', भाग ४ से संकलित)

श्रीमातृवाणी

[प्रत्येक घटना पूर्व निश्चित? दृष्टिकोणपर निर्भर करता है; चेतनाके विभिन्न सत्य; योगका वास्तविक ध्येय; विश्व — एक गति]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने भूतकालका औचित्य दिखलानेके लिये क्या यह कहा जा सकता है कि जीवनमें जो कुछ घटना घटी है वह घटनी ही चाहिये थी ?

यह तो स्पष्ट ही है कि जो कुछ हुआ है वह होनेको था, यदि उस प्रकार अभिप्रेत न होता तो वह होता ही नहीं। हमने जो भूलें की हैं, हमपर जो विपत्तियां पड़ी हैं वे भी होनी ही थीं, उनकी भी कोई आवश्यकता थी, हमारे जीवनमें उनका उपयोग था। परंतु सच पूछो तो इन बातोंको मनके द्वारा समझाना असंभव है और समझाना चाहिये भी नहीं। जो कुछ हमारे जीवनमें बीता है वह आवश्यक था, किसी मानसिक कारणसे नहीं, बल्कि मन जिसकी कल्पना कर सकता है उसके परे ले जानेके लिये। परंतु क्या इसकी व्याख्या करनेकी कोई आवश्यकता है ? यह समग्र ब्रह्माण्ड प्रत्येक चीजकी व्याख्या प्रत्येक क्षण स्वयं कर रहा है और यह समग्र विश्व जैसा है उसके कारण ही कोई विशिष्ट घटना घटती है। परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि हम प्रकृतिके निष्ठुर नियमोंको अपनी अंध अनुमति देनेके लिये बाधित हैं। तुम अपने भूतकालको निश्चित तथ्य कहकर स्वीकार कर सकते हो और यह समझ सकते हो कि उसकी एक आवश्यकता थी फिर भी उससे तुम्हें जो अनुभव मिला है उसका उपयोग तुम उस शक्तिके निर्माणके लिये कर सकते हो जो तुम्हें अपने वर्तमान और भविष्यका सचेतन रूपसे संचालन और गठन करनेकी क्षमता दे।

भगवान्‌की योजनामें क्या हरेक घटनाका काल भी निश्चित रहता है ?

सब कुछ इसपर निर्भर है कि कौन किस भूमिकासे देखता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बोलता है। भागवत चेतनाकी एक भूमिका है जहां सब कुछ पूर्णतः जाना हुआ रहता है और सृष्टिकी समस्त योजना पूर्वदृष्ट और पूर्वनिश्चित रहती है। इस प्रकारकी दृष्टि तो अति मानस लोककी उच्चतम भूमिकामें पहुंचनेपर ही प्राप्त होती है यह पुरुषोत्तमकी अपनी दृष्टि है। परंतु जब हमारे पास वह चेतना नहीं है तो वहांकी बातें करना निरर्थक है, क्योंकि वहांकी बातें उस भूमिकापर ही काम देती हैं और वे हमारी वर्तमान दृष्टिसे परे हैं। चेतनाकी निम्नतर भूमिकामें पहलेसे कुछ भी सिद्ध या नियत नहीं होता, सब कुछ तैयार होनेकी प्रक्रियामें रहता है। यहां निश्चित तथ्य नहीं होते, केवल संभावनाओंका खेल होता है, और इन संभावनाओंके संघर्षमेंसे ही वह वस्तु सिद्ध की जाती है जो होनेको है। हम इस भूमिकापर पसंद और चुनाव कर सकते हैं। हम एक संभावनाको त्यागकर दूसरीको स्वीकार कर सकते हैं, एक मार्गका अनुसरण कर दूसरेको छोड़ सकते हैं हम यह सब कर सकते हैं, फिर भी हो सकता है कि जो हो रहा है वह वस्तुतः किसी उच्चतर भूमिकामें पूर्वदृष्ट और पूर्वनिश्चित हो।

परम चेतना हर बातको पहलेसे जानती है, क्योंकि उसकी अनंततामें सब कुछ पहलेसे ही सिद्ध होता है। परंतु अपनी लीला के लिये और जो कुछ उसकी परम आत्मामें पूर्वनिर्दिष्ट है उसे पार्थिव भूमिकापर कार्यान्वित करनेके लिये यहां पृथ्वीपर वह इस प्रकार विचरती है मानों समस्त कहानी उसे ज्ञात ही न हो, वह इस प्रकार कार्य करती है मानों वह किसी नये और अपरिचित सूतको बुन रही हो। उच्चतर चेतनामें पूर्वनिश्चित समस्त विषयों के संबंधमें उसे जो भविष्य ज्ञान है उसकी ऊपरसे दिखनेवाली विस्मृति क्रियात्मक जीवनमें व्यक्तिको अपनी स्वतंत्रता, स्वाधीनता और आरंभ शक्तिका भान कराती है। व्यक्तिके ये तत्त्व ही चेतनाके व्यावहारिक यंत्र और साधन हैं और इनके द्वारा ही चेतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य भूमिकापर योजित और पूर्वदृष्ट गतियां और परिणाम इस पार्थिव भूमिकापर सिद्ध किये जाते हैं।

यदि तुम नाटकके एक पात्रका उदाहरण लो तो इस विषयके समझनेमें सहायता मिलेगी। नाटकके पात्रको अपनी भूमिकाका पूरा-पूरा ज्ञान रहता है। रंगमंचपर होनेवाली घटनाका क्रम और परिणाम उसके मनमें होता है। परंतु जब वह रंगमंचपर होता है तो उसे ऐसे दिखाना पड़ता है मानों वह कुछ जानता ही नहीं, उसे इस प्रकार अनुभव और अभिनय करना पड़ता है, मानों वह इन सब बातोंको जीवनमें पहली बार अनुभव कर रहा है, मानों आकस्मिक घटनाओं और आश्चर्योंसे भरा हुआ कोई एकदम नया जगत् उसकी आंखोंके आगे खुल रहा है।

तो क्या वास्तविक स्वतंत्रता जैसी कोई चीज है ही नहीं? क्या सब कुछ यहांतक कि जीवकी स्वतंत्रता भी पूर्णरूपसे पूर्वनिर्धारित रहती है, और क्या प्रारब्धवाद ही परम रहस्य है?

स्वतंत्रता और प्रारब्ध, स्वाधीनता और नियतिवाद, ये चेतना-के विभिन्न स्तरोंके सत्य हैं। अज्ञानके कारण मन इन्हें एक ही स्तरपर लाकर रख देता है और इनमें विरोध देखता है। चेतना एक ही प्रकारकी सद्‌वस्तु नहीं है, वह बहुविध है, वह किसी सम-तल भूमि जैसी नहीं है, उसके अनेक आयाम हैं। उच्चतम ऊंचाई-पर पुरुषोत्तम हैं और निम्नतम गहराईमें जड़ प्रकृति है और इस निम्नतम गहराई और उच्चतम ऊंचाईके बीचमें चेतनाओंकी अनंत भूमिकाओंका क्रमविन्यास है।

जड़ प्रकृतिके क्षेत्रमें और साधारण चेतनाके स्तरपर तुम्हारे हाथ-पैर बंधे रहते हैं। प्रकृतिकी यांत्रिकताके गुलाम होनेके कारण तुम कर्मकी सांकलसे जकड़े हुए हो, और इस सांकलके बंधनमें रहते हुए जो कुछ होता है वह अचूक रूपसे पूर्वकर्मोंके परिणाम-स्वरूप होता है। इस अवस्थामें स्वतंत्र गतिका जो भान होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है वह भ्रम है, यथार्थ में जो दूसरे करते हैं तुम भी उसीको दुहराते रहते हो, प्रकृतिकी जो विश्व-गतियां हैं तुम उनकी प्रतिध्वनिमात्र हो, तुम उसके विश्वयंत्रके कुचल देनेवाले माया-चक्रपर चढ़कर असहाय रूपसे चक्कर खाते रहते हो।

परंतु यह होना आवश्यक नहीं है। तुम चाहो तो अपनी स्थितिको बदल सकते हो और नीचे पड़े रहकर रौंदे जाने या कठपुतलीकी तरह नचाये जानेके बदले ऊपर उठ सकते हो और वहींसे संसार-चक्र और उसकी अवस्थाओंको देख सकते हो तथा तुम अपनी चेतनाके परिवर्तनद्वारा इस चक्रको घुमानेवाले किसी हत्थेको कब्जेमें कर सकते हो, जिससे इन अनिवार्य दीखनेवाली घटनाओंका परिचालन कर सको और निश्चित अवस्थाओंको बदल सको। एक बार तुम अपने-आपको इस भंवरसे बाहर निकालकर ऊपर खड़े हो सको तो अपने-आपको मुक्त पाओगे। इतना ही नहीं कि विवशताओंसे मुक्ति पाकर तुम प्रकृतिके निष्क्रिय उपकरण न रहोगे, तुम उसके सक्रिय प्रतिनिधि बन जाओगे। केवल यही नहीं कि तुम अपने कर्मफलोंके बंधनसे मुक्त हो जाओगे, बल्कि तुम अपने कर्मफलको बदल भी सकोगे। एक बार तुम शक्तियोंकी लीलाको देख पाओ, चेतनाकी उस भूमिकामें ऊपर उठ जाओ जहांसे शक्तियोंका प्रादुर्भाव होता है और इन गतिशील उद्गमोंके साथ अपने-आपको एक कर लो, तो तुम उस श्रेणीके नहीं रहोगे जिसे परिचालित किया जाता है, बल्कि उस श्रेणीके हो जाओगे जो परिचालन करती है।

यही है योगका वास्तविक ध्येय — कर्म-चक्रसे बाहर निकलकर भागवत गतिमें प्रवेश करना। योगके द्वारा तुम प्रकृतिकी उस यांत्रिक गतिसे छुटकारा पा सकते हो जिसमें तुम एक मूढ़ गुलाम, एक असहाय और बेबस उपकरण भर हो। तुम एक दूसरी भूमिकामें ऊपर उठ जाते हो जहां किसी उच्चतर भवितव्यताको कार्यमें परिणत करनेके लिये तुम एक सचेतन सहयोगी और सक्रिय प्रति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निधि बन जाते हो। चेतनाकी यह गति द्विविध होती है। पहले आरोहण होता है, तुम अपने-आपको जड़-प्राकृतिक चेतनाकी सतहसे ऊपर उठाकर श्रेष्ठतर क्षेत्रोंमें ले जाते हो। परंतु निचले क्षेत्रोंसे उपरले क्षेत्रोंमें आरोहण ऊपरकी चेतनाको निचले क्षेत्रोंमें उतरनेके लिये बुलाना है। जब तुम पृथ्वीसे ऊपर उठते हो तो ऊपरकी किसी चीजको भी इस पृथ्वीपर उतार लाते हो — किसी ऐसी ज्योति या शक्तिको जो इस पृथ्वीकी पुरानी प्रकृतिका रूपांतर कर देती है या उसे रूपांतरित होनेके लिये प्रवृत्त करती है। और तब जो चीजें अभीतक एक-दूसरेसे अलग, बेमेल और विषम थीं — तुम्हारे अंदर जो कुछ उच्च है वह और जो कुछ निम्न है वह, तुम्हारी सत्ता और चेतनाके आंतर और बाह्य स्तर — एक-दूसरेसे मिलते और धीरे-धीरे आपसमें जुड़ जाते हैं तथा क्रमशः एक सत्य और एक सामंजस्यमें परिणत हो जाते हैं।

लोग जिन्हें चमत्कार कहते हैं, वे इसी तरह होते हैं। यह जगत् चेतनाकी अनेक भूमिकाओंसे बना है और प्रत्येक भूमिकाके अपने-अपने नियम हैं। एक भूमिकाके नियम दूसरी भूमिकापर लागू नहीं होते। चमत्कारका अर्थ है किसी प्रकारका आकस्मिक अवतरण, किसी अन्य चेतना और उसकी शक्तियोंका — बहुधा प्राणकी शक्तियोंका — इस स्थूल-भौतिक लोकमें उतर आना। यहांकी स्थूल-भौतिक यंत्र-रचनापर किसी उच्चतर भूमिकाकी यंत्र-रचना हठात् उतर आती है। यह ऐसे होता है मानों हमारी साधारण चेतनाके बादलोंको चीरकर बिजली उतर आयी हो और उसने अन्य शक्तियों, अन्य गतियों तथा अन्य परिणामोंको भर दिया हो। इसके फलको हम चमत्कार कहते हैं, क्योंकि हमारी साधारण भूमिकामें जो स्वाभाविक नियम काम कर रहे हैं उनमें अचानक परिवर्तन दिखायी देता है, ऐसा जान पड़ता है कि इन नियमोंमें एकाएक कोई हेर-फेर हो गया है, लेकिन हम उसके कारण और क्रमको जान या देख नहीं पाते, क्योंकि इस चमत्कारका मूल कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो किसी और ही भूमिकामें होता है। हमारे पार्थिव लोकपर अन्य ऊर्ध्व लोकोंके इस प्रकारके हमले बहुत असाधारण नहीं हैं। ये बराबर होते ही रहते हैं, और यदि हमारी आंखें हों और हम देखना जानते हों तो हमें बहुत चमत्कार दिखायी देंगे। विशेषतः जो उच्चतर भूमिकाओंकी शक्तियोंको इस पार्थिव चेतनापर उतारनेका प्रयत्न कर रहे हैं, उनमें तो ये अनवरत होते ही रहते हैं।

क्या सृष्टिका कोई निश्चित लक्ष्य है? क्या इसका कोई अन्तिम ध्येय है जिसकी ओर यह अग्रसर हो रही है?

नहीं, यह विश्व एक गति है जो शाश्वत रूपसे अपने-आपको फैलाती जा रही है। ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे इति कहा जा सके, जो अंतिम लक्ष्य हो। परंतु कार्य-संचालनके लिये हमें इस गतिके — जो स्वयं अनंत है — खंड करने पड़ते हैं और यह कहना पड़ता है कि हमारा अमुक उद्देश्य है, क्योंकि कार्य करनेके लिये हमें किसी ऐसी चीजकी आवश्यकता पड़ती है जिसपर हम अपना लक्ष्य बांध सकें। एक चित्र आंकनेमें तुम्हें उसकी रचना और रंगोंकी निश्चित आयोजना करनी पड़ती है, एक सीमा बांधनी होती है ताकि जो कुछ चित्रित करना है वह सब एक नियत ढांचेमें आ जाय, किंतु वह सीमा मिथ्या होती है, वह ढांचा केवल औपचारिक होता है। असलमें चित्रका एक सतत प्रवाह होता है जो किसी भी विशिष्ट ढांचेको अतिक्रमण करता है, और उसकी प्रत्येक धारा उसी प्रकार एक-एक ढांचेमें उतारी जा सकती है और इस प्रकार अनगिनत ढांचोंका कभी न समाप्त होनेवाला क्रम बन सकता है। हम कहते हैं कि हमारा लक्ष्य अमुक है, किंतु हम जानते हैं कि यह इससे परेके लक्ष्यका प्रारंभमात्र है और फिर वह अगले लक्ष्यकी ओर ले जाता है और यह श्रृंखला सदा बढ़ती रहती है, कभी बंद नहीं होती।

(मातृवाणी, भाग १, खण्ड १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर कहानियां :

बनाना और तोड़ना

—१—

बालको, यह तो तुम जानते हो कि 'बनाने' और 'तोड़ने'के क्या अर्थ हैं।

एक सैनिक हाथमें शस्त्र लेकर तोड़ने, अर्थात् किसीका नाश करने जाता है।

एक कारीगर नक्शे बनाता है, नींवें खोदता है और फिर मनुष्यों-के परिश्रमी हाथ किसानके लिये झोंपड़ा अथवा राजाके लिये महल खड़ा करते हैं।

तोड़नेसे बनाना अच्छा है पर कभी-कभी तोड़ना भी आवश्यक हो जाता है।

और तुम बच्चो, तुम्हारी तो बाहें और हाथ खूब बलिष्ठ हैं; क्या तुम केवल निर्माण ही करोगे ? कभी तोड़ोगे नहीं ? और यदि कभी ऐसा किया तो किसे तोड़ोगे, किसका नाश करोगे ?

दक्षिण भारतके हिन्दुओंकी एक प्राचीन कथा है।

एक नवजात शिशु एक बार वृक्षोंके एक झुरमुटमें पड़ा पाया गया। तुम यह सोच सकते हो कि वह वहां पड़ा-पड़ा मर गया होगा, क्योंकि उसकी मां उसे वहां छोड़ गयी थी और उसे वापिस ले जानेका उसका कोई विचार नहीं था। जानते हो क्या हुआ ? जिस वृक्षके नीचे वह पड़ा था, वह हयूपैइल नामका एक विशेष प्रकारका वृक्ष था। उसके सुन्दर फूलोंसे मधुके समान मीठी बूंदें टप-टप उस नन्हें शिशुके मुंहमें गिरती रहीं और इस प्रकार उसका पालन होता रहा। अन्तमें एक भली स्त्रीने उसे देखा, वह पासके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव-मन्दिरमें पूजा करनेके लिये आयी थी। उसका हृदय बच्चेको देखकर द्रवित हो उठा। उसे गोदमें लेकर वह घर आ गयी। क्योंकि उनका अपना कोई पुत्र न था, उसके पतिने प्रसन्न हृदयसे बच्चेका स्वागत किया।

दोनों उस कुंजमें पड़े पाये गये अज्ञातकुलशील बालकका पालन-पोषण करने लगे। प्रारंभसे ही उनके पड़ोसी उनपर व्यंग्य करते लगे थे और कहते थे कि न जाने किस जातिके बच्चेको ये लोग उठा लाये हैं। इस डरसे कि उनके पड़ोसी इस बच्चेकी खातिर उनसे नाराज न हो जायं उन्होंने उसे एक पालनेमें डालकर पालने-को गोशालाकी छतसे लटका दिया। और बच्चेकी रक्षाका भार वहां रहनेवाले एक पारिया कुटुम्बको सौंप दिया।

कुछ वर्ष बाद वह लड़का बड़ा हुआ। शरीरके साथ-साथ उसकी मानसिक शक्तियोंकी भी वृद्धि हुई। अब उसने अपने दयालु पालन-कर्ताओंसे विदा ली और अकेला यात्राके लिये निकल पड़ा। कुछ समयतक चल चुकनेके बाद वह एक ताड़के वृक्षके नीचे सुस्तानेके लिये लेट गया। पेड़ धूपसे उसकी रक्षा करने लगा मानों वह भी उसे उस स्त्रीके समान ही प्यार करता हो जो उसे वृक्षोंके झुरमुटमेंसे उठा लायी थी। यह विश्वास करना कठिन तो है कि ताड़का पेड़ जिसका तना इतना लंबा होता है किसीको अपने पत्तोंसे सारे दिन छाया दे सकता है, पर कहानीसे हमें यही पता चलता है कि सारे समय उसकी छाया निश्चल रही और जबतक वह लड़का सोता रहा उसे ठंडक पहुंचाती रही।

यह सब क्यों और कैसे हुआ?

जन्मसे ही बच्चेकी इस सुरक्षाका क्या कारण था और ताड़के पेड़ने भी धूपसे उसका बचाव क्यों किया? क्योंकि उसका जीवन मूल्यवान् था। उस बच्चेको एक दिन तिरुवल्लुवर नामक प्रसिद्ध तामिल कवि, 'कुरल'की मधुर कविताओंका रचयिता बनना था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन वस्तुओं और उन व्यक्तियोंकी जो संसारके लिये कुछ संदेश लाते हैं रक्षा होनी ही चाहिये।

हमको बलिष्ठ बाहु पाकर प्रसन्न होना चाहिये क्योंकि उनकी शक्तिसे हम रोग और मृत्युसे उन सबकी रक्षा कर सकते हैं जो सत्य, शिव और सुन्दर हैं।

इन्हींकी रक्षा करनेके लिये हमें कभी-कभी लड़ना तथा नाश करना पड़ता है।

तिरुवल्लुवर लोगोंको अपने अमृतवचनोंका आस्वादन ही नहीं कराते थे वरन् वे लड़ना और मारना भी जानते थे। उन्होंने कावेरीपकम गांवके दैत्यको मारा था।

कावेरीपकममें एक किसान रहता था। उसके पास एक हजार पशु और अन्नके कई विस्तृत खेत थे। पर इनके आसपास एक दैत्यका बड़ा डर रहता था। खड़ी फसलको वह जड़ समेत उखाड़ देता; पशुओं और मनुष्योंकी हत्या कर देता। कावेरीपकमके निवासियोंके हृदय इससे बहुत विक्षुब्ध हो उठे थे।

उस धनी किसानने घोषणा की — जो वीर हमें इस दैत्यके अत्याचारसे मुक्त कर देगा उसे मैं एक मकान, खेत तथा बहुत-सा धन दूंगा।

बहुत समयतक कोई वीर आगे नहीं बढ़ा। किसान तब पर्वतवासी मुनियोंके पास गया और उनसे उसने राक्षससे छुटकारा पानेका उपाय पूछा।

पर्वतवासी मुनि बोले — 'तिरुवल्लुवरके पास जाओ।'

इस प्रकार वह किसान इस युवक कविके पास आया और उनसे सहायताके लिये प्रार्थना की। उन्होंने कुछ राख अपनी हथेलीपर ली और उसपर पांच पवित्र अक्षर लिखे, फिर मंत्र पढ़कर वह राख ऊपर हवामें उड़ा दी। उन अक्षरों और मंत्रोंकी शक्तिका उस दैत्यपर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह मर गया। कावेरीपकमके लोग इससे बहुत प्रसन्न हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ वर्ष बाद तिरुवल्लुवर मदुरा शहर गये। बहुत-से लोग उनकी सुन्दर कविताको सुननेके लिये वहां एकत्र हुए। वृक्षोंके कुंजमें पाये गये बच्चे द्वारा रचित इन पदोंको सुनकर वे मुग्ध हो गये।

भला बननेसे बढ़कर और कोई वस्तु इस संसारमें मिलनी अत्यंत कठिन है।

वहां पास ही खिले कमलोंवाले तालाबके किनारे चौकीपर विद्वान कवियोंकी एक टोली बैठी थी। ये लोग एक नीच जाति-वाले कविको चौकीपर अपने साथ स्थान नहीं देना चाहते थे। प्रश्न-पर-प्रश्न करके वे उन्हें भ्रममें डालने तथा उनकी भूलें पकड़नेकी कोशिश कर रहे थे। अंतमें उन्होंने तिरुवल्लुवरसे कहा—'ओ पारिया, अपनी कविताकी पुस्तक तू इस चौकीपर रख दे। यदि यह सचमुच ही सुन्दर साहित्यिक कृति हुई तो यह चौकी 'कुरल'के अतिरिक्त और किसीको अपने ऊपर स्थान नहीं देगी।

तिरुवल्लुवरने अपनी पुस्तक पानीके समीपवाली उस चौकीपर रख दी। कहानीमें आगे आता है कि पुस्तकका उसपर रखा जाना था कि वह इतनी छोटी हो गयी कि उसपर केवल उस पुस्तकको ही स्थान मिल सका और मदुराके अभिमानी और ईर्ष्यालु कवि दूसरी ओर तालाबके जलमें जा पड़े। लज्जित मुख, भीगे शरीर लिये वे बाहर निकले। इस दिनसे तामिल भाषाभाषी 'कुरल'से बड़ा प्रेम करने लगे हैं।

बच्चो, कावेरीपकमके राक्षसके मारे जानेसे क्या तुम्हें दुःख हुआ है? और मदुराके उनचास शरारती कवि जो पानीमें गिर पड़े थे, यह क्या तुम्हें बुरा लगा है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांडिचेरीमें श्रीअरविंद

"आवाहनके पुरोहित एवं ज्योतिर्मय ऋषि, अनाहत, देदीप्यमान, धूमकेतु, उसे ही हम खोज रहे हैं यज्ञोंकी संबोधि-रश्मिको।"
(ऋगवेद : ८-४४-१०)

१९१० की ४ अप्रैलको श्रीअरविंद जलयान — डूप्लेद्वारा शामके चार बजे पांडिचेरी पहुंचे, उनके साथ विजय नाग भी थे। मोनी (सुरेश चक्रवर्ती) पहले ही ३१ मार्चको वहां पहुंच चुके थे और एक कट्टर तामिल ब्राह्मण श्रीनिवासनके यहां ठहरे थे। उनके नाम वे श्रीअरविंदका एक परिचय-पत्र लाये थे। श्रीनिवासनने पहले तो मोनीको कोई गुप्तचर समझा और श्रीअरविंदके लिये उपयुक्त मकान ढूंढनेकी उसकी प्रार्थनापर ध्यान नहीं दिया। किंतु जब मोनीने श्रीअरविंदके आगमनकी तिथि भी बता दी तो उसने उनकी बातपर विश्वास कर लिया और एक सार्वजनिक स्वागतका प्रबंध करनेकी सोची। किंतु मोनीने उसे इसके लिये रोका और कहा कि श्रीअरविंदका पांडिचेरीमें आगमन एक अत्यधिक गुप्त भेद है और वे अंग्रेजी सरकारके जासूसोंके उपद्रवसे बचनेके लिये पूर्ण एकांतमें रहना चाहते हैं। अतएव सार्वजनिक स्वागत-समारोहका विचार त्याग दिया गया, और श्रीअरविंदको बंदरगाहसे लिवानेके लिये केवल मोनी और श्रीनिवासाचारी ही गये।[१]

---

[१]श्री अंबालाल पुराणीके अनुसार सुब्रह्मण्यम् भारती भी इन लोगोंके साथ गये थे, किंतु हमने मोनीके कथनको अधिक प्रामाणिक माना है। अपनी बंगला पुस्तक "स्मृतिकथा"में उन्होंने इसे स्पष्ट रूपमें वर्णित किया है कि किस प्रकार वे और श्रीनिवासन श्रीअरविंदसे स्टीमरपर मिले और उनके केबिनमें उनके साथ चाय पी और उनके सामानको उतारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द, विजय और मोनी कोमुटी स्ट्रीटमें शंकर चेट्टीके मकानकी दूसरी मंजिलपर ठहराये गये। वहां वे अक्तूबरतक ठहरे। कुछ समय पहले स्वामी विवेकानंद जब पांडिचेरी आये थे तो वे भी इसी मकानमें ठहरे थे। उस मंजिलपर स्नानगृह न होने-से उन्हें प्रतिदिन स्नानके लिये नीचे आना पड़ता था। वहां ये लोग शंकर चेट्टीके अतिथिके रूपमें ६ महीनेके लगभग रहे। यह उनका पूर्णतया एकांतवास था। चाहे अंग्रेजी सरकारके गुप्तचर आस-पास ही थे, पर उन्हें इनके निवासस्थानका जरा भी सुराग नहीं मिला। पहले तीन महीने तो विजय और मोनी दिन-रात कमरेमें ही बंद रहे पर पीछे श्रीअरविन्दने उन्हें बाहर जानेकी अनुमति दे दी। आम-तौरपर उनसे मिलनेके लिये किसीको अनुमति नहीं मिलती थी; परंतु यदि कोई किसी विशेष प्रयोजनसे उनसे मिलना चाहता और सौभाग्य-वश उनकी अनुमति भी प्राप्त कर लेता तो मिल सकता था।

चंद्रनगरसे श्रीअरविन्द ठीक-ठाक पांडिचेरी पहुंच गये हैं यह समाचार पानेके लिये मोतीलाल रायने एक आदमीको भेजा। दक्षिण भारतके प्रसिद्ध कवि, देशभक्त और राष्ट्रीय कार्यकर्ता, सुब्रह्मण्यम् भारती इस समय ब्रिटिश भारतसे, राजनीतिक शरणार्थीके रूपमें पांडिचेरीमें रह रहे थे। इनका श्रीअरविन्दसे काफी घनिष्ठ संबंध हो गया और वे श्रीनिवासाचारीके साथ प्रायः ही उनके पास आया करते थे। पीछे तो वे प्रतिदिन सायंकाल उनसे मिलते रहे। वे श्रीअरविन्दसे अति गंभीर रूपमें प्रभावित हुए। १९१३ के अपने स्मृति-लेखों, "अति पुरानी बातें"में श्री अमृत लिखते हैं, "प्रति सायं, अंधेरा होनेके बाद भारती श्रीअरविन्दके घर जाया करते थे। उन्होंने यह समय इसलिये नहीं चुना था कि वे उन लोगोंकी दृष्टिसे बच सकें जो उनके वहां जानेके विषयमें जानना चाहते थे वरन् इसलिये कि श्रीअरविन्द उसी समय अपने कमरेसे बाहर निकलते थे। सायं-काल सात बजेके बाद ही वे अपने मित्रोंसे मिला करते थे। पर भारती और श्रीनिवासाचारी जैसे घनिष्ठ मित्रोंपर यह नियम लागू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं था, वे अत्यधिक आवश्यकता पड़नेपर दिनमें उनसे किसी समय भी मिल सकते थे। सात बजेके बाद तो उनका वहां जाना दैनिक-क्रम बन गया था, भारतीका यह नियम अचूक था, श्रीनिवासाचारी-का उतना नहीं।[1]

"रात्रिकी इन गोष्ठियोंमें शायद ही कोई ऐसा विषय था जिसके बारेमें वे बात न करते हों। वे साहित्य, समाज, राजनीति, विविध कलाएं..... सबपर चर्चा करते थे।" इसके बहुत समय बाद भारतीने श्रीअरविन्दसे ऋग्वेद पढ़ा।

शंकर चेट्टीके घरमें रहते हुए ही श्रीअरविन्दने परीक्षाके तौरपर २३ दिनका उपवास किया। उसके विषयमें जब पीछे उनसे किसीने पूछा तो उन्होंने कहा, "जब मैंने चेट्टीके घरमें २३ दिनका उपवास किया तो मैंने इस समस्याका (बिना खाये रह सकनेका) समाधान लगभग ढूंढ लिया था। मैं सदाकी भांति इन दिनोंमें भी दिनमें आठ घंटे घूमता था। मैं अपना मानसिक कार्य, साधना आदि भी पहलेकी ही तरह करता रहा। २३ दिनोंके अंतमें भी मैंने जरा-सी भी कमजोरी अनुभव नहीं की। किंतु मांस घटने लगा और शरीरके भौतिक पदार्थके ह्रासको पूरा करनेके लिये मुझे कोई साधन नहीं मिला।

"जब मैंने उपवास तोड़ा तो मैंने ऐसे किसी नियमका पालन नहीं किया जिसका लंबे उपवास रखनेवाले व्यक्ति करते हैं, — पहले थोड़ा-सा भोजन खाना आदि। मैंने एकदम उतना भोजन लिया जितना कि मैं पहले लिया करता था।"[2]

---

[1]अमृतजीके लेख "अति पुरानी बातें" से (मदर इण्डिया, अगस्त १९६२)। अमृत श्रीअरविन्द आश्रमके मैनेजर थे। वे १९१३ में ही श्रीअरविन्दके संपर्कमें आ गये थे, जब कि वे स्कूलमें पढ़ते थे।

[2]अंबालाल पुराणीकी पुस्तक 'सायं-वार्ता', दूसरे भागसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपवासपर श्रीअरविन्दने पीछे और भी कहा था : "मैंने दो बार उपवास रखा था, एक बार अलीपुरके जेलमें जो कि १० दिनका था, और दूसरा पांडिचेरीमें २३ दिनका। अलीपुरमें तो यौगिक क्रियाओंमें अति व्यस्त था, मैं खाता नहीं था और भोजन कूड़ेकी बाल्टीमें फेंक देता था। जेलके अधिकारीको इसका ज्ञान नहीं था, केवल दो रक्षक इस विषयको जानते थे और उन्होंने कइयोंको यह कहा, 'यह महाशय अवश्य बीमार हैं, ये बचेंगे नहीं।' मेरी शारीरिक शक्ति अवश्य कम हो रही थी पर मैं पानीसे भरी बाल्टी अपने सिरके ऊपरतक उठा सकता था जैसा कि मैं पहले नहीं कर सकता था।

"पांडिचेरीके उपवास-कालमें मुझमें मानसिक और प्राणिक शक्ति पूर्ण रूपसे विद्यमान थी। मैं रोज आठ घंटे घूमता था और थकावट नामको भी नहीं होती थी। और जब मैंने उपवास तोड़ा तो धीरे-धीरे आरंभ न करके एक बार ही अपने सामान्य भोजनपर आ गया।"

जब उनसे किसीने पूछा, "इस प्रकारका उपवास कैसे संभव है?" तो उन्होंने कहा, "भौतिक पदार्थपर निर्भर न रहकर प्राणिक स्तरसे शक्ति प्राप्त की जा सकती है......।"[1]

कोडायलमके जमींदार के. वी. रंगस्वामी श्रीअरविन्दसे शंकर चेट्टी के घरपर मिले। ये अंगरेजी राज्यमें दिल्लीकी विधान सभामें जमींदारोंका प्रतिनिधित्व करते थे। इनके गुरु, नागइ जप्ताने जो कि एक प्रसिद्ध योगी थे, इनसे अपनी मृत्युके समय कहा था कि उत्तर भारतसे एक बहुत बड़े योगी आयेंगे और इनके बदले वे अब उनसे सहायता ले सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वे योगी दक्षिण भारतमें शरण पानेके लिये आयेंगे और अपनी तीन घोषणाओंसे पहचाने जायेंगे जो कि वे पहले कर चुके हैं। जब रंगस्वामीने सुना कि श्रीअरविन्द पांडिचेरी आ गये हैं तो उन्होंने सोचा कि ये वही

[1] अंबालाल पुराणीकी पुस्तक 'सायं-वार्ता', दूसरे भागसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगी होंगे जिनके विषयमें उनके गुरुने बताया था। वे श्रीअरविन्दसे मिले और उन्होंने वचन दिया कि वे उनकी पुस्तक "यौगिक साधन"[1] के प्रकाशनका सारा व्यय वहन करेंगे।

श्रीअरविन्द इस विषयमें कहते हैं, "दक्षिण भारतमें एक प्रसिद्ध योगी थे। मृत्युके समय उन्होंने अपने शिष्योंसे कहा था कि उत्तर भारतसे एक पूर्ण योगी दक्षिण आयगा और वह अपनी तीन उक्तियों-से पहचाना जायगा। ये तीन उक्तियां वही हैं जो मैंने अपनी पत्नी को पत्रमें लिखी थीं। उस योगीका एक जमींदार शिष्य मुझसे मिला और "यौगिक साधन" के प्रकाशनका भार उसीने ले लिया।" उसने श्रीअरविन्दको कुछ धन भी दिया और कहा कि वह नियमित रूपसे आर्थिक सहायता देता रहेगा, किंतु उसकी यह सहायता कम होते-होते अंतमें बिलकुल बंद हो गयी। वह श्रीअरविन्दसे पांडिचेरीमें दो बार और भी मिला था।

वी. रामस्वामी आयंगर[2] भी जो कि पीछे 'वा. रा.' कहलाये, के. वी. रंगस्वामीके साथ श्रीअरविन्दसे मिलने आये थे। वे उनके प्रति अत्यधिक आकर्षित हुए और १९११ में उनके साथ कुछ समय रहे भी। श्रीअरविन्दने उनके आनेसे पहले उन्हें अंतर्दर्शनमें देखा भी था। अपनी सायं-वार्तामें एक दिन उन्होंने कहा था : मुझे दिव्य

---

[1]शंकर चेट्टीके घर रहते हुए वे प्रारंभिक तीन महीने शामकी गोष्ठियोंमें प्रयोग और मनोरंजनके रूपमें स्वयंचालित लेखनका अभ्यास करते थे। "यौगिक साधन" पुस्तक इन्हीं बैठकोंमें लिखी गयी थी। एक सायं-वार्तामें श्रीअरविन्दने कहा था, "जब मैं यह पुस्तक लिख रहा था प्रत्येक समय प्रारंभ और अंतमें राममोहन रायकी प्रतिमूर्ति मेरे सामने आती थी। लेखकका नाम पुस्तकमें उत्तर-योगी दिया गया था। १९२७ में श्रीअरविन्दने इस पुस्तकका प्रकाशन बंद कर दिया क्योंकि यह उन्होंने नहीं लिखी थी।

[2]चित्तरंजन दासके मित्र और तमिल भाषाके एक प्रसिद्ध लेखक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शन होते थे, पर मैं साधारणतया उन्हें याद करने या उनकी सत्यताको प्रमाणित करनेका प्रयत्न नहीं करता था। किंतु ऐसे दो बड़े विचित्र व्यक्तियोंके दृष्टांत हैं जो अपने ढंगके पहले ही हैं, इसलिये मुझे ये याद रहे हैं... एक निश्चय ही रामस्वामी था जिससे मुझे पीछे मिलना था। किंतु मैंने उसे उस रूपमें नहीं देखा था जैसा कि वह मेरे पास आया था, बल्कि वैसा, जैसा कि मेरे घरमें मेरे साथ रहनेके एक वर्ष बाद वह बन गया था। जैसा कि मैंने उसे अंतर्दर्शनमें देखा था ठीक वैसा ही वह पीछे बन गया था, मुंह दाढ़ी-मूंछसे सफाचट, रूखा, कठोर, स्फूर्तिमान्, उस सबका उल्टा जैसा कि वह उस समय था जब कि वह चिकने चेहरेवाले वैष्णवके रूपमें यहां आया था। अतएव यह उस मनुष्यका एक ऐसा अंतर्दर्शन था जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था, किंतु जिसे भविष्यमें वैसा बनना था — एक भविष्यसूचक अंतर्दर्शन था वह![1]

सितंबरके अंतमें श्रीअरविन्दके साले (मृणालिनी देवीके चचेरे भाई) सौरीन बंगालसे आये और इनके पास ही ठहरे। शायद अक्तूबरके अंतमें श्रीअरविन्द शंकर चेट्टीके घरसे शहरके दक्षिण भागमें सूफरैं स्ट्रीटपर स्थित एक मकानमें आ गये और १९११ के अप्रैलतक वहीं रहे। नलिनीकांत गुप्त बंगालसे नवंबर १९१० में आये और श्रीअरविन्दके साथ रहने लगे। बीच-बीचमें कुछ समयके लिये बंगाल जानेके अतिरिक्त नलिनीकांत, मोनी और विजय स्थायी रूपसे श्रीअरविन्दके साथ ही शिष्य रूपमें रहते रहे। विजय १९३०, ३२ या ३३ में ही बंगाल चले गये और वहीं उनकी मृत्यु हो गयी। मोनीकी मृत्यु पांडिचेरीमें ही १९५१ में हुई। और उस प्रथम दलके एकमात्र अवशिष्ट सदस्य नलिनीकांत — अस्सी सालके स्वस्थ युवक आश्रमके जन्मकालसे अभीतक उसके सचिव हैं। यह बड़ी विलक्षण बात है कि किस प्रकार लज्जालु और स्वल्पभाषी

---

[1] "सायं-वार्ता" — अंबालाल पुराणी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्दने जो कि एकांतमें रहते थे और अपने योगके क्रांतिकारी विकासके भंवर और वेगमें पूर्णतया लवलीन थे, एकके बाद एक कितनी आत्माओंको अपनी ओर आकर्षित किया। इनको उनके तेजका संस्पर्श प्राप्त हुआ था और ये उनके युगप्रवर्तक आध्यात्मिक कार्यके विधिनिर्दिष्ट पताकावाहक बने।

भागवत गुलाब जब खिलता है तो क्या मधुमक्खियां उसके चारों ओर जमा होनेसे रुक सकती हैं?

देर हो रही है दूर जाना है

आधुनिकताकी आंधी शुरू तो हो चुकी थी लेकिन अभी उसने बवंडरका रूप नहीं लिया था। पुरानी सभ्यता, शिष्टाचार, मान-मर्यादाके पेड़ झकोले तो ले रहे थे पर जड़ोंसे उखड़े नहीं थे। याद है वह मजलिसें जब दूर-दूरसे पिताजीके मित्र उनसे मिलनेके लिये आया करते थे। अभी लोगोंको समयाभावकी बीमारी न लगी थी। मित्रोंके साथ बैठकर नाच-गानेका, कविता सुनने और सुनानेका, अच्छे-अच्छे पकवानोंका रस लेनेके लिये, घोड़े, हाथी, गहने इकट्ठे करनेके लिये काफी अवकाश निकल आता था। मेरे पिताजी अच्छे-खासे जमींदार थे। रिआयाको अपने बच्चोंकी तरह पालते थे और ऊपरवालेके साथ भी अच्छा संबंध रखते थे। जलनेवाले व्यंगमें और साथी सराहनामें कहते, 'इनकी तो बीसों घी में हैं।'

भगवान्‌ने उन्हें छप्पर फाड़कर दिया था। बड़ा-सा मकान, उसके चारों ओर बगीचा, प्रवेश द्वारके दोनों ओर बड़े-बड़े कमरे जिनमेंसे था एक पुस्तकालय और दूसरा संगीत कक्ष। इसीमें नये और शास्त्रीय, दोनों प्रकारके नाचोंकी भी व्यवस्था हुआ करती थी। जब महफिल जमती तो सौसे कम आदमी न होते और उनके अति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिक्त पानदान, इत्रदान, पीकदान और हुक्का आदि लाने ले जाने-वालोंकी भीड़ लगी रहती थी जो बीच-बीचमें परवानोंकी तरह चारों ओर फैल जाती और नया कार्यक्रम आरंभ होनेसे पहले-पहले गायब हो जाती। कभी मुशायरे होते, कभी कवि सम्मेलन। कभी नाच-गानेकी ऋतु आती तो कभी होली, बारहमासे और मुहर्रमके मरसिये गाये जाते। मतलब यह कि बंगाली, बिहारी, हिन्दू, मुसलमान किसीका भेद न होता। बस, सालमें तीन सौ सत्तर समारोह होते थे। कइयोंमें हमारा स्वागत होता तो कई हमारे लिये निषिद्ध होते और हमें इधर-उधरसे झांककर, उझककर, कान लगाकर अपनी उत्सुकता शांत करनी पड़ती। हमारे लिये दुनिया सुख-सुविधाकी, मौज-मजेकी जगह थी जिसमें दुःख-दर्दका प्रवेश न हो पाता था। कभी-कभी झिड़कियां सुनायी दे जाती थीं। और आंसू दिखायी दे जाते थे लेकिन वे तो 'सन्नाटों'का काम करते थे। शायद इससे आपका परिचय न हो। हमारे समाजमें बहुत मिठाई खायी जाती है और उसे हजम करनेके लिये बीच-बीचमें मुंहका स्वाद बदलनेके लिये नमक-मिर्च डालकर बहुत खट्टा दही खाया जाता है। उसको कहते हैं 'सन्नाटा'। बड़े भोजमें इसका होना जरूरी है।

हमारे यहांसे कोई पचास-साठ मील दूर लाला बाबूकी कोठी थी। यूं तो ये सज्जन बंगाली थे पर ऐसी फर्राटेकी हिन्दी और उर्दू बोलते थे कि अच्छे-अच्छे बिहारियोंको भी मात कर दें। सूर, तुलसी, और बिहारीकी न जाने कितनी पंक्तियां उन्हें याद थीं! वे अपने-आपको शाक्त कहते थे और महाकालीके पुजारी भी थे पर इससे यह समझ न लीजिये कि कृष्ण-भक्तिमें लाला बाबू किसीसे पीछे थे। उनकी कोठीका एक अच्छा-खासा हिस्सा देवालय बना हुआ था जिसमें काली, मदन मोहन, बाल मुकुंद, विघ्नेश्वर, लक्ष्मी, हनुमान, आदि अनेक देवी-देवताओंकी मूर्तियां थीं और हर एककी विधि-पुरस्सर, पूजा-अर्चना होती थी। हर देवी-देवताकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजाके लिये उसके प्रिय फूलोंकी व्यवस्था बारह महीने रहती थी। लाला बाबू सभी देवोंकी पूजा करते थे और सभी देवोंका वरद हस्त उनके सिरपर रहता था।

हमारा जीवन शांत नदीके पानीकी तरह बहता जा रहा था। कभी कदास ज्यादा वर्षा हो जाती तो इधर-उधरके किनारे टूट जाते। कमी-पानी एकदम तलीको छू लेता लेकिन सामान्यतः धारा बिना किसी बाधाके, बिना झिझकके चलती चली जाती। लेकिन 'सब दिन होत न एक समान'। बाबूजी अभी बाहरसे आये थे और कपड़े बदलकर सुस्तानेके लिये बैठे थे। हम सब उनके चारों ओर कोई मजेदार बात सुननेके लिये घेरा डाले हुए थे कि अचानक भूचाल आ गया। तेज आंधीकी तरह लाला बाबूका ड्राइवर दौड़ता हुआ अंदर घुस आया और बाबूजीके कानमें कुछ फुसफुसाया। इस तरहकी असभ्यता हमने कभी देखी न थी लेकिन इससे पहले कि कोई कुछ बोले बाबूजी उठ खड़े हुए और जैसे खड़े हुए थे वैसे नंगे पैर, नंगे सिर उसके पीछे हो लिये। हम सब देखते-के-देखते रह गये और बाबूजीको लिये हुए मोटर जैसी आयी वैसी ही लौट पड़ी।

हमारे बाल मानस अटकलें लगाने लगे। लाला बाबूके यहां बहुत बढ़िया अमराई थी जिसमें तरह-तरहके लंगड़ा, दसहरी, बंबइया, मरगोवा, दिल पसंद, जहांगीरी आदि के पेड़ थे। कोई मुरशिदाबादसे आया था तो कोई मलीहाबादसे, कोई रत्नागिरिका पौधा था तो कोई सहारनपुरकी कलम। और उनमें भी न जाने कितने प्रकार। हर एकका मिजाज निराला, हर एकके नखरे निराले। एक-एक पेड़की सेवा अलग-अलग ढंगसे की जाती थी और स्वयं लाला बाबू हर एकपर नजर रखते थे। उन्हें पता रहता था कि किस पेड़का आम किस दिन, किस समय तैयार होगा। मजाल है कोई आम उससे पहले या पीछे उतारा जाय। इसकी देखभालके लिये विशेष आदमी लगे रहते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जैसे ही अच्छे आम तैयार होते कि उसी समय तेज घुड़सवार दौड़ाये जाते जो कभी इसके यहां और कभी उसके यहां आम पहुंचाया करते। कभी कोई अच्छी मिठाई पसंद आ जाती तो उसी समय उसका वितरण होता। इस बार भी हमने यही सोचा कि ऐसी ही कोई बात रही होगी। लेकिन फिर बाबूजी इतने घबराये हुए-से क्यों लग रहे थे? उनके यहां कोई अच्छा संगीत चल रहा हो तो कभी-कभी बाबूजीको बुलावा आ जाया करता था। लेकिन ड्राइवरका इस बारका व्यवहार, बाबूजीके चेहरेकी परेशानी और किसीसे कुछ कहे बिना इस तरहसे निकल भागना — ये सब ऐसी चीजें थीं जिनके बारेमें हम कोई अंदाज न लगा सकते थे। हमारी बैठकें कई बार हुईं पर कुछ निश्चय किये बिना ही स्थगित हो गयीं।

कई दिन बाद बाबूजी घर लौटे। चेहरेपर वह मुस्कान न थी। कुछ खोये-खोये-से दीखते थे। हम लोगोंके सामने खुलकर बात तो न होती थी, इधर-उधर कानाफूसी होती और मैं ऐसे दिखाता मानों मुझे इसमें कोई रस नहीं है फिर भी यहां-वहांसे बिखरे हुए शब्द बटोरता रहता था। मैंने बिखरे हुए गुरियोंकी तरह उनसे एक लड़ी बना ली और इस निष्कर्षपर पहुंचा कि लाला बाबू घर-द्वार छोड़कर साधु बन गये। हम बच्चोंको उनसे बहुत स्नेह था इसलिये ये बातें हमसे छिपाकर रखी जाती थीं ताकि हम भी कहीं उन्हींके रंगमें न रंग जायं। खैर, बाबूजीकी बात तो वही जानें पर हम लोग काफी दिनोंतक लालाबाबूके आनेकी राह देखा करते थे। उनके आम, उनका मैसूरपाक, उनके मालपुए रह-रहकर याद आया करते थे। फिर और-और बातें दिमागमें जगह लेती गयीं और उनकी याद धुंधली पड़ गयी।

कहते हैं जब हम किसी चीजके पीछे दौड़ना बंद कर देते हैं तो वह हमारे पीछे दौड़ती है। मैं कुछ बड़ा हो गया और घर-द्वारकी बातें समझने लगा। अब मुझे भी बातें बतायी जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगीं। एक दिन वृन्दावनसे तार आया और बाबूजी एकदम फूट पड़े। बाबूजीका यह रूप हमने कभी न देखा था। हमारे अंदर आश्चर्य, भय, चिंता, दुःख, सबका एक साथ उफान आ गया। बाबूजी जरा शांत हुए तो अपने सोनेके कमरेमें घुस गये और अंदरसे कुंडी लगा ली। इसका मतलब यह कि अब तीन-चार घंटेतक कोई उन्हें तंग न करे।

लेकिन हमें परेशानी हो रही थी। यह गुप्त रहस्य जाननेकी इच्छा थी। हमने मांको जा घेरा। उन्होंने तार देख लिया था। हमारे बहुत आग्रह करनेपर उन्होंने कहा, "तुम्हें लाला बाबूकी याद होगी।" वे आगे कुछ बोलें इससे पहले हममेंसे हर एकने अपनी स्मृति निहंगमेंसे एक-एक बाण निकालकर दिखा दिया। मांने कहा, "और तुम्हें याद है, एक दिन अचानक लाला बाबूका ड्राइवर आकर तुम्हारे बाबूजीको ले गया था।" हम सबको उस घटनाकी याद हो आयी और हम रहस्यके परदेको जरा और हटानेके लिये तैयार हो गये।

मांने कहा, "उस दिन लाला बाबू संगीतके कमरेमें बैठे रियाज कर रहे थे कि उनके कानमें आवाज आयी, 'भैया, जल्दी करो, देर हुई जा रही है, दूर जाना है', ये शब्द उनकी ग्वालिनने दरबानसे कहे थे। ऐसी बातें न जाने कितनी बार सुनी होंगी पर उस दिन इनका असर निराला हुआ। लाला बाबूने सितार एक ओर रख दिया और अपने-आपसे बोले, 'हां, सच तो कह रही है, देर हो रही है और दूर जाना है।' बस, उसी समय मोटर भेजकर तुम्हारे बाबूजीको बुलाया और जबतक ये न पहुंचे तबतक पागलकी तरह इधर-उधर टहलते रहे। तुम्हारे बाबू के पहुंचते ही उन्होंने यही शब्द दोहराये और बोले, 'बात सच्ची है, देर हो गयी है और दूर जाना है। मुझे घनश्यामकी मुरली कबसे सुनायी दे रही थी। मैं रोज टालता जाता था, यही सोचता था आज नहीं, कल। कभी बच्चोंके छोटे होनेका बहाना बनाता, कभी संपत्तिकी अव्यवस्था-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का डर दिखाता और कभी अपने-आपसे कहता, जाना तो है ही, चार दिन और मौज-शौक कर लूं। आज इस ग्वालिनने मेरी आंखें खोल दी हैं और मैं अब और रुकनेके लिये तैयार नहीं हूं। तुम हमारे पुराने हितैषी और सहायक हो। कुछ कोरे कागज हस्ताक्षर करके तुम्हें दिये जाता हूं। इस घरकी व्यवस्थाका भार, इन बच्चोंका भार और मेरा जो कुछ भी है उस सबका भार तुम्हारे सिरपर रखकर मैं आज ही वृन्दावन जा रहा हूं। मैं वहां बांके बिहारीका एक अच्छा-सा मंदिर बनवाना चाहता हूं। उनकी सेवाके रूपमें देखभाल तो मैं कर लूंगा पर उसके लिये खर्च तुम्हें भेजना होगा।'

"इतना कहकर लाला बाबूने कुछ हिसाब-इसाब समझाया, तुम्हारे बाबूजीको चाबियां सौंपी और पैदल ही चल पड़े। अब घोड़ा, गाड़ी या मोटरसे उनका कोई संबंध न था। उन्हें श्यामकी बंसी खींचे लिये जा रही थी। जिसके दानपर सैकड़ों पलते थे वही लाला बाबू समान्य भिखारीकी तरह 'मारग वाली बूट' मांगता-खाता चला जा रहा था। इस कामसे तुम्हारे बाबूजीकी कमर निहुर गयी। वे कामसे घबराने वाले नहीं थे। लेकिन लाला बाबूके अचानक चले जानेसे मानों उनका दाहिना हाथ कट गया। काम इतना बढ़ गया कि इन्हें खाने-पीनेकी भी फुरसत न रहती थी और उससे बढ़कर डर यह था कि तुम लोगोंको लाला बाबू बहुत प्यारे थे, कहीं तुममेंसे कोई उनकी लीक न पकड़ ले। इसीलिये तुम लोगोंके सामने यह बात कभी न की जाती थी।

"ये बीच-बीचमें वृन्दावनके चक्कर लगा आते थे। मंदिर बनवानेपर काफी खर्च आया। पर, आज हंसी आती है, आदमीका स्वभाव भी कैसा अजीब है! लाला बाबू यहांसे सब कुछ छोड़ गये, वहां जाकर भी याचक वृत्तिसे रहते थे पर पड़ोसके एक गुजराती मंदिर वालोंसे दो गज जमीनके लिये लड़ पड़े। ये उस जमीनपर अपने मंदिरका अधिकार मानते थे और वे अपने मंदिर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का। एक ही भगवान्को लेकर दो भक्त आपसमें लड़ पड़े और बात मुकदमेबाजीतक जा पहुंची। लाला बाबू अदालतके सब पैंतरे जानते थे और दूसरे सेठ भी कुछ कम न थे। अब जोरदार कुश्तीकी तैयारी थी। अदालतोंके मगरमच्छ खुश हो उठे। कोई हारे, कोई जीते, उनकी बलासे, उन्हें तो रक्त-मांस मिल ही जायगा, एकका न सही, दूसरेका।

"लेकिन भगवान्को इस तरहकी कुश्ती मंजूर न थी। लाला बाबूने स्वप्न देखा, पड़ोसके मंदिरके बालमुकुंद उनसे कह रहे हैं, 'तू कैसा अहंकारी है, कभी मेरे यहां भिक्षाटनके लिये नहीं आता।' लाला बाबूकी आंखें खुल गयीं। मनमें बड़ी ग्लानि हुई। सोचा, 'बात तो ठीक है, इतना सब छोड़ा पर दिलकी यह गांठ न छोड़ी गयी। बस, आज अहंकारको निगलकर पड़ोसीके यहां ही भीख-के लिये जायंगे।' बारह बजे, भोजनका समय हुआ और वे पड़ोसीके द्वारपर दो रोटियां मांगनेके लिये जा पहुंचे। गुजराती सेठके घरमें खलबली मच गयी। थाल भर-भरकर तरह-तरहकी चीजें आने लगीं। निर्लिप्त लाला बाबू बोले, 'यह सब नहीं चाहिये। दो रूखी रोटियां हों तो दिलवा दीजिये।' गृहस्वामी रोटियां लिये हुए आया, और आकर लाला बाबूके पैरोंपर गिर पड़ा। मुकद्दमा उठा लिया गया। उसने कहा, 'लाला बाबू जो कह दें वही मान्य होगा।' लाला बाबूने सेठको गलेसे लगा लिया और बहुत देरतक रोते रहे। जरा स्वस्थ हुए तो बोले, 'घनश्याम, मैं यहां आकर भी 'मैं' ही बना रहा, 'तेरा' न बन पाया। अब तो कृपा कर, करुणानिधि, मुझे चरण-रजमें स्थान दे दे। मेरा सारा जीवन ही तेरी वंदना बन जाय।'

"आज जो तार आया है उससे पता चलता है कि लाला बाबू-की प्रार्थना सुन ली गयी है और वे भगवान्के यहां चले गये हैं।"

(एक सच्ची घटनाके आधारपर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चोंमें कंजूसी

एक मजेदार प्रश्न मेरे दिमागमें चक्कर लगा रहा है: क्या आपका बच्चा कंजूस है या वह और बच्चोंको अपनी चीजें देनेसे नहीं कतराता? आज इसी प्रश्नपर विचार करें।

मान लीजिये, आपका बच्चा कंजूस है, अगर आप भी वैसी ही हैं तब तो आप सोचेंगी, बच्चा जैसा है अच्छा ही है। और अगर बात उलटी है, वह कंजूस है और आप नहीं हैं तो आपके सामने यह प्रश्न उठेगा कि उसे कैसे सुधारा जाय?

आपका मुन्ना पड़ोसके राजूके साथ खिलौनोंसे खेल रहा है। वह राजूके खिलौनेसे खेलता है क्योंकि राजूको इसमें कोई ऐतिराज नहीं है मगर जब राजूकी बारी आती है तब वह नाराज हो जाता है और इतना तक नहीं चाहता कि राजू उसके खिलौनोंको छुए। अब प्रश्न है कि इस आदतको कैसे ठीक किया जाय?

खैर, मुन्नेको आप समझाइये कि जिस तरह राजू उससे मिलकर खेलता है उसी तरह उसे भी राजूको अपने खिलौने देने चाहिये। अगर वह नहीं मानता तो उसे भी यही अनुभव करवाना चाहिये कि इस तरह वह भी राजूके खिलौनोंसे नहीं खेल सकेगा। और उसे भिन्न-भिन्न प्रकारके खिलौनोंसे खेलनेका मौका नहीं मिलेगा क्योंकि ऐसा तो संभव है नहीं कि राजूकी तरहके सभी खिलौने उसके पास हों। और मां एक यह भी शर्त्त उसके सामने रख सकती है कि जबतक वह अपने खिलौनोंसे दूसरे बच्चोंको नहीं खेलने देगा तबतकके लिये उसके नये खिलौने बंद। जबतक वह इस शर्तके मुताबिक नहीं चलता, खिलौने टूट-फूट कर आधे ही क्यों न हो जायं आप अपने वचनपर डटी रहिये। देखिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुन्नेकी समस्या हल कैसे नहीं होती। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बच्चा अपने घरवालोंको तो अपनी चीजें देना पसंद करता है मगर जैसे ही बात बाहरवालोंके साथ शुरू होती है उसका दिल छोटा हो जाता है। उस नन्हेमें अभीसे अपने-परायेकी इतनी समझ बैठ जाती है! वह अपनी बहिनको अपनी किताब पढ़ने देता है मगर पड़ोसके राजूको देखनेतक नहीं देता।

इस वक्त उसके मनमें अपने-परायेका जो भेद घर कर बैठा है उसे दूर करना होगा, उसे समझाना होगा कि जो अपने हैं वे तो हैं ही अपने, उनके साथ सद्व्यवहार करना जरूरी है मगर जो दूसरे घरके हैं उनके साथ अच्छा बर्ताव करना ज्यादा जरूरी है। क्योंकि वे तुम्हारे साथ हर वक्त तो रहते नहीं, जितना समय तुम्हारे साथ काटते हैं उसमें उनको अच्छे अनुभव होने चाहिये। बच्चेके मन-से अपने-परायेका यह बीज उखाड़ फेंकना आप, माली, का काम है।

उसे यह बतलाना चाहिये कि जैसे चीजें प्राप्त करनेमें खुशी है वैसे देनेमें भी सुख है, जो देता है भगवान् उसकी झोली और भरता जाता है। आप भी ऐसा कीजिये न, अगर मुन्ना राजूको अपनी किताब एकदमके लिये दे देता है तो आप उसे दूसरी दिलवा दीजिये ताकि उसे पता लगे कि हां देनेसे ही दूसरी चीजें मिलती हैं।

अब अगला प्रश्न यह है कि क्या आपके बच्चेमें दूसरोंके लिये सहानुभूति है या वह इतना स्वार्थी है कि उसे अपनी आस-पासकी दुनियासे कोई मतलब ही नहीं? मान लीजिये कि खेल-खेलमें उसका साथी गिर पड़ा और रोने लगा तो क्या वह जल्दीसे जाकर उसे प्यारसे चुप करानेका प्रयास करेगा? मैंने स्कूलमें एक लड़की देखी है जो किसीको रोता नहीं देख सकती (क्योंकि वह समझती है कि ऐसी स्थिति दयनीय है) जब कभी कोई बच्चा गिरकर रोने लगता है तो वह झट उसे पुचकारकर, या गुदगुदी करके हंसानेका प्रयत्न करती है कहांतक सफल होती है यह तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोनेवालेपर निर्भर है मगर वह बेचारी अपनी सारी सहानुभूति उस पर उंडेल देती है, वह अभीसे दूसरोंके कष्टमें भाग लेना जानती है।

अब एक दूसरे बच्चेका उदाहरण लें जो दूसरोंके प्रति बिलकुल उदासीन है, कोई रोये उसकी बलासे, उसे क्या? वह तो नहीं रो रहा, वह तो खुश है ना? हम ऐसे बच्चेके बारेमें ही बात कर रहे हैं। शायद उसने इस बातपर कभी ध्यान ही न दिया हो कि अगर कोई रो रहा है तो अच्छी बात है या बुरी। खैर, जब वह समझ जाय कि रोनेवालेको चुप होनेमें सहायता चाहिये, गिरे हुए बच्चेको उठनेमें दूसरेके हाथका सहारा चाहिये, प्यासेको पानी-के गिलासकी जरूरत है और भूखेको रोटीके दो कौरकी तब हम समझेंगे कि हमारी बातोंका उसपर असर पड़ रहा है और वह दूसरोंके लिये भी महसूस करता है। शायद हमें उसके सामने कई बार उदाहरण भी रखना पड़े।

रोनेकी आवाज सुनकर आप कमरेमेंसे भाग आयीं। राजू रो रहा था क्योंकि मुन्नेने उसे काट लिया था। आप परेशान हो उठीं, "हाय राम क्या करूं, जब देखो दांत गड़ाता फिरता है।" और आपने मुन्नेका कान पकड़कर उसे दूर धूपमें खड़ा कर दिया। और उसे एक घंटेकी सजा दे दी।

आप अपनी क्रियापर गौर कीजिये, क्या आपने मुन्नेको सजा देकर ठीक किया? मुन्ना राजूसे और भी नाराज हो उठेगा क्योंकि उसीके कारण मुन्नेको सजा मिली। वह गलती भूल जायगा और जब अगली बार वे दोनों खेलने बैठेंगे तब मुन्ना उससे बदला लेने-के लिये और भी जोरसे काट लेगा। देखिये, आपने उसकी भलाई-के लिये सजा दी मगर प्रतिक्रिया उल्टी! तो क्या ऐसे बच्चेको सजा देनेसे आप उसे सुधार सकती हैं? नहीं।

कई यह समझते हैं कि अगर बच्चा दूसरेको काटे तो दूसरा भी उसे काट खाये, यही एक तरीका है। हो सकता है कि कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगह यह कामयाब रहा हो क्योंकि इससे बच्चेको काटखानेपर जो पीड़ा होती है उसका अनुभव होता है। और जब वह दूसरे-को काटना चाहता है तो उसे अपना अनुभव याद आ सकता है। मगर एक बात है कि अगर बच्चा दूसरे बच्चेसे खूब नाराज है और जोर-शोरसे बदला लेना चाहता है तो वह चाहेगा कि उसके दोस्तको खूब भुगतना पड़े, वह उसका हाथ लेकर जोरसे अपने दांतोंके बीच दबा देगा।

इसलिये यह तरीका अजमाना ठीक नहीं। इस चीजसे छुट-कारा पानेके लिये दो बड़े ही सरल तरीके हैं। एक:—अपने बच्चेको उन बच्चोंके साथ मत खेलने दीजिये जिनके साथ उसकी पटती न हो क्योंकि उनमें बार-बार, मिनट-मिनटपर झगड़ा हो सकता है और मुन्ना अपने अस्त्र, यानी, दांतोंका इस्तेमाल कर सकता है। उसे उन्हीं बच्चोंके साथ मिलने दीजिये जिनके साथ उसकी पटती हो; जहां लड़ाई-झगड़ेका प्रश्न नहीं उठता। वैसे शुरूमें उनके साथ भी बहुत देरतक न खेलने दें शायद मुन्नेका मिजाज बिगड़ जाय और रोषमें आकर वह किसीका शिकार कर बैठे।

दूसरा तरीका यह है कि जब मुन्ना औरोंके साथ खेल रहा हो तो आप उसपर कड़ी नजर रखिये और जब आपको ऐसा लगे कि किसीपर अपने दांत मारनेवाला है तब आप उसके पास जाकर उसके मनको दूसरी तरफ लगाइये, यानी, उसका मन दूसरे खेलमें लगाकर देखिये, शायद आदत छुड़ानेमें मदद मिले।

—अंजना शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

*श्रीमांके जन्मदिन, २१ फरवरी — दर्शन दिन — सुबह आश्रम-वासी श्रीअरविन्द-कक्षके दर्शन करने गये। सुबह ही १० बजे समाधिके पास सामूहिक ध्यान हुआ। शामको व्यायामशालाके सदस्योंने क्रीड़ांगणमें 'मार्च पास्ट' किया। इसके साथ अपने आश्रम का ही बैंड था। मार्च पास्टके बाद बैंडने दो संगीत रचनाएं बजायीं। फिर ध्यान हुआ, साथ ही एक आश्रमवासीके बनाये चित्रों-की स्लाइड दिखाई गयी।

*इस अवसरपर विभिन्न विभागोंने प्रदर्शनियां कीं। एक बंगला नाटक 'भविष्यकी ओर' जो माताजीका लिखा मूल फ्रेंचमें है, आश्रम रंगमंचपर २० तारीखको खेला गया। २२ को 'न्यू एज एसोसिएशन' की ३५वीं बैठक हुई। विषय था — आध्यात्मिक विकासकी चार पद्धतियां : धर्म, गुह्यवाद, आध्यात्मिक दर्शन और योग। शिक्षा केंद्रके विद्यार्थियोंने फूलोंकी प्रदर्शनी की — 'फूल — संदेश वाहक'। यहां बच्चोंने फूलोंके आध्यात्मिक नाम भी दिये थे।

*२९ फरवरी — अतिमानसिक अभिव्यक्तिके सुनहरे दिन (२९-२-१९५६)की ५वीं वर्षगांठ मनायी गयी। दर्शनार्थी सुबह ही श्रीअरविन्दके कक्षमें गये। श्रीमांका एक चित्र तथा श्रीमांके १९५६के दिये दो संदेश सबको बांटे गये। आश्रममें सुबह दस बजे और क्रीड़ांगणमें शामको पौने आठ बजे सामूहिक ध्यान हुआ।

*ओरोवीलने भी अपनी ८वीं वर्षगांठ २८ फरवरीको मनायी। विस्तृत वर्णन शायद अगले अंकमें आये।

*डा. माहेश्वरने एक शिक्षा शिविरका संचालन किया। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२ फरवरीसे ३ मार्च तक रहा। 'माता' पुस्तकके नियमित अध्ययनके अतिरिक्त श्री रोहित मेहता, डा. माहेश्वरके भाषण हुए। श्री माधव पंडित, श्री नवजात तथा डा. माहेश्वरके साथ गोष्ठियां हुईं। शिविरमें पांच मनन-गोष्ठियां भी हुईं जिनमें क्रमशः 'अभीप्सा', 'कर्म-द्वारा साधना', 'सच्चाई एवं निष्ठा', 'अतिमानस' एवं 'परिपूर्णता — जीवनका लक्ष्य', महत्त्वपूर्ण विषयोंपर गहन चिंतन करनेका अभ्यास किया गया। इन गोष्ठियोंका समारंभ संक्षिप्त प्रस्तावनाद्वारा होता था और क्रमशः गोष्ठियोंके सदस्यगण चिंतन करते हुए, अपने-अपने तात्पर्यको व्यक्त करके अथवा प्रश्नोंके द्वारा विषयको अधिकाधिक स्पष्ट बनाते थे। ये गोष्ठियां स्वाध्यायके लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हुईं।

*अब शीघ्र ही 'ऑल इण्डिया मैगजीन'का गुजराती रूपांतर भी निकलेगा। जो पाठक यह पत्रिका अंग्रेजी या हिंदीकी अपेक्षा गुजरातीमें पढ़ना पसंद करते हैं तुरंत सूचना दें।

*मिदनापुर (पश्चिम बंगाल) ७ फरवरीको श्रीअरविन्द पाठ मंदिर, बालीचाकमें पश्चिम बंगालके गवर्नर श्री ए. एल. डायस द्वारा श्रीअरविन्दके अवशेष प्रतिष्ठित किये गये। अवशेष पांडिचेरीसे श्री दीपक घोष, श्री हिमांशु नियोगी ले गये थे और दमदम हवाई अड्डेपर मुख्य न्यायाधीश श्री शंकर प्रसाद मित्रने स्वागत किया।

*१४ और १५ फरवरीको हनमकुण्डामें आंध्रप्रदेशकी श्रीअरविन्द सोसायटीकी तीसरी बैठक हुई। इस बैठकमें श्री नवजातने भाषण दिया और श्रोताओं और सदस्योंको मानव विकासमें सक्रिय भाग लेनेके लिये प्रोत्साहित किया।

*वाराणसीकी सोसायटी शाखाने ८ फरवरीको 'संपूर्ण योग संस्थान'में आश्रमके (२४ नवंबर तथा श्रीअरविन्द शिक्षा केंद्रके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिकोत्सवके) कुछ डोक्यूमैंटरी चित्र दिखाये। इसी वैठकमें डा. राजेंद्र नारायण शर्माने श्रीअरविन्द आश्रम शिक्षाकेंद्रकी शिक्षा पद्धति समझायी।

*वड़ोदाकी सोसायटी शाखाने ७ से ११ फरवरी तक कई सार्वजनिक भाषणोंकी व्यवस्था की। इसके साथ-ही-साथ दैनिक समस्याओंपर प्रतिदिन प्रश्नोत्तरोंका कार्यक्रम भी चलता रहता था।

*श्रीअरविन्द भवन, कलकत्तेने फरवरीमें शनिवार और रविवारको वार्ताओंका कार्यक्रम रखा। विषय थे : श्री अरविन्दके प्रकाशमें उपनिषद्, श्रीअरविन्द और स्वामी विवेकानंद, श्री अरविन्द दर्शन, श्रीअरविन्दके योगमें साधना। भवनमें प्रत्येक वृहस्पतिवार और रविवारको सामूहिक ध्यान भी होता है। वच्चोंके लिये शनिवार और रविवारको पुस्तकालय खुला रहता है और कुछ खेलोंकी भी व्यवस्था की गयी है।

*नागपुर श्रीअरविन्द केंद्रने वेदपर डा. एम. टी. सहस्रबुद्धेका भाषण कराया।

*रानाघाट (पश्चिम वंगाल) की सोसायटीने पहली फरवरीको एक वैठक की और चर्चा की कि भगवान्‌की सेवाके लिये सामूहिक कार्यकी योजना कैसे वनायी जाय। सर्वश्री समर वोस, जितेन चक्रवर्ती तथा श्री एस. चक्रवर्तीने अपने-अपने सुझाव दिये।

*सिंद्री (बिहार)की शाखाने अपना वार्षिकोत्सव १० फरवरीको मनाया। मुख्य अतिथि थे : श्री आर. के. गुप्त, श्री एस. आर. पांडे। इनके भाषणके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। यहां आश्रमकी पुस्तकों तथा आश्रमकी अन्य वस्तुओंकी मांग बहुत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवत्कृपापर पूर्ण विश्वास और निर्भरता बनाये रखना ही, अंतिम विश्लेषणमें, सर्वोत्तम बुद्धिमानी सिद्ध होता है।

—— श्रीमाताजी

स्टार आटोमोबाईल सर्विसेज

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर (उ. प्र.)

एवं

भारत आयल कैरियर्स

लक्ष्मणझूला मार्ग

ऋशिकेश-२४९२०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

For Love there is no other curtain than ignorance.

The Mother

Inland Carriers (Bombay)

For Safe, Speedy & Efficient Movement of Cargo

Head Office :

Takhatmal Estate, P. O. Box No. 12, AMRAVATI

Branches :

112, Sarang Street, BOMBAY-3, Phone : 327710
Bhistiwad, AHMEDABAD, Phone : 34098

Daily parcel Service to & from

Bombay, Ahmedabad, Baroda, Poona, Sholapur, Ichalkaranji, Bangalore, Nagpur, Amravati, Raipur & Malegaon (Dist. Nasik)

THE CARRIERS WITH A DIFFERENCE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीराम

नवीन उपकरण-
श्रीराम पी०वी०सी०

श्रीराम केमिकल्स आपको दो विशेष लाभ आमंत्रित करते हैं,
पहला - विभिन्न प्रकार के उपयोगों के लिये विभिन्न ग्रेड में उत्तम
पी०वी०सी० - दूसरा श्रीराम पी०वी०सी० के नवीन उपयोगों के वारे में
निःशुल्क तकनीकी जानकारी।

श्रीराम केमिकल्स के आधुनिक अनुसंधान एवं विशेष तकनीकी सलाहकारों
की सहायता से आप विभिन्न प्रकार की नवीन उपयोगी वस्तुएँ तैयार कर
सकते हैं।

श्रीराम

श्रीराम केमिकल्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70.
REGD. No. M. 8731

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

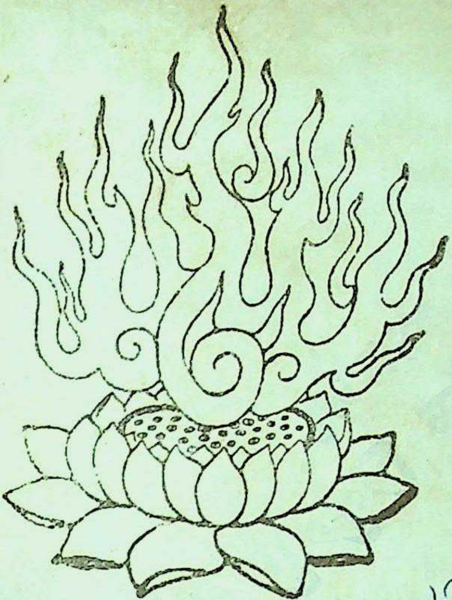

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

जुलाई १९७६ वर्ष ६, अंक १२, पृ. ७२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(श्रीअरविंद सोसायटी और एक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका)

सूची

माताजीकी शताब्दी		१
श्रीअरविन्द वाणी : भौतिक विज्ञान		२
माताजीके वचन		४
श्रीमांके उत्तर		११
शांति		१२
कभी निराश न होओ		१३
धम्मपद		१९
श्रीमाताजीने कहा है		२०
आपके प्रश्न : श्रद्धा		२३
आपसी संबंध		२६
पीड़ाओंसे छुटकारा		२८
श्वेत सिंह	राकेश कुमार ओझा	३०
आदमीको चींटीकी सीख		३३
सोसायटी समाचार		३४

पुरोधाका अगस्त अंक 'वन्दे मातरम् अंक' होगा जिसमें श्रीअरविन्दके राजनीति कालके कुछ लेखोंका संकलन होगा। १९०७-८ में लिखे गये ये लेख हमारी आजकी समस्याओंपर अच्छा प्रकाश डालते और उनका हल सुझाते हैं।

वार्षिक चंदा ८.०० आजीवन १५०.००

नयी पुस्तक 'समयकी आवश्यकता' — वन्दे मातरम्के लेखोंका संकलन। मूल्य १.५०

संपादक : रवींद्र
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीकी शताब्दी

माताजीकी शताब्दी बिलकुल नजदीक आ गयी है। यह महान् और पवित्र अवसर हम लोगोंके जीवनमें बस एक ही बार आ सकता है। अतः हमें इसके लिये पूरी सचाईके साथ तैयारी करनी चाहिये। आप निश्चय ही इस विषयमें कुछ सोच रहे होंगे। सभा-समारोह, भिन्न-भिन्न प्रकारके आयोजनोंकी योजनाएं भी तैयार हो रही होंगी। इन सबका अपने-अपने स्थानपर अपना-अपना महत्त्व है। हर व्यक्ति अपनी क्षमता, अपने साधनों और परिस्थितियोंके अनुसार कार्यक्रम बना सकता है। माताजी और श्रीअरविन्दका संदेश घर-घरतक पहुंचा देना बहुत जरूरी काम है परंतु सबसे अधिक जरूरी है माताजीकी अपने अंतरमें प्रतिष्ठा करना।

जबतक आदमी नहीं बदलता तबतक बड़ी-बड़ी योजनाएं कोई विशेष महत्त्व नहीं रखतीं। बड़ी-से-बड़ी योजनाओंके महलको भी कपटकी दीमक चाटकर कुछ ही समयमें साफ कर सकती है। अगर हम सचमुच माताजीके प्रति सच्चे और निष्ठावान् बन सकें तभी कुछ काम हो सकता है। दिखावा और सौदेबाजी इस कामके बहुत बड़े दुश्मन हैं।

माताजीकी जन्म शताब्दीके लिये हम वही करनेकी कोशिश करें जो माताजीने श्रीअरविन्दकी शताब्दीके लिये कहा था: "हम श्रीअरविन्दकी शताब्दीपर उन्हें सबसे अच्छी श्रद्धांजलि यही दे सकते हैं कि हमारे अंदर प्रगतिके लिये प्यास हो और हम अपनी सारी सत्ताको उस भागवत प्रभातके लिये खोल दें जिसका संदेश लेकर श्रीअरविन्द धरतीपर आये थे।"

अपने एक और संदेशमें माताजी कहती हैं: "हमारी यही प्रार्थना है कि उनकी शिक्षा हमारे जीवनको आलोकित करे और हमें रास्ता दिखाये। जो कुछ हम आज नहीं कर सकते उसे कल कर सकें।"

व्यष्टि रूपसे और समष्टि रूपसे हमारी यही प्रार्थना हो और हमारा यही प्रयास हो।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिक विज्ञान

[भौतिक विज्ञानका दावा रहा है कि वह सब कुछ जानता या जान सकता है। भारतवासी भी इसी भ्रममें पड़कर अपनी इस पुरानी थातीकी अवहेलना कर रहे हैं। इस सिलसिलेमें एक फ्रेंच वैज्ञानिक शिष्यके साथ श्रीअरविन्दका यह वार्तालाप हमें बहुत-सी नयी बातें बतायेगा। — सं०]

८ मई, १९२६

पश्चिममें ऊंचे-से-ऊंचे मानस आध्यात्मिक सत्यकी ओर नहीं, भौतिक विज्ञानकी ओर मुड़े हुए हैं। विज्ञानका क्षेत्र बहुत संकीर्ण है, वह केवल भौतिक स्तरके सबसे बाहरी भागका स्पर्श करता है।

और वहां भी, विज्ञान वस्तुतः क्या जानता है? यह नियमोंकी क्रियाका अध्ययन करता है। नित नये सिद्धान्तोंका निर्माण करता है और उनमेंसे प्रत्येक अंतिम सत्य माना जाता है। अभी हालतक अणु-सिद्धान्त था, अब विद्युत्-सिद्धान्त आया है।

उदाहरणार्थ, अभी आधुनिक विज्ञानके दो वक्तव्य निकले हैं जो गुह्यवेत्ताके लिये गहरे स्तरोंको हिला देंगे।

१) सौर प्रणालीकी भांति अणु भी परिक्रमा करते हैं।

२) सभी तत्त्वोंके अणु एक ही प्रकारके उपादानोंसे बने हैं। विभिन्न प्रकारकी व्यवस्था ही विभिन्न गुणोंका एकमात्र कारण है।

यदि इन वक्तव्योंका इनके सच्चे रूपमें विवेचन किया जाय तो ये हमें विज्ञानकी उन नयी खोजोंतक ले जा सकते हैं जिनके विषयमें अभी किसीने सोचा ही नहीं है और जिसकी तुलनामें वर्तमान ज्ञान बहुत तुच्छ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन योगियोंके अनुभवोंके अनुसार इंद्रियग्राह्य जड़पदार्थ पांच तत्त्वोंसे बना है, 'भूतानि' : पृथ्वी, आप्, अग्नि (तेजस्), वायु, आकाश।

अग्नि तीन प्रकारकी है :

१) सामान्य अग्नि, जल-अग्नि।

२) वैद्युत अग्नि।

३) सौर अग्नि।

विज्ञानका परिचय अभी पहली दो अग्नियोंसे ही है। यह तथ्य कि अणु सौर प्रणालीके जैसा है, हमें तीसरी अग्निका परिचय करा सकता है।

अग्निके परे वायु है जिसके विषयमें विज्ञान कुछ नहीं जानता। यह समस्त संपर्क और आदान-प्रदानका आधार है और गुरुत्व-सिद्धान्त एवं चुंबकीय और वैद्युत क्षेत्रोंका कारण है। इसके द्वारा, रूपोंका निर्माण करनेवाले तत्त्व, अग्निका कार्य संभव हो सकता है — यही तत्त्व आकारोंका निर्माता है।

वायुके परे आता है आकाश।

किन्तु ये पांच तत्त्व केवल भौतिक स्तरके स्थूलतम भागका निर्माण करते हैं। इसके ठीक पीछे भौतिक-प्राणिक स्तर है। यह जड़ पदार्थके अन्दर स्थित जीवन-तत्त्व है। जगदीश चन्द्र बोसने अपने प्रयोगोंमें इस तत्त्वके साथ संपर्क स्थापित किया है। इसके आगे, जड़ पदार्थमें निहित मन है। इस मनका स्वरूप मानव मनसे कहीं अधिक भिन्न है, फिर भी यह संघटनके उसी सिद्धान्तका अभिव्यक्त रूप है। और नीचे, तहमें दो और गुप्त स्तर हैं...।

यह केवल भौतिक स्तरके सम्बन्धका गुह्यज्ञान है। विज्ञान इस ज्ञानसे अभी बहुत पीछे है।

जिन हिन्दू योगियोंने इन सत्योंको पा लिया था उन्होंने इसे और विस्तृत रूप नहीं दिया और न ही इन्हें वैज्ञानिक ज्ञानमें परिवर्तित किया। क्योंकि उनके आगे कर्म और ज्ञानके अन्य क्षेत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुले थे। उन्होंने इस ओरसे उदासीनता दिखायी, उनके लिये यह अभिव्यक्तिका अत्यधिक बाह्य पक्ष था।

वैज्ञानिक मन और एक गुह्यवेत्ताकी मानसिक रचनामें कुछ अन्तर होता है। इसमें सन्देह नहीं कि जो व्यक्ति क्षमताओंकी इन दो श्रेणियोंको मिला सकेगा वह विज्ञानको एक महान् उन्नतिकी ओर ले जायगा।

[यह १९५३के अप्रैल मासमें "फ्रांस-एशिया" पत्रमें पहली बार प्रकाशित हुआ था।]

(बुलेटिन, फरवरी १९६८ से साभार)

माताजीके वचन

[सर्वांगपूर्ण श्रद्धा; मृत्यु अनिवार्य नहीं; पार्थिव चेतनाके रूपान्तरके लिये भागवत चेतनाका अवतरण अत्यावश्यक; पूर्वजन्मोंकी स्मृति]

क्या केवल श्रद्धा सब कुछ सृजन कर सकती है, सब कुछ जीत सकती है?

हां, किन्तु यह श्रद्धा सर्वांगपूर्ण और निरपेक्ष होनी चाहिये। यह ठीक प्रकारकी होनी चाहिये, केवल मानसिक विचार या संकल्पकी शक्तिपर नहीं, उससे बढ़कर और गहरी होनी चाहिये। मनके द्वारा प्रयुक्त संकल्प विरोधी प्रतिक्रियाओंको उभाड़ता और प्रतिरोध उत्पन्न करता है। तुमने एमिल कूएकी चिकित्सा-पद्धतिके बारेमें सुना होगा। वे इस शक्तिके किसी रहस्यको जानते थे और उन्होंने इसका प्रयोग बहुत कुछ सफलतापूर्वक किया था। परन्तु वे इसे कल्पना कहते थे और उनकी पद्धतिने श्रद्धाको बहुत अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक रूप दे दिया था। मानसिक श्रद्धा पर्याप्त नहीं है, इस श्रद्धाको प्राणकी श्रद्धाद्वारा और भौतिक श्रद्धा, अर्थात्, शरीरकी श्रद्धाद्वारा भी पूर्ण और शक्तिशालिनी बनाना चाहिये। यदि तुम अपने अन्दर, अपनी समस्त सत्तामें इस प्रकारकी एक सर्वांगपूर्ण शक्तिकी सृष्टि कर सको तो कोई चीज इस शक्तिका प्रतिरोधन हीं कर सकेगी। परन्तु तुम्हें अपने अत्यन्त अचेतन भागोंतक पहुंचना होगा, अपने शरीरके एक-एक अणुमें इस श्रद्धाको स्थापित करना होगा। उदाहरणार्थ, आजकल वैज्ञानिकोंमें भी इस ज्ञानका प्रारंभ हो चुका है कि 'मृत्यु' आवश्यक नहीं है। परन्तु सारी मानवजाति 'मृत्यु'में दृढ़तापूर्वक विश्वास करती है; कहा जा सकता है कि यह मनुष्योंमें सर्वसाधारण रूपसे बैठी हुई एक धारणा है जो दीर्घ कालसे अपरिवर्तित अनुभवपर स्थापित है। यदि इस विश्वासको पहले तो सचेतन मनसे और फिर प्राण-प्रकृति और अवचेतन भौतिक स्तरोंसे निकाल बाहर किया जाय तो मृत्यु अपरिहार्य नहीं रह जायगी।

परंतु मृत्युकी यह धारणा केवल मानव-मनमें ही तो नहीं है, पशुजाति इसे मनुष्यके पहलेसे जानती थी।

इस पृथ्वीपर जितने जीवन हैं उन सभीके साथ मृत्यु एक तथ्यके रूपमें लगायी गयी है, किन्तु प्रकृतिने इसे जिस मूल अर्थमें रखा था उसे छोड़कर मनुष्य इसे और ही अर्थमें समझते हैं। मनुष्य और मनुष्य-तलके नजदीकवाले पशुओंकी चेतनामें मृत्युकी आवश्यकताका एक विशिष्ट रूप और एक विशिष्ट अर्थ हो गया है। निम्नतर प्रकृतिमें जो अवचेतन ज्ञान है, जो इस अर्थको आश्रय दिये हुए है, वह है फिरसे नया होनेकी, परिवर्तन और रूपान्तरकी आवश्यकताका अनुभव।

पृथ्वीपर जड़तत्त्वकी जो अवस्थाएं हैं उन्होंने मृत्युको अनिवार्य बनाया। जड़तत्त्वके विकासका सारा अर्थ ही है पहलेकी अचेतन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्थाको छोड़कर उत्तरोत्तर बढ़ती हुई चेतनामें परिणत होना; और परिणत होनेकी इस प्रक्रियामें, जब यह सब यथार्थमें क्रियान्वित होने लगा तो आकारोंका विनाश आवश्यक हो गया। कारण, संगठित व्यष्टिगत चेतनाको स्थायी सहारा देनेके लिये स्थिर रूपकी आवश्यकता हुई। और आकारकी इस स्थिरताने ही मृत्युको अपरिहार्य बना दिया। क्योंकि जड़तत्त्वको आकार धारण करने थे, क्योंकि आकार धारण किये विना जीवन-शक्तियों अथवा चेतनाकी शक्तियोंका व्यष्टिकरण तथा पिंड-रूप असंभव था और इनके बिना पार्थिव भूमिकापर संगठित अस्तित्वके लिये प्रारंभिक अवस्थाओंका अभाव होता। परंतु आकारमें बंधी पिंड-रूप रचनाका यह स्वभाव है कि वह तुरन्त कठोर, अनम्य और पाषाणवत् बन जानेकी ओर प्रवृत्त होती है। व्यक्तिगत आकार सब ओरसे बांध रखनेवाले सांचेके रूपमें स्थिर और कायम रहना चाहता है, वह शक्तियोंकी गतियोंका अनुसरण नहीं कर सकता, विश्वलीलाकी गतिशीलतामें जो परिवर्तन होते रहते हैं उनके साथ सामंजस्य रखकर वह अपनेको परिवर्तित नहीं कर सकता, प्रकृतिकी मांगोंको वह लगातार पूरा नहीं कर सकता और वह उसके साथ-साथ नहीं चल सकता, वह प्रवाहके बाहर हो जाता है। आकार और उसपर दबाव डालनेवाली शक्तिके बीच जो उत्तरोत्तर बढ़ती हुई असमानता और असामंजस्य है, जब एक विशिष्ट सीमातक पहुंच जाता है तो आकारको पूर्ण रूपसे नष्ट कर देना अनिवार्य हो जाता है। तब एक नये आकारकी सृष्टि करनी पड़ती है, एक नवीन सामंजस्य और समानताको संभावित करना पड़ता है। मृत्युका सच्चा अर्थ यही है और प्रकृतिमें इसका यही उपयोग है। परन्तु आकार यदि अधिक फुर्तीला और नमनशील बन सके और शरीरके अणुओंको बदलती हुई चेतनाके अनुसार जागृत किया जा सके तो ऐसे उग्र विनाशकी आवश्यकता नहीं होगी, मृत्यु अपरिहार्य नहीं रह जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसीने कहा है कि प्रकृतिमें जो दुर्घटनाएं होती हैं और भूकम्प, भयंकर बाढ़ और महाद्वीपोंके जलमग्न होनेके जैसी मुसीबतें आती हैं, वे बेसुरी और पापपूर्ण मानवजातिके कारण ही हैं और मानवजातिकी उन्नति और विकासके साथ-साथ भौतिक प्रकृतिमें भी तदनुरूप परिवर्तन हो जायगा -- यह बात कहांतक सत्य है ?

इस विषयका सत्य शायद यह है कि विपत्तियों और मुसीबतोंसे ग्रस्त प्रकृतिमें तथा असामंजस्यपूर्ण मानवजातिमें, दोनोंमें, चेतनाकी एक और अभिन्न गति ही अभिव्यक्त होती है। इन दोनोंमें कार्य-कारण सम्बन्ध नहीं है, बल्कि ये दोनों एक ही भूमिकापर स्थित हैं। इन दोनोंके ऊपर एक चेतना विद्यमान है जो पृथ्वीपर अभिव्यक्त और मूर्तिमान होनेकी चेष्टा कर रही है। और पृथ्वीकी ओर अवतरण करते हुए मनुष्यों और भौतिक प्रकृतिमें सर्वत्र उसे समान रूपसे प्रतिरोध ही मिलता है। हम पृथ्वीपर जो अव्यवस्था और असामंजस्य देखते हैं वह इस प्रतिरोधका ही फल है। विपत्ति और विपर्यय, संघर्ष और हिंसा, अन्धकार और अज्ञान — ये समस्त दोष इस एक ही स्रोतसे निकलते हैं। बाह्य प्रकृतिका कारण मनुष्य नहीं है, और न मनुष्यका कारण बाह्य प्रकृति है। बल्कि दोनों उस एक वस्तुपर निर्भर हैं जो इनके पीछे है, और इनसे महान् है। और दोनों उस वस्तुको अभिव्यक्त करनेके लिये जड़-प्राकृतिक जगत्‌की शाश्वत और प्रगतिशील गतिके अंश हैं।

अब, यदि पृथ्वीपर कहीं ऐसी ग्रहणशीलता जाग्रत हो जाय, एक ऐसा उद्घाटन हो जाय जो अपनी पवित्रतामें भागवत चेतनाकी किसी चीजको उतार लानेके लिये पर्याप्त हो तो जड़ जगत्‌में जो अवतरण या अभिव्यक्ति होगी वह केवल आन्तरिक जीवनका ही रूपान्तर नहीं करेगी बल्कि जड़-प्राकृतिक अवस्थाओंका भी, मनुष्य और प्रकृतिमें जो भौतिक अभिव्यक्ति हो रही है, उसका भी रूपान्तर कर सकेगी, यह अवतरण मानवजातिकी सामूहिक अवस्थापर निर्भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। यदि हमें मानवसमूहकी सामंजस्य, एकता और अभीप्सा-की उस अवस्थातक पहुंचनेकी प्रतीक्षा करनी पड़े जो दिव्य प्रकाश-को उतार लाने और जड़-प्राकृतिक अवस्थाओंका रूपान्तर करनेके लिये काफी बलवान् हो, तब तो बहुत आशा नहीं की जा सकती। परन्तु ऐसी संभावना है कि कोई एक व्यक्ति अथवा कोई छोटा-सा संघ या कुछ थोड़े-से लोग इस अवतरणको प्राप्त कर सकें। इस विषयमें संख्या अथवा विस्तारका महत्त्व नहीं है। भागवत चेतनाका एक बिन्दु भी यदि पार्थिव चेतनामें प्रवेश कर जाय तो वह यहांकी हरेक वस्तुका रूपान्तर कर सकेगा।

चेतनाकी उच्चतर और निम्नतर भूमिकाओंमें परस्पर सम्बन्ध स्थापित होने और इनके एक-दूसरेमें मिल जानेका भेद ही वह महान् रहस्य, वह गुप्त कुंजी है। इसमें रूपान्तर करनेकी शक्ति सदा ही रहती है, यहां वह शक्ति अधिक परिमाणमें होगी और उच्चतर अवस्थाको प्राप्त करायेगी। यदि पृथ्वीपर कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसमें उस भूमिकाके साथ, जिसकी अभीतक यहां अभिव्यक्ति नहीं हुई है, सचेतन सम्बन्ध स्थापित करनेकी क्षमता हो और उस भूमिकामें ऊपर उठनेके द्वारा वह अपनी चेतनामें उस भूमिका और पार्थिव भूमिकाको मिलाकर उनमें समस्वरता ला सके, तो प्रकृतिके रूपान्तरकी निर्णायक गति शुरू हो सकती है जो अभीतक नहीं हो पायी है। एक नयी शक्तिका अवतरण होगा और पृथ्वीके जीवनकी अवस्थाओंको बदल देगा।

फिर भी, इतना तो है ही कि जब-जब किसी महान् आत्माका आविर्भाव हुआ है और उन्होंने सत्यकी किसी ज्योतिको प्रकट किया अथवा पृथ्वीपर किसी नयी शक्तिका अवतरण कराया, तब-तब पृथ्वीकी अवस्थाओंमें फेर-फार हुआ है, यद्यपि परिवर्तन बिलकुल उस प्रकारसे नहीं हुआ जिस प्रकारकी आशा और प्रतीक्षा की गयी थी। उदाहरणार्थ, कोई व्यक्ति, जिसने ज्ञान, चेतना और आध्यात्मिक अनुभूतिकी अमुक भूमिकाको प्राप्त किया है, आया और बोला : "मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे लिये मुक्ति ला रहा हूं।" या "मैं तुम्हारे लिये शांति ला रहा हूं।" जो लोग उसके इर्द-गिर्द थे उन्होंने शायद यह समझा कि वह उस वस्तुको स्थूल रूपमें ला रहा है, किंतु जब उन्होंने देखा कि उन्होंने जैसा सोचा था वैसा कुछ भी नहीं हुआ, तो वे यह न समझ सके कि उसने क्या किया। उसने जो कुछ किया था वह तो चेतनाका एक परिवर्तन था, एक ऐसी शांति थी जिसे लोग अभीतक नहीं जानते थे, अथवा मुक्तिलाभ करनेकी ऐसी क्षमता थी जो लोगों-में पहले नहीं थी। परंतु ये क्रियाएं आंतर जीवनसे संबंध रखती थीं और इनसे जगत्के बाह्य रूपमें कोई दृश्य परिवर्तन नहीं हुआ। संभव है कि जगत्के बाह्य स्वरूपका परिवर्तन करनेकी उसकी इच्छा ही न रही हो, हो सकता है कि इसके लिये उसके पास आवश्यक ज्ञान न हो, फिर भी ऐसे पथप्रदर्शक जगत्में कुछ कर गये हैं।

सब कुछ उल्टा दिखायी देनेके बावजूद यह जरूर हो सकता है कि पृथ्वी किसी विशिष्ट साक्षात्कारके लिये एक-एक पग, एक-एक चरण तैयार हो रही है। मानव सभ्यतामें और प्रकृतिमें कुछ परि-वर्तन हुआ है। यदि यह प्रत्यक्ष रूपसे दिखायी नहीं देता है तो इसका कारण यह है कि हम इस विषयको केवल बाह्य दृष्टिकोणसे ही देखते हैं और यह कि अभीतक जड़तत्त्व और उसकी कठिनाइयों-का सामना गंभीरतापूर्वक और सम्यक् रूपसे नहीं किया गया है। फिर भी आंतरिक प्रगति हुई है, आंतर चेतनामें दिव्य ज्योतिके अव-तरण हुए हैं। परंतु जड़तत्त्वमें किसी उपलब्धिके बारेमें कुछ कहना कठिन है, कारण वहां जो कुछ हो चुका होगा उसे हम ठीक-ठीक नहीं जानते।

अति प्राचीन कालमें महान् और सुन्दर सभ्यताएं हो चुकी हैं, जिनकी भौतिक अवस्था संभवतः वर्तमान कालके जितनी ही उन्नत थी। एक विशिष्ट दृष्टिकोणसे देखनेपर यह ज्ञात हो सकता है कि अत्यन्त आधुनिक सभ्यता अत्यन्त प्राचीन सभ्यताकी पुनरावृत्ति-मात्र है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि कहींपर कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगति हुई ही नहीं है। कम-से-कम हमारी आंतरिक प्रगति तो हुई है और हमारे जड़ अंगोंमें उच्चतर चेतनाके आवाहनका प्रत्युत्तर देनेकी तत्परता अधिक परिमाणमें जागृत हो गयी है। बार-बार एक ही क्रियाको इसलिये दोहराना पड़ा है कि जिस बातका प्रयास किया गया था वह कभी पर्याप्त रूपमें नहीं हुआ। परंतु प्रत्येक बार वह पर्याप्त रूपमें किये जानेके समीप पहुंचता रहा है। जब हम किसी कसरतको बारंबार करते हैं तो यह मालूम होता है कि हम सदा एक ही चीज दुहरा रहे हैं, किन्तु यह होते हुए भी उसके संचित परिणामस्वरूप कुछ सफल परिवर्तन होता है।

भूल यह होती है कि हम इन बातोंको मानवचेतनाके सीमित आयामोंमें से देखते हैं। और इस तरह देखनेपर ये गहन और विशाल गतियां समझमें नहीं आतीं। मर्यादित मानवबुद्धिद्वारा इन्हें समझने या इनकी व्याख्या करनेका प्रयत्न करना खतरनाक है। यही कारण है कि दर्शनशास्त्र जगत्के रहस्यका उद्घाटन करनेमें सदा असफल रहा है। क्योंकि उसने इस विश्वको मानवमनके छोटे-से ढांचेके अन्दर बैठा देनेकी चेष्टा की है।

हममेंसे कितनोंको अपने पूर्वजन्मोंकी याद है ?

हम सभीमें, चेतनाके एक भागमें, यह स्मृति रहती है। परन्तु यह एक खतरनाक विषय है, मानवमनको अतिरंजनाका बहुत शौक होता है। जैसे ही उसको पुनर्जन्मके सत्यके बारेमें कुछ ज्ञात होता है, वैसे ही वह इसके चारों ओर एक सुन्दर कहानी गढ़ डालना चाहता है। तुम्हें बहुत-से लोग इस बारेमें अद्भुत कहानियां सुनायेंगे कि इस सृष्टिकी रचना कैसे हुई, भविष्यमें इसकी क्या गति होगी, तुम पहले कैसे और कहां जन्मे थे और आगे क्या होओगे, कैसे-कैसे जीवन तुमने बिताये हैं और अब कैसे-कैसे जीवन बिताओगे। परन्तु इन सबसे आध्यात्मिक जीवनका कुछ सम्बन्ध नहीं। पूर्व-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्मोंकी सच्ची स्मृति पूर्ण ज्ञानका एक अंग अवश्य हो सकती है, किन्तु इस ज्ञानकी प्राप्ति इस प्रकारकी सुन्दर-सुन्दर कल्पना-तरंगोंसे संभव नहीं। एक ओरसे यह ज्ञान वस्तुनिष्ठ है तो दूसरी ओरसे बहुत कुछ व्यक्तिगत और आत्मनिष्ठ अनुभूतिपर निर्भर है और यहीं बनावट और विकार पैदा करने तथा असत्य रचनाओंको गढ़ डालनेकी संभावना रहती है। इन बातोंके सत्यतक पहुंचनेके लिये आवश्यक है कि अनुभव ग्रहण करनेवाली चेतना शुद्ध और निर्मल हो, किसी भी मनोमय या प्राणमय हस्तक्षेपोंसे मुक्त हो और तुम्हारी व्यक्तिगत धारणाओं और भावुकताओंसे तथा मनकी अपने ही तरीकेसे समझाने या व्याख्या करनेकी आदतसे मुक्त हो। पूर्व जन्मोंका अनुभव सत्य हो सकता है, किन्तु तुमने जो देखा और तुम्हारे मनने उसकी जो कुछ व्याख्या की अथवा उसका जो रूप गढ़ा, इन दोनोंके बीचमें एक बड़ी भारी खाई होती है। जब तुम मानव भावनाओंसे ऊपर उठ सको और अपने मनसे अलग हो सको तभी इस सत्यतक पहुंच सकोगे।

(मातृवाणी भाग १, खंड १)

श्रीमांके उत्तर

(पहली उत्तरमालाका अगला भाग)

[नींदमें बातें करना; नींदके रूप; स्वप्न और अनुभूतिमें भेद; जल्दी सोना और जल्दी जागना क्यों अच्छा है।]

मां,

कभी-कभी मैं नीदमें बातें करता हूं। क्या यह इस बातकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निशानी है कि मेरा मन नियंत्रणमें नहीं है, रातमें यह शान्त रहे इसके लिये क्या करना चाहिये ?

साधारणतया, रातको जब शरीर सो जाता है, तो मन सैरके लिये निकल पड़ता है, क्योंकि उसके लिये लंबे समयतक चुपचाप रहना कठिन होता है; इसीलिये अधिक लोग नींदमें बात नहीं करते।

किन्तु ऐसा लगता है कि तुम्हारा मन शरीरमें ही बना रहता है; इसलिये उसे यह सिखाना चाहिये कि वह चुपचाप शान्त पड़ा रहे जिससे कि शरीरको आराम मिल सके। सोनेसे पहले थोड़ा-सा एकाग्र होनेसे इसमें जरूर लाभ होगा।

आशीर्वाद

२९-११-१९६१

मां,

जब शरीर सो जाता है तो क्या मनका शरीरसे बाहर निकलना अच्छा होता है ? मन सैरके लिये कहां जाता है ?

हर एकके लिये अलग-अलग संभावनाएं रहती हैं। जितने लोग उतनी ही संभावनाएं। किन्तु हर एकको उन अवस्थाओंको जान लेना चाहिये जिनमें उसका शरीर अधिक-से-अधिक आराम पा सकता है।

व्यक्ति अपनी रातोंके बारेमें और नींदके बारेमें उसी तरह सचेतन हो सकता है जैसे कि वह अपने दिनोंके बारेमें सचेतन होता है। ये अन्दरके विकासकी और अपनी चेतनाके अनुशासनकी बात है।

आशीर्वाद

१-१२-१९६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां,

"सचेतन" होनेसे आपका क्या मतलब है? अपने अन्दर केवल भगवान्‌की उपस्थितिके बारेमें होना या सब क्रियाओं, बोले गये शब्दों आदिके बारेमें भी ? क्या इन सबका भी महत्त्व है ?

तुम इस बातके बारेमें विश्वास रखो कि अपने अन्दर भगवान्‌की उपस्थितिके बारेमें सचेतन होना बहुत हदतक हमारे सारे रंग-ढंगको बदल देता है और हमारे मन, प्राण और शरीरके सभी कामोंको विशेष रूपसे नियंत्रणमें ले आता है।

और यह नियंत्रण उन सभी नियंत्रणोंसे, जिन्हें हम बाहरी साधनों द्वारा प्राप्त करते हैं, बहुत अधिक रूपमें शक्तिशाली और प्रकाशपूर्ण होता है।

आशीर्वाद
९-१२-१९६९

स्वप्नरहित निद्राका क्या स्वरूप है ?

साधारणतया तुम जिसे स्वप्नरहित निद्रा कहते हो वह इन दोमें से एक प्रकारकी होती है : (१) या तो स्वप्नमें तुम जो कुछ देखते हो वह तुम्हें याद नहीं रहता; (२) या तुम ऐसी नितान्त अचेतनामें जा गिरते हो जो लगभग मृत्यु होती है, मृत्युका एक आस्वाद होती है। परन्तु एक ऐसी निद्रा भी संभव है जिससे तुम्हारी सत्ताके प्रत्येक भागमें परिपूर्ण नीरवता, निश्चलता और शान्ति छा जाती है और तुम्हारी चेतना सच्चिदानन्दमें लीन हो जाती है। इस अवस्थाको शायद ही निद्रा कहा जा सके, क्योंकि यह अत्यन्त सचेतन होती है। इस अवस्थामें तुम कुछ क्षण रहो तो इन थोड़े-से क्षणोंमें तुम्हें घंटोंकी साधारण निद्राकी अपेक्षा अधिक आराम और ताजगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल जाती है। यह अवस्था अचानक नहीं आ जाती, इसके लिये लंबी साधनाकी आवश्यकता है।

स्वप्नोंमें कुछ ऐसे लोगोंसे भेंट और जान-पहचान हो जाती है, जिनसे बादमें बाह्य जगत्में परिचय होता है, यह कैसे होता है?

मनोमय या प्राणमय लोकमें सजातीयता कुछ लोगोंको एक-दूसरेके प्रति आकृष्ट करती है। पृथ्वीपर मिलनेसे पहले बहुधा लोग इन लोकोंमें मिलते हैं। लोग वहां इकट्ठे हो सकते हैं, परस्पर बातचीत करते और पृथ्वीके सभी सम्बन्ध जोड़ सकते हैं। इन संबंधोंको कुछ लोग जानते हैं, कुछ नहीं जानते। कुछ, बल्कि अधिकांश लोग ऐसे ही हैं, जो आन्तर सत्ता और आन्तर आदान-प्रदानको नहीं जानते, फिर भी जब बाह्य जगत्में किसी ऐसे नवीन व्यक्तिका चेहरा उन्हें दिखायी देता है तो वह उन्हें किसी कारण अत्यन्त परिचित और सर्वथा जाना-पहचाना लगता है।

स्वप्न और अनुभूतिमें विभेद कैसे किया जाय?

सामान्य रूपसे स्वप्न अपने पीछे एक क्षणिक अव्यवस्थित-सा प्रभाव छोड़ जाते हैं जब कि अनुभूति एक गहन और स्थायी भावना जगाती है।

किन्तु ये अन्तर सूक्ष्म और अनेक होते हैं, व्यक्ति यह विभेद धीरे-धीरे, सतर्कता और सच्चाईसे किये गये निरीक्षणके द्वारा ही कर सकता है, दूसरे शब्दोंमें, उसे यह कार्य निष्पक्ष भावमें, अपनी रुचियोंसे ऊपर उठकर करना होगा।

२४-३-१९६५

एक समय था जब मैं आपको स्वप्नोंमें प्रायः देखा करता था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी-कभी श्रीअरविन्दको भी। किन्तु अब बहुत समयसे मैं इस आनन्दसे वंचित हूं। ऐसा क्यों? इसका अर्थ क्या है?

हमें स्वप्नोंमें देखनेका सबसे अच्छा तरीका यह है कि सोनेसे पहले हमपर एकाग्र होओ। तुम क्या पहलेकी भांति अब भी ऐसा करते हो? यह निद्रावस्थामें अवांछित स्थानोंपर न जानेका भी उपाय है। कारण, ऐसे स्थानोंपर निश्चय ही तुम हमसे नहीं मिल सकते। चेष्टा करो, परिणाम तुम्हारे सामने आयेगा।

२३-३-१९६६

दो दिन पूर्व मैंने स्वप्नमें आपको देखा था और आप काफी समय मुझसे बातें करती रहीं। मुझे सारी बातचीत तो याद नहीं, पर इतना आभास मुझे अवश्य है कि मैं प्रत्येक बुधवारको जो प्रश्न पूछता हूं, उससे आप प्रसन्न नहीं हैं।

तुमने स्वप्नमें मुझे देखा और मेरी बातें सुनीं यह प्रगतिका चिह्न है, इससे मैं सन्तुष्ट हूं। किन्तु यह भी सत्य है कि जब मैं प्रति सप्ताह तुम्हें एक प्रश्न पूछनेका अवसर देती हूं तो मैं तुम्हें थोड़ा आलसी और उदासीन-सा पाती हूं। तुम्हारे प्रश्न भी अति साधारण होते हैं और मुझे ऐसा प्रतीत नहीं होता कि तुम वास्तवमें जीवन और जगत्के रहस्योंकी खोज करना चाहते हो।

१८-५-१९६६

मां,

जल्दी सोना और जल्दी जागना क्यों अच्छा है?

जब सूर्य अस्त होता है तो एक प्रकारकी शांति पृथ्वीपर विराज जाती है और यह शांति निद्राके लिये बहुत लाभकारी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब सूर्य उदय होता है, तो एक ओजभरी शक्ति पृथ्वीपर उतरती है और यह शक्ति कामके लिये लाभकारी है।

यदि व्यक्ति देरमें सोता है और देरसे उठता है तो वह प्रकृति की शक्तियोंसे उलटा काम करता है और यह कोई बुद्धिमानीकी बात नहीं है।

आशीर्वाद
२१-१२-१९६१

शान्ति

प्र० मनमें स्थायी शांति और नीरवता कैसे आ सकती है?

उ० पहले तुम्हें संकल्प करना चाहिये, उसके बाद कोशिश करनी चाहिये, बस कोशिश करते जाओ। इसके बहुत-से तरीके हैं। एक यह है: बैठ जाओ और पचासों बातें सोचनेकी जगह अपने-आपसे कहो, "शांति, शांति, शांति।" शांति और नीरवताकी कल्पना करो। विचारोंपर नजर मत डालो, उनका शोर मत सुनो। जब कोई आदमी तुम्हें तंग कर रहा हो और तुम उससे पिंड छुड़ाना चाहते हो तो तुम क्या करते हो? तुम सुननेसे इंकार कर देते हो और अपना मुंह मोड़कर कुछ और सोचने लगते हो। विचारोंके साथ ऐसा ही व्यवहार करो।

बार-बार चुप बैठकर शांति लानेके अवसर निकालते रहो। सवेरे सोकर उठते ही और रातको सोनेसे पहले यह करो। इसका तुम्हारे स्वास्थ्यपर भी अच्छा असर पड़ेगा। खानेसे पहले कुछ मिनटके लिये यही करो। तुम्हें यह देखकर आश्चर्य होगा कि इससे खाना हजम करनेमें कितनी मदद मिलती है।

अगर तुम काफी समयतक प्रयास करते रहो तो शांतिको तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिमागमें घुसनेकी जरूरत न होगी, तुम चाहे जो कर रहे हो, चाहे जैसी परिस्थितियां हों, शांति हमेशा बनी रहेगी। पर इसमें बरसों लग जाते हैं। शुरूमें बस दो-तीन मिनटके लिये, बहुत सरल तरीके-से शांतिका सूत्र साधो। जब कोई साधना जटिल हो तो उसके लिये प्रयास करना पड़ता है, और प्रयास करनेसे शांति नहीं रहती। तुम किसी अनन्य मित्रको कैसे बुलाते हो? बिना प्रयासके एक शब्द काफी होता है, वह तुम्हारे पास आ खड़ा होता है। बस, इसी तरह तुम्हें शांतिको अपना मित्र बनाकर बुलाना चाहिये।

एक शक्ति है जिसपर कोई शासन अधिकार नहीं कर सकता; एक सुख है जिसे कोई भी पार्थिव सफलता नहीं ला सकता; एक प्रकाश है जिसे कोई बुद्धिमानी नहीं पा सकती; एक ज्ञान है जिस-पर कोई भी दर्शन या विज्ञान अधिकार नहीं कर सकता; एक आनंद है जिसका उपभोग किसी भी इच्छाकी पूर्तिसे नहीं हो सकता; प्रेम-की एक प्यास है जिसे कोई भी मानवी सम्बन्ध नहीं बुझा सकता; एक शान्ति है जो कहीं नहीं प्राप्त हो सकती, मृत्युमें भी नहीं।

यह वही शक्ति, सुख, प्रकाश, ज्ञान, आनन्द, प्रेम और शान्ति है जो भागवत कृपासे प्रवाहित होते हैं।

—श्रीमां

कभी निराश न होओ

कुछ लोग सीधे रास्तेपर चलते हैं और शीघ्र ही लक्ष्यतक जा पहुंचते हैं। इसके विपरीत कुछ लोग भूल-भुलैया पसन्द करते हैं और उन्हें अधिक समय लगता है, लेकिन अन्त वही होता है। मैं अनुभवसे जानती हूं कि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसके जीवनमें एक बार भी भगवान्‌के लिये (हम भाषाकी सुविधाके लिये भगवान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दका प्रयोग करते हैं, वह भले किसी और ही नामका उपयोग करता हो) जोरदार इच्छा पैदा हुई हो और उसे भगवान् न मिलें। चाहे वह कुछ समयके लिये भगवान्से मुंह मोड़ ले — इसका कोई महत्त्व नहीं — फिर भी वह भगवान्को पायेगा। उसे कम या ज्यादा संघर्ष करना पड़ सकता है, कम या ज्यादा समयतक प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है, लेकिन मैं फिरसे कहती हूं, वह एक दिन जरूर भगवान्तक जा पहुंचेगा। जब एक बार अन्तरात्माको चुन लिया गया है, तो यह अनिवार्य है कि वह सचेतन हो क्योंकि उसका समय आ गया है। और एक बार समय आ जाय तो परिणाम कम या या ज्यादा तेजीसे आयेगा। तुम वहांतक कुछ महीनोंमें पहुंच सकते हो, तुम्हें कुछ वर्ष लग सकते हैं, हो सकता है कि तुम्हें कुछ जीवन लग जायं, लेकिन पहुंचोगे अवश्य।

इस बातका खास ध्यान रखो, तुम्हें चुनावकी पूरी आजादी दी गयी है। अगर तुम अपने अन्दर यह निश्चय कर लो कि तुम इसी जीवनमें लक्ष्यतक जा पहुंचोगे, तो तुम जरूर जाओगे। मेरा मतलब यह नहीं है कि तुम्हें यह निर्णय हमेशा बनाए रखना चाहिये या चौबीस घंटे दोहराते जाना चाहिये — अगर यह कर सको तब तो बारह महीनोंमें ही सफलता मिल जायगी। मेरा मतलब है कि अगर अचानक तुम्हारे अन्दर यह संकल्प जागे — भले एक ही बार सही, उसकी एक झलक ही सही — तो भी तुम्हारे जीवनपर मुहर लग जायेगी। इसका यह कोई कारण नहीं है कि तुम मार्गमें अपना समय नष्ट करो, यह कोई कारण नहीं है कि तुम भूल-भुलैयामें भटकते रहो और जब लक्ष्यतक पहुंचो तो रास्तेमें खोई हुई, गुम की हुई चीजोंका नुकसान उठाकर पहुंचो। लेकिन यह एक कारण है कि तुम्हें कभी निराश न होना चाहिये — चाहे जितनी कठिनाइयां और बाधाएं आया करें।

(बुलेटिन ५६ के आधारपर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धम्मपद

(३)

अक्कोच्छि मं अवधि मं अजिनि मं अहासि मे।
ये च तं उपनहन्ति वेरं तेसं न सम्मति ॥३॥

"मेरी निंदा की", "मुझे मारा", "मुझे पराजित किया", "मुझे लूट लिया" —— जो ऐसे विचारोंको मनमें पालते हैं उनका वैर कभी शांत नहीं होता ॥ ३॥

'धम्मपद'ने सबसे पहले यह कहा है कि बुरे विचार दुःख लाते हैं और अच्छे विचार सुख। अब वह बुरे विचारोंके उदाहरण देता है और कहता है कि दुःखसे कैसे बचा जा सकता है। यह है पहला उदाहरण, मैं दुहराती हूं: मेरी निंदा की, मुझे मारा, मुझे हराया, मुझे लूट लिया", और फिर वह कहता है: "जो लोग ऐसे विचारोंका पोषण करते हैं उनका वैर कभी शांत नहीं हो सकता।"

हमने अपनी मानसिक साधनाका आरंभ किया है और इसके लिये मानसिक विकासके क्रमबद्ध स्तरोंको अपना आधार बनाया है: हमने यह देखा है कि इस साधनामें एकके बाद एक, यदि तुम्हें भली-भांति याद हो, क्रमसे आनेवाली चार क्रियाएं हैं जिनका हमने इस प्रकार वर्णन किया है: निरीक्षण करना, चौकसी करना, संयमित करना और प्रभुत्व स्थापित करना। और अपने पिछले पाठमें —— मुझे ऐसी आशा है —— हमने यह सीखा है कि अपने विचारोंसे अपने-आपको कैसे पृथक् करें ताकि हम उन्हें एक सतर्क द्रष्टाकी तरह देख सकें।

आज हम लोग यह सीखेंगे कि इन विचारोंपर चौकसी कैसे रखी जाय। सबसे पहले तुम उनकी ओर ताको और फिर उनकी निगरानी करो। हम एक ज्ञानवान् जजकी तरह उनको ध्यानपूर्वक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखना सीखते हैं ताकि हम अच्छे और बुरे विचारोंके बीच, लाभदायी और हानिकारक विचारोंके बीच, विजयकी ओर ले जानेवाली रचनात्मक विचारों और विजयसे दूर ले जानेवाले पराजयवादी विचारोंके बीच विभेद कर सकें। यही वह विवेक-शक्ति है जिसे हमें अब अवश्य प्राप्त करना चाहिये, यही हमारे आज रातके ध्यानका विषय होगा।

जैसा कि मैं तुमसे कह चुकी हूं, 'धम्मपद' हमें उदाहरण देगा, पर उदाहरण तो उदाहरण ही हैं। हमें स्वयं यह सीखना होगा कि अच्छे विचारोंको हम बुरे विचारोंसे अलग कैसे कर सकते हैं, और इसके लिये, जैसा कि मैं कह चुकी हूं, तुम्हें एक ज्ञानवान् जजकी तरह ध्यानपूर्वक देखना होगा — अर्थात्, जितना अधिक संभव हो उतना अधिक पक्षपातशून्य होकर देखना होगा। यह उन शर्तोंमेंसे एक अनिवार्य शर्त है।

१३.९.१९५७

माताजीने कहा है

१ — संकट आनेपर ही आदमी अपना स्वाभाविक साहस दिखा सकता है, कठिनाइयां आनेपर ही हृदयकी निष्ठा प्रकट होती है। जैसा कि मैंने १९४२ की नये सालकी प्रार्थनामें कहा था, इस वर्ष जिस चीजकी सबसे अधिक आवश्यकता है वह है सहनशीलता।

२ — प्रभो, हमें वह अदम्य साहस दे जो तेरे ऊपर पूर्ण विश्वाससे ही आता है।

३ — भारत इस देशकी भूमि, यहांकी नदियां और पहाड़ नहीं है। यहांके निवासियोंका सामूहिक नाम भी भारत नहीं है। भारत एक जीवित-जाग्रत सत्ता है, उतनी ही जीवित-जाग्रत जितने शिव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर देशकी अपनी आत्मा होती है। अगर तुम राजनीतिक दृष्टिसे परिवर्तन कर दो तो वे सच्चे नहीं होंगे। उदाहरणके लिये, इन दिनों आस्ट्रिया जर्मनीका भाग बना लिया गया है फिर भी वह एकदम अलग है और आस्ट्रियाकी आत्मा दुःखी है।[1] भारत शिवकी कोटिकी देवी है और अगर वह चाहे तो मानव रूपमें भी प्रकट हो सकती है।

४— सौन्दर्यकी दृष्टिसे भूरा रंग गोरे रंगसे ज्यादा अच्छा होता है। लेकिन यह कहना मूर्खता है कि कोई सिर्फ अपने रंगके कारण ज्यादा अच्छा या ज्यादा खराब है। अफ्रीकाका नीग्रो सोचता है कि उसीका रंग सबसे अच्छा है। जापानी कहते हैं कि उनका रंग सबसे सुन्दर होता है। यह बहुत नीचे स्तरकी चेतनाका सूचक है, एक ऐसी चेतनाका जो अभी-अभी निश्चेतनामेंसे निकली है। यह विचार नहीं है, यह संवेदन नहीं है, यह उनसे नीचेकी चीज है। जब तुम रंगकी श्रेष्ठताकी बात सोचते हो तो तुम्हारी अन्तरात्मा तुम्हारी बेवकूफीपर हंसती है क्योंकि वह जानती है कि वह गोरे, काले, पीले, लाल, सब प्रकारके शरीरोंमें रह चुकी है। जब तुम्हारे अन्दर इस तरहका भाव उठे तो उसे अपनी चेतनाके सामने रखो, वह गायब हो जायगा।

५— उग्रता और क्रूरतामें फर्क होता है। उग्रताके दौरेमें आदमी बहुत भयंकर काम कर सकता है। परन्तु बादमें उसे पश्चाताप होता है जब कि क्रूर व्यक्ति जो कुछ करता है सोच-समझकर निष्ठुरतापूर्ण कार्य करता है। उसकी हर चीज पहलेसे निश्चित होती है और करनेके लिये की जाती है। उदाहरणके लिये, नाज़ी क्रूर हैं, जापानी भी क्रूर हैं परन्तु रूसी क्रूर नहीं हैं, रूसी लोगोंके कुछ भाग आध्यात्मिकताको समर्पित होते हैं।

---

[1] उन दिनों आस्ट्रियाको हिटलरने हड़प रखा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ — नाज़ी जर्मनी पूरी तरह आसुरिक है। जापानियोंको नाज़ियोंका चेप लग गया है। जर्मनी मार खानेपर बहुत सख्त बदला लेनेकी कोशिश करेगा, मार खाकर उसका निश्चय और भी दृढ़ हो जायगा जब कि जापान कुछ चोटें खाकर ही बदल जायगा। जापानियोंकी सौन्दर्य-भावना उनके पक्षकी बहुत बड़ी चीज है। लेकिन जर्मनीके भी कुछ भाग अच्छे हैं, जैसे, बवेरिया और वे बदल सकते हैं लेकिन प्रशियाके जैसे कुछ भाग तो ऐसे हैं जिनके बदलनेकी कोई आशा नहीं। उनकी कुछ ऐसी व्यवस्था करनी होगी कि वे फिरसे संसारके लिये खतरा न बनने पाएं।

७ — कड़ा परिश्रम किये बिना तुम्हें शक्ति नहीं मिलती, क्योंकि उसके बिना तुम उसके अधिकारी नहीं होते। तुम्हें शक्ति तभी मिलती है जब तुम उसका उपयोग करो।

८ — भक्ति है प्रेम, आदर और आत्मनिवेदन। आत्मनिवेदनके बिना प्रेम नहीं हो सकता। मानव प्रेममें आत्मनिवेदन बहुत ही विरल होता है, वह तो स्वार्थसे भरा होता है। बच्चेका प्रेम स्वार्थपूर्ण होता है क्योंकि उसे वास्तवमें किसी चीजकी जरूरत होती है लेकिन मानव प्रेम उससे कहीं अधिक घटिया होता है। वह तो केवल अधिकार जमाना चाहता है। भक्ति मानव प्रेमसे बहुत अधिक ऊंची चीज है, यह आत्मसमर्पणकी ओर पहला कदम है।

९ — प्र० — मांका कौन-सा रूप हमारे साथ रहता है?

उ० — केवल महासरस्वती तुम्हारे साथ रह सकती हैं। वे ही सारी चीजकी व्यवस्था करती हैं औरब्यौरे की हर चीजको देखती हैं। महाकालीको अपने साथ रखना असंभव है, वे बिजलीकी चमककी तरह आती हैं और बादलकी गर्जनकी तरह चली जाती हैं। साधारणतः लोग महाकाली, महासरस्वती या महालक्ष्मीकी पूजा नहीं करते। वे केवल काली, सरस्वती और लक्ष्मीसे ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। उनकी दृष्टिमें लक्ष्मीकी पूजा वैसी ही है जैसे किसी मालदार स्त्रीसे ब्याह करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० — इतनी लड़ाइयोंके बाद भी चीन जिन्दा है तो अपने साहस, धैर्य और सहनशक्तिके कारण।

११ — आखिर स्वाधीनता क्या है? जो तुम्हारे जी में आये वही करते चलना? लेकिन तुम अपने-आपको तो जानते ही नहीं, क्या तुम जानते हो कि कौन-सी चीज तुम्हारे अन्दरसे आ रही है और कौन-सी बाहरकी है?

१२ — क्रोध, दूसरी सभी उग्र वृत्तियोंकी तरह दुर्बलता अशक्ति और असमर्थताका लक्षण है।

(बातचीतपर आधारित)

आपके प्रश्न :

श्रद्धा

प्र० आध्यात्मिक बातोंपर श्रद्धा जरा मुश्किलसे होती है, देश-विदेशमें इसके नामसे इतने ढकोसले चलते हैं कि पता नहीं लग पाता कि कौन-सी बातको मानें और कौन-सी को न मानें।

उ० ये बातें बहुत हदतक आपके चारों ओरके वातावरण और मुख्य रूपसे प्राथमिक शिक्षापर निर्भर हैं। हमारे शिक्षित कहाने-वाले समाजको यह माननेमें कठिनाई होती है कि विश्वको रचने-वाला कोई ईश्वर है। उसकी युक्ति यही होती है कि यदि ईश्वर है तो हमें दिखायी क्यों नहीं देता, जिन बातोंकी हम परीक्षा नहीं कर सकते उन्हें कैसे मान लें। लेकिन वही लोग बिना प्रश्न किये यह मान लेते हैं कि धरती गोल है। उन्हें इसके लिये किसी प्रमाण-की जरूरत नहीं होती कि परमाणुके अन्दर छिपी हुई शक्तिको मुक्त किया जा सकता है और उसकी ऊर्जाका विनाशात्मक और रचनात्मक दोनों प्रकारका उपयोग हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने ढर्रेपर चलनेवाले शास्त्रोंको और बुढ़िया पुराणको प्रामाणिक मानते हैं और आंखें मूंदकर उनकी बातको मान लेते हैं जब कि आधुनिक ढर्रेपर चलनेवाले उतने ही अंधे होकर पुरानी चीजोंको ठुकरा देते हैं और आधुनिक विज्ञानकी बातोंको निगल जाते हैं। आज आधुनिक विज्ञानपर प्रामाणिकताकी मुहर है, उपाधिधारियोंकी बातें सच्ची मानी जाती हैं।

आप कहेंगे कि विज्ञानकी बातोंकी परीक्षा की जा सकती है। हर एक आदमीके सामने विज्ञानकी पोथी खुली पड़ी है वह जब चाहे परीक्षण करके देख सकता है। लेकिन क्या यह बात सचमुच ठीक है ? क्या हम और आप यह देख सकते हैं कि जमीन गोल है, क्या हम अणुके बारेमें परीक्षण कर सकते हैं ? आप कहेंगे कि इन परीक्षणोंके लिये उपयुक्त शिक्षा और आवश्यक यंत्र हो तभी इन चीजोंको देखा जा सकता है तबतक हमें उन लोगोंकी बात माननी पड़ेगी जो इस डगरपर आगे बढ़ चुके हैं जिन्होंने इन सत्योंको पाया है।

आपकी बात रुपयेमें एक सौ एक पैसे ठीक है। अब इसी बातको दूसरी ओर लगा कर देखिये। भौतिक परीक्षणोंके लिये आपको अमुक प्रकारकी शिक्षा और अमुक यंत्रोंकी जरूरत होती है। ठीक इसी तरह सूक्ष्म आध्यात्मिक परीक्षण करनेके लिये भी आवश्यक शिक्षा और सूक्ष्म यंत्रोंका होना जरूरी है। इन यंत्रोंको ढूंढनेके लिये कहीं बाहर नहीं जाना पड़ता, बड़ी थैली या लाइसेंसकी जरूरत नहीं होती, इनके लिये —

सीस उतारै कर धरै सो चलै हमारे संग

और जबतक हमारे पास उचित उपकरण न हो जायं तबतक उन लोगोंकी बात माननी ही होगी जो हमसे पहले इस मार्गपर चल चुके हैं, जिन्हें उपलब्धियां हुई हैं और जो हमारी सहायताके करने लिये तैयार हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे भौतिक मनको सन्देह करनेकी आदत होती है। हम सबको इस तरहके अनुभव होंगे कि रातके समय हमने दरवाजा ठीक तरह बन्द कर दिया है, ताला लगा दिया है फिर भी मनमें शंका उठती है कि हमने ठीक तरह बन्द किया या नहीं और हम बार-बार जाकर देख आते हैं। यह भौतिक मन अपने भौतिक क्षेत्रमें ही इतनी शंकाएं करता रहता है तो फिर उस क्षेत्रकी तो बात ही क्या है जो इसकी पहुंचसे परे है। और दरवाजेको हम बार-बार देख सकते हैं, पर यह जरूरी नहीं है कि एक आध्यात्मिक अनुभूति बारबार एक ही रूपमें आये इसलिये उसकी परख करना ज्यादा मुश्किल है।

जब हम बारह-खड़ी सीखने लगते हैं तब अक्षरोंके बारेमें अध्यापककी बातको प्रामाणिक मानना ही पड़ता है। गणितमें हम पहाड़ोंकी परख नहीं करते, उन्हें स्वीकार करके आगे चलते हैं तब फिर अध्यात्म क्षेत्रमें ही यह आग्रह क्यों कि उसमें कदम रखनेसे पहले ही हमें उसका पूरा भूगोल सप्रमाण मालूम होना चाहिये, उसके इतिहास, उसके खनिज, उसके भूगर्भ, उसकी स्थूलाकृतिका पूरा नक्शा हमारे सामने होना चाहिये। और ये सूचनाएं मिल भी जाएं तो उनसे कुछ आता जाता नहीं। आप संगीतके जैसी सूक्ष्म और तैरनेके जैसी स्थूल विद्याके बारेमें भाषण सुन लीजिये, किताबें पढ़ लीजिये, फिर भी आप रहेंगे जहांके वहीं। आपको शिक्षकपर विश्वास रखकर सा रे गा मा सीखना होगा या पानीमें उतरना होगा, तभी कुछ सीखनेकी संभावना हो सकती है।

इसी तरह आध्यात्मिक क्षेत्रमें अपनी श्रद्धाके अनुसार मार्गदर्शक चुनकर उसका अनुसरण करना होगा। जबतक उच्चतम सत्य-ज्ञान नहीं मिल जाता तबतक श्रद्धा अत्यन्त आवश्यक है और वह सत्य श्रद्धाके द्वारा ही पाया जा सकता है।

श्रद्धया सत्यमाप्नुते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपसी संबंध

प्र० — श्रीअरविन्दके अनुयायियोंमें आपसमें कैसा सम्बन्ध होना चाहिये ? पहले तो यही माना जाता था कि श्रीअरविन्दके मार्गपर आते ही अपने सगे-सम्बन्धियोंसे, इष्ट-मित्रोंसे नाता तोड़ लेना जरूरी है। क्या यह ठीक है ?

उ० — श्रीअरविन्दके मार्गमें कोई स्थायी विधि-निषेध नहीं है और कोई नियम ऐसा नहीं है जो सबपर लागू होता हो। हर एक साधकका — यहां साधक शब्दका प्रयोग हम बहुत फैले हुए अर्थोंमें कर रहे हैं — अपना मार्ग होता है और हो सकता है कि एक को दी गयी सलाह दूसरेके लिये ठीक न हो।

श्रीअरविन्द और माताजीके योगके अनुसार सभीकी चेतनाको भगवान्के चारों ओर केन्द्रित होना चाहिये। हमारे आपसी और निजी कहानेवाले संबन्ध भी भगवान्की नींवपर खड़े होने चाहिये। साधारणतः हमारे सभी नाते प्राणके आधारपर होते हैं लेकिन साधकके लिये यह जरूरी है कि वह अपने सब प्रकारके सम्बन्ध आध्यात्मिक स्तरसे रखे, प्राण केवल एक वाहनका काम करे। और आध्यात्मिक संबन्धकी सबसे पहली मांग यह है कि चाहे कोई किसी प्रकारका संबन्ध क्यों न हो उसमें ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, विकर्षण, दुर्भावना, लड़ाई-झगड़ा आदिके लिये कोई स्थान न हो। ये सब-की-सब प्राणकी वृत्तियां हैं। इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि अहंकारभरे आकर्षण और प्रेमको, अधिकारकी भावनाको भी तिलांजलि देनी होगी। जो प्रेम दूसरेको बांधकर रखना चाहता है, जरा-सा असन्तुष्ट होनेसे बिदक जाता है, दुःखी या क्रुद्ध होता है, उसकी मनचाही प्रतिक्रिया न हो तो मार-धाड़, गाली-गलौज, घृणा-विद्वेषकी भूमिकापर उतर आता है उसे प्रेम नहीं कहा जा सकता। उसके पीछे एक सच्चा और मजबूत सम्बन्ध होना चाहिये जिसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम-वासना, अधिकार-लिप्सा आदिके लिये जरा भी स्थान न हो।

यह तो हुई आदर्शकी बात। इसे सिद्ध करनेके लिये हर एक-का अपना-अपना तरीका होगा। हर एकको ऐसा तरीका अपनाना होगा जो उसकी प्रकृतिके साथ मेल खाता हो। एक तरीका तो यह है कि साधक यह निश्चय कर ले कि पहले वह भगवान्‌के साथ नाता पक्का करेगा इसके बाद और सब चीजें अपने-आप आती रहेंगी। इसका यह मतलब नहीं है कि वह और सबको छोड़कर नागा बाबा बन जाएगा। नहीं, श्रीअरविन्द दुनियासे मुंह मोड़ना नहीं सिखाते। इसका मतलब यही है कि साधक और तरहके प्रयास करनेकी जगह अपनी सारी शक्ति, अपने सारे प्रयास अपने केन्द्रीय लक्ष्यपर लगायगा और यही सोचेगा कि भगवान्‌के साथ ऐक्य हो जाय, बाकी सब चीजें बादमें अपने-आप आती रहेंगी। हाथीके पांवमें सबका पांव, एक बार सत्यके साथ नाता मजबूत हो जाय तो बाकीका सारा काम वह अपने-आप कर लेगा।

दूसरा तरीका यह है कि आदमी जहां खड़ा है वहींसे आगे चलनेका प्रयास करे। उसका असली उद्देश्य तो वही रहे परन्तु साथ-ही-साथ गौण रूपसे अन्य सम्बन्धोंको भी धीरे-धीरे ठीक और शुद्ध करनेकी कोशिश करता चले और अपनी आन्तरिक शुद्धिके बढ़नेके साथ-ही-साथ ऐसी चीजोंको छोड़ता जाए जो साधकमें शोभा नहीं देतीं जिनमें काम-वासना, क्रोध, हिंसा, द्वेष, राजसिक मांग, अधिकार-लिप्सा, व्यापारी वृत्ति आदि मुख्य हैं। इस तरीकेसे साधकके व्यक्तिगत और सामाजिक सम्बन्ध भी भागवत सम्बन्धके आधारपर हो सकते हैं।

साधकके सम्बन्धोंमें इस तरहका कोई लगाव या बन्धन नहीं होना चाहिये जो उसके मार्गमें बाधक बने, जो पांवमें बेड़ी बनकर उसे आगे बढ़नेसे रोके या भागवत प्रेमके साथ स्पर्धा करे। परि-वारके बन्धन प्रायः ऐसे ही होते हैं और इनके बारेमें सावधान रहना जरूरी है, कुछ लोगोंके लिये जरूरी होता है कि परिवारके बन्धनों-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को पूरी तरह काट दें लेकिन जैसा कि हम कई बार कह चुके हैं, आध्यात्मिक जीवनमें हर एकका अपना अलग धर्म होता है। किन्हीं दोपर एक ही नियम नहीं लागू किया जा सकता। हर एकको बस यही ख्याल रखना चाहिये कि उसके आध्यात्मिक विकासमें कोई बाधा न आए। उसके और भगवान्के बीचमें कोई और खड़ा न हो।

पीड़ाओंसे छुटकारा

"कोरा बाह्य ज्ञान बिलकुल अनुपयोगी मालूम होता है। मनुष्य जबतक प्रपंचके बन्धन नहीं तोड़ लेता तबतक किसी प्रकारका समाधान असंभव है। वृन्दावन वास, पांडिचेरी वासकी लालसाएं मनकी-मनमें ही रह गयीं और अब तो ये बस चित्तको दुखी ही किया करती हैं। आर्थिक, मानसिक, शारीरिक चिंताओंसे पीड़ित हूं। क्या इनपर विजय पायी जा सकती है?"

आप ही के कहे अनुसार आपका सारा जीवन नून, तेल, लकड़ी जुटाते ही बीता है और आपने कभी गंभीरतासे उच्चतर जीवनकी ओर ध्यान नहीं दिया। केवल एक-आध भजन गा लेना, कभी किसी समाजमें जा बैठना या अपने-आपको अत्यंत दीन-हीन कहना काफी नहीं है। इससे कुछ नहीं बनता।

साधारण आदमी यही मानते हैं कि जवानी तो अपने और अपने घरवालोंके लिये होती है पर बुढ़ापा भगवान्को दिया जा सकता है। हारे को हरि नाम। यह ठीक है कि भगवान् किसीको ठुकराते नहीं है, जो जिस अवस्थामें आये उसे अपनी बाहोंमें भर लेते हैं लेकिन उन्हें अपनी ओर बुलाना तो पड़ता ही है। अगर आदमी भगवान्की ओर एक इंच बढ़े तो भगवान् गजभर बढ़ आते हैं पर वह एक इंचका प्रयास तो करना ही होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी वर्तमान अवस्थामें पांडिचेरीमें आकर निवास करनेका मुझे कोई लाभ नहीं दीखता। इसलिये उसके लिये दुःखी होना भी बेकार है। किसी भी स्थानपर रहते हुए अभीप्सा की जा सकती है, भगवान्‌की कृपाको बुलाया जा सकता है, उनके संरक्षणमें रहा जा सकता है। श्रीअरविन्दाश्रममें निवास करनेकी बात तभी सोचनी चाहिये जब आदमी सच्चे भावसे अपने-आपको पूरी तरह, अपने लिये या अपनोंके लिये बिना कुछ बचाये, भगवान्‌को देना चाहता हो और भगवान् जिस परिस्थितिमें रखें उसमें बिना ननुनच किये रहनेको तैयार हों। और फिर यह जरूरी नहीं है कि यहां आकर रहने मात्रसे शांति मिल जाय। कई बार चीज उलटी होती है। यहांके वातावरणको न सह सकनेके कारण कई विरोधी तत्त्व खुलने लगते हैं, अपने अंदर जिन चीजोंपर कभी नजर न गयी थी, वे दिखायी देने लगती हैं और आदमी निराश होने लगता है कि मेरे अंदर यह कहांसे और क्यों आ गया। वास्तवमें होता बस इतना ही है कि बरसोंसे छिपी चीजें हमें दिखायी देने लगती हैं। माताजी ने कहा था कि आश्रममें आना तभी ठीक होता है जब तुम यह अनुभव करो कि इसके बिना तुम जी ही नहीं सकते। और स्पष्ट है कि आप इस स्थितिमें नहीं हैं।

तबतक आप इतना तो कर ही सकते हैं कि आप जो भी काम करते हों उसे शुरू करनेसे पहले और उसके खतम होनेपर भगवान्‌को सच्चे दिलसे पुकारें, जब-जब बन पड़े, जिस तरह से बन पड़े माताजीसे यह प्रार्थना करें कि वे आपको प्रकाश दें और रास्ता दिखायें। माताजी और श्रीअरविन्दकी चीजोंको पढ़िये और उनसे जो प्रेरणा मिले उसके अनुसार जीनेकी कोशिश कीजिये। यह मानकर चलिये कि जीवन एक थाती है, आपका कर्तव्य है कि उसका भगवान्‌के लिये उपयोग करें। अपना कुछ समय निकालकर हर रोज कोई ऐसा काम करें जिसके साथ आपका कोई स्वार्थ न जुड़ा हो, भगवान्‌की सेवाके रूपमें करें, अपने पैसेमेंसे कुछ पैसा, अपनी आवश्यकताओं-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को कम करके, भगवान्के काममें लगायं। यह पहला कदम नहीं, पहले कदमकी भूमिका होगी। इतनेसे आरंभ कीजिये, आप देखेंगे धीरे-धीरे आपके अंदर भगवान्का मंदिर बनना शुरू होगा और तब आपकी पीड़ायें भी कम हो सकती हैं।

लेकिन याद रखिये, पीड़ाएं कम करना ही लक्ष्य नहीं है। ध्रुव और प्रह्लादको कम पीड़ाएं नहीं सहनी पड़ीं। राम और सीतापर कौन-सा पहाड़ नहीं टूटा? हां, भगवान् साथ हो तो पीड़ा पीड़ा नहीं रहती, वह भी प्रियके स्पर्शमें बदल जाती है।

आशा है इतनेसे आपको कुछ सहायता मिलेगी। इस विषयपर तो बहुत कुछ कहा और लिखा जा सकता है।

श्वेत सिंह

(संसारमें सारी अव्यवस्था इसी कारण है कि सत्ताके सभी अंग अपनी मनमानी करते हैं और चैत्य पुरुषपर बहुत सारे परदे पड़े हैं। अगर हम परदोंको हटाकर चैत्यका अभिषेक कर सकें तो बहुत सारी समस्याएं अपने-आप हल हो जायंगी।)

कितना सुंदर स्वरूप! रेशम-से मुलायम श्वेत बालोंसे लदी गर्दन! दया, प्रेम, करुणा एवम् गरिमासे युक्त शांत-स्थिर दृष्टि वाले नेत्र। सुंदर चिकना बदन। सब मिलाकर भव्यताकी साक्षात मूर्ति! लेकिन हैं आप बड़ी आनवाले। कभी अपने-आप आगे न आयंगे। जब-तक सच्चे दिलसे बुलाया न जाय अपनी मांदमें ही पड़े रहेंगे। अब लोगोंको क्या पड़ी है कि आप जैसे से उलझें। आपका सोना जंगलवासियोंके लिये बहुत सुंदर मौका है। आप सोते रहें तो जंगल-के रंगमंचपर हर प्राणी, चाहे छोटा हो या बड़ा, अपने-आपको राजा घोषित कर सकता है। वैसे हिंसक प्राणियोंका बोल-बाला है। क्योंकि वे अपने तीखे नाखूनों, लाल आंखों तथा गरजती आवाजसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीधे, भोले प्राणियोंको डरा-धमकाकर अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं।

एक दिन चंपाके पेड़के नीचे बैठे हिरन बड़े चिंतातुर थे। क्योंकि हिंसक प्राणी धीरे-धीरे सीधे-सच्चे प्राणियोंको अपना निवाला बनाकर उनका अस्तित्व ही समाप्त करनेपर तुल गए थे।

तभी पत्तोंमें खरखराहट पैदा हुई। हिरन घबराए, लेकिन भयकी बात न थी। एक दबा हुआ, सहमा खरगोश आया। उसे देखते ही सबमें बड़ी उत्सुकता जागी। थोड़ी देर बाद जब खरगोशकी जान-में-जान आयी तो उनके और करीब आ गया। सबने अपने बड़े-बड़े, आकर्षक, जादूभरे नयन प्रश्नसूचक बनाकर खरगोशपर जमा दिये। खरगोश धीमे स्वरमें बोला: "बेचारी बकरीको अभी मेरे सामने निवाला बनाया गया। मेरे तो प्राण ही निकल गये वह दृश्य देखकर। आज वह गयी, कल न जाने किसकी बारी आये। अभी तो झाड़ियोंमें छिपता-छिपाता जान बचाकर भाग आया हूं। कलकी कौन जाने!" सभीकी आंखें आर्द्र हो गयीं, एक आतंक फैल गया। एक बोला, "हम उनसे लड़ भी तो नहीं सकते, हमारे पास इतनी शक्ति कहां है! हम उन्हें समझाते हैं तो अपनी शक्तिके नशेमें चूर, वे हमारी बातोंपर कानतक नहीं देते। उनकी भयानक आंखों, तेज नाखूनोंके आगे हमें बस भागकर जान बचानी पड़ती है।" सब उदासीके कारण खामोश थे। सभीके दिमागमें एक ही विचार था: आखिर इस मुसीबतसे छुटकारा कैसे मिले?

तभी एकने कहा: "मेरे मस्तिष्कमें एक आशा-किरण कौंध गयी है। यदि हम सब एक होकर अपने असली, सुप्त राजाको जगाएं तो यह उपद्रव बंद हो सकते हैं क्योंकि राजा न्यायप्रिय तथा दयालु हैं। हम लोगोंकी निश्चय ही सहायता करेंगे।" सबने सहमतिसूचक गर्दन हिलाई। तय हुआ कि एक सुरक्षित स्थानपर इकट्ठे होकर राजाको जगानेका संकल्प लिया जाय।

दूसरे दिन सांझको अस्ताचलसे उचटकर लौटी हुई रेशमी लाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किरणें पहाड़ीको अंगारेके समान चमका रही थीं। यही था आजका सभा-स्थल। धीरे-धीरे एक-एक करके सभी आ पहुंचे और सभाका काम शुरू हुआ। एक वृद्ध किंतु बुद्धिमान पशु सभापति चुन लिया गया। प्रश्न रखा गया। विचार-विमर्श हुआ। तर्क, वितर्क और कुतर्क हुए। अंतमें निश्चित हुआ कि चूंकि महाराज गुफाके अंदर रहते और उनके चारों ओर हिंसक प्राणियोंका पहरा लगा रहता है अतः उन्हें जगानेके लिये दो-दोकी टोलीको जान हथेलीपर रखकर वहां जाने और महाराजको जगानेका प्रयत्न करना होगा।

पहले दिन जैसे ही दो प्राणी वहां पहुंचे हिंसक प्राणियोंने उन्हें टोका तथा उनसे आनेका कारण जानकर उन्हें चट कर गए। इस प्रकार बलिदानोंकी एक परंपरा चल पड़ी और बहुत-से निरीह प्राणी समाप्त हो गये। दोनों ओर मरने और मारनेके लिये दृढ़ संकल्प था। दोनोंकी आन-बानका ही नहीं, जानका भी प्रश्न था।

एक दिन मौका पाकर दो चतुर खरगोश गुफामें प्रवेश कर गए। अभी वे थोड़ी दूर ही गए थे कि हिंसक प्राणियोंकी नजर उनपर पड़ गई। वे तुरंत उनपर टूट पड़े। उन दोनोंके करुण क्रंदनसे गुफा गूंज उठी। उनकी पुकारसे सोए हुए महाराज एकदम जाग गए और बाहर निकल आए। उनके चेहरेपर दिव्य प्रकाश था। उन्हें वस्तु स्थितिको समझते देर न लगी। उन्होंने गरिमाके साथ सिर उठाकर हिंसक प्राणियोंकी ओर देखा जो सहमे-से खड़े थे। उनके तेजसे हिंसक प्राणियोंके भयानक चेहरे, लाल आंखें तथा तेज नाखून एकाएक लुप्त हो गए। मुखौटोंके गिर जानेसे उनके वास्तविक सौम्य रूप निकल आये। सारे जंगलमें एक अभूतपूर्व शांति छा गयी।

सभी प्राणी एक-एक करके राजाके चारों ओर अपने-अपने नियत स्थानपर जा बैठे और जंगलमें सामंजस्यके एक नये युगका आरंभ हो गया।

—राकेश कुमार ओझा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमीको चींटीकी सीख

एक दिन सवेरे-ही-सवेरे मैं बगीचेमें घूमनेके लिये निकला। बगीचा फूलोंसे भरा था। मैं एक तरफ बेंचपर जा बैठा। आकाश साफ नीले रंगका था और सूर्यकी सुनहरी किरणें उसे और सुन्दर बना रही थीं। ठंडी हवा बह रही थी जिसमें ओससे भीगे फूलों और वनस्पतियोंकी महक आती थी। चारों ओर सुन्दरता और आनन्दका वातावरण था।

अचानक मेरी दृष्टि सामने पड़ी। एक बड़ा-सा तिलचट्टा अपनी पीठपर मरा पड़ा था।

कुछ ही समय बाद एक चींटी टिलचट्टेके पास आयी, उसके चारों ओर घूमी और फिर उसे खींचनेकी कोशिश करने लगी। छोटी-सी चींटी भूखी मालूम होती थी। तिलचट्टा उसके लिये बहुत भारी था। कुछ देर तक उसे खींचनेका प्रयास करके वह तेजी से भागी मानों बहुत बड़ा खजाना पा गयी हो। वह पास ही एक छोटे-से बिलमें जा घुसी।

दो-तीन मिनटमें उसी बिलमेंसे कुछ बड़ी-बड़ी चींटियां निकलीं। शायद दस-बारह होंगी। वे सिपाहियोंकी तरह कूच कर रही थीं और देखनेमें बहुत बलवान लगती थीं। मुझे बड़ा मजा आ रहा था और मैं बड़े ध्यानसे देखता रहा कि वे क्या करती हैं। वे सब तिलचट्टेके पास आयीं और उसे काटना शुरू किया। उन्होंने पंख तो छोड़ दिये लेकिन बाकी सारे शरीरको बहुत छोटे-छोटे टुकड़ोंमें काट दिया। अपना काम पूरा करके बड़ी चींटियां अपने बिलकी ओर लौट पड़ीं मानों बहुत बड़ी विजय प्राप्त करके आयी हों।

अब मैंने देखा कि बिलसे एक और ही तरहकी चींटियां निकलीं जो न तो बहुत बड़ी थीं न बहुत छोटी। वे बहुत बड़ी संख्यामें बिलके बाहर निकलीं और एक लम्बी पंक्ति बनाकर आगे बढ़ीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानों उन्हें बहुत अधिक काम है और अपने उत्तरदायित्वका पूरी तरह भान है। उनमेंसे हर एकने तिलचट्टेका एक टुकड़ा उठाया और बिलकी ओर लौट पड़ी। जब सभी छोटे-छोटे टुकड़े समाप्त हो गये तो बहुत-सी चींटियोंने मिलकर पंखोंको खींचना शुरू किया और उन्हें लेकर घर लौटीं। इस तरह छोटी-छोटी चींटियां एक बड़े-से तिलचट्टेको अपने बिलमें ले गयीं। इसमें उन्हें लगभग आधा घंटा लगा।

हम मनुष्य अपने-आपको बहुत चतुर समझते हैं लेकिन छोटी चींटियां भी हमें बहुत कुछ सिखा सकती हैं। वे हमें मिल-जुलकर, संगठनमें रहकर, नियंत्रणके साथ, ईमानदारीसे, दिलकी सचाईके साथ काम करना सिखाती हैं।

अगर हम ये छोटे-छोटे गुण सीख लें तो हमारा जीवन बहुत अधिक सुखी होगा।

सोसायटी समाचार

ब्रेजिलकी श्रीअरविन्द सोसायटी शाखाके सेक्रेटरी लिखते हैं: "हमारी छोटी-सी शाखा बहुत अच्छी तरह चल रही है। शुक्रवार-की बैठकोंमें पहलेकी अपेक्षा बहुत ज्यादा प्रगति हो रही है, नियमित रूपसे सम्मिलित होनेवाले सदस्योंकी संख्या भी स्थिर है। शामके ठीक ६ बजे श्री सुनीलके संगीतसे कार्यक्रम आरंभ होता है। फिर 'वार्तालाप' तथा 'प्रार्थना और ध्यान' पुस्तकोंसे कुछ अंश पढ़ते हैं। बैठकके अंतमें ध्यान होता है।

"बैठकके समय कोई बातचीत, कोई प्रश्न नहीं होता। माताजी-की बातें गहन शांति और एकाग्रताके साथ सुनी जाती हैं। पिछले

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Beauty, you are my way to the Divine.

(White Roses) The Mother

Inland Carriers (Bombay)

For Safe, Speedy & Efficient Movement of Cargo

Head Office :

Takhatmal Estate, P. O. Box No. 12, AMRAVATI

Branches :

112, Sarang Street, BOMBAY-3, Phone : 327710

Bhistiwad, AHMEDABAD, Phone : 34098

Daily parcel Service to & from

Bombay, Ahmedabad, Baroda, Poona, Sholapur, Ichalkaranji, Bangalore, Nagpur, Amravati, Raipur & Malegaon (Dist. Nasik)

THE CARRIERS WITH A DIFFERENCE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

★

INDIAN TEA STORAGE AGENCY

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृ. ३८ का शेषांश)

साल मैंने इसी चीजका असफल प्रयास किया था, अब अनायास ही, लोग यह समझने लगे हैं कि ऐसा क्यों होना चाहिये।"

चक्रधरपुर (बिहार) केंद्रमें श्री स्वप्न कुमार दास तथा श्री प्रणव कुमार दत्त द्वारा 'शिशु चक्र' अभी आरंभ किया गया है। इसके दैनिक कार्यक्रममें हैं: ध्यान, श्रीअरविन्द तथा माताजीकी रचनाओंसे पाठ, तथा शारीरिक शिक्षा। श्रीअरविन्द सोसायटी केंद्र तथा विश्व ऐक्य केंद्रने मिलकर यहां दो दिनका एक कार्यक्रम, २४ और २५ अप्रैलको, रखा था। इस कार्यक्रममें श्री समर बोसने 'धरतीके विकासक्रममें श्रीअरविन्द तथा माताजीका कार्य' पर भाषण दिया था और शिशु चक्रने शारीरिक शिक्षाका कार्यक्रम प्रदर्शित किया।

श्रीअरविन्द केंद्र, नागपुर, हनमकोंडा केंद्र (आंध्र प्रदेश), श्रीअरविन्द मॉडल स्कूल, उना (हिमाचल प्रदेश), श्रीअरविन्द कर्म मंदिर, संबलपुर (ओडिसा), तथा अन्य केंद्रोंसे २४ अप्रैलका दिन मनानेकी सूचनाएं आयी हैं।

सोसायटी बोसनगर शाखाने अपनी १२ वीं वर्षगांठ १५ मई, १९७६ को मनायी। श्री नवजातजीने अपने संदेशमें कहा: "माताजी-पर ही ध्यान केंद्रित करो और उनकी सहायताका आवाहन करो कि वह तुम्हें भागवान्‌तक ले जायं। सचाईसे और निडर होकर कार्य करो, तब यह देखकर तुम्हें आश्चर्य होगा कि तुम कितना कुछ प्राप्त कर सकते हो।"

इस कार्यक्रमके अध्यक्ष थे श्री असित घोषाल, वायलिन विशारद। विद्यार्थी सदस्यों (लड़कोंने) 'गोपी गायन बाघा बायन' तथा लड़कियोंने रवीन्द्रनाथ ठाकुरका 'मायेर खेला' रंगमंचपर खेला। इस शाखाके सेक्रेटरी श्री पी. के. बोसने संक्षेपमें शाखाके विभिन्न क्रिया-कलापोंके बारेमें बताया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70.
REGD. No. M. 8731

'अगला भावी'का प्रकाशन

श्रीअरविन्दने अपने किसी पत्रमें लिखा था : "वर्तमानको निश्चय ही बदलना होगा। लेकिन अब सवाल है कि वह विनाशसे बदलेगा या एक महत्तर सत्यपर आधारित किसी नये निर्माणसे......" 'नेक्स्ट फ्यूचर' तथा 'ल प्रोशें आवनीर' (अगला भावी) ये दो शीर्षक माताजीने स्वयं विश्व पत्रिकाके अंग्रेजी तथा फरासीसी संस्करणके लिये लिखकर दिये थे। यह पत्रिका भावीके विषयमें श्रीअरविन्दके विचार और उनके प्रकाशमें कामके बारेमें विचार प्रकट करेगी।

पत्रिकाका डिजाइन बड़े कलात्मक ढंगसे बनाया तथा सुव्यवस्थित किया है मातृप्रसाद (जार्ज वैन रेखोम) ने। इसमें 'दिव्य जीवन', 'मानव एकताका आदर्श' आदि पुस्तकोंसे उद्धरण संकलित किये गये हैं। साथ ही योगके बारेमें श्रीअरविन्दकी दृष्टि बतायी गयी है क्योंकि पूरब और पश्चिम दोनोंमें उसके बारेमें काफी गलतफहमियां हैं:

इसका पहला अंक छप चुका है।

पश्चिम बंगालकी माध्यमिक शिक्षा समितिने पश्चिम बंगालके सारे स्कूलोंकी सातवीं कक्षाको 'श्रीअरविन्द गाथा' पढ़नेके लिये अनुरोध किया है। यह पुस्तक आश्रमके श्री नीरदवरणद्वारा लिखी गयी है।

पूनाकी शाखाने नयी दो गतिविधियां आरंभ की हैं:

१) आंखोंकी कसरत तथा इलाजका विभाग। इसकी संचालिका हैं कुमारी उर्मिला मुफ़े। उर्मिला मुफ़ेने इसकी प्रशिक्षा श्रीअरविन्द आश्रमके 'पूर्ण दृष्टिका स्कूल' से ली है।

२) श्री एन. एस. पटलकने निश्चित दिन तथा समयपर मुफ्त कानूनी सहायता तथा सलाह देनेके लिये एक केंद्र आरंभ किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

नर और नारी अंक (२)

सितंबर १९७६ वर्ष ७, अंक २, पूर्णांक ७४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका)

वर्ष ७ अंक २ पूर्णांक [illegible]

सूची

श्रीमातृवाणी :

- स्त्री और पुरुष [illegible]
- स्त्रियोंकी चेतना [illegible]
- नारी-शरीर और व्यायाम [illegible]

श्रीअरविंदवाणी :

- योगमें स्त्री और पुरुषका संबंध [illegible]
- समाज-सुधारक [illegible]
- संपत्ति-भाव [illegible]
- परिवार-त्यागकी वृत्ति [illegible]
- स्त्री और पुरुषकी मैत्री [illegible]
- विवाहके बारेमें [illegible]
- नर और नारी [illegible]
- यौन शक्ति [illegible]
- सोसायटी समाचार [illegible]

वार्षिक चंदा : ६.०० **आजीवन : १००.००**

पत्रव्यवहार और धनादेशके लिये पता :
संपादक पुरोधा एवं अग्निशिखा
श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री और पुरुष

सबसे पहले हम यह मानकर चलें कि अभिमान और निर्लज्जता हमेशा हास्यास्पद चीजें होती हैं। सिर्फ मूर्ख और अज्ञानी लोग ही अक्खड़ और घमंडी होते हैं। जैसे ही मनुष्य इतना प्रबुद्ध हो जाय कि वह, चाहे कितना भी कम क्यों न हो, विश्वके सर्वव्यापक रहस्य-के साथ नाता जोड़ सके, वह निश्चित रूपसे नम्र हो जाता है।

स्त्री अपनी वश्यताके कारण ही पुरुषकी अपेक्षा ज्यादा सरलता-के साथ सृष्टिमें कार्यरत परम शक्तिका सहज बोध प्राप्त कर सकने-के कारण प्रायः अधिक नम्र होती है।

लेकिन इस नम्रताके तथ्यको आवश्यकतापर आधारित करना गलत है। पुरुषको स्त्रीकी जितनी आवश्यकता होती है, स्त्रीको पुरुषकी उससे ज्यादा आवश्यकता नहीं होती। बल्कि ज्यादा ठीक यह है कि स्त्री और पुरुष दोनोंको समान रूपसे एक-दूसरेकी आव-श्यकता होती है।

शुद्ध भौतिक क्षेत्रमें भी जितनी स्त्रियां भौतिक रूपसे पुरुषोंपर निर्भर हैं उतने ही पुरुष स्त्रीपर निर्भर होते हैं। अगर नम्रता इस निर्भरताका परिणाम होती तो जहां पुरुष नारीपर निर्भर हैं वहां पुरुषोंको नम्र और स्त्रियोंको अधिकार-शील होना चाहिये।

और फिर, यह कहना कि स्त्रियोंको नम्र होना चाहिये क्योंकि इससे पुरुष खुश होते हैं — गलत है। इससे तो यही समझा जायगा कि स्त्रीको धरतीपर इसीलिये बनाया गया है ताकि वह पुरुषोंको खुश करे — और यह वाहियात है।

सारा विश्व भागवत शक्तिको प्रकट करनेके लिये रचा गया है। और मनुष्योंका, स्त्रियों या पुरुषोंका, यह विशेष प्रयोजन है कि वे उस अनंत भागवत तत्त्वके बारेमें सचेतन हों और उसे अभिव्यक्त करें। उनका लक्ष्य यही है, कोई दूसरा नहीं। अगर वे, स्त्री और पुरुष, इस बातको जानें और अधिक बार याद कर सकें तो

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे प्राथमिकता या अधिकारके तुच्छ झगड़ोंके बारेमें सोचना बंद कर देंगे और सेवा करनेकी अपेक्षा सेवा करवानेमें अधिक प्रतिष्ठा न देखेंगे, क्योंकि तब सब अपने-आपको समग्र रूपसे भगवान्‌का सेवक मानेंगे और हमेशा पहलेसे ज्यादा और पहलेसे अच्छी तरह सेवा करनेमें ही अपनी प्रतिष्ठा मानेंगे।

स्त्रियोंकी चेतना

स्त्रियां प्राणिक और भौतिक चेतनाके साथ पुरुषोंकी अपेक्षा अधिक बंधी नहीं होतीं; बल्कि अपने अंतःपुरुषको ढूंढकर उसीके अनुसार चलना उनके लिये अधिक सुगम होता है, क्योंकि साधारणतः पुरुषोंके गर्वपूर्ण मानसिक दावोंका उनमें अभाव होता है...।

उनकी सचेतनता मानसिक ढंगकी नहीं होती जिसका शब्दोंमें वर्णन हो सके पर वे अपने भावोंमें सचेतन होती हैं और उनमेंसे श्रेष्ठ कोटिकी स्त्रियां अपने कार्योंमें सज्ञान होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी-शरीर और व्यायाम

शारीरिक शिक्षणके उद्देश्यसे अपने दलके बच्चोंके साथ व्यवहार करते समय बालिकाओंके विषयमें कुछ समस्याएं हमारे सामने आ खड़ी होती हैं। उनमेंसे अधिकांश ऐसे सुझाव हैं जो उन्हें अपने मित्रोंसे, बड़ी लड़कियोंसे, माता-पिता या अभिभावकों और डाक्टरोंसे मिलते हैं। कृपा कर नीचे लिखे प्रश्नोंपर कुछ प्रकाश डालिये जिससे कि अपने उत्तरदायित्वोंको अधिक योग्यताके साथ पूरा करनेके लिये हमें अधिक ज्ञान प्राप्त हो।

प्रश्न —

१. अपने मासिक कालके विषयमें किसी बालिकाका मनोभाव क्या होना चाहिये ?

२. क्या किसी बालिकाको अपने मासिक कालमें अपने शारीरिक शिक्षणके सामान्य कार्यक्रममें भाग लेना चाहिये ?

३. कुछ लड़कियां अपने मासिक कालमें क्यों पूर्णतः दुर्बल हो जाती हैं तथा अपनी पीठके निचले भागमें और पेटमें दर्दका अनुभव करती हैं, जब कि औरोंको कोई असुविधा नहीं होती या बहुत मामूली-सी असुविधा होती है ?

४. कोई लड़की अपने मासिक कालके दुःख-दर्दको कैसे जीत सकती है ?

५. क्या आपका मत यह है कि बालकों और बालिकाओंके लिये भिन्न-भिन्न प्रकारके व्यायाम होने चाहिये ? क्या तथाकथित पुरुषोचित खेल-कूदोंका अभ्यास करनेसे किसी बालिकाके जननेन्द्रिय आदि अंगोंको हानि पहुंच सकती है ?

६. क्या कठिन व्यायामोंका अभ्यास करनेसे किसी लड़कीकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकृति बदल जायगी और वह एक पुरुषकी आकृतिकी तरह मांसल हो जायगी और इस कारण वह लड़की कुरूप दिखायी देने लगेगी?

७. यदि कोई लड़की विवाह करना चाहे और पीछे उसे बच्चा हो तो क्या कठिन व्यायामोंके करनेके कारण उसे बच्चा होते समय अधिक कठिनाइयां होंगी?

८. नारीत्वकी दृष्टिसे बालिकाओंके लिये शारीरिक शिक्षणका क्या आदर्श होना चाहिये?

९. हमारी नवीन जीवन-पद्धतिके अंदर पुरुष और स्त्रीका क्या मुख्य कार्य होना चाहिये? उनमें परस्पर क्या संबंध होगा?

१०. नारीके शारीरिक सौंदर्यका क्या आदर्श होना चाहिये?

उत्तर:

तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तर देनेसे पहले मैं तुमसे कुछ बातें कहना चाहती हूं। निस्संदेह तुम उन्हें जानते हो, पर तुम यदि यह जानना चाहते हो कि श्रेष्ठ जीवन कैसे यापन किया जाय तो तुम्हें उन्हें कभी भूलना नहीं चाहिये।

यह सच है कि हम, अपने आंतरिक स्वरूपमें, एक आत्मा हैं, सजीव अंतरात्मा हैं जो अपने अंदर भगवान्‌को वहन करती है, और भगवान् बननेकी, उन्हें पूर्ण रूपसे अभिव्यक्त करनेकी अभीप्सा करती है; वैसे ही यह भी सच है कि, कम-से-कम इस क्षण, अपनी अत्यंत स्थूल बाह्य सत्तामें, अपने शरीरमें, हम अब भी एक पशु, एक स्तन-पायी जीव हैं, निस्संदेह एक उच्चतर जातिके हैं, पर पशुओं जैसे ही निर्मित हैं और पशु-प्रकृतिके नियमोंके ही अधीन हैं।

तुम लोगोंको निश्चय ही यह पढ़ाया गया होगा कि स्तनपायी जीवोंकी एक विशेषता यह है कि उनकी मादा गर्भ धारण करती है और अपने गर्भस्थ बच्चेको तबतक वहन करती है और निर्मित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती है जबतक वह क्षण नहीं आ जाता जब बच्चा पूर्ण आकार प्राप्त करके अपनी माताके शरीरसे बाहर निकल सके और स्वतंत्र रूपसे जीवन यापन करने लगे।

इस कार्यको दृष्टिमें रखकर प्रकृति माताने स्त्रियोंको खूनकी कुछ अतिरिक्त मात्रा प्रदान की है जो बालकके निर्माणके लिये व्यवहृत होती है। परंतु इस अतिरिक्त रक्तका उपयोग करना सर्वदा आवश्यक नहीं होता और इसलिये जब कोई बच्चा पैदा होनेवाला नहीं होता तब रक्तकी अधिकता और जमावसे बचनेके लिये अतिरिक्त रक्तको निकाल फेंकनेकी आवश्यकता होती है। बस, यही है मासिक धर्मका कारण। यह एक सीधी-सी स्वाभाविक क्रिया है, जिस पद्धतिसे नारीका निर्माण हुआ है उसीका एक परिणाम है और शरीरकी अन्य क्रियाओंकी अपेक्षा इसे अधिक महत्त्व देनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। यह कोई रोग नहीं है और किसी दुर्बलता या सच्ची असुविधाका कारण नहीं बन सकती। अतएव, एक स्वाभाविक स्थितिमें रहनेवाली स्त्रीको, ऐसी स्त्रीको जो अनावश्यक ढंगसे नर्म तबियतकी न हो उसे, केवल स्वच्छतासंबंधी आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिये, इसके विषयमें कभी जरा भी सोचना नहीं चाहिये और अपने कार्यक्रममें कोई भी परिवर्तन न कर नित्यकी तरह अपना दैनिक जीवन बिताना चाहिये। यही अच्छा स्वास्थ्य बनाये रखनेका सबसे उत्तम उपाय है।

इसके अतिरिक्त, यह स्वीकार करनेपर भी कि जहांतक हमारे शरीरका प्रश्न है हम अब भी भयंकर रूपसे पशुत्वसे संबंध रखते हैं, हमें यह सिद्धांत नहीं बना लेना चाहिये कि यह पशु-अंश, जिस तरह हमारे लिये अत्यंत ठोस और अत्यंत सत्य है उसी तरह वह एकमात्र वस्तु है जिसकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये हम बाध्य हैं और जिसे हमें अपने ऊपर शासन करने देना चाहिये। दुर्भाग्यवश जीवनमें अधिकतर यही होता है और निःसंदेह मनुष्य अपनी भौतिक सत्ताके प्रभुकी अपेक्षा कहीं अधिक गुलाम हैं। परंतु, इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपरीत ही होना चाहिये क्योंकि व्यक्तिगत जीवनका सत्य एकदम दूसरी चीज है।

हमारे अंदर एक विवेकपूर्ण संकल्पशक्ति है जिसे कम या अधिक बोध प्राप्त है और जो हमारे चैत्य पुरुषका प्रथम यंत्र है। इसी युक्तिपूर्ण संकल्प-शक्तिका हमें उपयोग करके यह सीखना चाहिये कि एक पशु-मानवकी तरह नहीं वरन् सच्चे मनुष्यकी तरह, देवत्वके उम्मीदवारकी तरह कैसे जीना चाहिये।

और इस सिद्धिकी ओर जानेका पहला पग है इस शरीरका एक अक्षम दास न रह, इसका प्रभु बन जाना।

इस लक्ष्यको प्राप्त करनेमें अत्यंत उपयोगी सहायता देनेवाली चीज है शारीरिक साधना, अर्थात् व्यायाम।

लगभग एक शताब्दीसे उस ज्ञानका पुनरुद्धार करनेका प्रयास हो रहा है जिसे प्राचीन युगोंमें बहुत महत्त्व दिया जाता था और जिसे लोग अंशतः भूल गये हैं। अब यह पुनः जागृत हो रहा है और आधुनिक विज्ञानकी प्रगतिके साथ-साथ यह भी एक नवीन विस्तार और महत्त्वको प्राप्त करता जा रहा है। यह ज्ञान स्थूल शरीर तथा उस असाधारण प्रभुत्वकी चर्चा करता है जो प्रबुद्ध और विधिबद्ध शारीरिक शिक्षणकी सहायतासे शरीरके ऊपर प्राप्त किया जा सकता है।

यह पुनरुद्धार एक नयी शक्ति और ज्योतिकी क्रियाका फल है जो निकट भविष्यमें सिद्ध होनेवाले महान् रूपांतरकी सिद्धिके योग्य शरीरको तैयार करनेके लिये पृथ्वीपर फैल गयी है।

हमें इस शारीरिक शिक्षणको प्रधान महत्त्व देनेमें हिचकिचाना नहीं चाहिये जिसका उद्देश्य ही है हमारे शरीरको इस योग्य बना देना कि वह पृथ्वीपर अभिव्यक्त होनेका प्रयास करनेवाली नवीन शक्तिको ग्रहण और प्रकट करने लगे।

इतना कहकर अब मैं उन प्रश्नोंका उत्तर देती हूं जिन्हें तुमने मेरे सामने रखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१)

अपने मासिक कालके प्रति किसी लड़कीका मनोभाव क्या होना चाहिये ?

वही मनोभाव होना चाहिये जो तुम किसी एकदम स्वाभाविक और अपरिहार्य वस्तुके प्रति रखते हो। इसे यथासंभव कम-से-कम महत्त्व दो और इसके कारण कोई परिवर्तन किये बिना अपने सामान्य जीवनको नियमित रूपसे चलाती रहो।

(२)

क्या अपने ऋतु-कालमें किसी लड़कीको अपने शारीरिक शिक्षण-के नियमित कार्यक्रममें भाग लेना चाहिये ?

यदि शारीरिक व्यायाम करनेका उसे अभ्यास हो तो उसे निश्चय ही इस कारण उसे बन्द नहीं करना चाहिये। यदि कोई अपना सामान्य जीवन बितानेका अभ्यास सर्वदा बनाये रखे तो बहुत शीघ्र उसे ऐसी आदत पड़ जायगी कि उसे पता भी नहीं चलेगा कि उसे मासिक हो रहा है।

(३)

कुछ लड़कियां अपने ऋतु-कालमें क्यों पूर्ण रूपसे दुर्बल हो जाती हैं तथा अपनी पीठके निचले भागमें और पेटमें दर्दका अनुभव करती हैं; जब कि दूसरोंको कोई असुविधा नहीं होती या बहुत मामूली-सी असुविधा होती है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह प्रश्न व्यक्तिके स्वभाव तथा अधिकांशतः शिक्षाका है। यदि किसी लड़कीको अपने बचपनसे ही यह अभ्यास हो गया हो कि वह बिलकुल मामूली तकलीफकी ओर भी बहुत अधिक ध्यान देती हो और अत्यंत तुच्छ असुविधाके लिये भी बहुत अधिक हाय-तोबा मचाती हो तो वह सहन करनेकी सारी क्षमता खो बैठेगी और कोई भी चीज उसके दुर्बल होनेका कारण बन जायगी। विशेषकर यदि मां-बाप अपने बच्चोंकी प्रतिक्रियाओंके विषयमें बहुत शीघ्र चिंतित हो उठें तब तो उसका असर और भी बुरा होगा। अधिक बुद्धिमानीकी बात यही है कि बच्चोंको थोड़ा बलशाली और सहनशील होनेकी शिक्षा दी जाय और उन सब छोटी-मोटी असुविधाओं और दुर्घटनाओंके प्रति कम-से-कम दुश्चिंता करना सिखाया जाय जिनसे जीवनमें सर्वदा बचा नहीं जा सकता। शांत सहिष्णुताका भाव ही सबसे उत्तम मनोभाव है जिसे मनुष्य स्वयं अपने लिये धारण कर सकता है और अपने बच्चोंको भी सिखा सकता है।

यह बिलकुल जानी हुई बात है कि यदि तुम किसी कष्टकी आशा करो तो वह अवश्य तुम्हें प्राप्त होगा, और, एक बार यदि वह आ जाय और तुम उसपर अधिक ध्यान दो तो वह अधिकाधिक बढ़ता जायगा और जबतक कि वह, जैसा कि साधारणतया उसे नाम दिया जाता है "असह्य" ही न हो उठे, यद्यपि थोड़ी-सी संकल्प-शक्ति और साहसका प्रयोग करनेपर ऐसा कोई दुःख-दर्द नहीं जिसे सहा न जा सके।

(४)

कोई लड़की अपने ऋतु-कालके दुःख-दर्दको कैसे जीत सकती है?

कुछ व्यायाम ऐसे हैं जो पेटको मजबूत बनाते तथा रक्तप्रवाहको बढ़ाते हैं। इन व्यायामोंको नियमित रूपसे करते रहना चाहिये और दर्दके दूर हो जानेपर भी इन्हें जारी रखना चाहिये। बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उम्रकी लड़कियोंको इस प्रकारका दर्द प्रायः पूर्ण रूपसे काम-वासनाके कारण होता है। यदि हम वासनाओंसे मुक्त हो जायं तो हम दर्दसे भी मुक्त हो जाते हैं। वासनाओंसे मुक्त होनेके दो उपाय हैं : पहला है प्रचलित उपाय, वासनाकी तृप्ति (अथवा यों कहें कि इसे यह नाम दिया जाता है, क्योंकि वासनाके राज्यमें "तृप्ति" नामकी कोई चीज है ही नहीं)। इसका अर्थ है साधारण मानव-पशुका जीवन बिताना — विवाह, संतान और इसकी बाकी सभी चीजें।

निस्संदेह एक दूसरा पथ भी है, उससे कहीं अच्छा पथ है और वह है संयम, प्रभुत्व, रूपांतरका पथ; यह कहीं अधिक महान् और अधिक प्रभावशाली है।

(५)

क्या आपकी रायमें लड़कों और लड़कियोंके लिये भिन्न-भिन्न प्रकारके व्यायाम होने चाहिये ? क्या तथाकथित पुरुषोचित खेल-कूदोंका अभ्यास करनेसे लड़कीके जननेंद्रिय आदि अंगोंको हानि पहुंच सकती है ?

सभी प्रसंगोंमें, जैसे बालकोंके लिये वैसे ही बालिकाओंके लिये, व्यायामोंको प्रत्येक व्यक्तिकी शक्ति और क्षमताके अनुसार क्रमबद्ध कर देना चाहिये। यदि कोई दुर्बल छात्र एकाएक कठिन और भारी व्यायाम करनेकी कोशिश करे तो वह अपनी मूर्खताके कारण दुःख भोग सकता है। परंतु, यदि बुद्धिमानीके साथ और धीरे-धीरे शिक्षा दी जाय तो बालिकाएं और बालक दोनों ही सब प्रकारके खेलोंमें भाग ले सकते हैं और इस प्रकार अपनी शक्ति और स्वास्थ्यको बढ़ा सकते हैं।

बलवान् और स्वस्थ बननेसे शरीरको कभी कोई हानि नहीं पहुंच सकती, भले ही वह शरीर स्त्रीका ही क्यों न हो!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६)

क्या कठिन व्यायामका अभ्यास करनेसे किसी लड़कीकी आकृति बदल जायगी और वह एक पुरुषकी आकृतिकी तरह मांसल हो जायगी और इस कारण वह लड़की कुरूप दिखायी देने लगेगी?

दुर्बलता और क्षीणता भले ही किसी विकृत मनकी दृष्टिमें आकर्षक प्रतीत हों, पर यह प्रकृतिका सत्य नहीं है और न आत्माका ही सत्य है। यदि तुमने कभी व्यायाम करनेवाली स्त्रियोंके चित्रोंको देखा हो तो तुम्हें पता चलेगा कि उनका शरीर कितना पूर्ण सुन्दर होता है; और कोई भी व्यक्ति यह अस्वीकार नहीं कर सकता कि उनका शरीर मांसल ही होता है!

(७)

यदि कोई लड़की विवाह करना चाहे और पीछे उसे बच्चा हो तो क्या कठिन व्यायामोंके करनेके कारण उसे बच्चा होते समय अधिक कठिनाइयां होंगी?

मैंने ऐसा कोई उदाहरण कभी नहीं देखा। बल्कि इसके विपरीत, जो स्त्रियां कठिन व्यायाम करनेकी शिक्षा प्राप्त करती हैं और सुदृढ़ मांसल शरीरवाली होती हैं वे बच्चा धारण करने और पैदा करनेकी कठिन परीक्षामें कहीं अधिक आसानी और कम दर्दके साथ उत्तीर्ण होती हैं।

मैंने अफ़्रीकाकी उन स्त्रियोंकी एक विश्वसनीय कहानी सुनी है जो भारी बोझ लेकर मीलों यात्रा करनेकी आदी होती हैं। एक स्त्री गर्भवती थी और एक दिन यात्रा करते समय ही उसके बच्चा जननेका समय हो गया। वह रास्तेमें एक किनारे एक पेड़के नीचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठ गयी, उसका बच्चा भूमिष्ठ हुआ, आधा घंटा उसने विश्राम किया, फिर वह उठ खड़ी हुई और अपने पुराने बोझके साथ-साथ बच्चेको भी लेकर चुपचाप अपने रास्तेपर चल पड़ी, मानो उसे कुछ भी न हुआ हो। यह इस बातका अत्यंत उज्ज्वल उदाहरण है कि स्वास्थ्य और शक्तिपर पूर्ण अधिकार रखनेवाली एक नारी क्या कर सकती है।

डॉक्टर कहेंगे कि मनुष्यजातिने आज जितनी भी प्रगति की है उस सबके होते हुए भी किसी सभ्य समाजमें इस तरहकी बात कभी घटित नहीं हो सकती; परंतु हम यह अस्वीकार नहीं कर सकते कि शरीरकी दृष्टिसे देखा जाय तो आधुनिक सभ्यताओंने जो संवेदनशीलता, दुःख-कष्ट और जटिलता उत्पन्न की है उसके मुकाबले यह कहीं सुखदायी स्थिति है।

इसके अलावा, साधारणतया डॉक्टर लोग अस्वाभाविक प्रसंगोंमें ही अधिक दिलचस्पी लेते हैं और वे अधिकांशतः उसी दृष्टिकोणसे विचार करते हैं। परंतु हमारे लिये बात इससे भिन्न है; हम स्वाभाविकसे अतिस्वाभाविककी ओर जा सकते हैं, न कि अस्वाभाविकसे, जो कि सर्वदा ही पथभ्रष्टता और निकृष्टताका चिह्न होता है।

(८)

नारीत्वकी दृष्टिसे बालिकाओंके लिये शारीरिक शिक्षणका क्या आदर्श होना चाहिये ?

मेरी समझमें नहीं आता कि लड़कोंसे भिन्न लड़कियोंके लिये शारीरिक शिक्षणका कोई विशेष आदर्श क्यों होना चाहिये ?

शारीरिक शिक्षणका उद्देश्य है मानव शरीरकी सभी संभावनाओंको विकसित करना, जैसे, सुसामंजस्य, शक्ति, नमनीयता, चतुरता, फुर्तीलापन, सहनशीलता आदिकी संभावनाओंको प्रस्फुटित करना, अपने अंगों और इन्द्रियोंकी क्रियाओंपर अपना अधिकार बढ़ाना, एक सज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकल्प-शक्तिके व्यवहारके लिये शरीरको एक सर्वांगपूर्ण यंत्र बनाना। यह कार्यक्रम सभी मानव प्राणियोंके लिये एक समान उत्तम है, और ऐसा कोई कारण नहीं कि लड़कियोंके लिये कोई दूसरा कार्यक्रम स्वीकार करनेकी कामना की जाय।

(९)

हमारी नवीन जीवन-पद्धतिके अंदर पुरुष और स्त्रीका प्रधान कार्य क्या होना चाहिये ? उनमें परस्पर क्या संबंध होगा ?

भला दोनोंके बीच तनिक भी विभेद क्यों किया जाय ? वे दोनों ही एक जैसे मानव प्राणी हैं जो वर्ग, जाति, धर्म तथा राष्ट्रीयताके परे भागवत कार्यके लिये उपयुक्त यंत्र बननेकी चेष्टा करते हैं, जो एक ही अनन्त दिव्य माताकी संतान हैं तथा एक ही शाश्वत भगवान्‌को प्राप्त करनेकी अभीप्सा रखते हैं।

(१०)

नारीके शारीरिक सौंदर्यका क्या आदर्श होना चाहिये ?

अंगोंके परिमाणमें पूर्ण सामंजस्य, कोमलता और बल-सामर्थ्य, कमनीयता और क्षमता, नमनीयता और दृढ़ता, तथा सबसे बढ़कर, अति उत्तम, एक-रूप और अपरिवर्तनशील स्वास्थ्य जो एक शुद्ध-चरित्र आत्मा बननेका, ज़ीवनमें समुचित विश्वास तथा भागवत कृपा-में अटल श्रद्धा-विश्वास रखनेका परिणाम होता है।

अंतमें एक बात और जोड़ दूं :

मैंने ये सब बातें तुमसे इसलिये कही हैं कि तुम्हें इन्हें सुननेकी आवश्यकता थी, पर तुम इन्हें अकाटच सिद्धांतका रूप मत दे देना क्योंकि ऐसा करनेपर ये अपना सत्य ही खो बैठेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगमें स्त्री और पुरुषका संबंध तथा उनकी लैंगिक प्रकृतियां

इस योगमें स्त्री और पुरुष साधक-साधिकाओंके योग्य स्वतंत्र और स्वाभाविक संबंध स्थापित करनेमें सफल हों — इसके लिये सामान्यतः एकमात्र तरीका यह है कि वे एक-दूसरेसे इस प्रकार मिल-जुल सकें कि उन्हें कभी ख्याल न आये कि एक पुरुष है तथा दूसरी स्त्री — बस, दोनों केवल मनुष्य हैं, दोनों साधक हैं, दोनों भगवान्‌की सेवा करनेमें तत्पर हैं तथा केवल भगवान्‌को ही खोज रहे हैं, और किसीको नहीं। यह भाव अपने अंदर पूरी तरहसे धारण कर लो तो फिर किसी प्रकारकी कठिनाई आनेकी संभावना नहीं।

*

किन्हीं दो व्यक्तियोंमें वैयक्तिक संबंध तब पैदा होता है जब वे अनन्य भावसे एक-दूसरेके मुखापेक्षी होकर रहते हैं। इस योगमें वैयक्तिक संबंधोंके विषयमें यह द्विविध नियम है : (१) सभी वैयक्तिक संबंध साधक और भगवान्‌के एकनिष्ठ संबंधमें विलीन हो जाने चाहियें, (२) सभी वैयक्तिक (आंतरात्मिक-आध्यात्मिक) संबंध भगवती मातासे ही निःसृत, उन्हींसे निर्धारित और उन्हींके साथ अनन्य संबंधके अंगभूत होने चाहिये। जहांतक अन्य कोई वैयक्तिक संबंध इस द्विविध नियममें दृढ़ रह सकता है और किसी शारीरिक भोग-विलास या प्राणिक विकार या मिश्रणको घुसने नहीं देता वहांतक वह रखा जा सकता है। परंतु, क्योंकि अभीतक अतिमानसका प्रभुत्व स्थापित नहीं हुआ है, अभी वह अवतरित हो ही रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और प्राणिक एवं भौतिक स्तरोंमें अब भी संघर्ष चल रहा है, अतएव, अत्यधिक सजग रहनेकी आवश्यकता है। यदि अबतक अतिमानसिक रूपांतर हो चुकता तो ऐसी सजगताकी जरूरत न पड़ती। दोनोंको चाहिये कि वे माताजीसे सीधा संबंध रखें और पूर्ण रूपसे उन्हींपर निर्भर रहें और यह देखें कि ऐसा संबंध बना रहे और इसकी पूर्णताको कोई भी चीज लेशभर भी कम न करे या खंडित न कर डाले।

*

(१) आश्रममें साधक-साधिकाके बीच समस्त स्थूल कामुक संबंध या संसर्ग सर्वथा निषिद्ध एवं अग्राह्य है।

(२) कामुक ढंगसे सभी प्राणगत संबंध साधनाके प्रतिकूल हैं और इसलिये जो लोग आश्रममें रहना तथा योगमें उन्नति करना चाहते हैं उन्हें भी ऐसे सभी संबंध त्यागने होंगे।

(३) यहांतक कि पति-पत्नीको भी सारे वैवाहिक संबंध समाप्त कर एक-दूसरेको सह-साधकमात्र समझना होगा, न कि पति और पत्नी। साधक यहां स्त्री और पुरुषके रूपमें नहीं रह रहे हैं; वे यहां किसी भी बहाने आपसमें प्राणिक या शारीरिक कामुक संबंध जारी रखने या बनानेके लिये नहीं बल्कि साधना करनेके लिये आये हैं।

(४) जो कोई भी साधक आंतरात्मिक या आध्यात्मिक संबंध-के बहाने दूसरोंसे प्राणिक संबंध स्थापित करता है वह अपने-आपको धोखा दे रहा है और सत्यका उल्लंघन एवं योगके नियमका भंग कर रहा है।

(५) किसी भी साधकको किसी दूसरे साधककी पूजा नहीं करनी चाहिये, अथवा, उसे साक्षात् भगवान् नहीं मानना चाहिये; ऐसी चेष्टाएं साधनाके एवं आश्रमके अनुशासनके प्रतिकूल हैं और वायुमंडलमें मिथ्या प्रवृत्तियोंको जन्म देती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज-सुधारक

समाज सुधारक कुछ युक्तियोंको दकियानूसी विचारोंकी तरह दोहराता रहता है। वह इन पुरानी बातोंके लिये पागल होता है, उसके लिये जहाद करता रहता है। साधारणतः वह अपने विचारोंके अनुसार आचरण नहीं करता, लेकिन वह पूरी सचाईके साथ उनसे अनुराग रखता है और उनके लिये लड़ता-झगड़ता है। वह रामबाणकी तरह उनकी घोषणा करता है, उनकी क्षमता या उनके प्रभावके बारेमें शंका करना या परीक्षण करना उसकी दृष्टि-में नास्तिकता या विश्वासघात है। उसके यूरोपीय डाक्टरोंने उसे बतलाया है कि बाल-विवाह जातिके शरीरके लिये हानिकर है और यह बात उसके लिये वेद-वाक्य है। यह याद रखना उसके लिये सुविधाजनक नहीं है कि भारतमें शारीरिक ह्रास एक नयी चीज है, कि हमारे पुरखे मजबूत, ओजस्वी और सुन्दर होते थे। वह गायब होती हुई नाचनेवालियोंकी जड़ खोदनेके लिये तत्पर रहता है लेकिन ऐसा लगता है कि उसे इस बातकी परवाह नहीं है कि वेश्याओंकी संख्या बढ़ती जाती है। हो सकता है कि कुछ तो यह भी सोचते हैं कि यह एक लाभदायक चीज है कि बीमारीके भारतीय रूपका स्थान यूरोपीय रूप ले रहा है। वह हमारे समाज-की सहकारी पद्धतिको तोड़नेमें लगा है पर यह नहीं देखता कि यूरोप दानवी पग उठाता हुआ समाजवादकी ओर बढ़ रहा है।

कट्टरपंथी हों या सुधारक, वे अपने-आपको समान रूपसे ब्योरे-की बातोंमें खो देते हैं, लेकिन ब्योरोंको निश्चित रूप तो सिद्धांत ही देते हैं। समाजके स्थायी कल्याणपर कोई भी असर डाले बिना समाज-सुधारकोंकी उठायी हुई सभी बातोंका इस या उस ओर फैसला किया जा सकता है। वह एक दयनीय दृश्य होता है जब लोग उपजातियोंके बीच ब्याह करानेके मामलेपर श्रम करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं और इक्के-दुक्के उदाहरणोंमें सफलता पाकर फूले नहीं समाते। आधुनिक प्रश्न तो यह है कि जातिके भाव और उसकी देहको रहना भी चाहिये या नहीं। हिंदू इस बातको याद रखें कि अपने वर्तमान रूपमें जाति केवल शिल्पीसंघके जैसी चीज है जिसे स्वीकृति दे दी गयी है पर अब वह काम नहीं कर रही। यह शाश्वत धर्म नहीं है, यह वर्ण व्यवस्था नहीं है। मैं इस बातकी परवाह नहीं करता कि विधवाएं फिरसे व्याह करती हैं या बिना ब्याही रहती हैं, परंतु इस बातपर विचार करना बहुत ज्यादा महत्त्वपूर्ण है कि वैधानिक और सामाजिक तौरपर स्त्रीका पुरुषके साथ क्या संबंध होगा। वह उसके अधीन रहेगी, समान होगी या उससे श्रेष्ठ होगी क्योंकि भविष्यमें श्रेष्ठताका संबंध भी असंभव नहीं है जैसा कि वह सुदूर भूतकालमें था। और सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि समाजका रूप प्रतियोगी होगा या सहयोगी, व्यक्तिवादी होगा या साम्यवादी। यह बात सामान्य भारतीय बुद्धिकी दरिद्रताको बड़े दुःखद रूपमें प्रकट करती है कि हम इन महत्त्वपूर्ण बातोंपर इतनी कम बातचीत करते हैं लेकिन नगण्य ब्योरेकी बातोंपर तूफान खड़े कर देते हैं। अगर इन बड़ी चीजोंका फैसला हो जाय, जैसा होना चाहिये, तो छोटी-मोटी बातें अपने-आप ठीक हो जायंगी।

(सेंटेनरी वोल्यूम ३, १२२-२३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपत्ति-भाव

लेकिन हमें स्वतंत्र समुदायमें रहनेवाले स्वतंत्र व्यक्तिसे आरंभ करना होगा। क्योंकि तभी हम स्वाधीनताके स्वस्थ विकासके बारेमें निश्चित हो सकते हैं और इसलिये भी कि हमें जो एकता प्राप्त करनी है वह पूर्णताकी ओर स्वाधीन रूपसे बढ़ते हुए व्यक्तियोंकी एकता है, मानव यंत्रोंकी एकता नहीं जिन्हें नियंत्रित सामंजस्यमें रखा गया हो या ऐसी आत्माएं हों जिन्हें काट-छांटकर एक या अनेक ज्यामितिके निश्चित रूप दे दिये गये हों। जिस क्षण हम इस विचारको सच्चाईसे स्वीकार करें उसी क्षण हमें मनुष्यपर मनुष्यके पुराने संपत्तिके अधिकारके विचारसे बहुत दूर यात्रा करनी पड़ती है। यह विचार अब भी मनुष्यमें जहां यह अधिकार नहीं है वहां भी लुका-छिपा रहता ही है। हमारे सारे भूतकालमें यह रहा है। बच्चेपर बापका संपत्ति स्वरूप अधिकार, पुरुषका स्त्रीपर, शासक या शासक वर्ग या शासक शक्तिका शासितोंपर या सरकारका व्यक्तिपर अधिकार। पुराने, पिताकी सत्ताको माननेवालोंमें बच्चा पिताकी चल-संपत्ति था। बच्चा बापकी सृष्टि, उसकी अपनी पैदावार, उसका अपना प्रतिरूप था। भगवान् या भगवान्‌की जगह वैश्व जीवन नहीं बल्कि पिता बालककी सत्ताका कर्ता था। स्रष्टाको अपनी सृष्टिपर, उत्पादकको अपने उत्पादनपर पूरा-पूरा अधिकार था। उसे यह अधिकार था कि वह उसे जो चाहे वह बनाये, यह नहीं कि यह देखे कि बच्चेकी अपनी सत्ता अंदरसे क्या है। उसे अधिकार था कि वह बच्चेको उसकी अपनी गभीर आवश्यकताओंके अनुसार नहीं बल्कि पैतृक विचारोंके अनुसार प्रशिक्षित करे और काट-छांटकर रूप दे। उसे अधिकार था कि बालककी प्रकृति, क्षमता और प्रवृत्तिके अनुसार नहीं बल्कि बाप-दादोंके पेशे या उनके चुने हुए पेशेके साथ बांध दे और उसके जीवनके सभी महत्त्वपूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोड़ोंपर, उसके वयस्क हो जानेपर भी, उसका रास्ता निश्चित करे। शिक्षामें बच्चेको एक विकसनशील आत्मा नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक पाशविक द्रव्य माना जाता था जिसे अध्यापक रूप देता या निर्धारित सांचेमें ढालता था। हम वहांसे दूर जा चुके हैं और अब बच्चेके बारेमें यह विचार काम करता है कि वह एक अंतरात्मा है जिसकी अपनी सत्ता है, अपनी प्रकृति है, अपनी क्षमताएं हैं। उन्हें खोजनेमें हमें उसकी मदद करनी चाहिये, उसे अपने-आपको खोजने, अपनी क्षमताओंकी परिपक्वतामें विकसित होने, भौतिक और प्राणिक ऊर्जाकी पूर्णता, उसकी भावात्मक, बौद्धिक और आध्यात्मिक सत्ताके अधिक-से-अधिक विस्तार, गहराई और ऊंचाईतक पहुंचनेमें सहायता देनी चाहिये। इसी प्रकार स्त्रियोंकी अधीनता, स्त्रियोंपर पुरुषोंका संपत्ति-भाव, एक बार सामाजिक जीवनमें स्वयंसिद्ध तथ्य था और अभी हालमें ही इसे सफल रूपसे चुनौती दी गयी है। मानव पशुके नरमें यह सहजवृत्ति इतनी मजबूत थी, या हो गयी थी कि धर्म और दर्शनको भी इसे स्वीकृति देनी पड़ी — बहुत कुछ मिल्टनके सूत्रके अनुसार जो पुरुषके अहंकारके बहुत ऊंचे रूपको प्रकट करता है: "वह (नर) केवल भगवान्के लिये और वह (नारी) नरमें विद्यमान भगवान्के लिये" — यदि यूं नहीं "भगवान्की जगह नरके लिये"। यह विचार भी अब धूलमें मिलता जा रहा है यद्यपि उसके अवशेष अभीतक पुराने विधानों, प्रचलित सहजवृत्ति, परंपरागत विचारोंकी दृढ़ता आदिकी स्पर्शिकाओंके द्वारा अभीतक जीवनसे चिपके हैं। इन चीजोंके विरुद्ध इस रूपमें आदेश हो चुका है कि नारीको भी स्वतंत्र व्यक्ति माने जानेका अधिकार है। स्वाधीनता और जनतंत्रके विकासके साथ-साथ शासितोंपर शासकोंके संपत्ति-भावका अंत हो गया है। वह राष्ट्रीय साम्राज्यवादके रूपमें अभीतक बाकी है। यद्यपि अब राजनीतिक आधिपत्यके भावके रूपमें नहीं, व्यापारिक लोलुपताके रूपमें है। बौद्धिक रूपसे भी इस अधिकार या स्वामित्वके अहंपर घातक चोट पड़ चुकी है परंतु जीवनमें वह अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचा हुआ है। ऐसा लग रहा था कि इन सबका स्थान ले लेगा व्यक्तिपर प्रशासनका स्वामित्व। लेकिन इसके आध्यात्मिक परिणाम-स्वरूप युद्धके डरावने प्रकाशने इसे भी पीछे हटा दिया है और हम आशा कर सकते हैं कि ज्यादा स्पष्ट ज्ञानके कारण मानव स्वाधीनता-के लिये यह संकट कम होता जायगा। कम-से-कम हम एक ऐसे बिंदुकी ओर बढ़ रहे हैं जहां मानव जातिके रूप देनेके लिये आत्म-निर्णयके सिद्धांतको उपस्थित और अत्यावश्यक तो माना ही जायगा, चाहे अभी प्रधान शक्ति न माना जाय।

(सेंटिनरी वॉल्यूम १५, ६०५-०६)

परिवार-त्यागकी वृत्ति

तुम जिस प्रवृत्तिकी बात कर रहे हो — आध्यात्मिक जीवनके लिये परिवार और सामाजिक जीवनके त्यागनेकी प्रवृत्ति — भारत-वर्षमें पिछले दो हजार वर्षोंसे, बल्कि इससे भी ज्यादासे, परंपरा रूपमें चली आयी है। और यह विशेष रूपसे पुरुषोंमें है। इसने स्त्रियोंकी बहुत ही कम संख्याको छुआ है। यह याद रखना चाहिये कि भारतके सामाजिक जीवनने व्यक्तिको लगभग पूरी तरह परि-वारके आधीन कर दिया है। स्त्री-पुरुष अपनी स्वतंत्र इच्छाके अनुसार ब्याह नहीं करते। उनके ब्याह प्रायः, एकदम बचपनमें ही निश्चित कर दिये जाते हैं। यही नहीं, समाजका सांचा बहुत जमाने-से लगभग लौह दृढ़ताके साथ हर व्यक्तिका स्थान निश्चित करता आया है और हरएकसे यही आशा की गयी है कि वह उसके अनु-सार चलेगा। तुम समस्याओं और उनके साहसपूर्ण समाधानकी बात करते हो लेकिन इस जीवनमें कोई समस्या ही नहीं है और समाधानकी जरूरत ही नहीं है — साहसपूर्ण समाधान वहीं संभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा जहां व्यक्तिगत इच्छा-शक्तिको स्वाधीनता प्राप्त हो लेकिन जहां एकमात्र समाधान (यदि तुम इस जीवनमें रहना चाहो) है परिवारकी इच्छाके आगे झुकना, वहां इस प्रकारकी कोई चीज़ नहीं हो सकती। यह सुरक्षित जीवन होता है और सुखी भी हो सकता है यदि व्यक्ति अपने-आपको उसके अनुकूल बना सके; उसके अंदर असाधारण अभीप्साएं न हों और अपने परिवेशके बारेमें भी भाग्यशाली हो। लेकिन इसके पास असंगतियों या किसी प्रकारकी व्यक्तिगत कुंठाका कोई इलाज या बचनेका उपाय नहीं है। इसमें किसी पहल-शक्ति, किसी स्वच्छंद गति-विधि या व्यक्तित्वके लिये कोई गुंजाइश नहीं रहती। व्यक्तिके लिये बाहर निकलनेका बस एक ही रास्ता होता है और वह है अपने अंदर आध्यात्मिक जीवन या धार्मिक जीवनमें प्रवेश। इसके लिये किसी प्रकारके संन्यासद्वारा संसारका, पारिवारिक जीवनका परित्याग ही मान्यता-प्राप्त छुटकारा है। संन्यासी या वैष्णव वैरागी या ब्रह्मचारी स्वतंत्र है। वे कुटुम्बके लिये मृतके समान हैं और वे अपनी आंतरिक आत्माके आदेशके अनुसार रह सकते हैं। लेकिन अगर वे किसी संप्रदाय या आश्रममें प्रवेश करें तो उन्हें संप्रदायके नियमोंका पालन करना पड़ता है। यह उनका अपना चुनाव होता है। समाजने अपने-आपसे छुटकारा पानेके लिये इस मार्गको मान्यता दी, धर्मने सामाजिक या सांसारिक जीवनके प्रति अरुचिको, संन्यास या धार्मिक घुमक्कड़पनको करनेके लिये उचित कारण माना। लेकिन यह प्रधानता पुरुषोंके लिये ही थी। प्राचीन कालमें बौद्ध नारियोंके लिये अपने संघ होते थे। बादमें वैष्णवोंमें भी कुछ ऐसी व्यवस्था थी, इन्हें छोड़कर स्त्रियोंके लिये कहीं छुटकारेका रास्ता न था जबतक कि इतनी प्रबल आध्यात्मिक प्रेरणा न हो जो किसी प्रकारकी अस्वीकृतिको न माने। रही बात संन्यासीके छोड़े हुए बाल-बच्चों और पत्नीकी, उनके लिये कोई कठिनाई नहीं थी क्योंकि संयुक्त परिवार उनके भरण-पोषणकी जिम्मेदारी ले लेता था, लिये रहता था।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान अवस्थामें हुआ यह है कि पुराना चौखटा तो बना है लेकिन आधुनिक विचारोंने एक असंगति या बेचैनी ला दी है। पुरानी पारिवारिक प्रथा टूट रही है और अधिकाधिक संख्यामें स्त्रियां भी छुटकारेकी वही स्वाधीनता पानेकी कोशिश कर रही हैं जो पुरुषोंको भूतकालमें हमेशा प्राप्त रही है। यह बात उन उदाहरणोंकी व्याख्या करती है जो तुमने देखे हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि अभीतक इनकी संख्या बहुत अधिक है। यह एक नयी चीज है। आश्रममें स्त्रियोंका प्रवेश अपने-आपमें एक नयी चीज है। अपने चारों ओरके वातावरणसे मेल न खानेवाली मानसिक और प्राणिक वृद्धिका अत्यधिक दुःख, जबरदस्ती करवायी बेमेल शादियां जिनमें पति-पत्निके बीच कोई समानता नहीं, एक ऐसा वातावरण जो व्यक्तिके आंतरिक जीवनका विरोधी और असहिष्णु हो और दूसरी ओर है भारतीय मानसकी सहज-स्वाभाविक वृत्ति जो धार्मिक या आध्यात्मिक छुटकारेकी शरण लेती है। यह नयी स्थितिको भलीभांति स्पष्ट कर देती है। अगर समाज इससे बचना चाहता है तो उसे अपने-आपको बदलना होगा। रही बात व्यक्तियोंकी, तो हर मामलेको उसके अपने गुणोंके अनुसार देखना होगा। समस्यामें बहुत ज्यादा जटिलता है, स्वभाव, स्थिति, हेतु आदिमें इतने अंतर होते हैं कि कोई सामान्य नियम नहीं बनाया जा सकता।

मैंने सामाजिक समस्याके बारेमें सामान्य तौरपर ही कहा है। आश्रम-संचालनमें हमारे पास बहुत-से प्रार्थना-पत्र आये हैं जो स्पष्ट रूपसे इसीलिये लिखे गये थे कि व्यक्ति जीवनकी कठिनाइयों और जिम्मेदारियोंसे बचना चाहते थे — स्वभावतः हमने इन्हें अस्वीकार या इनकी अवहेलना की — ये पत्र प्रायः पुरुषोंकी ओरसे ही हुआ करते थे। अभी हालमें दो-एक उदाहरण स्त्रियोंके भी आये हैं, अन्यथा स्त्रियोंने दुखद विवाह या कष्टकर वातावरणके आधारपर यहां आनेके लिये प्रार्थना नहीं की। अधिकतर साधिकाएं अपने पतियोंके साथ इस आधारपर आयी हैं कि उन्होंने पहले ही योग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधना शुरू कर दी थी। कुछ हैं जो काफी हदतक विवाहित जीवनकी जिम्मेदारियां पूरी करके आयी हैं। दो-तीन उदाहरणोंमें पतिसे विच्छेद हुआ था परंतु यह यहां आनेसे पहलेकी बात है। कुछ उदाहरणोंमें बच्चे थे ही नहीं और कुछमें उन्हें परिवारके साथ छोड़ा गया है। कुछ साधक अपने बाल-बच्चोंको पीछे छोड़ आये हैं लेकिन मुझे नहीं लगता कि इनमेंसे कोई उदाहरण ऐसा है जिसमें घर छोड़नेका हेतु जीवनकी कठिनाइयां रही हों। बल्कि विचार यही था कि उन्हें पुकार सुनायी दी है और उसका अनुसरण करनेके लिये और सब छोड़ देना होगा।

(सेंटिनरी वोल्यूम २३, ८७०-७२)

स्त्री और पुरुषकी मैत्री

निश्चय ही पुरुष और स्त्रीकी अपेक्षा पुरुष और पुरुष तथा स्त्री और स्त्रीमें मैत्री ज्यादा आसान है क्योंकि इसमें सामान्यतः सेक्सका अनधिकार प्रवेश नहीं होता। पुरुष और स्त्रीके बीचकी मैत्रीमें किसी भी समय सेक्स सूक्ष्म रूपसे या सीधा आकर गड़बड़ पैदा कर सकता है। लेकिन पुरुष और स्त्रीके बीच ऐसी मैत्री असंभव नहीं है जिसमें यह तत्त्व न हो। ऐसी मैत्रियां रह सकती हैं और हमेशा रही हैं। जरूरत बस इस बातकी है कि निम्न प्राण पिछले दरवाजेसे झांकने या प्रवेश करने न पाये। बहुधा पुरुष और स्त्रीकी प्रकृतिमें एक ऐसा सामंजस्य, आकर्षण या साम्य होता है जो प्रकट या प्रच्छन्न निम्न प्राणकी (सेक्सकी) भूमिकाके अतिरिक्त किसी और आधारपर खड़ा होता है। यह बहुत बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान रूपसे मानसिक या चैत्य या उच्चतर प्राणके धरातलपर आधारित होता है या इनके मिश्रणसे बनता है। ऐसी अवस्थामें मैत्री स्वाभाविक होती है और इसकी संभावना कम रहती है कि दूसरे तत्त्व आकर उसे नीचे गिरा देंगे या तोड़ देंगे।

यह सोचना भी भूल है कि केवल प्राणमें ही ऊष्मा होती है और चैत्य ज्वालहीन ठंडी चीज है। सरल, स्वच्छ सद्भावना बहुत अच्छी और वांछनीय चीज है। लेकिन यही चैत्य प्रेम नहीं है। प्रेम प्रेम है, केवल सद्भावना नहीं। चैत्य प्रेममें प्राणके समान ही, बल्कि उससे भी बढ़कर, ऊष्मा और ज्वाला हो सकती है। हां, वह पवित्र अग्नि होती है जो अहंकारपूर्ण इच्छाओंकी तुष्टिपर निर्भर नहीं होती और न ही जिन समिधाओंका आलिंगन करती है उन्हें खा जाती है। यह लाल नहीं, श्वेत ज्वाला है लेकिन अपनी तीव्रतामें श्वेत ऊष्मा रक्त ऊष्मासे घटिया नहीं होती। यह सच है कि मानव संबंधों और मानव प्रकृतिमें सामान्यतः चैत्य प्रेमको पूरी तरह खिलनेका अवसर नहीं मिलता। उसे अपनी आग और आनंद ज्यादा आसानीसे तब प्राप्त होता है जब उसे भगवान्‌की ओर उठाया जाय। मानव संबंधोंमें चैत्य प्रेम अन्य तत्त्वोंके साथ मिल जाता है जो तुरंत उसका उपयोग करना और उसपर छा जाना चाहते हैं। उसे अपनी पूर्ण तीव्रता प्रकट करनेका मार्ग कभी-कदास ही मिलता है। अन्यथा यह केवल एक तत्त्वके रूपमें ही आता है। फिर भी प्रधानतः प्राणिक प्रेममें भी जितनी उच्चतर चीजें पायी जाती हैं वे सब उसीकी देन होती हैं। सारी सूक्ष्मतर मधुरता, कोमलता, निष्ठा, आत्म-दान, आत्म-त्याग, आत्मासे आत्माका मिलन, आदर्शवादी उदात्तता जो मानव प्रेमको अपनेसे परे ले जाती है — ये सब चीजें चैत्यसे आती हैं। अगर वह मानव प्रेमके अन्य तत्त्वोंपर — मानसिक, प्राणिक, भौतिक — अधिकार और शासन करते हुए उनका रूपांतर कर सके तब वह प्रेम धरतीपर उस वास्तविक चीजकी तैयारी या उसकी छाया बन सकेगा — वह है द्विविध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनमें अंतरात्मा और उसके यंत्रोंका समग्र ऐक्य। लेकिन इसकी अधूरी अभिव्यक्ति भी विरल है।

हमारी दृष्टि तो यह है कि योगमें सामान्य अवस्था यह है कि प्रकृतिमें पूरी-की-पूरी ज्वाला भगवान्‌की ओर अभिमुख हो और बाकी चीजें सच्चे आधारके लिये प्रतीक्षा करें। उच्चतर वस्तुओंको सामान्य चेतनाकी बालू या दलदलकी नींव पर खड़ा करना सुरक्षित नहीं है। इससे मैत्री और साहचर्यका बहिष्कार आवश्यक नहीं हो जाता लेकिन ये चीजें पूरी तरह केंद्रीय अग्निके अधीन होनी चाहियें। इस बीच यदि कोई भगवान्‌के साथ संबंधको ही अपना एकमात्र आकर्षक लक्ष्य बना ले तो यह बिलकुल स्वाभाविक है और यह साधनाको पूरा बल प्रदान करता है। चैत्य प्रेम अपने-आपको पूरी तरह तभी पाता है जब वह उस अधिक दिव्य चेतनाका प्रसारण हो जिसे हम खोज रहे हैं। तबतक उसके लिये अपने-आपको अपने स्पष्ट, समग्र रूपमें अभिव्यक्त करना कठिन है।

पुनश्च: मन, प्राण और शरीर सचमुच अंतरात्मा और आत्माके यंत्र हैं। जब वे अपने लिये काम करते हैं तो अज्ञानमय, अपूर्ण वस्तुएं पैदा करते हैं — अगर उन्हें आत्मा और चैत्यका उचित यंत्र बनाया जा सके तो वे अपनी दिव्यतर पूर्णता प्राप्त करते हैं, हम इस योगमें जिसे रूपांतर कहते हैं उसमें यही भाव है।

*

संसारमें भी स्त्री-पुरुषोंमें ऐसे संबंध रहे हैं जिनमें सेक्स हस्तक्षेप नहीं कर सका — वे शुद्ध चैत्य संबंध थे। लैंगिक भेदकी चेतना तो निस्संदेह रहती है लेकिन वह कामनाके स्रोतके रूपमें या संबंधोंमें गड़बड़ नहीं पैदा करती। लेकिन स्वभावतः इसके संभव होनेसे पहले चैत्य विकासके एक स्तरतक पहुंचना जरूरी है।

(सेंटिनरी वोल्यूम ३, ८१७-२०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहके बारेमें

श्रीअरविंदके शिष्य उनसे केवल आध्यात्मिक बातें ही नहीं पूछा करते थे बल्कि अपनी सामान्य समस्याएं भी उनके सामने रखा करते थे। एक शिष्यने विवाह करनेके बारेमें पूछा तो श्रीअरविंदकी ओर-से यह मौखिक उत्तर मिला :

"तुम्हारे मामलेमें सब कुछ तुम्हारे आदर्शपर निर्भर है। अगर तुम प्राणिक और भौतिक भोग-विलासका जीवन अपनाना चाहते हो तो तुम अपनी संगिनी कहींसे भी चुन सकते हो। लेकिन यदि ज्यादा उदात्त आदर्श है, उदाहरणके लिये, संगीत, कला या देश-सेवा, तब तुम्हारी संगिनीकी खोज कामनाके द्वारा नहीं, किसी ज्यादा ऊंची चीजके द्वारा होनी चाहिये। उस नारीके अंदर कोई ऐसी चीज होनी चाहिये जो तुम्हारी सत्ताके चैत्य भागके साथ मेल खाती हो। अगर आध्यात्मिक जीवन तुम्हारा लक्ष्य है तो ब्याह करनेसे पहले पचास बार सोच लो...। यहां तुम्हें केवल साधारण नियम बताये जा रहे हैं। इसकी जटिलताको देखकर तुम अंदाज लगा सकते हो कि इसका सुस्पष्ट उत्तर देना कितना कठिन है। इन सब बातोंको अपने सामने रखते हुए तुम्हें अपने लिये अपने-आप निश्चय करना चाहिये।"

क्या सेक्सके आकर्षणके बिना स्त्रियोंके सौंदर्यकी सराहना नहीं की जा सकती ?

श्रीअरविंद : यदि तुम सभी सुन्दर चीजोंकी सराहना करो, केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियोंकी नहीं, और वह भी निष्काम भावसे — तब कोई हर्ज नहीं है। लेकिन यह केवल स्त्रियोंके लिये ही हो तो यह यौनाकर्षण (सेक्स-अपील)का ही अवशेष है।

नर और नारी

३०-१-१९३५

आप कहते हैं कि अति प्राचीन कालसे पुरुष स्त्रियोंको पद-दलित किये हुए है। लेकिन यह संभव कैसे हुआ? क्या इसमें पुरुषकी श्रेष्ठतर बुद्धि और बलके प्रति दुर्बल और निम्न सत्ताकी मौन स्वीकृति न थी?

श्रीअरविंद: उन्होंने अपनी अधिक शक्ति और चालाकीका प्रयोग किया और स्त्रीकी चैत्य प्रवृत्तिका लाभ उठाया। बस यही है। अगर तुम इसे औचित्य और न्यायसंगत मानो।

क्या स्त्रियां केवल जाति और वर्गको बनाये रखनेके लिये ही रची गयी हैं?

श्रीअरविंद: उसी तरह जैसे डाक्टर! हां, डाक्टर अपने अंदरसे जातिको उत्पन्न नहीं करता।

कहा जाता है कि नारी पुरुषकी गुरु और शक्ति है। सुननेमें बात अजीब लगती है, है न?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद : इससे ज्यादा अजीब नहीं कि पति भगवान् है (पति देवता)। माना जाता है कि पति ही स्त्रीका उचित और एकमात्र गुरु है। तो फिर पत्नी भी उसी भाषामें क्यों न बोले? जैसेको तैसा।

क्या यह सच है कि जो एक बार पुरुष हो वह अपने अगले जन्मोंमें हमेशा पुरुष ही रहेगा और जो एक बार स्त्री बन गयी वह स्त्री ही बनती जायगी?

श्रीअरविंद : कोई बंधा हुआ नियम नहीं है जिसमें हेर-फेर न हो सके, परंतु साधारणतः यही दिशा या प्रवृत्ति रहती है।

(नीरदका पत्र-व्यवहार)

यौन शक्ति

वास्तवमें सार्वभौम यौन शक्ति ही काम करती है, लेकिन कुछ लोग इस शक्तिसे औरोंकी अपेक्षा ज्यादा भरे रहते हैं — जिसे आजकल यूरोपमें "सेक्स-अपील" कहते हैं। विशेष रूपसे सेक्स-अपीलका उपयोग स्त्रियां करती हैं और वह भी सचेतन रूपसे किसी व्यक्ति-विशेषपर इसे डालनेके इरादेके बिना ही। वे जान-बूझकर किसी विशेष व्यक्तिपर इसे भेज सकती हैं लेकिन हो सकता है कि वह और बहुतोंपर असर करे जिन्हें फंसानेकी उसमें कोई खास इच्छा नहीं है। सभी स्त्रियोंमें सेक्स-अपील नहीं होती पर अधिकतर स्त्रियोंमें यौन आकर्षणकी कोई शक्ति होती है। हां, पुरुषोंमें स्त्रियोंके लिये ऐसा ही आकर्षण होता है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये स्पंदन नारीके एक स्मित या किसी गति, किसी रूप-रंग या किसी क्रियासे शुरू हो सकते हैं। मुझे नहीं लगता कि स्वयं मुस्कानके अंदर कोई चीज निहित होती है। लेकिन ये सब चीजें, ये हाव-भाव पुरुषोंमें सेक्स जगानेके साधन रहे हैं और स्त्री प्रायः बिना जाने ही केवल आदतके अनुसार पुरुषके संपर्कमें आनेपर इनका उपयोग करती है — उसका पुरुषको खुश करने या प्रभावित करनेका इरादा हो या न हो। यह चीज सहज गतिके रूपमें आ जाती है। 'क' उस प्रकारकी स्त्री है जिसके अंदर पुरुषको प्रसन्न करनेकी यह सहजगति होती है। लेकिन जब स्त्री संयोगवश, इस सहज वृत्तिके बिना ही मुस्कराये तब भी नारीके आकर्षणके प्रति स्वभाविक प्रतिक्रियाके रूपमें पुरुषमें स्पंदन पैदा हो सकते हैं। ये चीजें आरंभमें बिलकुल यंत्रवत् होती हैं। जैसा कि मैंने पहले लिखा था, यह भौतिक या प्राणिक मन (कल्पना आदि) की यांत्रिक प्रतिक्रिया है जो उसे लंबा खींचती और प्रभावकारी बनाती है अन्यथा स्पंदन कुछ समयके बाद ही मुरझा जाएंगे।

*

हो सकता है कि उसमें तुम्हारे लिये यौन संवेदन न हो लेकिन एक प्रकारका प्राणिक आवेग तो है ही जो अपनी स्पर्शिकाएं फेंकता रहता है — मुझे नहीं मालूम इसे ठीक कैसे व्यक्त किया जाय। प्रकृतिमें इसका गुप्त उद्देश्य है पुरुषको आकर्षित करना, उसका ध्यान खींचकर स्त्रीपर केंद्रित करना, उसे कम या अधिक प्रमाणमें खींचना और फंसाना। यह हो सकता है कि स्त्रीके मनमें इसका जान-बूझकर कोई इरादा न हो, यानी, हो सकता है कि यह उसके मनमें स्पष्ट न हो या उपस्थित भी न हो — यह बिलकुल सहज या अवचेतन हो। इसमें भौतिक यौन क्रियाका इरादा होनेकी जरूरत नहीं है, केवल प्राणकी सहजगति हो सकती है। प्राणिक स्वभावकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधानतावाली सभी स्त्रियोंमें (और 'क' ऐसी ही है) यह चीज होती है, किसीमें कम, किसीमें ज्यादा। हो सकता है कि उसमें कोई विशेष यौन आवेग न हो फिर भी वह पुरुषमें यौन विचार उभारती है। स्वभावतः 'क' को कोई मनोवैज्ञानिक ज्ञान नहीं है और उसके अनुभव करने या देख पानेके लिये ये चीजें बहुत ज्यादा सूक्ष्म हैं। वह आसानीसे यह समझ सकती है कि वह पूरी तरह निर्दोष और स्वाभाविक ढंगसे चल रही है और हो सकता है कि वह अपने अंदर प्रकृतिके इस दबावकी क्रियाके बारेमें कुछ न जानती हो।

*

स्त्रियोंने हमेशा ही वेश-भूषाका उपयोग उस चीजमें सहायताके रूपमें किया है जिसे आजकल "सेक्स-अपील" कहते हैं और पुरुष हमेशा इसके प्रति संवेदनशील रहे हैं। स्त्रियोंको भी पुरुषके वेशकी ओर आकर्षण होता है (उदाहरणके लिये फौजी वर्दीकी ओर)। वेशमें भी विशेष रुचियां होती हैं। यह एक सामान्य-सी बात है कि किसी विशेष रंगकी साड़ी आकर्षित करे। यह आकर्षण इंद्रियों और प्राणपर क्रिया करता है जब कि मन मनोवैज्ञानिक दोषोंको नापसंद करता है और उनके प्रकट होनेपर ठंडा पड़ जाता है। लेकिन अधिक बलवान् प्राणिक आकर्षणके आगे मनकी यह अरुचि टिक नहीं पाती।

(सेंटिनरी वाल्यूम २४, १५२१-२२)

*

ऐसी बहुत-सी स्त्रियां हैं जो मन, चैत्य, प्राण (हृदय) से प्रेम कर सकती हैं परंतु जरा-से शारीरिक स्पर्शसे कतराती हैं। यह चीज चली भी जाय तो भी शारीरिक क्रिया उनके लिये घृणास्पद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनी रहती है। वे दबावके कारण झुक सकती हैं, किंतु क्रियाके साथ उनका मेल नहीं बैठता। वह उन्हें हमेशा पाशविक और गिरानेवाली लगती है। स्त्रियां इस बातको जानती हैं परंतु पुरुषको इस बातपर विश्वास करना कठिन लगता है; पर यह है बिलकुल सत्य।

असाधारण एक ऐसा शब्द है जिसे तुम किसी भी ऐसी चीजपर चिपका सकते हो जो घटिया और मामूली न हो। इस तरह प्रतिभा असाधारण है, आध्यात्मिकता और उच्चादर्शोंके अनुसार जीवन बितानेका प्रयास भी असाधारण है। स्त्रियोंमें भौतिक शुचिताकी प्रवृत्ति असाधारण नहीं है, यह काफी सामान्य है। और इसमें एक बहुत ऊंचा नारी प्ररूप आ जाता है।

मन विचार और बोधका आधार है, हृदय प्रेमका आधार है और प्राण कामनाका — लेकिन यह बात मानसिक प्रेमके अस्तित्वको कैसे झुठला सकती है? जैसे मनपर भावनाओं अथवा प्राणके संवेदनोंका आक्रमण हो सकता है उसी तरह हृदयपर भी मनका अधिकार हो सकता है, यह भी मानसिक शक्तियोंद्वारा परिचालित हो सकता है।

एक प्राणिक प्रेम होता है और एक भौतिक प्रेम। यह संभव है कि प्राण प्रेमके बिना नाना प्रकारके प्राणिक कारणोंसे नारीकी कामना — उदाहरणके लिये, दूसरेपर अधिकार या स्वामित्व करनेकी वृत्तिके कारण, अपने प्राणका पोषण करनेके लिये नारीकी प्राणिक शक्तिसे कुछ खींचनेके लिये, प्राणिक शक्तियोंके आदान-प्रदानके लिये, अपने मिथ्याभिमान या पीछा करनेकी शिकारी वृत्तिको संतुष्ट करनेके लिये आदि (यह सब पुरुषकी दृष्टिसे है परंतु स्त्रीके भी अपने प्राणिक हेतु होते हैं)। इसे प्रायः प्रेम कहा जाता है परंतु यह केवल प्राणिक कामना है, एक प्रकारकी काम-वासना है। हां, यदि हृदयकी भावनाएं जाग पड़ें तो यह प्राणिक प्रेम बन जाता है — एक मिश्रित चीज जिसमें इनमेंसे कोई या फिर सभी हेतु बलवान होते हैं, फिर भी प्राणिक प्रेम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिक प्रेम भी हो सकता है, सौंदर्यका आकर्षण, भौतिक सेक्स-अपील या ऐसी कोई और चीज जो हृदयकी भावनाओंको जगाती है। अगर यह न हो तो भौतिक आवश्यकता ही सब कुछ होती है और यह निरी वासना है, उससे बढ़कर कुछ नहीं। लेकिन भौतिक प्रेम संभव है।

इसी तरह मानसिक प्रेम हो सकता है। यह अपने आदर्शको दूसरेके अंदर पानेके प्रयाससे उठता है या फिर किसी प्रबल मानसिक आवेग, श्लाघा या विस्मय या मनके साथीके लिये खोज, अपनी प्रकृतिके पूरक, सहधर्मी, मार्गदर्शक और सहायक, नेता और गुरु आदिकी खोज या अन्य सैकड़ों मानसिक हेतुओंसे भी उठ सकता है। अपने-आपमें यह प्रेम नहीं होता यद्यपि बहुधा यह इतना तीव्र होता है कि इसे प्रेमसे अलग नहीं जाना जा सकता। यह कई बार जीवनकी बलि चढ़ाने या संपूर्ण आत्म-त्यागतक ले जाता है। लेकिन जब यह हृदयकी भावनाओंको जगाता है तो यह बहुत सशक्त प्रेम-तक ले जाता है जो फिर भी अपने मूल और प्रधान गुणके कारण मानसिक ही रहता है। सामान्यत: मन और प्राण, दोनों एक साथ हो जाते हैं। लेकिन यह मेल भौतिक क्रिया और उसके साथकी चीजोंकी ओर अनिच्छा या स्पष्ट अरुचिके साथ भी रह सकता है। निस्संदेह, यदि पुरुष दबाव डाले तो ज्यादा संभावना यही है कि स्त्री झुक जायगी लेकिन यह, जिसे "हृदय-विरोधी" कहते हैं, ऐसी चीज होगी जो उसके संवेदनों और गहरी सहज-वृत्तियोंसे उलटी होगी।

ज्ञानशून्य मानस-शास्त्र ही सब चीजोंको यौन प्रयोजन और यौन आवेगका ऋणी मानता है।

(सेंटिनरी वोल्यूम २४, १५२५-२७)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

भिलाई नगरमें श्रीअरविन्द सोसायटी केन्द्रने अपनी तीसरी वर्षगांठ मनायी। इस अवसरपर श्री के. एस. नागीने श्रीअरविन्द तथा माताजीकी शिक्षापर भाषण दिया। आश्रमके सदस्य श्री चन्द्रदीपने श्रीअरविन्दके योगके बारेमें बताया। अपने दैनिक जीवनमें आध्यात्मिकताको कैसे जीएं, इसके बारेमें भी चर्चा की। इसी अवसरपर श्रीअरविन्दकी कहानी 'स्वप्न' (मूल बंगला) का अभिनय किया गया, नाम रखा 'हरिमोहन का स्वप्न'। केन्द्रके सदस्योंने 'ज्योतिर्मय श्रीअरविन्द' एक भक्ति गीत गाया।

आश्रममें बनी चीजोंकी प्रदर्शिनी हुई, यहांसे बिक्री भी काफी हुई।

श्री चन्द्रदीप अपनी यात्रके दौरान महाराष्ट्रमें नागपुर और भांडारा भी होकर आए और कई सार्वजनिक बैठकोंमें श्रीअरविन्दकी शिक्षाके बारेमें वार्त्ताएं दीं।

'फ्रेण्ड्स ऑफ ओरोविल ग्रुप, कर्नाटक स्टेट, बंगलोर'की तीसरी वार्षिक सभा हुई। श्री एस. वी. सब्नीसने वार्षिक रिपोर्ट दी और यह भी बताया कि ये दल ओरोवीलके 'भारत निवास' और कर्नाटकके सांस्कृतिक मण्डपके निर्माण-कार्यमें सहायता करेंगे। इसी अवसरपर वी. के. गोकक और श्री के. जी. काटवेके भाषण हुए। श्री पराशिवमूर्तिने सभाके कार्य-कलापकी प्रशंसा की।

ओड़िसाकी श्रीअरविन्द सोसायटीका चौथा चतुर्वार्षिक सम्मेलन कटकमें ४ से ७ अप्रैल तक हुआ। पहला सम्मेलन १९६५में हुआ था।

श्रीमती नन्दिनी शतपथीने श्री मांका झंडा फहराया। श्री नव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातजीने सम्मेलनका उद्घाटन किया। श्री भैरवी चन्द्र महन्तीने अतिथियोंका स्वागत किया। श्री यदुनाथ जिनाने रिपोर्ट प्रस्तुत की। लगभग ९०० व्यक्ति सम्मिलित हुए। कुछ आश्रमके सदस्य भी थे। ५, ६, और ७ अप्रैल को माताजी और श्रीअरविन्दकी शिक्षापर वार्ताएं हुई। इससे आध्यात्मिक प्रगतिकी सामूहिक अभीप्सा जगानेमें सहायता मिली।

२८ जुलाईको आकाशवाणीसे 'नींद और स्वप्न'पर श्री नवजातजी-का एक भाषण प्रसारित हुआ।

नए प्रकाशन :

मातृमंदिर फ्लावर कार्ड : श्रीमती भक्तिबेनने बारह फूलोंके चित्र बनाए हैं जिन्हें माताजीके प्रतीकके रूपमें सजाया गया है। ये मातृमंदिरके १२ बगीचोंके प्रतीक हैं। प्रत्येक कार्डकी कीमत है ४ और यहांसे प्राप्त हो सकते हैं: श्रीअरविन्द केंद्र, पैडर मार्ग, शाखा ४०-बी, नालंदा, ६२, पैडर मार्ग, बम्बई-४०००२६।

अभीप्सा —— अखिल भारत पत्रिका (मराठी): जून ७६ से 'आल इण्डिया मैगजीन'का मराठी संस्करण शुरू हुआ है। जो व्यक्ति अंग्रेजी-के स्थानपर इसे लेना चाहते हैं या अपने मित्रोंमें इसका प्रसार करना चाहते हैं वे श्री बी. जी. गुप्त, २५-३०२, मारशी मार्ग, अमरावती-४४४६०१ से पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

समयकी आवश्यकता : श्रीअरविन्दके भारत तथा राजनीतिक संबंधी कुछ लेखोंका संकलन 'समयकी आवश्यकता' नामसे प्रकाशित हुआ है। पाठकोंको यह पढ़कर आश्चर्य होगा कि श्रीअरविन्दकी वाणी कितनी शाश्वत है। जो बातें उन्होंने उन दिनोंके लिये लिखी थीं वे अब भी उतनी ही समयानुकूल हैं। दाम है १.५०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Beauty, you are my way to the Divine.

(*White Roses*) The Mother

Inland Carriers (Bombay)

For Safe, Speedy & Efficient Movement of Cargo

Head Office :

Takhatmal Estate, P. O. Box No. 12, AMRAVATI

Branches :

112, Sarang Street, BOMBAY-3, Phone : 327710

Bhistiwad, AHMEDABAD, Phone : 34098

Daily parcel Service to & from

Bombay, Ahmedabad, Baroda, Poona, Sholapur, Ichalkaranji, Bangalore, Nagpur, Amravati, Raipur & Malegaon (Dist. Nasik)

THE CARRIERS WITH A DIFFERENCE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

*

INDIAN TEA
STORAGE AGENCY

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Best wishes from:

Swadeshi Cotton Mills Co. Ltd.

PONDICHERRY (South India)

(Regd. Office : Swadeshi House, Civil Lines, Kanpur.)

MANUFACTURERS OF QUALITY FABRICS:

Drills & Cellular :

Bleached, Dyed, Mineral Khaki, Mercerised

Poplins & Sheetings :

Bleached, Dyed, Plain & Printed, Mercerised

Canvas :

Water Repellent

and

Yarn :

In different counts

Leading Suppliers of textile stores to Defence and other Government departments.

Other Mills at:

Kanpur (Head Office), Naini, Maunath Bhanjan and Rae Bareli in the State of Uttar Pradesh and Udaipur in the State of Rajasthan

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

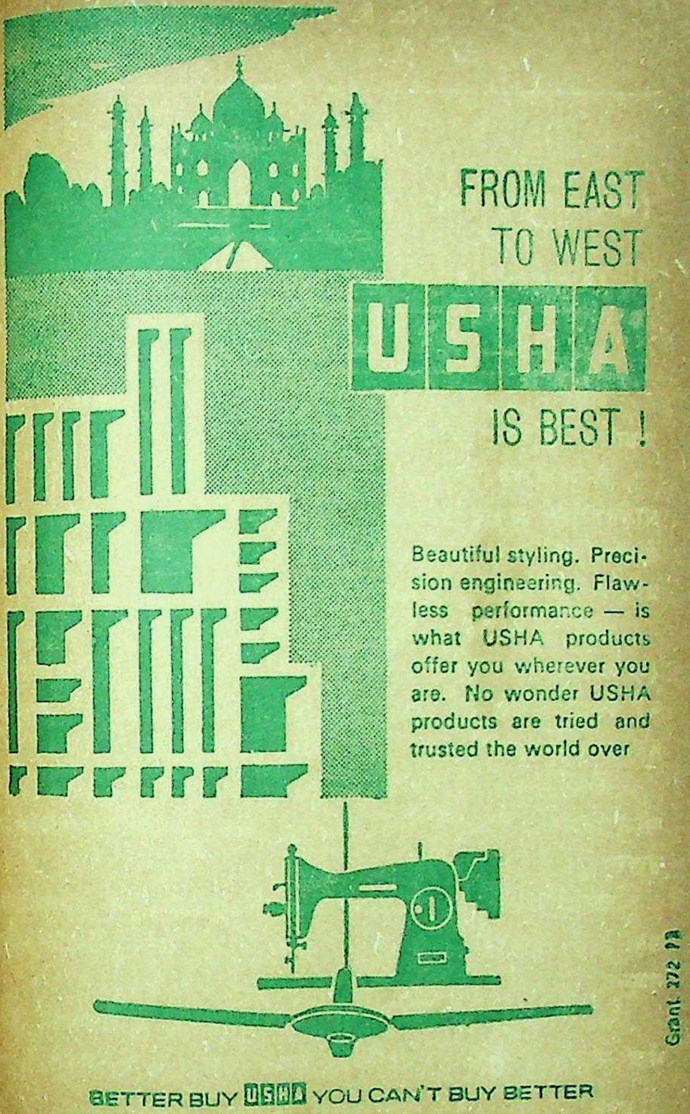

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70.
REGD. No. M. 8731

श्रीमातृवाणी

(श्रीमाताजीद्वारा लिखित साहित्यका हिन्दी अनुवाद — १५ खण्डोंमें)

प्रकाशन पूर्व कीमत २५०.०० डाक खर्च ५०.०० अलग
यथार्थ मूल्य ४००.००

श्रीअरविन्द सोसायटीकी इस योजनाके अन्तर्गत चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

प्रथम खण्ड 'प्रार्थना और ध्यान' प्रकाशित हुआ है। इन प्रार्थनाओंका चुनाव श्रीमाताजीने १९१२ से १९१९ तककी अपनी दैनन्दिनीमेंसे किया था। "यह पुस्तक उनके लिये है जो भगवान्के प्रति सम्पूर्ण समर्पण करनेकी अभीप्सा रखते हैं।"

अन्य दो प्रकाशित पुस्तकें हैं 'प्रश्न और उत्तर: १९५०-५१' (खण्ड ४), 'प्रश्न और उत्तर: १९५६' (खण्ड ८)। श्रीमाताजीकी क्लासोंमें पूछे गये प्रश्नोंके ये उत्तर जीवन, ज्ञान और साधनाके हर स्तरको छूते हैं।

चौथी पुस्तक है "'विचार और सूत्र'के प्रसंगमें" (खण्ड १०) ये श्रीअरविन्दकी 'विचार और सूत्र' पुस्तकपर श्रीमांकी टिप्पणियां व उत्तर हैं।

पाठकोंकी सुविधाके लिये प्रत्येक पुस्तकमें विस्तृत अनुक्रमणिका छपी है। सुन्दर छपाई, आकर्षक साज-सज्जा और प्लास्टिक मंडित मजबूत बंधाईसे युक्त यह संग्रह संग्रहणीय है।

जो लोग एक साथ पूरा दाम नहीं दे सकते वे किस्तोंमें दाम भेज सकते हैं। यह संग्रह आप निम्न पतेसे मंगा सकते हैं—

शब्द (SABDA), श्रीअरविन्द आश्रम, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

अक्तूबर १९७६ वर्ष ७, अंक ३, पूर्णांक ७५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible]

सूची

[illegible] शताब्दीकी तैयारी
[illegible] स्त्रियों और पुरुषोंके बारेमें कुछ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] सुन्दर कहानियां — दाना
[illegible]
[illegible] प्रार्थनाएं
[illegible] कुछ वचन
[illegible]
[illegible]
[illegible] समाचार

[illegible] दिन : १७ नवंबर — श्रीमाताजीका शरीर-त्याग
२० नवंबर — श्रीमाताजीका शरीर समाधिस्थ किया [illegible]
२४ नवंबर — सिद्धि दिवसकी अर्द्धशताब्दी
५ दिसंबर — श्रीअरविन्दका शरीर-त्याग
९ दिसंबर — श्रीअरविन्दका शरीर समाधिस्थ किया [illegible]

[illegible] : ६.०० आजीवन [illegible]

पत्रव्यवहार और मनीऑर्डरके लिये पता :
[illegible] श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-[illegible]

[illegible]
[illegible] श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-[illegible]
[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शताब्दीकी तैयारी

१९७८ अब दूर नहीं है। माताजीकी जन्म शताब्दी हमारी ओर बढ़ती आ रही है। जो लोग सचमुच माताजीके भक्त हैं उन्होंने उसके लिये तैयारी शुरू कर दी होगी। जो उनकी देनसे लाभ उठाना चाहते हैं वे भी अपनी ओरसे प्रयास कर रहे होंगे।

लेकिन उनकी देन क्या है, यह कह सकना हममेंसे किसीके बसका काम नहीं है। उन्होंने जीवनके हर क्षेत्रमें, जीवनकी हर दिशामें बहुत कुछ दिया है। बस, आवश्यकता इस बातकी है कि हम उससे लाभ उठाना सीखें। माताजी और श्रीअरविंदका साहित्य इस दिशामें हमारी बहुत सहायता कर सकता है। इस शुभ अवसरपर हममेंसे हर एकका कर्तव्य है कि माताजी और श्री-अरविंदकी चीजें स्वयं पढ़ें और दूसरोंको पढ़नेके लिये प्रेरणा दें।

माताजीकी सभी पुस्तकोंका अनुवाद तैयार हो रहा है। 'पुरोधा' और 'अग्निशिखा' भी अपनी छोटी-छोटी अंजलियोंसे अर्घ्य देनेमें लगी हैं। देशकी वर्तमान राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थितिको दृष्टिमें रखते हुए हमने 'पुरोधा' का 'वन्दे मातरम् अंक' अगस्तमें निकाला था जिसके बारेमें हिंदीके यशस्वी लेखक श्री यशपाल जैन लिखते हैं :

"'पुरोधा' का विशेषांक परसों शामको मिला। उसके सीमित पृष्ठोंमें आपने सागर भर दिया है। आजके ज्वलंत प्रश्नों-पर विशेषांकमें संग्रहीत श्रीअरविंदके विचारोंसे बड़ा सुन्दर प्रकाश पड़ता है। सभी लेख पठनीय और प्रेरणादायक हैं। इतनी लोकोपयोगी सामग्रीका चयन करके पाठकोंको देनेके लिये कृपया मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिये।

"हिंदीमें गंभीर साहित्य पढ़नेकी वृत्ति अभी पैदा नहीं हुई है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही कारण है कि विचारपूर्ण सामग्री देनेवाले पत्र, पुस्तकोंकी भांति, व्यापक रूपसे नहीं पढ़े जाते और उनके ग्राहक बहुत ही थोड़े होते हैं। 'पुरोधा' और 'अग्निशिखा' इसके अपवाद नहीं हैं। 'जीवन साहित्य' भी उसी कोटिका है। ऐसे पत्रोंके ग्राहक बनते नहीं, बनाये जाते हैं। दुर्भाग्यसे आज प्रबुद्ध पाठकोंको ढूंढना और उनका सहयोग प्राप्त करना बड़ी टेढ़ी खीर है। फिर भी, हमें अपनी निष्ठाको डिगने नहीं देना है और अपने रास्तेपर मजबूतीसे चले चलना है।"

'अग्निशिखा' के 'नर-नारी अंक' आप देख ही चुके हैं। सुधी पाठकोंने पिछले वर्ष 'पुरोधा' और 'अग्निशिखा' के कहानी अंकोंको बहुत पसंद किया था। हम जनवरी ७७ में 'पुरोधा'का 'कहानी अंक' निकालनेकी सोच रहे हैं और संभवतः फरवरी-मार्चकी 'अग्निशिखा'में 'माताजीके मंत्रों' का अनुवाद होगा। शताब्दीसे पहले आपके हाथोंमें और भी कुछ विशेषांक पहुंचानेकी इच्छा है। आपकी ओरसे कुछ सुझाव हों तो उनका स्वागत होगा।

इसी बीच २४ नवम्बरका विशेष अवसर आ रहा है जब श्रीअरविंद और माताजीकी सिद्धिको पचास वर्ष पूरे हो जायंगे। इन पावन अवसरोंका पूरा लाभ उठाना जरूरी है।

इसके साथ-ही-साथ हम आपसे भी आशा करते हैं कि आप माताजी और श्रीअरविंदके साहित्यका अधिक-से-अधिक प्रसार करनेमें हमारी सहायता करेंगे। किस तरहसे? इसका निश्चय हम आपपर छोड़ते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द-वाणी :

स्त्रियों और पुरुषोंके बारेमें कुछ प्रश्न

१५.१.३५

क्या यह सच नहीं है कि स्त्रियां पुरुषोंकी अपेक्षा अधिक ग्रहण-शील और चैत्य होती हैं ?

श्रीअरविन्द : बकवास ! न अधिक ग्रहणशील और न अधिक वातोन्मत्त (हिस्टीरिया ग्रस्त)। मैं देखता हूं कि पुरुष इस चीजमें भी उनकी बराबरी कर सकते हैं। यह ठीक है कि वे ज्यादा आसानीसे भूख-हड़तालकी घोषणा कर देती हैं — अगर तुम भी गांधीकी तरह इसे उनके चैत्य (आत्म-शक्ति)का लक्षण मानो। लेकिन अब असहयोगने पुरुषोंसे उनकी यह हीनता भी हर ली है।

१९-१-३५

एक डॉक्टर लिखता है कि मध्यकालीन यूनान और रोममें स्त्रियोंको बहुत स्वाधीनता प्राप्त थी और उन्हें ज्यादा अच्छा प्रशि-क्षण मिलता था। फिर भी उन्होंने कोई विशिष्ट कार्य नहीं किया। उसके अपने पेशेमें यद्यपि सत्रहवीं शतीसे ही बोलोना, नेपल्स आदिके विख्यात विश्व-विद्यालयोंमें स्त्रियां प्राध्यापक तो रह चुकी हैं परंतु उन्होंने अपने विशेष विज्ञानको आगे बढ़ानेके लिये कुछ नहीं किया। चित्रकला, संगीत, साहित्य आदिके क्षेत्रमें रोजा बोनरके सिवा किसीने अपना स्थान नहीं बनाया और उसे भी दाढ़ी मुंडाकर पुरुषों जैसा वेश पहनना पड़ता था।

श्रीअरविन्द : यूनानमें 'हिटेरी' के सिवा सभी स्त्रियां घरकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांदियां हुआ करती थीं और उन्हें भी रिझानेकी शिक्षा दी जाती थी। रोममें नारीकी सबसे बड़ी प्रशंसा यह थी कि वह "घरपर रहकर ऊन कातती है।" केवल साम्राज्यके थोड़े-से समयमें वह कुछ ज्यादा स्वतंत्र रही थी लेकिन उसे पुरुषकी समानतामें तो कभी नहीं रखा गया। तुम्हारा चिकित्सक या तो ज्ञानशून्य था या फिर यूं ही बेपरकी उड़ा रहा था।

क्या तर्क है ! कुछ अपवादिक स्थितियोंसे युगोंके अभ्यासका विरोध। फिर शासन, सरकार, व्यापार, जिन चीजोंमें स्त्रियोंने अपने-आपको पुरुषोंके बराबर और उनसे ज्यादा निरंतर रूपसे योग्य सिद्ध किया है? क्या इन चीजोंके लिये दिमागकी जरूरत नहीं पड़ती? क्या कोई भी मूढ़ इन्हें कर सकता है?

निश्चय ही कोई इस बातसे इंकार नहीं कर सकता कि रोग और पीड़ाके समय उनका कोमल स्पर्श ही सुख देता है।

श्रीअरविन्द : इसका अर्थ है कि पुरुषोंने उनसे मुख्य रूपमें यही मांग की थी कि वे उनकी दासियां, उपचारिकाएं, रसोइया, बच्चे पैदा करनेवाली और उनकी देखभाल करनेवाली बनें, और उनकी काम-लिप्साको तुष्ट करें। उनके जीवनका यही धंधा और लक्ष्य रहा है और उनकी प्रकृतिने अपने-आपको इसके अनुकूल बना लिया है। उन्होंने इसके अतिरिक्त और जो कुछ प्राप्त किया है वह गौण है ... उनपर रखे गये जूएके बावजूद है। और फिर पुरुष बड़प्पनकी हंसी हंसकर कहता है कि यह सब नारी-प्रकृतिकी हीनताके कारण हुआ है, उसपर डाले गये भारके कारण नहीं।

स्त्री-पुरुषमें फर्क चाहे किसी कारण क्यों न हो पर इस बातसे इंकार नहीं किया जा सकता कि स्त्रियां प्रेमके लिये अपने-आपको ज्यादा पूर्ण रूपमें और ज्यादा सरलतासे मिटा सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्द : उन्हें युगोंसे इसके लिये प्रशिक्षित किया गया है -- इसीलिये अधीनता, अपने-आपको मिटाना, पुरुषोंकी दयापर निर्भर रहना ही उनके भाग्यमें रहा है — इसीने उन्हें यह सिखाया है। लेकिन इसने उनमें एक और प्रकारका अहं ला दिया है जो उनके लिये आध्यात्मिक मार्गका रोड़ा बनता है -- वह अहंकार जो रूठने और भूख-हड़ताल करनेके पीछे होता है।

क्या यह कहा जा सकता है कि चूंकि स्त्रियां मस्तिष्ककी अपेक्षा हृदयमें अधिक निवास करती हैं इसलिये उनका मार्ग ज्यादा सुगम है?

श्रीअरविन्द : ये सब सुस्पष्ट दृढ़ कथन केवल मानसिक कथन होते हैं और ये मानसिक कथन इतने अधिक सुस्पष्ट होते हैं कि सत्य नहीं हो सकते -- दर्शन और विज्ञानने यह खोज करना शुरू कर दिया है। जीवन और सत्ता इसके लिये बहुत ज्यादा जटिल है।

मैंने यहां देखा है कि कुछ स्त्रियां केवल अपने पतिके प्रेमके कारण ही अनंतकी खोजमें निकल पड़ीं। लेकिन जब पति संदेह और अवसादके शिकार होते हैं तब वे बड़े आरामसे, बड़े विश्वासके साथ भगवान्की गोदमें बैठी रहती हैं।

श्रीअरविन्द : हे भगवान्! कैसा सुखकर स्वप्न है!

ऐसा मालूम होता है कि योगमें स्त्रियोंको एक फायदा तो है ही। उनमें सेक्स इतना प्रबल नहीं होता जितना पुरुषोंमें।

श्रीअरविंद : कोई सार्वभौम नियम नहीं है। स्त्रियां भी पुरुष-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तरह या उससे भी बढ़कर कामुक हो सकती हैं। लेकिन काफी स्त्रियां ऐसी हैं जिन्हें सेक्स पसंद नहीं है परंतु ऐसे पुरुष बहुत कम हैं, लाखों-करोड़ोंमें शुकदेव एक ही हैं परंतु डिआना या पालास एथिनी बहुत हैं। कुमारी सचमुच एक नारीसुलभ धारणा है, पुरुष शाश्वत कौमार्यके विचारसे ही कतराते हैं। यदि पुरुष उनपर थोप न दें तो बहुत-सी स्त्रियोंके अंदर कामुकता जागेगी ही नहीं, लेकिन यह बात बहुत-से तो क्या, किसी पुरुषके बारेमें नहीं कही जा सकती। लेकिन चित्रका एक दूसरा पहलू भी है। शायद स्त्रियोंमें भौतिक सेक्सकी भावना पुरुषकी अपेक्षा कम होती है लेकिन प्राणिक सेक्स? अधिकृत होनेकी भावना आदि?

फिर रामकृष्ण हमेशा कामिनी-कांचनसे बचनेके लिये क्यों कहा करते थे? बुद्ध भी कम कठोर न थे।

श्रीअरविंद: यह एक पुराना तपोमय भाव है। यह पुरुषोंकी अत्यधिक कामुकतासे पैदा होता है। उन्हें स्त्रीमें नरकस्य द्वारम् दिखायी देता है क्योंकि यह द्वार स्वयं उनके अंदर पूरी तरह खुला पड़ा रहता है। लेकिन वे सारा दोष स्त्रियोंके सिर मढ़ना पसंद करते हैं।

(जन्नतसे आदमके निकाले जानेके बारेमें)

यह सेक्सके कारण नहीं, नारीकी नये अनुभवों और ज्ञानके लिये इच्छाके कारण हुआ था।

माताजी कहती हैं कि स्त्रियां प्राणिक और भौतिक चेतनामें पुरुषोंकी अपेक्षा ज्यादा बंधी हुई नहीं होतीं। इसके विपरीत चूंकि उनमें पुरुषोंका गर्वीला मानसिक आडंबर नहीं होता इसलिये उनके लिये अपनी चैत्य सत्ताको खोजना और उसके द्वारा मार्ग-दर्शन पाना ज्यादा आसान होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद : निस्संदेह, वे अपने चैत्य सत्यको ज्यादा आसानीसे खोज सकती हैं लेकिन यह काफी नहीं है, यह पहला कदम है। दूसरा कदम है चैत्यमें निवास करना, तीसरा है चैत्यको अपनी सारी सत्ता-का शासक बनाना। चौथा है मनके परे उठ जाना। पांचवां है उस परेकी चीजको निम्न प्रकृतिमें उतार लाना। मैं यह नहीं कहता कि यह सब हमेशा इसी क्रममें होता है, परंतु यह सब करना है जरूरी।

आप स्वीकार करेंगे कि पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियां अधिक अंतर्भास प्राप्त करती हैं?

श्रीअरविंद : हां, यह तो ठीक है परंतु वह हृदय या प्राणमय मनका अंतर्भास होता है, दिव्य अंतर्भास नहीं।

चूंकि वे प्राणमें निवास करती हैं अतः मेरा ख्याल है साधना-में उन्हें कठिनाइयां भी कम होती होंगी।

श्रीअरविंद : हर्गिज नहीं। प्राणमें निवास करनेसे चीजें ज्यादा सरल कैसे हो सकती हैं? योगमें प्राण ही कठिनाइयोंका स्रोत है। पुरुषोंकी कठिनाइयां शुद्ध रूपसे मानसिक नहीं होतीं। वहां भी प्राण ही होता है — हां, पुरुष भगवान्‌के स्पर्श या दबावसे प्राणकी रक्षा करनेके लिये बुद्धिको बुला लेते हैं। स्त्रियां इसी कामके लिये प्राणमय मनको बुलाती हैं।

'न'ने अपनी पुस्तकमें लिखा है: "नारीकी सारी सत्ता वह जिस चीजपर केंद्रित हो उसके साथ चिपट जाती है। पुरुषकी दृष्टि इतनी ज्यादा नहीं मिल पाती। निष्ठा नारीकी प्रकृति और उसका आदर्श है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद : यह इसपर निर्भर है कि वह किस भावके साथ केंद्रित है। एक चैत्य और आध्यात्मिक भाव होता है और दूसरा पुनरुद्धार-वंचित प्राणिक भाव। इस तरहका प्राण बहुत बड़ी कठिनाइयां उपस्थित करता है। प्रभुत्व प्राप्त करनेकी इच्छाका मतलब है प्रचंड प्राणमय अहंकार। प्रचंड अहंकार आध्यात्मिक जीवनमें कैसे सहायक हो सकता है?

मेरा ख्याल है कि अगर निष्ठाको उच्चतर और दिव्यतर चीजोंकी ओर बदला जा सके तो उसका रास्ता ज्यादा आसान हो सकता है।

श्रीअरविंद : यह निष्ठा है क्या? अगर स्त्री प्राणकी ओरसे हटकर आध्यात्मिक और चैत्यकी ओर लौटे (प्राण अपने-आपको उपलब्धिका एक यंत्र बना ले) तो तुम्हारी बात ठीक हो सकती है। पर सारी समस्या तो यही है।

प्राचीन कालसे ही मनु आदिने स्त्रियोंको अधीनस्थ स्थिति स्वीकार करना सिखाया। क्या इसका यह कारण है कि पुरुष ज्यादा कामुक है? शायद यह आरोप हमारे लिये कुछ ज्यादा ही कठोर होगा।

श्रीअरविंद : इसका कारण है पुरुषकी स्वामी बनने और स्त्रीको अपने अधीन रखनेकी वृत्ति -- हिटलर और मसोलिनी वृत्ति। सेक्स एक और उद्दीपक बन जाता है -- उससे ज्यादा कठोर नहीं है जितनेके तुम अधिकारी हो।

और फिर, कहा जाता है कि नारीके जीवन और उसकी चेतनाका केंन्द्र प्राणमें है जिसका स्वभाव ही जीवको धरतीकी ओर खींचना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद : स्त्रीका भौतिक या प्राणमें निवास इसका कारण नहीं है। पुरुषका प्राण और भौतिकमें निवास ही उसे अपने मार्गका रोड़ा पानेका कारण है। स्त्री भी उसे अपने मार्गमें बाधक पाती है और वह आसानीसे उसे 'नरकस्य द्वारम्' कह सकती है। यह कल्पना कि पुरुष स्त्रीकी अपेक्षा प्राणिक और भौतिकमें कम निवास करता है सच्ची नहीं है। वह प्राणिक और भौतिक उद्देश्योंके लिये बुद्धिका अधिक उपयोग करता है। बस इतना ही।

तो फिर क्या हम बुद्ध, रामकृष्ण आदिद्वारा बतायी गयी स्त्रियोंसे दूर रहनेकी बातको उचित ठहरा सकते हैं? आखिर, तत्त्वतः यहां भी क्या वही बात काम नहीं कर रही क्योंकि प्राणिक संबंध-पर तो प्रतिबंध है, फिर थोड़े-से शब्दोंके आदान-प्रदानके सिवा कुछ नहीं बच रहता?

श्रीअरविंद : तो फिर सच्चे (तथाकथित नहीं) चैत्य और आध्यात्मिक तौरपर सेक्सको भूल जानेके बारेमें क्या कहोगे? संबंधको सीमित रखना पड़ता है क्योंकि अन्यथा सेक्स हमेशा आगे टपक पड़ता है। तुम्हें ठीक तौरपर प्राणके ऊपर रहनेका नियंत्रण दिया जाता है। बुद्ध निर्वाणके पक्षमें थे, और यदि तुम निर्वाण-की तैयारीमें हो तो फिर किसीसे संबंध रखनेका लाभ ही क्या? रामकृष्णने उस कालमें अलग-थलग रहनेके लिये कहा है जब आदमी आध्यात्मिक दृष्टिसे कच्चा हो — जब वह पक जाय और सेक्सका दास न रहे तब मिलने-जुलनेपर उन्होंने कोई आपत्ति नहीं की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधक-साधिकाओंका संबंध

यहां साधक और साधिकामें केवल एक प्रकारके संबंधकी अनुमति दी जा सकती है और यह वही संबंध है जो साधक-साधक या साधिका-साधिकाके बीच होता है -- एक ही योगमार्गका अनुसरण करनेवाले, माताजीके बच्चोंके बीच मैत्रीका संबंध।

*

इसका मतलब है कि तुम एक-दूसरेके साथ साधकोंका संबंध रख सकते हो, सद्भावना और मैत्रीपूर्ण संबंध, लेकिन कोई विशेष प्राणिक प्रकारका संबंध नहीं। अगर कोई ऐसा व्यक्ति है जिससे तुम इस प्रकारके प्राणिक संबंधके उभरे बिना नहीं मिल सकते, तो उसके साथ न मिलना उचित होगा।

*

रही बात सब कुछ भगवान्‌की ओर मोड़ देनेकी, तो यह पूर्णताकी सलाह है और उन लोगोंके लिये है जो सामान लेकर नहीं चलना चाहते। वरना स्त्री-पुरुष या स्त्री-स्त्रीके बीच संबंधका निषेध नहीं है बशर्ते कि वह सच्ची चीज हो और उसमें सेक्स न आ जाय, और यह भी कि वह तुम्हें अपने मार्गसे भटका न दे। अगर केंद्रीय लक्ष्य मजबूत है तो वह काफी है...। जब मैंने व्यक्तिगत संबंधकी बात की तो निश्चय ही मेरा मतलब शुद्ध उदासीनता न था, क्योंकि उदासीनतासे कोई संबंध नहीं बनता। वह बिलकुल संबंधहीनताकी ओर ले जाती है। जरूरी नहीं है कि भावपूर्ण मैत्री बाधा ही हो।

(सेंटिनरी वोल्यूम २३, ८१६-१७)

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान रहे कि कानूनके अनुसार और कम-से-कम सिद्धांत-रूपमें, अन्य प्राचीन प्रजाओंके विपरीत, प्राचीन भारतमें नारियोंको नागरिक अधिकारोंसे वंचित नहीं रखा गया; यद्यपि व्यवहारमें यह समानता, कुछ अपवादोंको छोड़कर, पुरुषके प्रति सामाजिक अधीनता और घरेलू काम-काजके कारण नगण्य-सी हो गयी थी। फिर भी बचे हुए आलेखोंमें ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहां स्त्रियां केवल रानियां और प्रशासक ही नहीं थीं, उनका युद्ध-क्षेत्रमें होना भी भारतीय इतिहासमें सामान्य बात है, बल्कि मौर संस्थाओंमें चुने हुए प्रतिनिधियोंके रूपमें भी रही हैं।

(सेंटिनरी वोल्यूम १४, ३४८-४९)

ब्रह्मचर्य

अंतःस्थित शक्तिको बढ़ानेकी और उसे ऐसे उपयोगोंमें लानेकी जिनसे उसे धारण करनेवाले व्यक्तिको या मानवजातिको लाभ हो, पहली और सबसे आवश्यक शर्त है ब्रह्मचर्यका अभ्यास। मनुष्यकी सारी शक्तिका एक भौतिक आधार होता है। यूरोपीय जड़वादके द्वारा की गयी भूल यह है कि वह भौतिक आधारको ही सब कुछ मान लेता है और उसे शक्तिका मूलस्रोत समझनेकी गड़बड़ कर बैठता है। जीवन और प्राण-शक्तिका मूलस्रोत भौतिक नहीं, अपितु आध्यात्मिक है, किंतु जिस आधारशिला, नींवपर जीवन और शक्ति प्रतिष्ठित एवं क्रियाशील है, वह भौतिक है। प्राचीन हिंदू कारण और प्रतिष्ठा — सत्ताके ऊपरी और निचले छोरों — के बीचके भेदको स्पष्ट रूपसे समझते थे। पृथ्वी या स्थूल भौतिक तत्त्व प्रतिष्ठा है और कारण है ब्रह्म या आत्मा। भौतिक तत्त्वका आध्यात्मिक सत्तामें उत्कर्षण ही ब्रह्मचर्य है, क्योंकि दोनोंके सम्मिलनसे वह शक्ति जो एक (ब्रह्म या आत्मा) से निःसृत होकर दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(भौतिक तत्त्व) को उत्पन्न करती है, वृद्धिको प्राप्त होती और स्वयं-को चरितार्थ करती है।

यह ब्रह्मचर्यका तात्त्विक सिद्धांत है। इसका क्रियात्मक उपयोग निर्भर होता है शक्तिके मानव आधारकी भौतिक और मनोवैज्ञानिक रचनाके ठीक-ठीक ज्ञानपर। मूलभूत भौतिक इकाई है रेतस्, जिसमें कि मनुष्यके अंतःस्थित तेजस्, अर्थात्, ऊष्मा और प्रकाश और विद्युत-शक्ति अंतर्हित और छिपे पड़े हैं। सारी ऊर्जा रेतस्में निगूढ़ रूपसे विद्यमान है। यह शक्ति या तो स्थूल भौतिक रूपमें व्यय की जा सकती है या सुरक्षित रखी जा सकती है। समस्त मनोविकार, भोगेच्छा, कामना इस शक्तिको स्थूल रूपमें या एक उत्कृष्ट सूक्ष्मतर रूपमें शरीरसे बाहर फेंककर उसे नष्ट कर देती है। अनैतिक आचरण उसे स्थूल रूपमें बाहर फेंक देता है; अनैतिक विचार सूक्ष्म रूपमें। दोनोंमेंसे प्रत्येक दशामें शक्ति व्यर्थ नष्ट होती है, और अब्रह्मचर्य जैसे शारीरिक होता है वैसे ही मानसिक और वाचिक भी। इसके विपरीत समस्त आत्म-संयम रेतस्में निहित ऊर्जाकी रक्षा करता है और रक्षाके साथ सदा वृद्धि होती है। किंतु भौतिक शरीरकी आवश्यकताएं सीमित हैं और अतिरिक्त शक्ति-से अवश्य ही उसके एक संचित भंडारका निर्माण होगा जो भौतिक-के अतिरिक्त अन्य किसी उपयोगमें प्रयुक्त होना चाहिये। प्राचीन सिद्धांतके अनुसार रेतस् जल है जो प्रकाश और ऊष्मा और विद्युतसे, एक शब्दमें, तेजस्से परिपूर्ण है। रेतस्का विशेष संचय सर्वप्रथम ऊष्मा या तपस्में परिवर्तित होता है, जो सारे शरीरको प्रदीप्त करता है, और इसी कारण आत्म-संयम और तपस्याके सभी रूप तपस् या तपस्या कहलाते हैं क्योंकि वे ऊष्मा या उस प्रेरक शक्तिको उत्पन्न करते हैं जो शक्तिशाली कर्म और सिद्धिका मूलस्रोत है; द्वितीयतः वह वास्तविक तेजस्, अर्थात्, प्रकाशमें परिवर्तित होता है जो समस्त ज्ञानका मूल उद्गम रूप शक्ति है; तृतीयतः वह विद्युतमें रूपांतरित होता है जो सारे शक्तिशाली कर्मका आधार है, चाहे वह कर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बौद्धिक हो या शारीरिक। और फिर विद्युतमें निहित है ओजस् या प्राण-शक्ति जो आकाशसे उत्पन्न होनेवाली मूलभूत शक्ति है। रेतस् जलसे तपस्, तेजस् और विद्युतमें तथा विद्युतसे ओजस्में परिष्कृत होकर शरीरको शारीरिक बल, ऊर्जा और मस्तिष्क-शक्तिसे भर देता है और अपने अंतिम स्वरूप ओजस्के रूपमें ऊर्ध्वगामी होकर मस्तिष्कमें पहुंचता है तथा उसे उस मूल ऊर्जासे अनुप्राणित कर देता है जो जड़ तत्त्वका सबसे परिष्कृत रूप है तथा आत्माके सबसे अधिक निकट है। वह ओजस् ही है जो आध्यात्मिक शक्ति या वीर्यको उत्पन्न करता है, जिसके द्वारा मनुष्य आध्यात्मिक ज्ञान, आध्यात्मिक प्रेम और श्रद्धा, आध्यात्मिक बलको प्राप्त करता है। इसका निष्कर्ष यह है कि हम ब्रह्मचर्यके द्वारा तपस्, तेजस्, विद्युत और ओजस्के भंडारको जितना ही अधिक बढ़ा सकें, उतना ही अधिक हम स्वयंको शरीर, हृदय, मन और आत्माके कार्योंके लिये पूर्ण एवं विशुद्ध शक्तिसे भर देंगे।

मानव आत्मा-संबंधी यह दृष्टि ही वह समूचा ज्ञान नहीं था जिसपर प्राचीन हिंदुत्वने अपने शिक्षा-संबंधी अनुशासनको प्रतिष्ठित किया था। इसके अतिरिक्त, उसका यह भी मत था कि समस्त ज्ञान भीतर है और शिक्षाका कार्य उसे बाहरसे शनैः-शनैः मनके भीतर डालना नहीं वरन् जाग्रत् कर भीतरसे बाहर प्रकट करना है। मानव प्रकृतिकी रचना प्रकृतिके तीन तत्त्वों — सत्व, रजस् और तमस् — से हुई है; ये विश्वात्मक कर्मके बोध, क्रियाशीलता और निष्क्रियता-मूलक तत्त्व हैं, जो अपने असंख्य रूपोंमेंसे एकमें ज्ञान, इच्छा और अज्ञानके रूपमें प्रकट होते हैं। तमस् शारीरिक और मानसिक प्रकृति-की जड़ता या निष्क्रियता है जो अंतःस्थित ज्ञानको धूमिल कर देती है तथा अज्ञान, मानसिक जड़ता, मांद्य, विस्मृति, अध्ययनके प्रति अरुचि, वस्तुओंको समझने और उनके भेदको पहचाननेकी असमर्थताको जन्म देती है। रजस् एक अनियंत्रित क्रिया है जो तीव्र कामना, आसक्ति, पूर्वधारणा, मानसिक पक्षपात तथा मिथ्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारोंके द्वारा ज्ञानको आच्छादित कर देती है। सत्व एक प्रकाश है जो भीतर छिपे हुए ज्ञानको उद्घाटित करता और उसे उपरि-पृष्ठपर ले आता है, जहां निरीक्षण उसे ग्रहण कर सकता और स्मृति स्वयंमें अंकित कर सकती है। ज्ञानात्मक शक्तिकी रचना-संबंधी इस धारणाने — तमस्को हटाना, रजस्को संयमित करना और सत्वको जाग्रत् करना — इसे शिक्षककी मुख्य समस्या बना दिया। उसे विद्यार्थीको भीतरसे प्राप्त होनेवाले ज्ञानके प्रकाशके प्रति ग्रहणशील बननेके लिये प्रशिक्षित करना होता था। रजस्को संयत करनेका कार्य साधित किया जाता था एक कठोर नैतिक अनु-शासनके द्वारा, जो बौद्धिक स्वेच्छाचारिता और अहंकार तथा तीव्र मनोवेगोंके आवरणसे मुक्त, एक शांत, प्रसन्न, ग्रहणशील मानसिक स्थितिको उत्पन्न करता है, — यही था वह ब्रह्मचारीका प्रसिद्ध अनुशासन जो आर्य संस्कृति और आर्य नैतिकताका आधार था; और शिक्षाग्रहणकालमें जब कि शिष्यको मानवके द्वारा अबतक पहलेसे ही अधिकृत की जा चुकी सुनिश्चित ज्ञानकी राशि या यथार्थ विचार स्पष्ट किये और कंठस्थ कराये जाते थे, उस समय शिक्षकके प्रति कठोर मानसिक वशवर्तिताके द्वारा मिथ्या विचारोंके हस्तक्षेपको दूर करनेका प्रयत्न किया जाता था। तमस्के बहिष्कारका कार्य साधित किया जाता था नैतिक पवित्रताके अनुशासनके द्वारा, जो शिष्यकी मन-प्राण-शरीरात्मक प्रकृतिमें तेजस् और विद्युतकी शक्तिको जाग्रत् करता था और तपस्याकी शक्तिके द्वारा उसे मानसिक शक्ति और स्पष्ट ज्ञान एवं विचारको धारण करनेका अभ्यस्त बनाता था। ज्ञानको जाग्रत् करनेका कार्य पुनरावृत्ति, ध्यान और विचार-तर्ककी त्रिविध पद्धतिके द्वारा सक्रिय रूपसे साधित किया जाता था। आवृत्तिका प्रयोजन था मनके संस्कारग्राही भागको शब्द (अर्थात्, विचारोंको प्रकट करनेवाले शब्दों) से परिपूर्ण कर देना, ताकि अर्थका स्वतःएव भीतरसे उदय हो: कहनेकी आवश्यकता नहीं कि एक यंत्रवत् पुनरावृत्ति संभवतः वह परिणाम उत्पन्न नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती थी। होनी चाहिये वह प्रसन्न, अविचल ग्रहणशीलता और शब्द या वस्तुपर मनके चिंतनशील भागकी वह तल्लीनता जो प्राचीन भारतीयोंके अनुसार ध्यानका अर्थ था। किसी भाषाका अध्ययन करते हुए हम सबने यह अनुभव किया है कि एक ग्रंथको समझनेका कठोर प्रयत्न करते समय जो कठिनाइयां असमाधेय प्रतीत होती थीं वे पुस्तकको थोड़ी देरके लिये अपने मनसे दूर कर देनेपर बिना पुस्तक या अध्यापककी सहायताके ही अचानक विलीन हो जाती हैं और स्पष्ट बोधका उदय होता है। हममेंसे कइयोंने कुछ समयके विरामके पश्चात् किसी भाषा या विषयके अध्ययनको पुनः आरंभ करनेमें भी यह देखकर विचित्रताका अनुभव किया है कि हमने उसे आरंभ किया तबकी अपेक्षा अब हम उसे कहीं अधिक अच्छी तरह समझ लेते हैं, ऐसे शब्दोंका अर्थ जान लेते हैं जिनसे पहले कभी हमारा परिचय नहीं था और हम उन वाक्योंको भी समझ सकते हैं जो अध्ययन स्थगित करनेसे पूर्व हमारी बुद्धिको चकरा देते। इसका कारण यह है कि हमारे अंतःस्थित ज्ञाताका ध्यान उस विषयमें एकाग्र हो जाता है और वह विराम-कालमें उस विषयके संबंधमें ज्ञानके अंतःस्थित स्रोतसे ज्ञान प्राप्त करनेके प्रयत्नमें व्यस्त रहता है। यह अनुभव केवल उन्हीं लोगोंके लिये संभव होता है जिनकी प्रकृतिका सात्विक या प्रकाशात्मक तत्त्व बौद्धिक स्पष्टता और गंभीर अध्ययनके अभ्यासके द्वारा प्रबल रूपमें जाग्रत् हो चुका है अथवा सचेतन प्रयत्नपूर्वक या अनजाने ही समुचित रूपमें कार्य करनेके लिये प्रशिक्षित हो चुका है। सात्विक विकासकी सर्वोच्च पराकाष्ठा तब होती है जब हम प्रायः या सदा ही बाह्य साधनों — अध्यापक या पुस्तक, व्याकरण और शब्दकोष — के बिना काम चला सकते और किसी विषयको अधिकांशमें या पूर्णतः अपने भीतरसे ही सीख सकते हैं। किंतु यह योगाभ्यासके सफल अनुसरणके द्वारा केवल योगीके लिये ही संभव है।

('भारतीय मस्तिष्क'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाता

राजा रन्तिदेवने घर-बार छोड़ दिया और जंगलमें रहने लगे। उन्होंने अपना धन-धान्य गरीबोंमें बांट दिया था और जंगलमें सीधा-सादा जीवन बिता रहे थे। उनके पास अपने और अपने परिवारके लिये बस उतना ही था जितना जीवन निर्वाहके लिये जरूरी था।

एक बार अड़तालीस घंटेके उपवासके बाद उनके लिये दूध-भात पकाया गया। एक गरीब ब्राह्मण उनकी झोंपड़ीके दरवाजे पर आया और उनसे खाना मांगा। रन्तिदेवने आधा भात उसे दे दिया, उसके बाद ही एक शूद्र सहायताकी मांग करता हुआ आ पहुंचा और रन्तिदेवने बचे हुए भातमेंसे आधा उसे दे दिया।

अब एक कुत्तेका भौंकना सुनायी दिया। गरीब जानवर बहुत भूखा मालूम होता था। रन्तिदेवने बाकी भात उसे दे दिया। अंतमें राजाके दरवाजेपर सहायता मांगता हुआ एक चांडाल आ पहुंचा। रन्तिदेवने दूध और शक्कर उसे देकर अपने-आप उपवास किया।

अब आये चार देवता और उन्होंने कहा, "रन्तिदेव, तुमने हम चारोंको भोजन दिया था क्योंकि हम ही ब्राह्मण, शूद्र, कुत्ते और चांडालका रूप धारण करके आये थे। हम तुम्हारी प्रेमभरी भावनाकी सराहना करते हैं।"

इस तरह एक सद्हृदय सभी मनुष्योंके साथ, यहांतक कि पशुओंके साथ भी ऐसे व्यवहार करता है मानों वे सब एक ही परिवारके, एक ही मानवजातिके सदस्य हों।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या हमें हर रोज ऐसे लोग नहीं मिलते जो हमसे कम जानते हैं। बहुत बार हम उन्हें भोजन, वस्त्र, व्यायाम, व्यापार, और आमोद-प्रमोदके बारेमें उपयोगी बातें बता सकते हैं। जैसे भूखेको रोटी देना हमारा कर्तव्य होता है उसी तरह इन्हें ज्ञान देना भी हमारा कर्तव्य है। अज्ञानी अपने-आपको नुक्सान पहुंचाता है, वह अपने चारों ओरके लोगोंको भी नुकसान पहुंचाता है जैसे बुरे बंसी वालेने किया था। तुमने यह कहानी नहीं सुनी ?

एक ब्राह्मण किसी देहातमें गया। वहां एक पीपलके पेड़से आती आवाजने उसे चौंका दिया। उस आवाजने चार बार कहा, "इस तालाबमें मत नहाओ, संध्या वन्दन मत करो, खाना मत खाओ और यहांसे जाओ मत।"

ब्राह्मणने कहा, "तुम कौन हो जो मुझे ऐसे निर्दोष काम करनेसे मना कर रहे हो।" पीपलके पेड़से आवाज आयी, "मैं ब्रह्म राक्षस हूं। पिछले जन्ममें मैं ब्राह्मण था और संगीतके बारेमें सब कुछ जानता था। लेकिन मैं अपनी विद्या औरोंको देनेसे कतराता था। मैं अपना ज्ञान अपने अंदर छिपाये रहता था। इसीलिये मुझे ब्रह्म राक्षस बनना पड़ा और हर रोज मुझे एक आदमीको नाद स्वरम् बजाते हुए सुनना पड़ता है और मैं बता नहीं सकता कि वह कितनी बुरी तरह बजाता है। सचमुच भयंकर स्थिति होती है वह! कितनी इच्छा होती है कि बाहर निकलकर उसके हाथसे नाद् स्वरम् छीन लूं और उसे फूंक मारना और उंगलियां चलाना सिखाऊं! लेकिन वह संभव नहीं है और मुझे उससे भयंकर राग सुनने पड़ते हैं।

"यहां पूरी कहानी सुनानेका अवसर नहीं है। हां, एक उपाय निकल आया और तकलीफमेंसे छुट्टी हो गयी। लेकिन देखो, अपने आस-पासके लोगोंके बुरे काम, बुरे गान या बुरी कला से कितनी तकलीफ हो सकती है!"

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर कोई भूखा है तो उसे किस चीजसे मदद मिल सकती है? भोजनसे।

अगर कोई प्यासा है तो उसे कौन-सी चीज सहायता दे सकती है? पानी।

अगर कोई काम, कला या संगीतसे अनभिज्ञ है तो उसे किस चीजसे मदद मिल सकती है? ज्ञानसे।

भूखेको रोटी, प्यासेको पानी और अज्ञानीको ज्ञान देना अच्छा है।

पाण्डुके पांचों पुत्र, वीर पाण्डव एक ऐसे महलमें ठहराये गये जो पहली नजरमें आरामदेह और सुन्दर लगता था। लेकिन वह उनके शत्रु पुरोचनने बनवाया था। उसकी दीवारें, फर्श आदि लाखके बने थे। विचार यह था कि जब यह लोग सो रहे हों मकानमें आग दी जाय और उन पांचोंसे छुटकारा पाया जाय जिनसे वह घृणा करता था।

यह चालाकीभरी बात थी। उसने अपने बुरे उद्देश्यके लिये अपनी मकान बनानेकी कला और षड्यंत्र रचनेकी बुद्धिका उपयोग किया।

उस महलमें एक आदमी आया जो खान खोदनेमें होशियार (खनिक) था। उसने चुपके-से पांडवोंसे कहा, "आपके एक मित्रने मुझे भेजा है ताकि मैं आपकी सेवा कर सकूं। मैं एक खनिक हूं। राजकुमार, मैं जानता हूं कि आपका शत्रु, पुरोचन, आपको जलाकर (जिन्दा ही) भस्म कर देना चाहता है।"

तब सबसे बड़े भाई युधिष्ठरने कहा, "अपनी खोदनेकी विद्याका उपयोग करके एक ऐसी सुरंग बना दो, मित्र, जिसमेंसे होकर बाहर जाया जा सके। यहां दरवाजेपर चाहे संतरी लगे हों, पर तुम्हारी सुरंग हमें यहांसे सुरक्षित रूपसे बाहर कर दे।"

खनिकने लाक्षा गृहके बीचमें सुरंग खोदनी शुरू की। जब कभी पुरोचन मकान देखने आता तो वह सुरंगके मुंहको तख्तों और कालीनोंसे ढका पाता। इस तरह धोखेबाज आदमी धोखा खा गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिर उन पांचों राजकुमारोंको सूचना दी गयी कि सुरंग तैयार है और इस मकानसे जंगलके एक सुन्दर स्थानपर निकलती है।

एक रात राजकुमारोंने लाक्षा गृहमें आग लगा दी और अपनी मां कुन्तीको लेकर सुरंगमेंसे होकर निकल पड़े। रास्ता अंधेरा पर सुरक्षित था। जब बलवान् भीमने देखा कि उसके साथी काफी तेज नहीं चल पा रहे हैं तो उसने मांको कंधेपर बिठाया, दो भाइयोंको भुजाओंमें और दोको कमरपर लिया और हवाकी गतिसे दौड़ पड़ा। उसे रोकना असंभव था। वे सब जलकर मरनेसे बच गये।

पुरोचनकी दुष्टताको खनिककी बुद्धिने हरा दिया। खनिकने अपनी कलाका अपने लिये खजाने खोदनेमें उपयोग नहीं किया। उसने दूसरोंके लिये सुरंग खोदी। उसने अपने ज्ञानसे दूसरोंकी मदद की। उसने अपने विज्ञानमें हिस्सा बंटाया।

*

दुनियाके बड़े-से-बड़े आदमी भी अपने-आपमें सब कुछ नहीं जानते। हमें एक-दूसरेसे सीखना चाहिये, आदमीको आदमीसे, राष्ट्रको राष्ट्रसे, एक देशवालोंको दूसरे देशवालोंसे और हर मनुष्यको, हर जातिको जो वह जानता है वह चीज दूसरोंको सिखानेमें खुशी होनी चाहिये।

पश्चिमके लोगोंने पूरबवालोंको भौतिक विज्ञान, यांत्रिकी, अर्थशास्त्र आदि विद्याएं दीं ... पूरबवालोंने हमेशा पश्चिमको दर्शन, नीति आदिका ज्ञान दिया।

भारतने औरोंको चारों वेदोंका ज्ञान दिया, बुद्धकी वाणी और अपनी धार्मिक पुस्तकोंका ज्ञान दिया।

एक बच्चा भी ज्ञान दे सकता है। एक बच्चा दूसरे बच्चे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को क, ख, ग सिखा सकता है। एक बच्चा दूसरेको हल्के हिसाब सिखा सकता है, पूरब, पच्छिम, उत्तर, दखिनका परिचय दे सकता है। गांठ बांधना, कोई खेल खेलना या बीज बोना सिखा सकता है।

हम सब ही दाता बन सकते हैं। एक पवित्र पुस्तकमें कहा गया है, "लेनेकी अपेक्षा देना ज्यादा धन्य है।"

धम्मपद

अकोच्छि मं अबाध मं अजनि मं अहासि मे।
ये तं न उपनय्हन्ति वेरं तेसूपसम्मति ॥४॥

"मेरी निंदा की", "मुझे मारा", "मुझे हरा दिया", "मुझे लूट लिया"—जो लोग ऐसे विचार मनमें नहीं रखते उनका बैर शांत हो जाता है।

हमने उस दिन जो पढ़ा था उसीका यह परिपूरक अंश है। यहां प्रश्न केवल उन विचारोंका ही नहीं है जो घृणा उत्पन्न करते हैं। क्योंकि, ईर्ष्याके साथ-साथ, घृणा भी मानवी दुःखके अत्यंत व्यापक कारणोंमेंसे एक है।

परंतु घृणा कैसे न रखी जाय? एक विशाल और उदार हृदय ही वास्तवमें इसका सबसे अच्छा साधन है, परंतु इसे प्राप्त करना सबकी पहुंचके भीतर नहीं है। अपने विचारोंको संयमित करना संभवतः कहीं अधिक व्यवहार्य हो सकता है।

विचारोंको संयमित करना हमारी मानसिक साधनाका तीसरा पग है: एक बार जब हमारी चेतनाके ज्ञानी न्यायाधीशने उपयोगी और हानिकारकके विचारोंके बीच विभेद कर दिया तो हमारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंतरिक पहरेदार सामने आ जायगा और केवल स्वीकृत विचारोंको ही गुजरने देगा और बड़ी कड़ाईके साथ सभी अवांछनीय तत्त्वोंका प्रवेश निषिद्ध कर देगा।

खूब शानदार अदासे हमारा पहरेदार प्रत्येक बुरे विचारका प्रवेश बंद कर देगा और उसे यथासंभव अधिक-से-अधिक दूर धकेल देगा।

स्वीकार करने या अस्वीकार करनेकी इस क्रियाको ही हम विचारोंका संयम कहते हैं और आज रातके लिये हमारे ध्यानका यही विषय होगा।

२०-९-१९५७

कुछ प्रार्थनाएं

कभी-कभी, हे भगवान्! तू मेरी सत्तामें एक धधकता हुआ अग्निकुंड जला देता है, और उन मुहूर्तोंमें सब कुछ संभव प्रतीत होता है—अत्यंत चरम कोटिकी, अत्यंत उच्च कोटिकी तथा साथ ही अत्यंत गूढ़ और अत्यंत सामान्य कोटिकी सिद्धियां भी संभव लगती हैं।

उस प्रज्वलित अग्निकुंडके बिना मेरी सत्ता राखके एक ढेर जैसी बन जाती है। और, हे प्रभु, तू कभी-कदास ही इस अग्निकुंडको प्रज्वलित करता है। क्या इस दुर्बल यंत्रको तैयार करनेके लिये ऐसा होता है?

मन प्रश्न करता है; परंतु समग्र सत्ता संतुष्ट है और जो कुछ तू चाहता है उससे भिन्न कुछ नहीं चाहती।

परंतु वह तेरी सक्रिय उपस्थितिके बाहर अपने-आपको दीन-हीन और दयनीय, अरक्षित और मूल्यहीन अनुभव करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वह सदा उसी दिव्य उपस्थितिको पुकारती और उसीकी प्रतीक्षा करती है।

टोकियो, ९ दिसंबर, १९१६

*

हे परमोच्च प्रेम, हमारे जीवनके केंद्र, आश्चर्योंके आश्चर्य! मैंने आखिर तुझे फिरसे पा लिया है और मैं फिर नये सिरेसे तेरे अंदर निवास कर रही हूं, पर और समयोंकी अपेक्षा कितनी अधिक सामर्थ्य-के साथ, कितनी अधिक सचेतनताके साथ। अब मैं तुझे कितने अधिक अच्छे रूपमें जानती हूं, कितने अधिक अच्छे रूपमें मैं समझती हूं! प्रत्येक बार जब मैं तुझे फिरसे पाती हूं तो वह पाना तेरे साथ पहलेके संपर्ककी अपेक्षा अधिक सर्वांगीण, अधिक पूर्ण और अधिक निश्चित होता है।

हे अनिर्वचनीय सौंदर्यकी उपस्थिति, चरम मुक्तिके विचार, मोक्ष-की सर्वोच्च शक्ति! कितने उल्लासके साथ मेरी सत्ता तुझे अपने अंदर जीवंत अनुभव करती है! हे मेरी सत्ताके जीवन तथा समस्त जीवनोंके एकतम तत्व, समस्त विचारों, समस्त संकल्पों और समस्त चेतनाओंके अद्भुत रचयिता! भ्रम-भ्रांतिके इस जगत्को, इस दुःखदायी दुःस्वप्नको तूने अपनी दिव्य सद्वस्तु प्रदान की है और जड़तत्त्वके प्रत्येक अणु-परमाणुमें तेरी निरपेक्ष सत्ताकी कोई चीज विद्यमान है।

तू ही है, तू ही जीता है, तू ही चमकता है और तू ही राज्य करता है।

*

हे प्रभु! तेरे बिना, जीवन बस एक भयंकरता है। तेरी ज्योति, तेरी चेतना, तेरे सौंदर्य और तेरी शक्तिके बिना समस्त जीवनके बल एक अशुभ और कुत्सित प्रहसन है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे भगवान्! तेरा प्रेम इतना महान् है, इतना उदात्त और इतना पवित्र है कि हम उसे समझ नहीं सकते। वह विशाल, अनंत है; हमें प्रणत होकर उसे ग्रहण करना चाहिये, और तब तू उसे इतना मधुर बना देता है कि अत्यंत दुर्बल व्यक्ति, एक बालकतक तेरे पास पहुंच सकता है।

*

हे प्रभु! हम निष्ठाके साथ तेरी सेवा करनेके लिये अभीप्सा करते हैं।

*

हे भगवान्! हमें समस्त अज्ञानसे मुक्त कर;—हमें सच्ची श्रद्धा प्रदान कर।

*

हे प्रभु! मैं तेरी चेतनाकी प्यासी हूं, तेरे साथ सर्वांगीण एकत्व-की प्यासी हूं।

*

हे प्रभु! जो कुछ है, जो कुछ होगा उस सबकी गहराइयोंमें विराजमान है तेरी एकरस मुस्कान।

*

हे नाथ! तूने आज संध्या-समय मुझे यह परम ज्ञान प्रदान किया है:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम केवल इसलिये जीते हैं क्योंकि तू ऐसा चाहता है। हम केवल तभी मरें जब तू चाहे।

*

हे प्रभु ! वर दे कि नये वर्षका जन्म हमारी चेतनाके लिये एक नया जन्म हो।

अपने भूतकालको बहुत दूर पीछे छोड़कर हम एक ज्योतिर्मय भविष्यकी ओर दौड़ पड़ें।

हे नाथ ! वर्ष मर रहा है और हमारी कृतज्ञता तेरे संमुख नतमस्तक है।

हे प्रभु ! वर्ष पुनः जन्म ले रहा है और हमारी प्रार्थना तेरी ओर ऊपर उठ रही है।

वर दे कि यह, हमारे लिये भी, एक नवीन जीवनकी उषा हो।

माताजीके कुछ वचन

किसीने मुझसे पूछा, 'रूपांतरके काममें अपनी भूमिका पूरी करने में कौन ज्यादा धीमा है मनुष्य या भगवान् ?'

मैंने कहा, 'मनुष्यको लगता है कि भगवान् उसकी प्रार्थनाओंका उत्तर देनेमें बहुत ढील करते हैं।

'भगवान्को लगता है कि मनुष्य उनका प्रभाव ग्रहण करनेमें बहुत धीमा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'परंतु सत्य चेतनाके लिये सब कुछ वैसे ही चल रहा है जैसे चलना चाहिये।'

*

बिना थके काम करनेका सबसे अच्छा तरीका यह है कि चाहे जो भी काम हो उसे भगवान्‌को अर्पण करते चलो और तुम्हें जिस सहारेकी जरूरत है वह भगवान्‌से ही प्राप्त करो। क्योंकि भगवान्‌की शक्ति अक्षय है और उन्हें सचाईके साथ जो कुछ अर्पण किया जाता है वे हमेशा उसका उत्तर देते हैं।

और जब तुम अनुभव करोगे कि तुम्हारे अंदर और तुम्हारे द्वारा भगवान् ही की शक्तिने काम किया है तो तुम सचाईसे यह जान लोगे कि इसका श्रेय तुम्हें नहीं उनको है—और तब गर्व करनेका कोई कारण नहीं, रह जाता।

*

सच्ची शक्ति और सुरक्षा हृदयमें स्थित भगवान्‌की उपस्थितिसे आती हैं।

अगर तुम उनकी सत्ताको अपने अंदर हमेशा बनाये रखना चाहते हो तो सावधानीसे वाणी, आचरण और क्रियासे अभद्रताको दूर रखो। उच्छृंखलताको स्वाधीनता और दुराचारणको आजादी माननेकी भूल न करो। विचार पवित्र होने चाहिये और अभीप्सा तीव्र।

*

यहां जो कुछ किया जाय, पूर्ण सहयोगकी भावनाके साथ और अपनी दृष्टि एक ही लक्ष्यपर जमाकर किया जाय, वह है—भगवान्‌की सेवा।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम किसीके साथ प्रेम करनेकी जगह नहीं है। अगर तुम ऐसी बेहूदगीमें फंसना चाहते हो तो कहीं और जा सकते हो, यहां नहीं। यह या वह व्यक्ति तुम्हें आकर्षित नहीं करता। निम्न प्रकृतिमें स्थित शाश्वत नरको निम्न प्रकृतिमें स्थित शाश्वत नारी आकर्षित करती और मनमें एक भ्रम-सा पैदा कर देती है। यह प्रकाशहीन प्रकृतिकी शक्तियोंका अंधकारमय और अर्द्धचेतन बड़ा खेल है। जैसे ही व्यक्ति उसके तीव्र प्रचंड बगूलेसे छुटकारा पाता है वैसे वह तेजीसे यह जान पाता है कि सभी इच्छाएं, सभी आकर्षण गायब हो गये, केवल भगवान्‌के लिये तीव्र अभीप्सा बाकी है।

*

स्वयं मुझे इसका अनुभव है कि अपने हाथोंसे भौतिक कार्य करते समय भी पूरी तरह एकाग्र होकर भगवान्‌के साथ ऐक्य अनुभव किया जा सकता है लेकिन स्वभावतः इसके लिये कुछ अभ्यासकी जरूरत है और इसके लिये सबसे महत्त्वपूर्ण बात है बेकार बातचीतसे बचना। काम नहीं, व्यर्थकी बातचीत हमें भगवान्‌से दूर ले जाती है।

*

तुम्हारी जो भी आवश्यकताएं हों, उन्हें भगवान् ही पूरा कर सकते हैं। तुम्हारी जो भी कमजोरियां हों उन्हें भगवान् ही सह सकते और दूर कर सकते हैं। केवल वे ही तुम्हारी हर आवश्यकताको हर समय पूरा कर सकते हैं।

भगवान्‌को छोड़कर और कहीं सहारा मत खोजो, अपनी आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिये भगवान्‌के सिवाय किसी औरका मुंह न ताको, कभी नहीं, किसी चीजके लिये नहीं।

भगवान्‌के सिवाय और किसीसे सहारा, सहायता, सांत्वना पानेकी वृत्तिको मत पनपने दो। यह सुनिश्चित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान्के सिवाय किसी व्यक्ति या किसी चीजपर भरोसा मत करो। अगर तुम किसी और का सहारा लोगे तो सहारा टूट जायगा।

*

तमस् —

मुझे लगता है कि यह हमारे लिये बहुत लज्जाजनक है कि हम भागवत कृपाका इस प्रकार अपव्यय करते हैं और जो अनोखा विशेषाधिकार हमें प्राप्त है उसका दुरुपयोग करते हैं। किंतु, मां, हम ऐसा क्यों करते हैं? कारण, हममेंसे प्रत्येकने जीवनमें कम-से-कम किसी विशेष अवसरपर उस असीम वैभवका उपयोग किया है जो हमारी पहुंचके भीतर है, जो हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। तिसपर भी हममेंसे कितने कम लोग योगको गंभीरतासे लेते हैं। ऐसा क्यों?

इसका एकमात्र कारण है 'अचेतनता'।
वही सहज-स्वाभाविक तमस्।

२७-७-१९६६

*

क्या मानसिक उदासीनता और उत्कटताका अभाव एक प्रकारका मानसिक तमस् ही है?

साधारणतया तो इनका कारण मानसिक तमस् ही होता है, किंतु गहन साधनाके द्वारा व्यक्ति अपने अंदर इतनी स्थिरता और निरासक्ति और उसके फलस्वरूप इतनी समता ला सकता है कि उसके लिये भली-बुरी, सुखकर-असुखकर वस्तु कोई अर्थ ही नहीं रखती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किंतु इस अवस्थामें मानसिक क्रियाका स्थान एक उच्चतर अन्तः-स्फुरित क्रिया ले लेती है।

२५-५-१९६६

*

इस मानसिक आलस्य और तमस्‌से व्यक्ति कैसे मुक्त हो सकता है?

दृढ़ता और आग्रहपूर्वक इसके लिये इच्छा करनेसे। प्रतिदिन मनद्वारा अध्ययन, व्यवस्था और विकासका अभ्यास करनेसे।

इसके साथ-साथ एकाग्र होकर मानसिक नीरवताका अभ्यास भी करना चाहिये।

१-६-१९६६

तुम्हारा योगदान

अब याद नहीं कहां, पर कहीं पढ़ा जरूर था कि गुरु युधिष्ठरको और साथ ही सारे कौरवोंको और पांडवोंको धर्मका क, ख, ग सिखा रहे थे। पहला पाठ था, "सत्यं वद" और फिर आया होगा, "धर्मं चर।" उपनिषद्‌में एक छोटा-सा अध्याय इसीका है। हम-ने, आपने और धार्मिक पुटवाली शिक्षा पानवाले सभी लोगोंने पढ़ा होगा इसे। लेकिन युधिष्ठरका दूसरा नाम है हिमालय। उसके दिमागमें पहले पाठके दो शब्द ठीक तरह न बैठ रहे थे। "सत्यं वद," इसमें न जाने कौन-सी कठिनाई थी जो उसके दिमागमें न बैठ रही थी। गुरुने एक बार, दो बार, चार बार पूछा पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युधिष्ठरका उत्तर हमेशा "वह-का-वही रहा। "अभीतक याद नहीं हुआ।" सब साथी हंसी उड़ाते थे और गुरु खिन्न होते थे; आखिर नाराज होकर बोले, "आखिर इन दो शब्दोंमें ऐसी कौन-सी कठिन चीज है जिसे याद करनेमें इतना समय लग रहा है? तुम्हारे साथियोंको तो चुटकी बजाते याद हो गये थे ये।

युधिष्ठरने आंखें नीची कर लीं और पैरके अंगूठेसे जमीन कुरेदते हुए बोले, "भगवन्, क्षमा करें। आप जब-जब यह प्रश्न पूछते, हैं, मैं अपने दिन-रातके कामोंपर नजर डालता हूं और देखता हूं कि मैंने पूरी तरह सत्यका पालन किया है या नहीं अगर मुझे अपने सारे काममें, सारे व्यवहारमें कहीं भी असत्यकी छाया दिख जाती है तो मैं यही मानता हूं कि अभी पाठ तैयार नहीं हुआ है और मैं यही कह देता हूं। आपने ही कहा था जो सीखो उसे आचरणमें लानेकी कोशिश करो।"

गुरु झेंप गये। उनका सिर अपने शिष्यके आगे झुक गया। उन्होंने कहा, युधिष्ठर शिक्षाका सच्चा लाभ तो तुम ही उठा रहे हो।"

लेकिन आज यह कहानी क्यों याद आ रही है मुझे? इसका भी एक कारण है। शायद पिछले सप्ताहकी बात है। मेरी छोटी बहन किसी नाटकमें भाग ले रही थी और नाटक था सत्यके बारे-में। रातके आठ बज चुके थे और मेरी बहनको कहीं दूर जाना था। मेरी आदत है, दूसरोंकी बातें नहीं सुना करती, पर अचानक मेरे कानोंने सुना, कोई मेरी बहनसे कह रहा था, आ, "मेरी साइकिलपर पीछे बैठ जा, रास्तेमें कहीं कोई देखता नहीं, लेकिन अगर कोई पुलिसवाला पूछ ही बैठे तो कहना, 'मैं दससे कमकी हूं।' कानूनके अनुसार दससे कमके बच्चे पीछे बिठाये जा सकते हैं।"

मेरी बहन तैशमें आ गयी और बोली, "क्या इतनी जरा-सी चीजके लिये झूठ बोलूंगी?" आगे क्या हुआ मुझे नहीं मालूम। बहनका जबाब सुनना था कि मैं खुशीसे फूल उठी। "बहन हो तो ऐसी हो", मैंने अपने-आपसे कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांच-छः दिन ही बीते होंगे मैंने देखा मेरी वही बहन किसी और की साइकिलपर पीछे बैठनेके लिये तैयार हो रही थी। उसी समय उसकी एक साथिनने पूछा, "क्यों री तू दससे नीचे है क्या जो बड़े मजेसे पीछे बैठनेकी तैयारी कर रही है?" मेरी बहनने सिसकारते हुए मुंहपर उंगली रखी और आंखों ही-आंखों चुप रहने-का हुकुम दे डाला।

मैं पस्त हो गयी। उफ सुकुमार टहनियोंको टेढ़ा-मेढ़ा कर देना कितना आसान है! क्या यही है हमारी शिक्षा? मेरी बहनने भी "सत्यं वद", "धर्मम् चर"का पाठ बहुत बार पढ़ा होगा। किसी कविके शब्दोंमें — "लेकिन इस पढ़नेका आखिर माहसल?"

ऐसी बातें हमारे जीवनमें रोज-रोज घटा करती हैं। इनकी ओर किसीका ध्यान भी जाता है भला? लेकिन क्या शिक्षाके आधारमें ऐसी चीजोंका महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं है? मेरी बहनने एक पाठ पढ़ा था और सहज रूपसे उसके अनुसार चलना चाहती थी। पर किसी व्यावहार-कुशल, क्रियात्मक व्यक्तिने उसे भी 'व्यावहार' करना सिखा दिया। क्या परीक्षामें नकल, घूसखोरी, चोर बाजार और काला बाजार आदि राष्ट्रीय महामारियोंका जन्म इसी तरह नहीं होता? लेकिन कौन किसे समझाये? व्यवहार-कुशलताकी आंधीमें इस आदर्शवादके बौड़मपनकी बात सुनेगा कौन?

ऐसी बातोंसे ही कुण्ठा उत्पन्न होती है। ये चीजें ही हिम्मत-को तोड़ती और बदहवासीको पैदा करती हैं। आज सारी मानवजाति बदहवास होकर इधर-से-उधर मारो-मारी फिर रही है। किसीको अगला कदम नहीं सूझ रहा। ऊपरी प्रसन्नता आदमीके गालोंपर चांटे मारकर उन्हें लाल रखे हुए है। तो क्या मैं भी अपने-आपको इसी रौ में बह जाने दूं?

यही सोचते-सोचते मैं सो गयी। सोनेसे पहले जो विचार मुझे तंग कर रहे थे वे स्वप्नमें भी पीछे लगे रहे और मैं निराश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर रो पड़ी। उसी समय एक मधुर पर दृढ़ताभरी आवाज कानोंमें आयी: "निराश न हो, मनको बुरी बातोंपर केंद्रित न करो। इस घने अंधेरेको भेदकर आनेवाले शुभ विहानकी ओर देखो। उसका आना निश्चित है। औरोंकी त्रुटियोंपर चिंतित होनेकी जगह अपने-आपको पूरी तरह मेरे हवाले कर दो। संसारकी भलाईके लिये तुम्हारा सबसे बड़ा योगदान यही होगा।"

सांत्वना

मेरे कदमोंकी आहट सुनकर वे दबी सिसकियां एकाएक थम गईं, और जब उसने मेरी ओर ताका तो उसके नयनोंसे गंगा-जमना का बहना तो बंद हो चुका था लेकिन अभी शबनमकी भांति झिल-मिलाते हुए कुछ आंसू बचे थे। एक हल्की-सी लालिमा रह-रहकर यह बता रही थी कि चाहे रुदन थम गया हो पर हृदयमें वेदना-की, दुःखकी टीस बाकी थी।

वह बच्ची मुश्किलसे दस सालकी होगी। ऐसी मासूम और कच्ची आयुमें उसपर ऐसी कौन-सी मुसीबत आ पड़ी थी कि इस तरह संसारसे दूर, अलग बैठी आठ-आठ आंसू रो रही थी?

दस सालके बच्चे तो खुशीसे उछलते-कूदते रहते हैं। उनकी आंखोंमें आशाकी, उत्सुकताकी चमक होती है। उनके ओंठोंपर सुमधुर मुस्कान लहराया करती है। बुद्धिकी विकृतिसे मुक्त, संसारकी कठिनाइयोंसे बेखबर, वे अपनी ही न्यारी दुनियामें रहते हैं, एक ऐसी दुनियामें जहां प्रकाश, आनंद और सरलताके सिवाय कुछ नहीं होता।

लेकिन इस बालिकाको देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि न जाने किन कारणोंसे वह इस सुखसे वंचित रह गई थी। कौन जाने!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद दारिद्रय ही उन कारणोंमेंसे एक हो। शायद उसीने इस बच्चीको संसारके उस भयंकर पहलूके सामने लाकर खड़ा कर दिया हो, इतना ही नहीं, उसके शैशवको भी बुझा दिया हो।

उसके कपड़े मट-मैले और फटे-पुराने थे। शायद एक दिन वे नये और सुन्दर रहे होंगे लेकिन आज तो उन्हें देखनेसे रोना आ रहा था। उसके बाल थे घुंघराले और काले-काले, 'मेचक कुंचित केश' रहे होंगे, लेकिन अब तो ऐसा लग रहा था कि कई दिनोंसे उन्होंने न कंघी देखी थी, न पानीका शीतल स्पर्श पाया था।

लेकिन उसकी शकल सचमुच सुन्दर थी। विशाल ललाट, भौहोंकी कमानोंके नीचे एक छोटी-सी सीधी नाक, और एक लाल अध-खिले पुष्पके समान ओंठ। आंखें बड़ी-बड़ी और काली जिनमें दुःखके अश्रु टिमटिमा रहे थे। गाल मैले थे लेकिन जहां आंसुओंकी धारा बही थी वहां दो साफ-सुथरी लकीरें नजर आ रही थीं।.... जरूर उसकी मांने उसे पीटा होगा। या फिर बच्चोंने खूब तंग किया हो... हो सकता है उसके मां-बाप संसारसे गुजर चुके हों और यह बेचारी अकेली रह गई हो — एक असहाय और मासूम बच्ची। था ही कौन उसके जीवनमें जो उसे दुःखमें सांत्वना दे सकता, सुखमें उसके साथ हंस सकता, खुले हरीतिमासे रंगे मैदानोंमें उसके साथ खेल सकता? — शायद कोई नहीं।

भावातिरेकेसे मेरा हृदय ऊभ-चूभ हो रहा था। क्या मैं उसे, एक अजनबीको, सांत्वना दे सकती थी?

सहसा मेरी दृष्टि मेरे हाथोंपर पड़ी। मेरे पास एक छोटासा लाल फूल था जिसे मैंने यूं ही टहलते-टहलते रास्तेके किसी पौधेसे तोड़ लिया था। मैं आगे बढ़ी और उसकी हथैलीपर फूल रख दिया।

पहले तो वह कुछ घबराई, फिर हैरान-सी हुई, लेकिन अगले ही क्षण ज्यों ही उसकी नजर फूलपर पड़ी, झिलमिलाते हुए आंसुओंमेंसे एक मुस्कान नाच उठी मानों वर्षाके बाद सूर्यकी पहली सुनहरी किरण कदम बढ़ा रही हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर अचानक वह खड़ी हुई और बिना एक शब्द बोले, फूल-को हाथमें दबाए भाग गयी।....

उसके जानेके बहुत देर बाद भी मैं वहीं खड़ी देखती रही, चुपचाप देखती रही। कोई था तो नहीं वहां, सड़क सुनसान थी। सूर्यास्त हो चला था। फिर भी मुझे एक बच्चीकी सुन्दर शकल दिखायी दे रही थी जिसके नयनोंमें आंसू झिलमिला रहे थे और आंसुओंकी गहराइयोंमें आनंदकी मुस्कान नाच रही थी।....

—कनिष्ठा

सोसायटी समाचार

१५ अगस्तको श्रीअरविन्दका एक सौ चौथा जन्मदिन मनाया गया। आश्रममें, सुबह श्रीअरविन्द कक्षके दर्शन, और समाधिके चारों ओर सामूहिक ध्यानकी व्यवस्था की गयी थी। शामको क्रीड़ांगणमें शारीरिक शिक्षाके सभी सदस्योंने सलामी दी। पिछली रातको श्रीअरविन्दके जीवन, आश्रम और शिक्षा केंद्रके बारेमें वृत्त-चित्र दिखाए गये। अगले दिन माताजीके रंगीन चित्र दिखाए गये।

आकाशवाणी कलकत्ताके श्री निशीथ साधु और श्रीमती अंजना चैटर्जीने हिन्दी भजन और बंगाली गीत सुनाए। १८ अगस्तको नृत्य कक्षाके विद्यार्थियोंने रामायण, एक नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की। १० अगस्तको 'बैले' के विद्यार्थियोंने भी एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया था।

हर बारकी तरह इस बार भी दर्शनके उपलक्ष्यमें कढ़ाई, बाटिक, बच्चोंके चित्रों इत्यादिकी बहुत सारी प्रदर्शनियां हुईं। १५ अगस्तसे एक सप्ताहतक फोटुओंकी भी प्रदर्शनी रही।

आंध्र प्रदेशके सदस्योंने सोसायटीके 'बीच ओफिस' में दो दिन सभा की।

नागपुरमें, श्रीअरविन्दका जन्मदिन मनानेके लिये 'श्रीअरविन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्कल' ने १५ दिनके कार्यक्रमकी व्यवस्था की। रोज श्रीअरविन्दकी रचनाओंसे कुछ पढ़ा जाता और फिर ध्यान होता। इन्हीं दिनों प्रो. आर. गोपालन, डा. एल. जी. चिकौलकर, प्रो. श्रीमती नीला जोशी राव और प्रो. रवीन्द्र श्रीवास्तवके अंग्रेजी, हिन्दी, मराठीमें भाषण हुए।

श्रीमती सरला शा तथा श्री सुमति चंद्र शाने अपने बंगलेपर भक्तोंके लिये 'श्रीमां-मंदिर और श्रीअरविन्द साधना केंद्र' की स्थापना की।

संगीत अमीन और पवित्र अमीनने १५ अगस्तको नेपियन सी रोड केंद्रमें श्रीअरविन्दके पुस्तक-पाठ और सामूहिक ध्यानसे पहले पियानो बजाया।

अहमदाबादमें पांच दिनके लिये श्रीअरविन्दकी 'सावित्री' तथा 'वेद-रहस्य' पर श्री शिवकुमार पालियाके प्रतीकात्मक चित्रोंकी प्रदर्शनी हुई।

अमरावती शाखामें श्रीअरविन्दके जन्मदिनके उपलक्ष्यमें पहले ध्यान हुआ, फिर श्री सीतारामबाबाने उनकी मूर्तिको अनावृत किया। शामको प्रो. घोषके यहां "श्रीअरविन्द अध्ययन केंद्र" का उद्घाटन हुआ।

त्रिपुरामें, श्रीअरविन्द सोसायटी शाखाने एक सरकारी शिक्षा केंद्रमें १५ अगस्तको एक सार्वजनिक कार्यक्रमकी व्यवस्था की।

निम्बाहेरा, जिला चित्तौड़गढ़में एक सार्वजनिक सभा हुई।

मुजफ्फरनगरमें श्री बालकृष्ण गुप्तने श्रीअरविन्दके बारेमें माताजीके दिये हुए संदेश पढ़े।

श्रीलंकाकी श्रीअरविन्द सोसायटीके सदस्योंने उस दिन ध्यान किया। उसके बाद माताजीकी पुस्तक 'प्रार्थनाएं और ध्यान'मेंसे कुछ पढ़ा गया। आश्रम और ओरोवीलके रंगीन चित्र दिखाए गए। श्रीलंका रेडियोने श्रीअरविन्दके बारेमें श्री ई. रत्नम्‌का तमिलमें भाषण प्रसारित किया।

सिल्लीगुड़ी, जिला दार्जिलिंगमें श्रीअरविन्द पाठमंदिरने सुबह दससे साढ़े दस बजेतक ध्यान और शामको सार्वजनिक सभाकी व्यवस्था की।

(शेष आवरण ४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Beauty, you are my way to the Divine.

(White Roses) The Mother

Inland Carriers (Bombay)

For Safe, Speedy & Efficient Movement of Cargo

Head Office :

Takhatmal Estate, P. O. Box No. 12, AMRAVATI

Branches :

112, Sarang Street, BOMBAY-3, Phone : 327710

Bhistiwad, AHMEDABAD, Phone : 34098

Daily parcel Service to & from

Bombay, Ahmedabad, Baroda, Poona, Sholapur, Ichalkaranji, Bangalore, Nagpur, Amravati, Raipur & Malegaon (Dist. Nasik)

THE CARRIERS WITH A DIFFERENCE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

★

INDIAN TEA
STORAGE AGENCY

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीराम

नवीन उपकरण -
श्रीराम पी॰वी॰सी॰

श्रीराम केमिकल्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
No. R. N. 18135/70.
REGD. No. M. 8731

चिटागौंगमें भी सुबह ध्यान हुआ और शामको भाषण। इस सुअवसरके उपलक्ष्यमें माताजी और श्रीअरविन्दके लेखोंसे समृद्ध एक स्मारिका निकाली गयी।

महासुआ, जिला रीवा (म. प्र.) के 'मां मंदिर' में एक हफ्तेका कार्यक्रम चलता रहा। १४ अगस्तको श्रमदान — निःस्वार्थ भावसे, अर्पणके रूपमें काम — किया गया। १५ अगस्तको सामूहिक ध्यान, भजन इत्यादि हुए। डा. के. एन. वर्माने श्रीअरविन्दके प्रकाशमें सामूहिक जीवनपर वार्ता दी। बादके दिनोंमें नारी कक्ष, युवक कक्ष और विद्यार्थी कक्षकी भी बैठकें हुईं। विषय था "हमारा उद्देश्य और हमारा प्रयास"।

बैनकूवर (कैनडा) में एक श्रीअरविन्द सर्कल है जहां हर मंगलवारको उसके सदस्य मिलते हैं और माताजी तथा श्रीअरविन्दकी रचनाओंका अध्ययन करते हैं।

नए प्रकाशन

१) लाइफ हैज अ पर्पस — मूल्य २.००

२) इवोल्यूशन ऐण्ड दि अर्थली डेस्टिनी — लेखक : श्री नलिनी कांत गुप्त; मूल्य : १५.००

३) द डेस्टिनी ऑफ द बाडी — लेखक : श्री जुगल किशोर मुखर्जी; मूल्य : २५.००

तीनों पुस्तकें 'शब्द' पांडिचेरी-६०५००२ से प्राप्त की जा सकती हैं।

सोसायटीके जो सदस्य 'आल इंडिया मेगेजिन' या 'अग्निशिखा' के स्थानपर मराठी 'अभीप्सा' लेना चाहें वे अध्यक्ष, श्रीअरविन्द सोसायटी पांडिचेरी-६०५००२ से पत्र व्यवहार करें। पत्रमें अपना सदस्यता क्रमांक जरूर दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

27/11/76
पुस्तकालय गुरुकुल काँगड़ी

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

नवंबर १९७६

वर्ष ७, अंक ४, पूर्णांक ७६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका)

सूची

वह प्रत्याशित १
श्रीअरविंदवाणी : योगमें सहायता ३
भारतवासी क्या करें? ५
माताजीके वचन :
भागवत प्रेम ७
कुछ धर्मके बारेमें ८
कामके बारेमें १२
माताजीसे बातचीत (अतिमानस कार्यका परिणाम आदि) १४
सुन्दर कहानियां : नम्रता २०
धम्मपद २६
पारस २७
सोसायटी समाचार २८

माताजीकी शताब्दी आ रही है। आप तैयारी कर रहे हैं न? श्रीमातृवाणी (माताजीकी सभी कृतियां १५ खंडमें) छप रही है, न्यौछावर ३००.००। किस्तोंमें भी दे सकते हैं।

वार्षिक चंदा : ६.०० आजीवन : १००.००

पत्रव्यवहार और धनादेशके लिये पता :
संपादक, पुरोधा एवं अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह प्रत्याशित

(यह लेख श्रीमाताजीने जापानमें लिखा था)

दो हजार वर्ष बीत चुके, नहीं, पांच हजार भी बीत गये...
(क्या कभी धरतीसे इससे गहरी आह भी निकली है?)

सारी मानवजाति अपने मुक्तिदाताको पुकार रही है। भिन्न-भिन्न नामोंसे, सभी प्रजाएं उसकी प्रतीक्षा कर रही हैं। जन-समूह उसकी आशा लगाये हैं। जीनेवाला, सोचनेवाला, प्रेम करनेवाला और कष्ट सहनेवाला, हर एक उसीके लिये अभीप्सा कर रहा है।

सबसे पुरातन संस्थाओं और धारणाओंमें, एक-एक वस्तुके वक्षःस्थलमें नूतन आत्मा जाग रही है।

सभी अंधेरी जड़ोंसे, सभी मुरदा दीखनेवाले तनोंसे, लंबी सर्दियोंके बाद, रस ऊपरको उठ रहा है। उस सबमेंसे जो सड़ कर गिर चुका था एक अंकुर फूट रहा है। ऐसा लगता है मानों स्वयं कब्रें ही पालने बन जाना चाहती हैं।

दो हजार साल बीत चुके हैं और पांच हजार भी बीत गये...

उनके पहले अनेक आये; अग्रदूतोंने उनकी घोषणा की; वे अपने ही अग्रसरोंसे घिरे हुए हैं। वह जिन्हें आना था, आ गये हैं।

फिर एक बार वैश्व श्रेणीका अज्ञात दिव्य सेवक मनुष्योंके बीचमें है।

प्रेमके किन बंधनोंके कारण, गहरे सामंजस्यके किस नातेसे धरतीकी परम सेवाका यह मुहूर्त्त उसके लिये, धरतीकी परम

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकताके मुहूर्तके साथ आता है ? क्या मनुष्यकी पुकार उसका आवाहन करती है या उसके पुनरागमनके विचारसे ही मनुष्यकी पुकार स्वतः फूट निकलती है ?

बचकाने प्रश्न हैं ये। क्योंकि दूर हो या नजदीक, वह मनुष्य है और मनुष्य ही बना रहता है। चाहे पार्थिव हो या अपार्थिव, उसका आवास उन आवासोंके साथ एक है जिनमें मानव-जातिके विचार बसते हैं।

तो हम किन चिह्नोंसे यह जान सकते हैं कि वह धरतीपर है ?

जिनकी आंखें मुंदी रहती हैं उन्हें कोई भी चिह्न प्रकाश नहीं दे सकता। लेकिन जिनकी दृष्टि स्पष्ट है और निर्मल है, उनके लिये अंधेरा ही वह चिह्न बन जाता है। क्या वे नहीं जानते कि पौ फटनेसे पहले रात ज्यादा अंधेरी हो जाती है ?

फिर भी हम सभीको पहचाननेका एक साधन देंगे।

जब सब कुछ हिलने लगे, कांपने लगे, जब जन समूहोंकी नस-नसमें एक तीव्र स्पंदन दौड़ पड़े और सिंहासनोंको जोखिममें डाल दे, सदियोंसे गाढ़ निद्रामें विलीन व्यक्तियोंको जगा दे, जब अचल चलने लगे, जब सबसे गर्वोन्नत और सबसे ठोस इमारतें भी अपनी नींव-पर डगमगाने लगें, और सर्वनाशकी आशंका फैल जाय, क्योंकि एक एक वस्तुका आधार खिसकने लगा है, तभी उस व्यक्तिका आगमन पहचाना जा सकता है जिसके अतिमानवीय कदमोंसे धरा सिहर उठती है।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

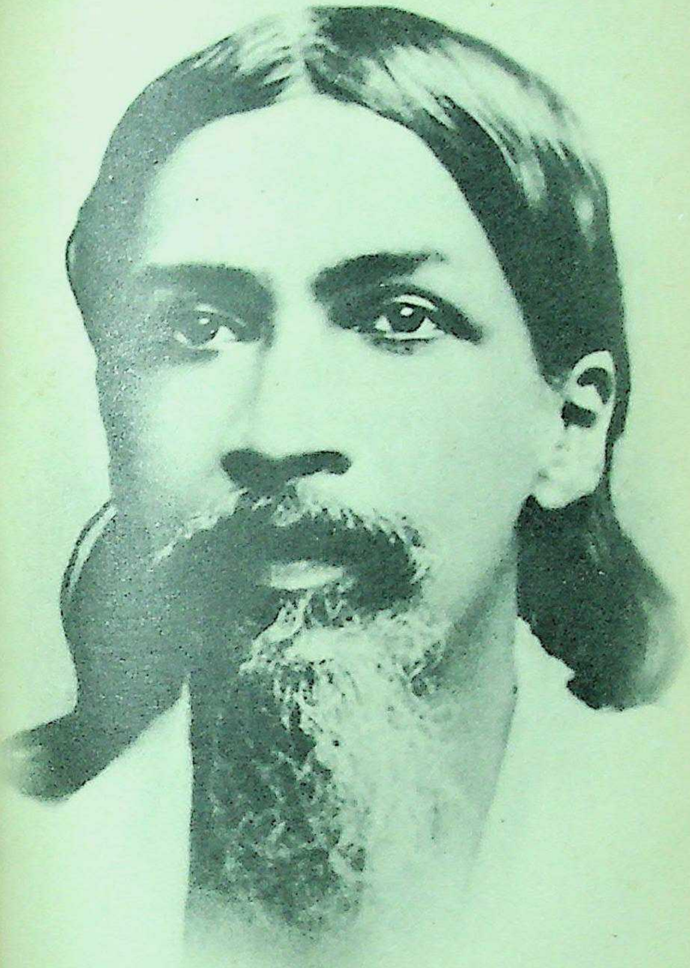

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगमें सहायता

अनिवार्य शर्त — एक अनिवार्य शर्त्त है: दिलकी सचाई।

अभीप्सा — हां, रास्ता यही है। अभीप्सा तीव्र हो तो अनुभूतियोंमें तीव्रता आती है और बार-बार तीव्र अनुभूतियां आती रहें तो परिवर्तन आता है।

★

सच्ची अभीप्सा चैत्य पुरुषसे आती है। अगर प्राण शुद्ध हो जाय और चैत्यके अधीन हो तो वह इसे तीव्रता देता है। लेकिन अगर प्राण शुद्ध न हो तो वह अभीप्सामें एक राजसिक तीव्रता ले आता है जिसके साथ-साथ आती हैं उदासी और निराशा। शांति और समता जरूरी हैं और ये मनके द्वारा ऊपरसे आती हैं।

★

धीरज खोना, बेचैन और अशांत रहना — ये प्राणकी चीजें हैं और प्राण इन्हें अभीप्सामें भी ले आता है। अभीप्सा तीव्र, शांत और प्रबल होनी चाहिये (सच्चे प्राणके भी यही लक्षण हैं), बेचैन और व्यग्र नहीं। तभी वह स्थिर हो सकती है।

★

शांत अभीप्सा :

बेचैनीभरी प्राणिक गतियोंको पोसनेसे काम न चलेगा। इसके द्वारा तुम माताजीसे ऐक्य नहीं पा सकते। तुम्हें शांतिके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभीप्सा करनी चाहिये — ढंगसे खाओ, सोओ और अपना काम करो। अभी तुम्हें केवल शांतिके लिये ही मांग करनी चाहिये। सच्ची प्रगति और उपलब्धि शांतिके आधारपर ही आ सकती है। माताजीके प्रति अभीप्सा करते हुए तुम्हारे अंदर कोई प्राणिक उत्तेजना न होनी चाहिये।

★

आंतरिक उपलब्धि और रूपांतर :

तुम्हें आसन-प्राणायाम करनेकी जरूरत नहीं है। आवेगसे जलनेकी जरूरत नहीं है। जरूरत है धीरजके साथ एकाग्र होनेकी शक्ति प्राप्त करनेकी, जरूरत है दृढ़ अभीप्साकी ताकि तुम जिस नीरवताकी बात कर रहे हो वह तुम्हारे हृदयमें स्थिर हो जाय और सब जगह फैले। तब भौतिक मन और अवचेतना शुद्ध और शांत की जा सकती है।

★

अभीप्सा, परिवर्तन :

जो लोग यहां आते हैं उनमें अभीप्सा और कुछ संभावना होती है। उनकी चैत्य सत्तामें कुछ चीज उन्हें धकेलती है और अगर वे उसके अनुसार चलें तो किसी परिणामपर पहुंच सकते हैं पर यह परिवर्तन नहीं है। परिवर्तन है सत्ताका निचली चीजोंसे हटकर भगवान्‌की ओर मुड़ना।

अभीप्सा तुम्हें परिवर्तनकी ओर ले जा सकती है लेकिन अभीप्सा और परिवर्तन एक नहीं हैं।

माताजीने तीन अलग-अलग चीजोंकी बात कही थीं : परिवर्तन, अंतरात्माका निश्चित रूपसे भगवान्‌की ओर मुड़ना; भगवान्‌की आंतरिक उपलब्धि और प्रकृतिका रूपांतर। पहली दो चीजें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक और तेजीसे हो सकती हैं और एक बार, अंतिम रूपमें हो सकती हैं और तीसरीमें हमेशा समय लगता है। उसे कभी एक पलमें, झटकेके साथ नही किया जा सकता। आदमी रूपांतरकी इस या उस क्रियामें तुरंत परिवर्तन नहीं अनुभव कर सकता है लेकिन यह भी लंबे कालसे चली आ रही क्रियाका तेज परिणाम होगा।

श्रीअरविंदने कहा था :

भारतवासी क्या करें?

यदि भारतको जीवित रहना है और संसारमें अपना निश्चित काम पूरा करना है तो पहली आवश्यकता यह है कि भारतके युवकोंको सोचना सीखना चाहिये। सब प्रकारके विषयोंपर स्व-तंत्र और सफल रूपसे सोचना और वस्तुओंके हार्दतक पहुंचना सीखना चाहिये। उन्हें बाहरी रूपसे ही संतुष्ट न हो जाना चाहिये और न ही पूर्वाग्रहोंसे कुंठित होना चाहिये। पूर्वाग्रहों और रूढ़िवादियोंको भीमकी गदासे चूर-चूर कर देना होगा। हमारे मस्तिष्क यूरोपीय बच्चोंकी तरह बहुत सारे कपड़ोंमें लिपटे न रहें। भारतमें कुशाग्र बुद्धि केवल तीक्ष्ण ही नहीं विशाल भी होती है। आज भी हम उसे जगा सकते हैं, यदि हम उसकी शक्तिको पहचान जायं और उसके सच्चे मूल्यको आंक सकें।

यदि हमारी बुद्धि पुरानी बेड़ियोंको पूरी तरह नहीं काट सकती तो वह ऊखलसे बंधे श्रीकृष्णकी तरह ऊखलको घसीटकर प्राचीन पूर्वाग्रहों और आधुनिक अंधविश्वासोंके नलकूवरका उद्धार कर सकती है। पुराने बंधे हुए फुंहारे टूट चुके हैं और हम बहुत बड़ी क्रांतिके सागरमें डूबते-उतराते जा रहे हैं। भूतकालके बरफके तोदोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़नेसे कोई लाभ नहीं क्योंकि वे शीघ्र ही पिघल जायंगे और तुम्हें भयंकर जलमें हाथ-पैर मारते छोड़ जायंगे। और दलदलमें चढ़नेसे भी तुम्हारा उद्धार न होगा। यूरोपकी नकल हमारे लिये न तो स्वच्छ जल है न सूखी जमीन। उसकी दलदलमें फंसकर अपवित्र और दुःखदायी मृत्यु ही मिल सकती है। नहीं, हमें तैरना सीखना चाहिये और तैरकर सत्यकी अपरिवर्तनशील नौका-तक पहुंच जाना चाहिये और युगोंसे चली आयी चट्टानपर उतरना चाहिये।

यूं ही सोचे-समझे बिना चुनाव न कर लो और एक भद्दी नामरहित खिचड़ीको बड़े गर्वके साथ "पूर्व और पश्चिमका मिलन" न कहने लगो। हम शुरू इस तरह कर सकते हैं। हर चीजके बारेमें, वह चाहे कहींसे आयी हो प्रश्न करें, उसकी परीक्षा करें और उसके बारेमें अपने निजी विचार बनाएं, किसी औरकी बात-पर आंख मूंदकर विश्वास न कर लें। यह कभी न सोचो कि इस तरह तुम हिंदुस्तानी या हिंदू न रह जाओगे। नहीं, अगर तुम अपने-आप सोचना शुरू करो तो इससे तुम्हारे धर्मको कोई भय नहीं है। हां, अगर हम अपने-आप सोचना छोड़कर यह काम यूरोपको सौंप दें तब यह खतरा जरूर है कि हम यूरोपकी भद्दी और मूर्खतापूर्ण नकल बन जायंगे। हमें अपने सामाजिक ढांचेकी अच्छी तरह रक्षा करनी है -- लेकिन उन्हींकी जिनका स्थायी मूल्य है या जो भविष्यके निर्माणमें सहायता पहुंचा सकती हैं। भारत-की आत्मा आगे बढ़ती और विकसित होती जाती है। उसे भूतके अस्थायी रूपोंमें और खांचोंमें नहीं भरना चाहिये। ये सब तो बस कुछ शताब्दी पुराने हैं। इनमें भरना बेकार होगा। इतना ही नहीं, मुसीबत लायेगा। पुराना सांचा टूट गया है। हमें नये आकारका अधिक समृद्ध व नया रूप बनानेके लिये प्रयास करना चाहिये।

(एक पुराने लेखके आधारपर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीके वचन :

भागवत प्रेम

जिसे भागवत प्रेमका अनुभव हो गया उसके लिये और सब प्रेम अज्ञानपूर्ण, तुच्छता, अहंकार और अंधकार मिला हुआ लगता है। वह एक प्रकारका व्यापार या श्रेष्ठता और सत्ताके लिये खेंच-तान जैसा लगता है। और अच्छे-से-अच्छे लोगोंमें भी वह गलतफहमी, तुनक-मिजाजी, रगड़-झगड़ और शंकाओंसे भरा होता है।

इसके अतिरिक्त यह जानी हुई बात है कि तुम जिससे प्रेम करते हो उसीके जैसे बनने लगते हो, इसलिये अगर तुम भगवान् जैसे बनना चाहते हो तो केवल भगवान्से प्रेम करो। जिसने भागवत प्रेमकी घनिष्ठताका अनुभव किया है वही जान सकता है कि उसकी तुलनामें अन्य सब प्रेम कितने फीके, मंद और दुर्बल होते हैं। यदि वह घनिष्ठता पानेके लिये कठोरतम तपस्या-की जरूरत पड़े तो भी, यदि वह तुम्हें वहांतक पहुंचा सके तो, कोई तपस्या बहुत कठिन, बहुत लंबी या बहुत कठोर न होगी। क्योंकि वह प्रेम सब प्रकारकी अभिव्यक्तिसे परे है।

हम इस अद्‌भुत स्थितिको धरतीपर प्रकट करना चाहते हैं। यही है जो धरतीका रूपांतर करके, उसे भागवत सत्ताके योग्य मंदिर बना सकेगी। तब प्रेम, विशुद्ध और सच्चा प्रेम, ऐसे शरीरमें अवतरित हो सकेगा जो पर्दा या छद्मवेश न होगा।

असामंजस्य :

असामंजस्यके बाहरी कारणोंकी अपेक्षा आंतरिक कारणोंपर ज्यादा नजर डालो। अंतर ही बाह्यपर शासन करता है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठिनाई :

कठिनाईमेंसे बाहर निकलनेका एकमात्र उपाय है अपनी अंतरात्माको खोजना और पूरी तरह उसीकी चेतनामें रहना।

आज धरतीपर जीवनकी जो अवस्था है वह कष्टोंसे भरी हुई है उसके कारण हर संवेदनशील हृदय दुःखसे भरा है।

इस कठिनाई और कष्टसे निकलनेका एक ही सच्चा और प्रभावशाली उपाय है। भागवत चेतनाके साथ संपर्क स्थापित करो और उसकी दया, उसकी शक्ति, और उसीकी ज्योतिमें निवास करो। और अंतरात्माके साथ एक होकर यह अवस्था पायी जा सकती है।

इस उद्देश्यके लिये मेरी सहायता और मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

कुछ धर्मके बारेमें

(धर्मका मानव तथा दिव्य रूप; ईसामसीह और बुद्ध तथा उनकी शिक्षा; धर्म और राजनीति; धर्म आध्यात्मिक प्रयासमें सहायक)

धर्मका यथार्थ स्वरूप क्या है? क्या वह आध्यात्मिक जीवनके मार्गमें बाधक है?

धर्म मानवजातिके उच्चतर मनकी चीज है, मनुष्यके उच्चतर मनकी चेष्टा है, जिसके द्वारा वह यथाशक्ति अपनेसे परेकी किसी वस्तुतक पहुंचना चाहता है, उस वस्तुतक, जिसे मानवजाति ईश्वर, परमात्मा, सत्य, श्रद्धा, ज्ञान या अनंत, किसी प्रकारकी निरपेक्ष सत्ताका नाम दे देती है। वह सच्चा मानव-मनकी पहुंचसे बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है फिर भी मन वहां पहुंचनेकी चेष्टा करता है। धर्मका मूल-स्रोत भले ही दिव्य हो, किंतु इसका प्रकट रूप तो दिव्य नहीं मानव ही है। वास्तवमें, हमें धर्मकी जगह धर्मोंकी बात कहनी चाहिये क्योंकि मनुष्यके बनाये हुए धर्म अनेक हैं। इन विभिन्न धर्मों-का स्रोत भले ही एक न हो पर इनकी रचना प्रायः एक ही प्रकारसे हुई है। हमें ज्ञात है कि ईसाई-धर्मकी स्थापना किस प्रकार हुई। जो धर्म ईसाइयतके नामसे विख्यात है निःसंदेह उस-की रचना ईसामसीहने नहीं की थी, कतिपय विद्वान और अत्यंत चतुर मनुष्योंने मिलकर इस धर्मको वर्तमान रूप दिया था। जिस प्रकार इसकी रचना की गयी उसमें कहीं भी दिव्यताका लेश-मात्रतक नहीं था, और जिस रूपमें यह कार्य कर रहा है उसमें भी दिव्यताका कोई नाम-निशान नहीं है। और फिर भी जिस बहाने या जिस अवसरपर इस धर्मकी स्थापना की गयी वह असं-दिग्ध रूपसे कोई अंतःप्रकाश था जो एक ऐसे पुरुषके द्वारा आया था जिसे दिव्य पुरुष कहा जा सकता है। वह पुरुष जो किसी दूसरे लोकसे यहां आया था तथा अपने साथ किसी उच्चतर भूमिकाके ज्ञान और सत्यको इस पृथ्वीके लिये लाया था। वह आया और उसने अपने सत्यके लिये कष्ट झेले, किंतु बहुत कम लोग उसकी वाणीको ठीक-ठीक समझ पाये और किसी विरलेने ही उस सत्यको, जिसके लिये इस दिव्य पुरुषने कष्ट झेले थे, पाने और उसपर दृढ़ रहनेकी परवा की। गौतम बुद्ध संसारसे अलग हो गये, ध्यान लगाकर बैठे और संसारके कष्टों और दुःखोंसे बाहर निकलनेका, रोग और मृत्यु, इच्छा, पाप और क्षुधासे त्राण पानेका मार्ग ढूंढ निकाला। उन्होंने एक सत्यका दर्शन किया और इस बातकी चेष्टा की कि इस सत्यको अपने इर्द-गिर्द जमा अनुयायियों-और शिष्योंको बतायें और दें। परंतु उनके देहत्यागसे पहले ही उनकी शिक्षाकी तोड़-मरोड़ शुरू हो गयी थी। बुद्धके प्रयाणके बाद ही बौद्ध धर्मने एक ऐसे सुव्यवस्थित धर्मके रूपमें सिर उठाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसकी स्थापना बुद्धके तथाकथित वचनोंके कल्पित अर्थोंके आधारपर हुई। परंतु शीघ्र ही, चूंकि उनके शिष्य तथा उनके शिष्योंके शिष्य, इस बातपर सहमत न हो सके कि उनके गुरुने क्या कहा था और उनके कथनका क्या अर्थ था, इसलिये मूल बौद्ध धर्मकी अनेक शाखा-प्रशाखाएं हो गयीं —— हीनयान, महायान तथा सुदूरपूर्व एशिया-के बौद्धपंथ आदि, कई मत हो गये, जिनमेंसे प्रत्येकका दावा है कि उसके मतमें ही बुद्धकी मूल और निर्मल शिक्षा विद्यमान है। ईसा-मसीहकी शिक्षाकी भी यही दशा हुई, इसको भी उपर्युक्त प्रकारसे ही एक नियमबद्ध और संगठित धर्मका रूप दिया गया। बहुधा कहा जाता है कि यदि ईसामसीह लौटकर आयें तो अपनी शिक्षाको उसपर लादे गये रूपोंमें न पहचान सकेंगे, और यदि बुद्ध यहां आयें और उनकी शिक्षाकी जो दशा कर दी गयी है उसको देखें तो वे निरुत्साहित होकर तुरत निर्वाणकी ओर लौट जाएंगे! सभी धर्मोंकी कथा इसी प्रकारकी है। सभी धर्मोंका जन्म किसी महान् जगद्गुरुके आविर्भाव-को लेकर होता है। ये आते हैं, किसी भागवत सत्यको प्रकाशित करते हैं और स्वयं उसके मूर्तिमान् अवतार होते हैं। परंतु मनुष्य इस सत्यपर कब्जा जमा लेते हैं, इसका सौदा करते हैं और एक राज-नीतिक संगठन-सा बना लेते हैं। ये लोग धर्मके साथ किसी शासन-तंत्रको, किसी नीतिको तथा कुछ कायदे-कानूनोंको जोड़ देते हैं, जिनके अपने सिद्धांत और नियम, विधि-विधान, शास्त्रोक्त कर्म और उत्सव होते हैं, जिनका अनुसरण और पालन उस धर्मके अनुयायियोंके लिये अलंघ्य और अनिवार्य होता है। शासनकी तरह इसमें भी सच्चे भक्तोंको पुरस्कार दिया जाता है और विद्रोह करनेवालों तथा उन्मार्ग-गामियोंको, धर्मविरोधियों और धर्मत्यागियोंको सजा।

नियमित रूपसे स्थापित इन धर्मोंकी ओरसे जो पहली और मुख्य बात हमेशा कही जाती है वह है "मेरा धर्म सर्वोत्तम है, सत्य केवल इसी धर्ममें है, बाकीके सभी धर्म या तो मिथ्या हैं या निम्न कोटिके हैं।" इस प्रकारके सिद्धांतको आधार बनाये बिना ये व्यवस्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वासपरक धर्म टिक ही नहीं सकते। यदि तुम्हें इस बातपर विश्वास न हो और तुम यह घोषणा न करो कि अद्वितीय या उच्च-तम सत्य तुम्हारे ही पास है तो तुम दूसरोंपर प्रभाव नहीं डाल सकोगे और अपने इर्द-गिर्द उनकी मंडली न जुटा सकोगे।

इस प्रकारका भाव धार्मिक मनके लिये स्वाभाविक है किंतु यही भाव धर्मको आध्यात्मिक जीवनके मार्गमें बाधक बना देता है। धर्मके सिद्धांत और नियम मनके बनाये हुए हैं, और यदि तुम इनसे चिपके रहो तथा जीवनचर्याके लिये दी गयी इनकी व्यवस्थामें अपने-आपको बंद रखो तो तुम उस आत्माके सत्यको, जो समस्त नियमों और सिद्धांतोंसे परे, विशाल, महत् और स्वतंत्र है, नहीं जानोगे, नहीं जान सकोगे। जब तुम किसी धार्मिक मतवादमें, केवल उसीको संसारका एकमात्र सत्य मानते हुए रुक जाते हो और उसके साथ अपने-आपको बांध लेते हो तो तुम अपनी अंतरात्माकी उन्नति और विस्तारको रोक देते हो।

परंतु यदि तुम धर्मको एक और दृष्टिकोणसे देखो तो यह जरूरी नहीं है कि वह सभी मनुष्योंके लिये सदा बाधक ही हो। यदि तुम धर्मको मानवजातिकी उच्चतर प्रवृत्तियोंमेंसे एक मानो, यदि तुम मनुष्य-की अभीप्साओंको देख सको पर यह न भूलो कि मनुष्यकी बनायी हुई सभी चीजें आखिर अपूर्ण हैं, तो यह तुम्हें आध्यात्मिक जीवनतक पहुंचनेमें सहायक ही सिद्ध होगा। धर्मको गभीर और सच्ची लगन-के साथ स्वीकार करके तुम उसके अंदर यह खोजनेका प्रयास कर सकते हो कि उसमें सत्य क्या है, उसके अंदर कौन-सी अभीप्सा छिपी है, मनुष्यके मन और मनुष्यके संगठनद्वारा भगवान्‌की कौन-सी दिव्य प्रेरणाको वहां परिवर्तित और विकृत होना पड़ा है, और यदि तुम उपर्युक्त बौद्धिक दृष्टिकोण लेकर आगे बढ़ो तो अपने वर्तमान विकृत रूपमें भी धर्म तुम्हारे मार्गपर कुछ प्रकाश डालेगा और तुम्हारे आध्यात्मिक प्रयासमें कुछ-न-कुछ सहायता करेगा।

(मातृवाणी भाग १, खण्ड १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामके बारेमें

१९७० में ओरोवीलकी एस्पिरेशन (अभीप्सा) नामक बस्तीके कुछ लोग सप्ताहमें एक बार माताजीके पास आया करते थे। उन्होंने माताजीसे कामके बारेमें पूछा तो माताजीने कहा :

हर आदमीका अपना समाधान होता है और यह एक बड़ी कठिनाई है, फिर भी हमें सब समाधानोंको मिलाकर काम करनेकी तरकीब ढूंढ़ निकालनी चाहिये।

(मौन)

चौखटा विशाल और बहुत लचीला होना चाहिये और हमारे अंदर बहुत सद्‌भावना होनी चाहिये। यह पहली शर्त्त है, व्यक्तिगत शर्त्त : ऐसी सद्‌भावना हो कि तुम हर क्षण अच्छे-से-अच्छी चीज कर सकनेके लिये पर्याप्त रूपसे लचीले हो सको।

हम जो हैं और हमें जो होना चाहिये इन दोनोंके बीचमें बहुत फासला है। इसके लिये हमें बहुत लचीला होना चाहिये। हमें लक्ष्यको कभी आंखोंसे ओझल न होने देना चाहिये, लेकिन यह भी जानना चाहिये कि हम एक ही छलांगमें वहांतक नहीं पहुंच सकते, हमें उपाय खोजने होंगे। यह बहुत अधिक कठिन है, आंतरिक खोजसे भी ज्यादा कठिन। वास्तवमें आंतरिक खोज तो यहां आनेसे पहले ही हो जानी चाहिये।

एक आरंभ बिंदु होता है : जब तुम अपने अंदर निष्कम्प ज्योतिको पा लो, उस उपस्थितिको पा लो जो निश्चयके साथ तुम्हें रास्ता दिखा सके। तुम उसके बारेमें हमेशा सचेतन रह सको तो हर क्षण कुछ सीखनेका अवसर होता है और पदार्थकी वर्तमान स्थितिमें हमेशा प्रगतिका अवसर होता है।

लोगोंको इस तरह आना चाहिये, हर क्षण यह जाननेके लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आतुर हों कि अब क्या प्रगति की जाय। ओरोवीलका सामूहिक आदर्श होना चाहिये एक ऐसा जीवन जो विकसित होना और अपने-आपको पूर्ण बनाना चाहता है। लेकिन हर एकके लिये एक ही तरहसे नहीं, हर एक अपने तरीकेसे। अब तुम तीस हो और तुम्हें कठिनाई हो रही है, है न? लेकिन जब तुम तीस हजार हो जाओगे तब ज्यादा आसानी होगी क्योंकि स्वभावतः तब बहुत अधिक संभावनाएं होंगी। तुम लोग अगुआ हो, तुम्हारा काम बहुत अधिक कठिन है लेकिन मुझे लगता है कि यह बहुत अधिक रुचिकर भी है, क्योंकि तुम्हें सच्चे ओरोवीलवासी बननेके लिये आवश्यक वृत्तिका ठोस, टिकाऊ और हमेशा विकसित होनेवाला मार्ग खोजना है, हर रोजका पाठ हर रोज सीखना है। हर सूर्योदय एक शोधका अवसर लाता है, हम इस भावनाके साथ शोध करते हैं, हर एक खोज करता है।

और शरीरको क्रियाशीलताकी जरूरत है। अगर तुम उसे निष्क्रिय रखो तो वह बीमारी आदिके द्वारा विद्रोह करेगा। उसे भौतिक क्रिया-कलापकी — जैसे फूलोंके पौधे उगाना, मकान बनाना — जरूरत होती है। तुम्हें अनुभव करना चाहिये कि तुम्हें किस चीजकी जरूरत है। कुछ ऐसे होंगे जो कसरत करेंगे, कुछ साइकिल चलाएंगे, क्रियाशीलताकी अनगिनत संभावनाएं हैं। लेकिन तुम्हें अपने छोटे-से दलमें कोई समझौता कर लेना चाहिये ताकि हर व्यक्तिको ऐसा काम मिल सके जो उसके स्वभाव, प्रकृति और उसकी आवश्यकताओंके अनुकूल हो। लेकिन विचारोंके अनुसार नहीं, विचार किसी कामके नहीं होते। विचारोंसे पक्षपात पैदा होते हैं, 'यह अच्छा काम है' या 'यह काम मेरे लायक नहीं' और इसी प्रकारकी बेहूदा बातें। कोई काम बुरा नहीं होता। बुरे कार्यकर्ता होते हैं, बुरे कार्य नहीं होते। हर एक काम अगर अच्छी तरहसे किया जाय तो अच्छा काम होता है। और यह एक प्रकारका घनिष्ठ संपर्क है। अगर सौभाग्यवश आंतरिक ज्योतिके बारेमें सचेतन हो तो तुम देखोगे कि अपने शारीरिक कार्यके द्वारा तुम भगवान्‌का नीचेकी वस्तुओंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवाहन करते हो। तब संपर्क बहुत ठोस रूप ले लेता है। खोजने-के लिये एक पूरा संसार हमारे सामने है और यह अद्‌भुत है।

तुम जवान हो, तुम्हारे सामने सारा समय है। और जवान होनेके लिये, सचमुच जवान होनेके लिये यह जरूरी है कि हमेशा, हमेशा बढ़ते रहो, हमेशा अपने-आपको विकसित करते रहो, हमेशा प्रगति करते रहो। बढ़ना जवानीका लक्षण है और तुम जानते हो, चेतनामें बढ़नेकी कोई सीमा नहीं। मैं बीस वर्षके बूढ़ोंको और पचास, साठ, सत्तर वर्षके युवकोंको जानती हूं। अगर हम शारीरिक काम करें तो अपने-आपको स्वस्थ रख सकते हैं। तो अब समाधान खोज निकालना तुम्हारा काम है।

तुम यह सब कर सकते हो, सब प्रकारके काम हैं ... सब प्रकारके.... तो तुम आपसमें देख लो कि क्या किया जा सकता है और कैसे किया जा सकता है। फिर आकर मुझे बताना। अच्छा।

१०-३-१९७०

माताजीसे बातचीत

(अतिमानस तथा मानसिक व्यापार — कठपुतलीका खेल; अपने प्रत्येक कार्यका परिणाम भगवान्‌पर छोड़ दो; विभिन्न अवस्थाओंके ध्यान; ध्यानके समय समस्त चेतनाकी सच्चाई अनिवार्य)

चेतना जब अतिमानस आनन्दको प्राप्त कर लेती है तो क्या वह मनके व्यापारमें दिलचस्पी लेना बन्द कर देती है?

मानसिक व्यापारोंमें अतिमानस उसी प्रकारकी दिलचस्पी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेता जैसी कि मन लेता है। वह विश्वकी समस्त गतियोंमें ही अपने ढंगसे दिलचस्पी लेता है, किंतु एक और ही दृष्टि-बिंदुसे, एक और ही दृष्टिसे। उसकी दृष्टिके सम्मुख जगत्का रूप और ही प्रकारका दीखने लगता है। यहां दृष्टिकोण ही पलट जाता है और सभी चीजें जैसी मनसे नजर आया करती हैं उससे भिन्न प्रकारकी, बल्कि बहुधा उससे विपरीत, नजर आती हैं। वस्तुओंका अर्थ बदल जाता है; उनका पहलू, उनकी हलचल और प्रक्रिया, उनके विषयका सभी कुछ दूसरी ही आंखोंसे देखा जाता है। यहां हर चीजके पीछे अतिमानस रहता है। मनकी गतियोंमें, उसी प्रकार प्राण और स्थूलभौतिक गतियोंमें, विश्वकी समस्त लीलामें अतिमानस बहुत गहरी दिलचस्पी रखता है, किंतु उसकी दिलचस्पी और ही प्रकारकी होती है। यह लगभग वैसा ही भेद है जैसा कठपुतलीके तमाशेमें एक तो उस आदमीका रस होता है जिसके हाथमें धागे होते हैं, जो जानता है कि कठपुतलियोंको क्या करना है, उस संकल्पको जानता है जो उन्हें नचा रहा है और यह भी जानता है कि वे उसीके नचाये नाचती हैं, दूसरा उस आदमीका रस है जो खेल देखता है लेकिन बस क्षण-क्षण होनेवाली घटनाओंको ही देख पाता है, उनके अतिरिक्त कुछ नहीं जानता। जो व्यक्ति खेलका दर्शक होता है और उसके रहस्योंसे अनजान होता है, उसकी खेलकी घटनाओंके प्रति दिलचस्पी अधिक तीव्र, उत्सुकतापूर्ण और आवेशमय होती है, और वह उसकी अभीतक अज्ञात नाटकीय घटनाओंको उत्तेजनापूर्ण कौतूहलके साथ देखता है; किंतु दूसरा, जिसके हाथमें खेलकी बागडोर है और जो तमाशेका संचालक है, स्थिर और शांत रहता है। दिलचस्पीकी एक ऐसी प्रखरता या प्रगाढ़ता होती है जो अज्ञानसे ही आती है और वह भ्रमके साथ जुड़ी हुई होती है और जब तुम अज्ञानसे बाहर निकल आते हो तब वह भी जाती रहती है। वस्तुओंके प्रति मानव-प्राणियों-की जो दिलचस्पी होती है उसकी स्थापना भ्रमपर होती है और यदि भ्रम हटा दिया जाय तो फिर इस लीलामें उन्हें कोई दिलचस्पी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगी ही नहीं, उन्हें वह रूखी और नीरस लगेगी। यही कारण है कि यह सब अज्ञान और भ्रम इतने दिनोंतक टिके रह सके हैं; यह इसलिये है कि मनुष्य इसे पसंद करते हैं और इससे तथा इसमें जो विशिष्ट रस मिलता है उससे चिपके रहते हैं।

जो कोई अपनी शारीरिक अवस्थाको परिवर्तित करना, किसी रोगका निवारण करना अथवा किसी शारीरिक अपूर्णताको दूर करना चाहता हो उसे क्या करना चाहिये? क्या उसे अपने प्राप्त लक्ष्यके प्रति तन्मय हो जाना चाहिये और अपने कार्यकी पूर्तिके लिये अपनी संकल्पशक्तिका प्रयोग करना चाहिये अथवा केवल इस दृढ़ विश्वासमें निवास करना चाहिये कि यह सब हो ही जायगा या यह भरोसा रखना चाहिये कि भागवत शक्ति अपने समयपर और अपने तरीकेसे वांछित परिणामको ले ही आयेगी?

ये सभी एक ही कामको करनेके अनेक उपाय हैं और अवस्था-विशेषके अनुसार प्रत्येक फलदायक हो सकता है। तुम किस पद्धति का उपयोग करके अधिक-से-अधिक सफलता प्राप्त कर सकोगे यह तुम्हारी चेतनाके विकासपर अथवा तुम जिन शक्तियोंको कार्यक्षेत्रमें उतार सकते हो इसपर निर्भर है। तुम पूर्ण रोग-मुक्तिकी चेतनामें रह सकते हो या उसका पूर्ण और आंतरिक गठनकी शक्तिके द्वारा धीरे-धीरे बाह्य परिवर्तन भी सिद्ध कर सकते हो। अथवा यदि तुम उस शक्तिको जानते हो जो ऐसे कार्योंको सिद्ध कर सकती है, यदि उसकी दृष्टि प्राप्त है और यदि तुम उस शक्तिका उपयोग करनेमें कुशल हो तो तुम उसका आवाहन कर सकते हो और जिन अंगोंमें उसकी क्रियाकी आवश्यकता हो वहां उपयोग कर सकते हो और वह उस परिवर्तनको कार्यान्वित कर देगी। अथवा, भागवत शक्तिमें विश्वासपूर्ण भरोसा रखते हुए अपनी कठिनाईको भगवान्के सामने उपस्थित कर दो और उनसे रोग-मुक्ति मांग लो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंतु तुम जो कुछ करो, जिस किसी प्रक्रियाका उपयोग करो, चाहे उस प्रक्रियाका उपयोग करनेमें तुम्हें बड़ा भारी कौशल या सामर्थ्य ही क्यों न प्राप्त हो, उसके फलको तो तुम्हें भगवान्‌के हाथोंमें ही छोड़ देना चाहिये। तुम्हें सदा प्रयत्न करते रहना चाहिये, किंतु तुम्हारे प्रयत्नका फल देना या न देना, भगवान्‌का काम है। यहांपर तुम्हारी अपनी ताकत बंद हो जाती है, यदि कोई परिणाम आता है तो उसे तुम्हारी अपनी शक्ति नहीं, बल्कि भागवत शक्ति लाती है। तुम पूछते हो कि भगवान्‌से इन चीजोंको मांगना उचित है या नहीं? यदि किसी नैतिक दोषको दूर करनेके लिये भगवान्‌से प्रार्थना करनेमें कोई हर्ज नहीं है तो किसी भौतिक अशुद्धि या अपूर्णताको दूर करनेके लिये भगवान्‌की ओर मुड़नेमें क्या हर्ज है? परंतु तुम जो कुछ मांगो, तुम्हारा जो कुछ भी प्रयास हो, उस समय भी जब तुम भरपूर प्रयास कर रहे हो, फिर चाहे इस चेष्टामें तुम ज्ञानका प्रयोग करते होओ या शक्तिका, तुम्हें सदा यह अनुभव करना चाहिये कि परिणाम भगवान्‌की कृपापर निर्भर है। एक बार यदि तुमने इस योगको स्वीकार कर लिया है तो फिर तुम्हारे समस्त कार्य पूर्ण आत्म-समर्पणके भावसे होने चाहिये। तुम्हारा भाव यह होना चाहिये — 'मैं अभीप्सा करता हूं, मैं अपनी अपूर्णताओंको दूर करना चाहता हूं, मैं अपनी ओरसे अधिक-से-अधिक प्रयास करता हूं, किंतु फलके लिये मैं अपने-आपको संपूर्ण रूपसे भगवान्‌के हाथोंमें सौंपता हूं।'

यदि कोई कहे कि 'मुझे परिणामके विषयमें निश्चय है, मैं जानता हूं कि मैं जो चाहता हूं वह भगवान् मुझे देंगे', तो क्या इससे कोई सहायता मिलती है?

तुम इस रूपमें ले सकते हो। तुम्हारी श्रद्धाकी तीव्रता या अटलताका यह अर्थ हो सकता है कि भगवान्‌ने यह निर्धारित कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखा है कि तुम्हारी श्रद्धा जिसका निर्देश करती है वह अवश्य पूर्ण हो। अचल श्रद्धा भागवत संकल्पके विद्यमान होनेका चिह्न होती है, जो होनेवाला है उसकी निर्दशिका होती है।

जिस समय कोई चुपचाप ध्यानावस्थामें होता है तब उसके अंदर कौन-सी शक्तियां काम करती हैं ?

यह बात ध्यान करनेवालेपर निर्भर करती है।

परंतु क्या निश्चल-नीरव ध्यानकी अवस्थामें साधक अपने-आपको पूर्ण रूपसे खाली नहीं कर देता ? तब फिर कोई बात उसपर कैसे निर्भर कर सकती है ?

यदि तुम अपने-आपको संपूर्ण रूपसे शून्य कर डालो तो भी इससे तुम्हारी अभीप्सामें कोई परिवर्तन नहीं होता, उसका कार्य-क्षेत्र नहीं बदलता। किसीकी अभीप्सा मानसिक भूमिकाओंपर अथवा प्राणके क्षेत्रमें काम करती है; किसीकी अभीप्सा आध्यात्मिक होती है। यह तुम्हारी अभीप्साके गुणपर निर्भर है कि कैसी शक्ति उसका उत्तर देगी और वह क्या काम करेगी। ध्यानके समय अपने-आपको शून्य कर लेनेसे तुममें एक आंतरिक निश्चल-नीरवता पैदा हो जाती है; किंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि तुम शून्य बन गये हो या तुम कोई निर्जीव या जड़ वस्तु बन गये हो। अपने-आपको खाली पात्र बनाकर तुम उस वस्तुका आवाहन करते हो जो उसे भर देगी, अर्थात् तुम अपनी आंतरिक चेतनाके दबाव-को सिद्धिकी ओर खोल देते हो। यह तुम्हारी चेतनाके स्वभाव-और उसके दबावपर निर्भर है कि तुम किन शक्तियोंको कार्यक्षेत्र-में उतार सको और वे शक्तियां तुम्हारे कार्यमें सहायता पहुंचायें और उसे सफल करें या विफल करें अथवा हानि पहुंचाएं और बाधा दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम विभिन्न अवस्थाओंके ध्यान कर सकते हो और उन सभी-का अंदर या नीचेकी ओर उतारी गयी शक्तियोंपर तथा उनके कार्यपर प्रभाव पड़ता है। यदि तुम अकेले ध्यानमें बैठो तो तुम्हारी आंतर और बाह्य अवस्था ही मुख्य होगी। और यदि तुम दूसरोंके साथ बैठो तो फिर सामान्य अवस्थाका महत्त्व अधिक होगा। परंतु इन दोनों दशाओंमें सदा अवस्थाएं बदलती रहेंगी और जो शक्तियां उनका उत्तर देंगी वे कभी एक-सी न होंगी। उचित रूपमें की गयी सम्मिलित एकाग्रता एक महान् शक्ति हो सकती है। एक प्राचीन कहावत है: 'यदि एक दर्जन सच्चे मनुष्य अपने संकल्प और अभीप्साको एक करके भगवान्को पुकारें तो भगवान् प्रकट हुए बिना न रह सकेंगे।' परंतु उनका संकल्प एकनिष्ठ होना चाहिये, उनकी अभीप्सा सच्ची होनी चाहिये। हो सकता है कि इस प्रकारका प्रयास करनेवाले किसी प्रकारकी जड़ताके वश अथवा किसी भ्रांत या विकृत इच्छाके कारण एक हो गये हों और ऐसी अवस्थामें परिणाम विनाशकारी हो सकते हैं।

ध्यानके समय पहली और अनिवार्य आवश्यकता है तुम्हारी समस्त चेतनाका पूर्ण और नितांत सच्चाईकी अवस्थामें होना। यह अपरिहार्य है कि तुम अपने-आपको धोखा न दो और दूसरेको न तो धोखा दो और न दूसरेके धोखेमें आओ। बहुधा लोगोंमें कोई कामना होती है, कोई मनकी पसंद या प्राणकी वासना होती है, वे चाहते हैं कि उनके ध्यानमें होनेवाली अनुभूति किसी विशिष्ट रूपमें हो अथवा वह कुछ ऐसा मार्ग ले जिससे उनकी भावनाओं, इच्छाओं और पसंदोंको संतोष मिले; वे अपने-आपको खाली और निष्पक्ष रखकर जो कुछ होता है उसे सरलता और सचाईके साथ साक्षी रूपमें नहीं देखते। यदि ऐसी अवस्थामें होनेवाली चीज तुम्हें पसंद न हो तो अपने-आपको धोखा देना सहज होगा। तुम एक चीज देखोगे, किंतु उसे थोड़ा-सा तोड़-मरोड़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई और ही चीज बना डालोगे अथवा किसी सहज और स्पष्ट वस्तुको विकृत कर डालोगे या उसे बढ़ाकर असाधारण अनुभूति बना दोगे। जब तुम ध्यान करने बैठो तो तुम्हें एक बालककी भांति सरल और निष्कपट रहना चाहिये, अपने बाहरी मनको किसी प्रकारका हस्तक्षेप न करने दो, कोई आशा या किसी तरहका हठ न करो। यदि यह अवस्था हो तो बाकी सब तुम्हारी अंदरकी अभीप्सापर निर्भर होगा। यदि तुम अंदरसे शांति मांगोगे, तो वह मिलेगी; यदि बल मांगोगे, शक्ति मांगोगे, ज्ञान मांगोगे, तो वे भी मिलेंगे — किंतु सब-के-सब तुम्हारी ग्रहण करनेकी शक्तिके परिमाणमें मिलेंगे। और यदि तुम भगवान्का आवाहन करो — यह स्वीकार करते हुए कि भगवान् तुम्हारे आवाहनको सुननेके लिये सदा तैयार हैं, और इसका अर्थ हुआ कि यदि तुम्हारा आवाहन उनतक पहुंचनेके लिये पर्याप्त रूपसे शुद्ध और बलवान् हो — तो तुम्हें उसका उत्तर अवश्य मिलेगा।

(मातृवाणी भाग १, खण्ड १)

सुन्दर कहानियां :

नम्रता

तुमने यहूदियोंके राजा, महान् सुलैमानका नाम सुना होगा। बाइबलमें और दूसरी किताबोंमें उनकी महानताकी बहुत-सी कहानियां मिलती हैं। यहां बाइबलकी एक कहानी सुनो :

राजा सुलैमान बहुत अमीर था। उसका सिंहासन हाथीदांतका था जिसपर सोनेका काम था। उसके थाली-कटोरे आदि सोनेके थे और महलमें चांदी ऐसे बिखरी थी जैसे यरूशलमकी सड़कोंपर पत्थर। व्यापारी उसके पास सोना, चांदी, हाथी दांत, मोर, बंदर, बढ़िया कपड़े, अस्त्र-शस्त्र, मसाले, घोड़े, खच्चर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि लेकर आया करते थे। इस राजा सुलैमानने अपने पूर्वजों और अपने राष्ट्रके भगवान्के मानमें एक बहुत शानदार मंदिर बनवाया।

अभी मंदिर बना न था। अभी पहाड़ोंपर उसकी लकड़ीके लिये देवदारुके पेड़ उगाये जा रहे थे। इसी बीच सुलैमानने स्वप्न देखा कि भगवान् उसके सामने प्रकट होकर कह रहे हैं: "बोलो, तुम मुझसे क्या चाहते हो?"

सुलैमानका जवाब था: "मेरे पिता सच्चे और ईमानदार आदमी थे। मैं उनके सिंहासनपर आया हूं। मेरे सामने जो काम पड़ा है वह बहुत बड़ा है। मुझे लगता है कि मैं छोटा-सा बच्चा हूं। मैं अंदर आना और बाहर जानातक नहीं जानता। मैं जिन लोगोंका राजा बना दिया गया हूं उनपर शासन करना मुझे नहीं आता, इसलिये मैं बुद्धिमानी चाहता हूं ताकि मैं भले-बुरेकी पहचान कर सकूं।"

और भगवान्ने कहा: "तुमने लंबा आयुष्य नहीं मांगा, धन-वैभव नहीं मांगा, समझदारी मांगी है और ऐसा हृदय मांगा है जो न्याय और अन्यायको अलग कर सके, इसलिये मैं तुम्हें एक बुद्धिमान मन देता हूं ताकि समझदारीमें कोई तुम्हें मात न कर सके और साथ ही तुम्हें लंबा आयुष्य और धन भी मिलेगा।"

तुम देखोगे कि राजाने कितने विनम्र शब्द कहे: "मैं एक छोटा-सा बालक हूं।"

क्या हम सुलैमानकी इस नम्रताभरी भाषाके कारण उनका मान कम करते हैं?

इसके विपरीत उस महानताको देखकर सच्ची खुशी होती है जो नम्र भी हो।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां पैगम्बर मुहम्मदकी नम्रताकी तीन कहानियां सुनो :

कहते हैं कि हजरत मुहम्मद हमेशा गधेपर बैठनेके लिये राजी हो जाते थे जब कि गर्वीले लोग घोड़ेसे नीचे बात न करते थे। वे कभी-कभी अपने पीछे किसी और को भी बिठा लेते थे। वे कहा करते थे : "मैं नौकरोंकी तरह खाने बैठता हूं और नौकरकी तरह खाता हूं क्योंकि सचमुच मैं नौकर ही हूं।"

दूसरी कहानी। हजरत मुहम्मद एक सभामें गये जहां भीड़ ज्यादा थी और जगह कम। वे उकडूं बैठ गये।

वहां एक बद्दू अरब मौजूद था। वह हजरतको पहचानता था और उसे आश्चर्य हो रहा था कि वे बड़े लोगोंकी तरह मसनद पर क्यों नहीं बैठे।

उसने जरा तिरस्कारभरी आवाजमें कहा : "बैठनेका यह तरीका है?" हजरतने जवाब दिया : "सचमुच भगवान्ने मुझे एक गरीब गुलाम बनाया है, घमंडी राजा नहीं।"

तीसरी कहानी। एक बार हजरत मुहम्मद कुरैशी कबीलेके एक सरदारसे बातें कर रहे थे। उस समय अब्दुल्ला नामक एक अंधा बीचमें टपक पड़ा। उसे मालूम न था कि यहां कोई और है। वह हजरतसे कुरान सुनानेके लिये आग्रह करने लगा। हज-रतने उसे झिड़ककर चुप रहनेके लिये कहा।

लेकिन बादमें उन्हें अपने कड़े व्यवहारके कारण बहुत बुरा लगा और उस दिनसे वे अब्दुल्लाका बहुत मान करने लगे और उसे मान-के पद भी दिये।

राजा और पैगम्बरकी कहानीके बाद अब एक अंग्रेज वैज्ञानिक-की कहानी लें।

न्यूटनका जन्म १६४२ में हुआ था और मृत्यु १७२७ में। अपने लंबे जीवनकालमें उन्होंने प्रकृतिका अध्ययन किया। उन्होंने हर चीजमें पायी जानेवाली आकर्षण शक्तिका अध्ययन किया जिसे वे गुरुत्वाकर्षण कहते थे। उन्होंने पता लगाया कि सूर्य और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्रमाके कारण ज्वार-भाटा कैसे आता है, कि सफेद रोशनी सचमुच उन सात रंगोंसे मिलकर बनती है जो इंद्रधनुषमें दिखायी देते हैं। प्रकृतिकी विलक्षण पुस्तक और उसके आश्चर्यजनक कामोंको पढ़ने-वाले इस विद्वानकी बुद्धिमत्ताकी सभी सराहना करते थे। एक बार एक महिलाने न्यूटनके आगे उनकी बुद्धि और उनकी विद्वत्ता-की सराहना की। न्यूटनने जवाब दिया:

"हाय, मैं तो सत्यके विशाल सागरके किनारे बैठा, शंख-सीपियां चुनता हुआ बालक हूं।"

सत्यके विशाल सागरसे न्यूटनका मतलब था प्रकृतिके नियम जिन्हें बहुत अधिक पढ़ा-लिखा विद्वान भी बहुत कम ही जानता है। समुद्र किनारे बैठा बालक शंख-सीपियां इकट्ठे करता है। वह समुद्रको जितना बड़ा मानता है समुद्र उससे कितना अधिक बड़ा है! और हमारे छोटे-मोटे विचारोंकी तुलनामें यह विश्व कितना अधिक बड़ा है।

क्या हम न्यूटनको छोटा मानते हैं क्योंकि उसने अपनी तुलना एक छोटे-से बच्चेसे की थी? हर्गिज नहीं। हम उसकी नम्रताके लिये उसका मान करते हैं।

★

बहुत वर्ष बीत चुके। एक प्रसिद्ध अभिनेत्री थी जो अपने संगीतके लिये काफी ख्याति पा चुकी थी। वह एक समारोहमें गयी जहां एक मधुर स्वर वाली लड़कीसे गानेके लिये कहा गया। लड़की जो गाना गाना चाहती थी उसमें दो आवाजोंकी जरूरत थी जिसमें लड़कीका मुख्य स्थान होता। छोटी बच्चीके साथ दूसरे स्थानपर गानेके लिये कोई तैयार न था। थोड़ी देर मौन रहा। गायकोंमेंसे कोई भी आगे न आया। प्रसिद्ध अभिनेत्रीने कहा: "तुम चाहो तो मैं गा सकती हूं।"

और गाना शुरू हुआ। छोटी लड़कीकी आवाज स्पष्ट और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊंची थी और अपने समयकी ख्यात-नामा अभिनेत्री उसके पीछे-पीछे मद्धम स्वरमें गा रही थी और संगीतमें सुन्दर साममंजस्य आ गया था।

उस महिलाका विनयशील हृदय बहुत उदात्त था जो एक छोटी-सी बच्चीका साथ देनेको तैयार हो गयी।

*

सन् १८४४ में कलकत्ता संस्कृत कालिजमें व्याकरण पढ़ानेवाले-की जरूरत थी। यह काम ईश्वरचन्द्र विद्यासागरको देनेकी बात चली। वे उन दिनों पचास रुपये मासिक पाते थे और नयी जगह नब्बे मासिक मिलते। लेकिन नहीं, उन्हें अपने मित्र तर्कवाचस्पतिका ख्याल आया जो ज्यादा अच्छी तरह पढ़ा सकता था। उन्होंने अधिकारियोंसे यह बात कह दी और यह काम उसे मिल गया। विद्यासागर बहुत खुश हुए और पैदल चलकर उसके घर जा पहुंचे और उसे यह समाचार दिया।

तर्कवाचस्पति विद्यासागरके विनय और शीलसे बहुत प्रभावित हुआ और चिल्ला पड़ा: "तुम मनुष्य नहीं, मनुष्यके रूपमें देवता हो, विद्यासागर।"

*

और अब एक अहंकारी जुगनूकी बात सुनो।

एक आदमीने प्रचण्ड सूर्यकी ओर देखकर कहा: "कितना चमक-दार है!"

"हम सब चमकदारोंकी ही तरह", एक आवाज आयी।

उसने चारों ओर देखा। एक झाड़ीकी छायामें एक छोटा-सा जुगनू दिखायी दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या यह तुम्हारी आवाज थी?"

"हां," जुगनूने कहा: "मैंने कहा सूर्य और मैं दोनों ही प्रकाशमान हैं?"

"सूर्य और तुम, सचमुच!"

"हां, सूर्य, चन्द्र, तारे और स्वयं मैं," जुगनूने बड़े दम्भके साथ आग्रहसे कहा।

*

इटलीमें चार आदमी एक पहाड़पर चढ़ रहे थे। चारों ईसाई साधु थे। आगे-आगे ईसामसीहके सेवक सन्त फ्रांसिस थे और पीछे तीन साधु थे। पहाड़ जंगलोंसे ढंका हुआ था और चोटीपर एक खुली जगह थी। सन्त फ्रांसिस वहां जाकर प्रार्थना करना चाहते थे। उन्हें आशा थी कि वहां उन्हें दिव्य चीजोंका दर्शन होगा। सन्त बहुत प्रसिद्ध आदमी थे। बड़े-बड़े अमीर-उमरा और गरीब किसान उनका आदर करते थे।

दिन गरम था और रास्ता एकदम खड़ा। सन्त फ्रांसिस चलते-चलते बहुत थक गये थे। एक साथी किसी गांववालेके पास जा पहुंचा और सन्तकी सवारीके लिये एक गधा मांगा।

गांववाला एकदम राजी हो गया। सन्त गधेपर सवार हो गये। साधु उनके साथ-साथ चल रहे थे और गांववाला उनके पीछे-पीछे।

गांववालेने पूछा: "क्या आप ही भाई फ्रांसिस हैं?"

"हां," उन्होंने उत्तर दिया।

"तो फिर उतने अच्छे बननेकी कोशिश करो, जितना अच्छा तुम्हें माना जाता है ताकि लोग तुमपर श्रद्धा रख सकें।"

सन्त फ्रांसिसको गुस्सा नहीं आया। वे राजा और रंक, सभीकी अच्छी सलाहको मान लेते थे। गधेपरसे उतर पड़े, उस ग्रामीणके पांव चूमे और उसे धन्यवाद दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धम्मपद

न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्नो ॥५॥

यहां (इस संसारमें) बैरसे बैर कभी शांत नहीं होता, अबैरसे ही शांत होता है, यही सनातन धर्म है ॥५॥

यह 'धम्मपद' का एक अन्यंत प्रसिद्ध श्लोक है, उनमेंसे एक है जो बहुत अधिक उद्धृत किये जाते हैं—मैं यह कहना कहीं अधिक पसंद करती कि यह ऐसा श्लोक है जिसका सबसे अधिक अनुसरण किया जाता है, परंतु दुर्भाग्यवश यह बात सच्ची नहीं होगी। क्योंकि लोग इस शिक्षाके विषयमें बातें तो बहुत करते हैं पर इसका पालन नहीं करते।

फिर भी इस समस्याका एक पहलू ऐसा है जिसकी चर्चा कम ही की जाती है पर यदि तुम चाहो कि जगत्की चीजोंमें परिवर्तन आये तो वह अधिक महत्त्वपूर्ण है। वह चीज ऐसी है जिसकी ओर लोग बहुत कम ध्यान देते हैं। मैं तुम लोगोंको आश्चर्य में डाल दूंगी। वह यह है: यदि प्रेम घृणाका उत्तर दे ताकि संसार परिवर्तित हो सके तो क्या यह बात कहीं अधिक स्वाभाविक नहीं होगी कि प्रेम भागवत प्रेमको उत्तर दे?

यदि कोई यह देखे कि मनुष्यका जीवन, उसके कर्म और हृदय कैसे हैं तो उसे उस सब घृणा, अवज्ञा, और सबसे बढ़कर उदासीनताको देखकर उचित रूपमें आश्चर्य होगा जो प्रेमकी उस विशालताको उत्तर देता है जिसे भागवत करुणा धरतीपर बिखेरती है, प्रेमकी उस विशालताको जो हर पल संसारको भागवत आनंदकी ओर ले जानेके लिये कार्यरत है और जिसे मानव हृदयमें इतना कम प्रत्युत्तर मिलता है। परंतु लोग दया दिखाते हैं केवल दुष्टोंके प्रति, अधूरोंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति, अवांछनीयोंके प्रति, सूखे और सड़े फलोंके प्रति — वास्तवमें इससे दुष्टता और असफलताको एक प्रकारका बढ़ावा मिलता है।

यदि कोई समस्याके इस पहलूपर कुछ अधिक विचार करे तो शायद उसे घृणाका उत्तर प्रेमसे देनेकी आवश्यकतापर बल देनेकी जरूरत कम होगी, क्योंकि यदि मानव हृदय अपने अंदर निरंतर उड़ेले जानेवाले भागवत प्रेमका प्रत्युत्तर संपूर्ण सचाईके साथ, समझनेवाले और मूल्य आंकनेवाले हृदयकी स्वाभाविक कृतज्ञताके साथ देता तो जगत्में चीजें बड़ी तेजीसे बदलने लगतीं।

२७-९-१९५७

पारस

सनातन गोस्वामी श्रीकृष्णके भक्त थे। एक गरीब ब्राह्मण उनके पास आया और नमस्कार करके बैठ गया।

सनातनने पूछा : "भाई, क्या नाम है तुम्हारा और कहांसे आना हुआ ?"

आगन्तुकने कहा, "महाराज, मैं वर्धमानसे आ रहा हूं। मेरा नाम जीवन है और मैं बहुत गरीब हूं। सुना है आप सबके कष्ट दूर कर सकते हैं। यही सुनकर आपकी शरणमें आया हूं।"

सनातन बोले, "मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। मैं क्या दे सकता हूं? हां, कुछ दिन पहले मुझे पारस मणि मिली थी। मैंने उसे वहां रेतमें दबा दिया है। तुम चाहो तो उसे खोदकर ले जाओ।"

जीवन खुशीसे उछल पड़ा। उसने बतायी हुई जगहपर खोदा तो सचमुच पारस मणि निकल आयी। उसका खोदनेका औजार सोनेका बन गया था।

जीवन मणिको लेकर सनातन गोस्वामीके पास आया और बोला, "महाराज, मणि तो मिल गयी पर अब मुझे नहीं चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामीने पूछा, "क्यों ?"

"महाराज, इतनी बड़ी चीजको आपने ठीकरेकी तरह फेंक दिया, इसका मतलब है कि आपके पास कोई ऐसी पूंजी है जिसके सामने इसका कुछ भी मूल्य नहीं। मुझे उसमेंसे कुछ भाग न दे सकेंगे ?"

गोस्वामी बड़े प्रेमसे उसकी ओर देखते रहे, देखते रहे।

थोड़ी देर बाद उनके मुंहसे निकला, "मेरे पास क्या है ? मेरे पास है राधा रानीपर विश्वास और जो कुछ वे दे दें उसके लिये कृतज्ञता।"

सोसायटी समाचार

आश्रम और सोसायटीके केंद्रों तथा शाखाओंमें १७ नवंबरको माताजीकी महासमाधिकी तीसरी वर्षगांठ मनाई जायगी। आश्रममें सुबह माताजीके कक्षके दर्शन होंगे और दस बजे समाधिके चारों ओर आध-घण्टेका ध्यान। २० नवंबरको समाधि-दिवस भी मनाया जायेगा।

२४ नवंबर 'सिद्धि दिन'के रूपमें मनाया जाता है। इस वर्ष इस अवसरकी पचासवीं वर्षगांठ होगी। इस दिन अधिमानसमें आनंद चेतना — जिसके अवतार श्रीकृष्ण थे — भौतिकमें अवतरित हुई थी और उसने जड़ पदार्थमें अतिमानसका अवतरण संभव बना दिया। अक्तूबर १९३५ में श्रीअरविन्दने अपनी एक चिट्ठीमें लिखा था : "२४ नवंबर, १९२६ को श्रीकृष्णका भौतिकमें अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं हैं। श्री कृष्णके अवतरणका मतलब होगा अधिमानसिक देवत्वका अवतरण, जो वास्तवमें अपनी नहीं बल्कि अतिमन और आनंदके अवतरणकी तैयारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेगा। श्रीकृष्ण आनंदमय हैं। अधिमानसके द्वारा वे क्रमविकासको सहारा देते हैं और उसे आनंदकी ओर ले जाते हैं। ''

इस दिन १९२६ में श्रीअरविन्द एकाग्रताके लिये एकांतवासमें चले गये ताकि अतिमानसिक चेतनाकी अभिव्यक्ति जल्दी-से-जल्दी हो सके। शिष्योंकी मदद तथा पथप्रदर्शनका भार माताजीके हाथोंमें सौंप दिया। हम कह सकते हैं कि इस दिन, पचास साल पहले आश्रमकी नींव रखी गई थी।

अक्तूबर ८ और ९ को **अमरीकामें** पाश्चात्य-सम्मेलनकी 'एसो-सिएशन फॉर एशिअन स्टडीज' की वार्षिक सभा हुई। उसमें बहुतोंने श्रीअरविन्दकी शिक्षा, उनके योग और आश्रमके बारेमें, श्रीअरविन्द तथा सामूहिक शिक्षा, श्रीअरविन्द तथा मनुष्यका दिव्यी-करण, श्रीअरविंदका सर्वांगीण योग, आध्यात्मिक विकासक्रमके चौखटे-के रूपमें आश्रम आधुनिक मनुष्यके लिये श्रीअरविंदकी विश्वदृष्टि-आदिपर भाषण दिये। फिर ओरोवील तथा आश्रमके स्लाइड्स और चित्र दिखाये गये।

जापानकी श्रीअरविंद सोसायटीसे यह सूचना मिली है कि उन्होंने 'योग-समन्वय' का दूसरा भाग जापानीमें प्रकाशित कर लिया है।

'इंस्टिटयूट ऑफ एशियन स्टडीज' की केलिफोर्निया संस्थामें १४ और १५ अगस्तको डा० मधुसूदन रेड्डीने श्रीअरविंदकी शिक्षापर तीन भाषण दिये। सैन फ्रांसिस्कोके 'क्रॉनिकल' नामक अखबारमें लिया गया: ''श्रीअरविंद एक ऐसे अध्यापक तथा विचारक थे जिन्होंने उच्चतर विचारके प्रति नया रास्ता खोला, एक ऐसे क्रांति-कारी जिन्होंने एक पूरी पीढ़ीको प्रेरित किया, एक ऐसे मानव प्रेमी जिनकी करुणाने पूरे विश्वको अपनी बांहोंमें समेट लिया, एक ऐसे स्वप्नद्रष्टा जो दिव्य प्रकाश तथा पूर्णताके स्वप्न लेते थे।''

नागपुरमें श्रीअरविंद सर्कलने 'उषा-ध्यान' नामके एक कार्यक्रम-की व्यवस्था की है जो हर महीनेकी पहली तारीखको होता है। पहला ध्यान पहली सितंबरकी सुबह पांचसे साढ़े पांचतक हुआ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके बाद माताजीका संगीत बजाया, फिर माताजीकी १. ९. १९१४ की प्रार्थना "जो भगवान्की सेवा करना चाहते हैं उनके लिये प्रार्थना" तथा श्रीअरविंदकी पुस्तक 'वेद-रहस्य' से उषाके प्रकरण पढ़े ।

सोसायटीकी बंगलोर शाखाने एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसमें तीन भाषण थे और संस्कृत तथा हिंदीमें भजन ।

कडप्पामें श्रीअरविंद तथा माताजीकी रचनाओंकी और आश्रम-के अन्य प्रकाशनोंकी प्रदर्शनी हुई ।

श्रीअरविंद भवन, **कलकत्तेमें** डा. गोपाल मुखर्जी, हर प्रसाद मित्र इत्यादिने श्रीअरविंदकी शिक्षापर भाषण दिये ।

'श्रीअरविंद इंस्टीटयूट ऑफ कल्चर', न कलकत्तेमें हर शनिवार और रविवारकी शामको कुछ कार्यक्रमोंकी व्यवस्था की। इन्हींमेंसे एकमें श्री प्रद्योत भट्टाचार्यने श्रीअरविंदकी शिक्षाके बारेमें पूछे गये प्रश्नोंका उतर दिया। फिर माताजीकी रचनाओंपर आधारित 'साव-धानता' नामक एक नाटक प्रस्तुत किया गया। महिला विभाग (शक्तिकेंद्र) प्रत्येक बुधवार और शनिवारकी दोपहरको तथा रवि-वारकी सुबह संगीत और कला-कक्षाओंके लिये मिलता है।

श्रीअरविन्द सोसायटी, उत्तर प्रदेशका षष्ठ वार्षिक सम्मेलन अयोध्याके तुलसी स्मारक भवनमें दिनांक २, ३, ४, अक्तूबरको संपन्न हुआ। सम्मेलनमें उत्तर प्रदेशके अतिरिक्त मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्लीके प्रतिनिधियोंने भाग लिया। सम्मेलनका उद्घाटन करते हुए अवध विश्व विद्यालयके कुलपति डा. सुरेंद्र सिंहने 'अवध विश्व विद्यालय' में 'श्रीअरविन्द पीठ'की स्थापनाका संकल्प घोषित किया। सम्मेलनमें पांच विचार गोष्ठियां हुईं जिनमें "भारतीय साधना और श्रीअरविन्द", "दिव्य जीवनका स्वरूप" और ओरोवील (उषा नगरी), तथा "मातृशक्ति"के संबंधमें पांडिचेरी आश्रमके श्री चन्द्रदीप और छोटे नारायण शर्माके अतिरिक्त 'आकाशवाणी' दिल्लीके समाचार निदेशक श्री प्रयाग नारायण त्रिपाठी, शिक्षा शास्त्री डा. सीताराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायसवाल तथा अयोध्याके प्रसिद्ध रामायणी बाबा प्रेम दासजी, पं. अखिलेश दासजी आदिने भाग लिया।

श्रीअरविन्द और श्रीमांके साहित्य तथा चित्रोंकी प्रदर्शनीके अतिरिक्त आश्रमकी पांच फिल्में दिखायी गयीं।

नए प्रकाशन :

'गाइडेन्स फ्रॉम श्रीअरविंद' — (इसमें १९३५ में एक शिष्यको लिखे गये श्रीअरविंदके पत्र हैं) मूल्य १५.००। यह पुस्तक 'शब्द' से प्राप्त हो सकती है।

पुनर्मुद्रण :

'एस्सेज ऑन द गीता' —श्रीअरविंद (इस संस्करणमें विस्तृत अनुक्रमणिका दी गयी है) मूल्य २०.००।

सावित्री (अ लेजण्ड ऐण्ड अ सिम्बल)—श्रीअरविंद मूल्य २४.००

सूचना

माताजीके शताब्दी-यज्ञमें अपनी छोटी-सी हविके रूपमें हम दिसंबरसे 'अग्निशिखा'के हर अंकमें 'शताब्दी संदेश' और 'माताजीके बारेमें' नामक दो स्तम्भ शुरू कर रहे हैं जिनमें स्वयं माताजी और श्रीअरविन्दके वचनोंका संकलन होगा। इसी भांति 'पुरोधा' में 'माताजीके साथ सच्चा संबंध' के बारेमें श्रीअरविन्दकी वाणी आपकी भेंट करेंगे। यह क्रम फरवरी ७८ तक चलता रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनका एक उद्देश्य होता है और वही सच्चा और स्थायी उद्देश्य हैं — भगवान्। उन्हींकी ओर मुड़ो और सब खालीपन चला जायगा।

—श्रीमां

चादर, शाल, दोशाले थोक खरीदनेके लिये पत्रव्यवहार करें :

यूनिक स्टोर्स

घास मंडी; लुधियाना

दूरभाष : २५४४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ममें तुम्हारा आदर्श होना चाहिये पूर्णता, उससे कम कुछ भी नहीं। तब निश्चय ही तुम भगवान्के सच्चे यंत्र बन जाओगे।

— श्रीमाताजी

Space donted by

KOOVERJI DEVSHI & CO., PVT. LTD.

FIREX LEADS TO SAFETY
SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Beauty, you are my way to the Divine.

(*White Roses*) The Mother

Inland Carriers (Bombay)

For Safe, Speedy & Efficient Movement of Cargo

Head Office :

Takhatmal Estate, P. O. Box No. 12, AMRAVATI

Branches :

112, Sarang Street, BOMBAY-3, Phone : 327710

Bhistiwad, AHMEDABAD, Phone : 34098

Daily parcel Service to & from

Bombay, Ahmedabad, Baroda, Poona, Sholapur, Ichalkaranji, Bangalore, Nagpur, Amravati, Raipur & Malegaon (Dist. Nasik)

THE CARRIERS WITH A DIFFERENCE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवत्कृपापर पूर्ण विश्वास और निर्भरता बनाये रखना ही, अंतिम विश्लेषणमें, सर्वोत्तम बुद्धिमानी सिद्ध होता है।

— श्रीमाताजी

स्टार आटोमोबाईल सर्विसेज

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर (उ. प्र.)

एवं

भारत आयल कैरियर्स

लक्ष्मणझूला मार्ग

ऋशिकेश-२४९२०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

★

INDIAN TEA STORAGE AGENCY

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीराम

नवीन उपकरण -
श्रीराम पी०वी०सी०

श्रीराम केमिकल्स आपको दो विशेष लाभ आमंत्रित करते हैं,
पहला - विभिन्न प्रकार के उपयोगों के लिये विभिन्न ग्रेड में उत्तम पी०वी०सी० - दूसरा श्रीराम पी०वी०सी० के नवीन उपयोगों के बारे में निःशुल्क तकनीकी जानकारी।

श्रीराम केमिकल्स के आधुनिक अनुसंधान एवं विशेष तकनीकी सलाहकारों की सहायता से आप विभिन्न प्रकार की नवीन उपयोगी वस्तुएँ तैयार कर सकते है।

श्रीराम

श्रीराम केमिकल्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70.
REGD. No. M. 8731

Overgrow your small egoistic personality and become a worthy child of our Mother India, fulfil your duties with honesty and rectitude, and always keep cheerful and confident with a steady trust in the Divine's Grace

अपने छोटे-से अहंकारमय व्यक्तित्वमेंसे बढ़कर भारत माताके योग्य बालक बनो। अपने कर्तव्य निष्कपटता और ईमानदारीसे पूरे करो। हमेशा प्रसन्न रहो और भगवान्‌की कृपापर अटल भरोसा और विश्वास रखो।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल ... १

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

दिसंबर १९...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(श्रीअरविंद सोसायटी और ऐक्शनकी सम्मिलित मासिक पत्रिका)

सूची

शताब्दी संदेश		१
माताजीके बारेमें		२
श्रीअरविंद-वाणी : भावी भारतके ध्वजावाहक		३
श्रीमातृवाणी : सुंदर कहानियां — सहानुभूति		६
हमारे सम्मेलन		१५
धम्मपद		१८
सहनशीलता		१९
भयपर विजय	कनिष्ठा	२५
एक सरदार		२९
सोसायटी समाचार		३२

माताजीके सभी ग्रंथ १५ खंडोंमें श्रीमातृवाणी नामसे छप रहे हैं। अभी ग्राहक बननेसे ३०० में मिल सकेंगे। चार खंड तैयार हैं। आप चाहें तो किस्तोंमें दाम दे सकते हैं।

अन्य प्रकाशन

श्रीअरविन्द और उनका आश्रम १.५० | बच्चोंके श्रीअरविन्द ०.७५
हमारी मां १.२५ | श्रीअरविन्द जीवन और दर्शन ४.००
नर और नारी १.५० | माताजी — एक झलक ४.००

वार्षिक चंदा : ६.०० आजीवन : १००.००

पत्रव्यवहार और धनादेशके लिये पता :
संपादक, पुरोधा एवं अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शताब्दी संदेश

श्रीअरविन्द हमसे यह कहने आये थे : "सत्यको पानेके लिये पृथ्वी-को छोड़ना जरूरी नहीं है, अपनी आत्माको पानेके लिये जीवनका त्याग जरूरी नहीं है, भगवान्‌के साथ संबंध स्थापित करनेके लिये न तो जगत्‌को त्यागना जरूरी है, न ही सीमित विश्वास रखना। भग-वान् सब जगह हैं, हर चीजमें हैं और अगर वे छिपे हुए हैं तो यह इसलिये कि हम उन्हें खोजनेका कष्ट नहीं उठाते।"

१३-९-५८

*

श्रीअरविन्दके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करनेका इससे अच्छा उपाय और कोई नहीं है कि उनकी शिक्षाकी सजीव अभिव्यक्ति बना जाय।

३०-९-५७

यहां जो बात माताजीने श्रीअरविन्दके लिये कही है वही उनके लिये भी ठीक है। —सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीके बारेमें

एक भागवत शक्ति सारे विश्वमें काम करती है। वही व्यक्तिमें भी काम करती है और व्यक्ति तथा विश्वके परे भी। माताजी इन सबकी प्रतिनिधि हैं। वे धरतीपर एक ऐसी चीजको उतारनेकी कोशिश कर रही हैं जो अभीतक भौतिक जगत्‌में प्रकट नहीं हुई है। वह यहांके जीवनका रूपांतर कर देगी। तुम यह मान सकते हो कि माताजी वह भागवत शक्ति हैं जो धरतीपर इसी उद्देश्यसे काम कर रही हैं। अपने शरीरमें वे वही शक्ति हैं लेकिन अपनी चेतनामें वे भगवान्‌के सभी रूपोंके साथ एक हैं।

*

चिच्छक्ति या भागवत चेतना माताजी ही हैं—जीवात्मा उसी शक्तिका एक अंश है, चैत्य या अंतरात्मा उसीकी चिनगारी है। अहंकार चैत्य पुरुष या जीवात्माकी विकृत छाया है।

*

यह सच है कि धरतीपर हर एक अंतरात्मा दिव्य जननीका एक अंश है जो अविद्याके अनुभवमेंसे गुजर रहा है ताकि अपनी सत्ताके सत्यतक पहुंच जाय और यहांपर भागवत अभिव्यक्ति और भागवत कार्यका यंत्र बन सके।

*

ॐ आनंदमयि चैतन्यमयि सत्यमयि परमे।

Sri Aurobindo

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद-वाणी :

भावी भारतके ध्वजा-वाहक

भविष्य युवकोंके हाथमें है। एक नया और युवा संसार विकसित हो रहा है और युवकोंको ही उसका निर्माण करना है। लेकिन वह संसार सत्यका, साहसका, न्यायका, उच्च अभीप्साका, निष्कपट पूर्णताका संसार होगा जिसका हम निर्माण करना चाहते हैं। भविष्यमें भीरुके लिये, स्वार्थीके लिये, आरंभशूर बकवास करनेवालेके लिये, जो आगे चलकर अपने साथियोंको मुसीबतमें छोड़कर अलग हो जाता है, कोई स्थान नहीं होगा। . . . . भावी राष्ट्र वीर, सच्चे, स्पष्टवादी, शुद्ध-हृदय, साहसी और अभीप्सा करनेवाले युवकोंके आधारपर खड़ा होगा।

अगर हमें जीना है तो हमें भारतके महान् प्रयासको फिरसे शुरू करना होगा जिसमें बहुत विघ्न-बाधाएं आ चुकी हैं। हमें साहसके साथ व्यक्ति और समाजमें, आध्यात्मिक और संसारी जीवनमें, दर्शन और धर्ममें, कला और साहित्यमें, विचारोंमें, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक योजनाओंमें, भारतकी असीम उच्च भावना और ज्ञानको जगाकर कार्यान्वित करना होगा। अगर हम यह करें तो हमें पता चलेगा कि पश्चिमसे जो सर्वोत्तमका बाना पहनकर आता है वह हमारी प्राचीन बुद्धिमें पहलेसे मौजूद है, उसके पीछे ज्यादा बड़ी भावना है, गहरा सत्य है, आत्म-ज्ञान है, ज्यादा उदात्त और आदर्श सूत्रोंकी ओर बढ़नेका संकल्प है। जिस बातको हम हमेशा भावनामें जानते आये हैं उसे बस क्रियाका रूप देना बाकी है। हमारे अतीतकी संस्कृति और भविष्यके वातावरणकी आवश्यकताओंके सामंजस्यका रहस्य इसीमें है, कहीं और नहीं।

आदर्श है आत्माके अंदर एक नयी मानवताका जन्म। हमारा जीवन इस महान् नूतन जन्म और सृष्टिके लिये, सक्रिय शरीर बनानेका, आध्यात्म-प्रेरित प्रयास हो। आध्यात्मिक आदर्श ही भारतका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष गुण और उसकी अभीप्सा है। कालकी प्रगति और मानवताकी आवश्यकताकी मांग है कि इस आदर्शको नयी दिशा दी जाय, एक नया रूप दिया जाय। काल पुरुषके लिये पुराने रूप और पुरानी पद्धतियां काफी नहीं हैं।

हमारा आदर्श वह आध्यात्मिकता नहीं है जो जीवनसे मुंह मोड़ लेती है। हमारी आध्यात्मिकता जीवनपर आत्माका अधिकार चाहती है। वह यह मानती है कि यह जगत् भगवान्‌की अभिव्यक्तिका प्रयास है। इतना ही नहीं, वह अभिव्यक्तिके महान् प्रयासके द्वारा मानवताका रूपांतर करना चाहती है, भगवान् और मनुष्यके बीचके परदेको हटा देना चाहती है। हमारे अंदर जिस दिव्य मानवताकी क्षमता है वह जन्म लेगी और हमारा जीवन आत्माके सत्य, ज्योति और शक्तिमें ढाला जायगा।

पश्चिमने मनुष्यकी बौद्धिक, भावात्मक, प्राणिक और भौतिक सत्ताके विकासको अपना आदर्श बनाया है लेकिन उसने आध्यात्मिक जीवनकी अधिक बड़ी संभावनाओंको एक ओर रख दिया है।... पश्चिमने अपनी श्रद्धा विज्ञान और मशीनोंपर केंद्रित की है। वही विज्ञान उसका नाश कर रहा है और वही मशीनें उसका कचूमर निकाल रही हैं। वह यह नहीं समझ पाया है कि उसके आदर्शोंकी पूर्तिके लिये आध्यात्मिक परिवर्तनकी जरूरत है। उस आध्यात्मिक परिवर्तनका रहस्य पूर्वके हाथमें है परंतु वह एक जमानेसे धरतीकी ओरसे मुंह मोड़े हुए है। अब समय आ गया है कि इस बटवारेके घावको भर दिया जाय, जीवन और आत्माको एक किया जाय।

भारतके पास यह रहस्य रहा तो है पर इसे काफी क्रियात्मक रूप नहीं दिया गया। संक्षेपमें गीतामें कह दिया गया : "योगस्थ कुरु कर्माणि" — योगमें स्थिर होकर भगवान्‌के साथ एक होकर सारे कर्म करो, अपनी उच्चतम आत्माकी भित्तिपर, अपने सभी अंगोंसे आत्माकी शक्तिके द्वारा काम करो। हमें विश्वास है कि न केवल यह संभव है बल्कि यही मनुष्यकी सभी समस्याओं और कठिनाइयोंका समाधान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो यही वह संदेश है जिसे हम बराबर सुनाते रहेंगे और यही वह आदर्श है जिसे हम उठते हुए युवा भारतके आगे रखेंगे। वह आदर्श है एक ऐसा आध्यात्मिक जीवन जो सभी मानव क्रिया-कलाप-को अपने अंदर समो लेगा और आनेवाले नवयुगके लिये सारे संसारको बदल डालेगा। भारत अतीत कालसे इस रहस्यको अपने अंदर लिये रहा है और वही इस महान् रूपांतरके काममें रास्ता दिखा सकता है। आजकल उस महान् युगकी संध्या है। भारतका यही लक्ष्य है, यही उसकी मानव सेवा है। जैसे उसने व्यक्तिके आंतरिक आध्यात्मिक जीवनकी खोज की थी उसी तरह उसे मानव-जातिकी संपूर्ण सामुदायिक अभिव्यक्तिको खोजना है और आध्यात्मिक तथा सामुदायिक व्यवस्थाकी नींव रखनी है।

हमारी पुकार युवा भारतके नाम है। युवकोंको ही नये जगत्-का निर्माता होना चाहिये....ऐसे युवक जो मन और हृदयमें पूर्णतर सत्यको स्वीकार करनेके लिये, एक ज्यादा बड़े आदर्शके लिये परि-श्रम करनेके लिये बंधन-मुक्त हैं। वे ऐसे लोग होने चाहिये जो अपने-आपको वर्तमान या अतीतको नहीं, भविष्यको समर्पित कर सकें। उन्हें अपना जीवन अपने निचले स्वसे आगे बढ़नेके लिये लगा देना चाहिये। उन्हें स्वयं अपने अंदर, सभी मनुष्योंमें भगवान्को देखनेमें, अपने राष्ट्र और मानवजातिके लिये अथक परिश्रम करनेमें लगा देना चाहिये। यह आदर्श अभी एक छोटा-सा बीज और उसे मूर्त रूप देनेवाला जीवन एक नाभिक ही हो सकता है, लेकिन हमारी निश्चित आशा है कि बीज बढ़कर वृक्ष बनेगा और नाभिक हमारे बढ़ते रहनेवाले रूपका हृदय होगा। प्रेरणा देनेवाली आत्मामें पूर्ण विश्वासके साथ हम वर्तमान जगत्के विघटनके बीच अपना स्थान नयी मानवता और भावी भारतके ध्वजावाहकोंमें लेते हैं, उस बृह-त्तर भारतके ध्वजावाहकोंमें जिसका नूतन जन्म हमारी प्राचीन मांके सशक्त शरीरको नया जीवन देगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहानुभूति

दु:ख दु:खका साथ कब देता है ?

जब एक हृदय दु:ख पाता है और उसके साथ ही हमारा हृदय भी दु:खी हो उठता है।

प्रसिद्ध योद्धा दुर्योधन कुरुक्षेत्रके मैदानमें गिर पड़ा। उसके साथी इतने अधिक दु:खी हुए कि जब वह धरतीपर गिरकर मर गया तो ऐसा लगा मानों सारी प्रकृति ही अस्त-व्यस्त हो गयी। पृथ्वीपर बिना सिरके, अनेक हाथों और अनेक पैरोंवाले प्राणी भयंकर नाच नाचने लगे। झीलों और कुंओंका पानी खून बन गया। नदियां अपने स्रोतकी ओर बह चलीं। पुरुष स्त्रियों जैसे लगने लगे और स्त्रियां पुरुषों जैसी।

यहां कवि हमें यह बताना चाहता है कि एक आदमीके सहे हुए कष्ट इस विशाल संसारमें फैल गये। मरे हुए राजा और हजारों जिन्दा प्राणियोंमें सहानुभूति थी।

अब नन्दी हरिणकी कहानी भी सुनो जो शांतिके समय अपने मां-बापके साथ स्नेह और सन्तोषभरा व्यवहार करता था और अंधेरे और मुसीबतके समय भी स्नेहसे भरा रहता था।

कोसल नरेश बहुत बार उस जंगलमें शिकारके लिये जाया करता था जहां ये तीनों हरिण सुखसे, शांति और प्रेमके साथ रहा करते थे। राजाके साथ बहुत-से आदमी रहते थे जिन्हें अपना काम-धाम छोड़कर आना पड़ता था और वे बुड़बुड़ाया करते थे।

आखिर उन्होंने एक उपवन बनाया जिसके बीचमें एक तालाब था और चारों ओर बाड़ और दरवाजे। अब उन्होंने जंगलमें जाकर हरिणोंको घेरकर उपवनमें इकट्ठा करना शुरू किया ताकि राजा वहां मनमाना शिकार कर सके और उन्हें काम छोड़कर आनेकी जरूरत न पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नन्दीने लाठी लिये लोगोंको आते देखा। वह अपने मां-बापके साथ जंगलके एक कोनेमें चर रहा था। उसने मां-बापसे कहा, "तुम यहीं ठहरो, मैं जाकर इन लोगोंसे मिलता हूं।" उन लोगोंने इसे आते हुए देखा तो यही समझा कि जंगलमें और हरिण नहीं बचे। वे उसे लेकर उपवनमें आ गये। नंदीके मां-बापको छोड़-कर जंगलके सभी हरिण यहां घेर लिये गये थे। राजा इस योजना-से बहुत खुश हुआ और समय-समयपर दो-एक हरिणोंका शिकार करने लगा लेकिन नंदीकी बारी बहुत दिनोंतक न आयी।

आखिर एक दिन उसकी भी बारी आ गयी। वह राजाके बानेमसे भागनेकी जगह सीधा खड़ा हो गया। राजा यह देखकर अचम्भेमें पड़ गया और उसने बाण नहीं चलाया।

"बाण मारिये, राजन्," हरिणने कहा।

राजाने कहा, "नहीं, तुम्हारे अंदर कुछ विशेषता है, मैं तुम्हें अभयदान देता हूं।"

"राजन्, क्या इस उपवनके सभी हरिणोंको अभयदान मिल सकता है?" हरिणने पूछा।

"हां।"

"और, राजन्. क्या आपकी कृपा हवामें उड़नेवाले पक्षियों और जलकी मछलियोंपर नहीं होगी?"

"चलो ठीक है।"

कहते हैं स्वयं बोधिसत्त्वने हरिणका रूप धारण करके राजाको दयाका पाठ पढ़ाया था। फिर उन्होंने चारों ओर ढिंढोरा पिटवा दिया कि राजाने सभी हरिणों, पक्षियों और मछलियोंको अभयदान दिया है।

निस्संदेह, तुम इस बातसे सहमत होगे कि नन्दीने अपने मां-बाप-की रक्षा करके अच्छा किया। किसी बहन या भाईकी रक्षा करना भी जरूर अच्छा काम है। लेकिन अगली कहानीमें तुम देखोगे कि एक अरब सरदारने एक आदमीको अपना भाई बतलाया हालांकि वह उसका भाई नहीं था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक काफिला रेगिस्तानसे गुजर रहा था। बीचमें ही उनका पानी चुक गया और यह जरूरी हो गया कि सबको पानी नाप-नापकर दिया जाय ताकि सबको थोड़ा-थोड़ा लेकिन बराबर पानी मिल सके।

एक प्यालेमें एक पत्थर रखकर मशकसे पानी डाला जाता था। एक आदमीको उतना ही पानी मिलता था जितना पत्थरको डुबा सके। और इतना भी सिर्फ सरदारोंको ही मिलता था। काब इब्ने मामा पानी पीनेको था कि उसने देखा कि एक नामीर कबीलेका एक अरब उसकी ओर ललचायी आंखोंसे देख रहा है। काबने उसकी तरफ इशारा करके पानी बांटनेवालेसे कहा, "मेरा हिस्सा मेरे इस भाईको दे दो।"

उस आदमीने गटगट पानी पी लिया और काब प्यासा रह गया। दूसरे दिन फिर पानी बांटनेका समय हुआ। फिर नामीर अरब ने ललचायी आंखोंसे देखा और फिरसे काबने अपना हिस्सा अपने उस "भाई" को दिलवा दिया।

लेकिन जब काफिलेके कूचका समय हुआ तो काबमें इतनी शक्ति न थी कि वह ऊंटपर चढ़ भी पाता।

वह रेगिस्तानमें पीछे रह गया।

और लोग नहीं ठहर सकते थे, उन्हें डर था कि कहीं वे भी प्याससे मर न जायं। उन्होंने काबको शिकारी जानवरोंसे बचानेके लिये उसपर कुछ कपड़े डाल दिये और उसे वहीं मरनेके लिये छोड़ दिया।

*

तुमने देखा होगा कि जब किसीको दुःख हुआ तो उसके पड़ोसी-के हृदयने भी उसे अनुभव किया। जब दुर्योधन मरा तो सारी प्रकृति तुरंत दुखी हो उठी। जब नंदीके मां-बापकी जानपर संकट आया तो उसने उनकी रक्षा की। जब नामीरके अरबने प्याससे व्याकुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर देखा तो अरब सरदारने तुरंत अपने हिस्सेका पानी उसे दे दिया।

दुःख तुरंत दुःखका साथ देता है और हर्ष हर्षका।

अगर सहानुभूति आनेमें देर लगा दे तो इतनी मूल्यवान् नहीं रह जाती।

फारसीके प्रसिद्ध कवि फिरदौसीने ईरानके राजाओंकी कहानी लिखी और बादशाह महमूदको पढ़कर सुनायी। सुलतान सुनते ही फड़क उठा और कुछ समयतक फिरदौसी उसका विशेष कृपापात्र बना रहा। फिरदौसीका काव्य — शाहनामा — तीस वर्षके अथक परिश्रमका परिणाम था और सुलतानने वचन दिया था कि उसके खतम होनेपर वह कविको सोनेकी साठ हजार मुहरें देगा।

लेकिन सुलतानका वजीर फिरदौसीसे घृणा करता था। उसने सुलतानसे कहा, "शाही खजानेकी हालत अच्छी नहीं है। साठ हजार सोनेकी मुहरें देनेकी जगह साठ हजार चांदीके सिक्के देनेमें ही बुद्धिमानी है।" राजाने बात मान ली और चांदीके सिक्के थैलोंमें भरकर कविके यहां भेज दिये।

जब सिक्कोंके थैले फिरदौसीके घर पहुंचे तो वह स्नान कर रहा था। वह सुलतानके कमीनेपनको देखकर इतना तैशमें आ गया कि उसने वह उपहार लेनेसे इनकार कर दिया। उसने बीस हजार सिक्के उपहार लानेवालेको दे दिये, बीस हजार स्नानगृहके मालिकको दे दिये और बाकी बीस हजार एक शराबखानेवालेको दे दिये जो अचानक उस समय वहां मौजूद था।

इस अपमानको सुनकर सुलतान महमूद गरम हो उठा और उसने हुकुम दिया कि कविको हाथीके पैरों तले कुचलवा दिया जाय। फिरदौसीको इस बातका पता लग गया और भागकर तूस नामक नगरीमें जा बसा। यही उसका जन्मस्थान था।

आखिर सुलतानको लगा कि उसने फिरदौसीके साथ न्याय नहीं किया, बल्कि कमीनापन किया है। वह फिरसे कविका मान पाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता था। उसने अपने एक संदेशवाहकके साथ फिरदौसीके लिये सोनेकी साठ हजार मुहरें भेजीं और बहुत-से रेशमी, जरी, और मखमलके उपहार भी साथ कर दिये।

लेकिन हाय, जब उपहार पहुंचा तो बहुत देर हो चुकी थी।

सुलतानका संदेशवाहक राजाके मूल्यवान उपहार ऊंटोंपर लादे हुए तूसके एक दरवाजेसे घुसा और दूसरे दरवाज़ेसे फिरदौसी तूसीके भंगुर अवशेष श्मशान-यात्रा कर रहे थे।

चीनके लोग कहा करते थे कि हमारे सम्राट बहुत न्यायप्रिय हैं, वे हमेशा गरीबोंकी फरियाद सुनते हैं।

लेकिन एक दिन आया जब सम्राटके कान लोगोंकी फरियाद सुननेमें असमर्थ हो गये। राजा अचानक बहरा हो गया। वह चिड़ियोंका चहचहाना, वायुका सरसराना और मनुष्योंका बोलना सुननेमें असमर्थ हो गया।

सम्राट रो पड़े। चारों ओर सरदार और अफसर बैठे थे, उन्होंने लिख-लिखकर प्रार्थना की कि सम्राट इतने दुखी न हों।

सम्राटने कहा, "यह न सोचो कि मैं अपने लिये दुखी हूं, या मुझे इससे बहुत कष्ट होगा। मुझे दुःख इस बातका है कि मैं जरूरतमंदोंकी बात न सुन पाऊंगा।"

चारों ओर सन्नाटा छा गया। कोई न जानता था कि क्या कहे। सम्राटको कैसे सांत्वना दे।

स्वयं सम्राट ही चिल्ला उठे, "हां, मुझे सूझ गया एक उपाय! लोगोंमें मुनादी कर दो कि जबतक किसीको मेरी मददकी खास जरूरत न हो तबतक लाल कपड़े न पहने। जब मैं किसी स्त्री या पुरुषको लाल कपड़े पहने देखूंगा तो समझ जाऊंगा कि वह कष्टमें है और मेरी सहायता चाहता है। मेरे बहरे कान उसकी फरियाद सुन लेंगे और उसकी मदद करनेके लिये पूरी व्यवस्था कर दी जायगी।"

सहृदय सम्राटने बहरे होनेके कारण अपना काम बंद नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। उन्होंने मुहताज और जरूरतमंदोंको ढूंढ निकालनेका उपाय खोज निकाला।

हां, खोज लिया। शरीफ आदमी इस बातकी प्रतीक्षा नहीं करता कि दुःख उसके सामनेसे गुजरे। वह उसे खोज निकालनेकी कोशिश करता है।

*

कुछ हिंदुओंने मिलकर देव समाजकी स्थापना की है ताकि परोपकारके काम कर सकें। एक महीनेके कामके बारेमें कुछ इस तरहकी सूचनाएं छपी थीं।

पेशावर: दो महिलाओंने स्त्रियों और बच्चोंको हर रोज दो घंटे हिंदी पढ़ायी। पुरुषोंने घरों और अस्पतालोंमें जा-जाकर बीमारोंकी देख-भाल की, गो-सेवा की और रास्तेपर कांचके टुकड़े बीनकर रास्ता साफ किया।

मोगा: दो महिलाओंने लड़कियोंको हिंदी सिखायी। पुरुषोंने जानवरोंको चारा दिया और नये पेड़ लगाये। समाजके एक सदस्यने एक गरीब मजदूरको निःशुल्क पढ़ाया।

फीरोजपुर: आठ महिलाओंने बीमारोंकी देखभाल की। लड़कोंने बूढ़ी और अपाहिज गायोंकी सेवा की, अंधोंको रास्ता दिखाया और पेड़ोंको पानी दिया। एक और सदस्यने एक आदमीको सड़कपर पड़ा हुआ पाया। वह गाड़ीकी चपेटमें आकर गिर गया था और उसकी देखभाल करनेवाला कोई न था। यह सदस्य उसे उठाकर अस्पताल पहुंचा आया। एक और सदस्यने गांवोंका चक्कर लगाकर अनपढ़ निचली जातिके लोगोंको पढ़ाया और उन्हें सफाई और अच्छा रहन-सहन सिखाया।

सियालकोट: एक विधवा एक दूसरी विधवाके घर गयी जिसका इकलौता बेटा मर गया था। उसे सांत्वना दी और सन्तवाणी पढ़कर सुनायी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम देखोगे कि कुछ उदाहरणोंमें परोपकारने पढ़ाने-लिखानेका रूप लिया। अध्यापकका हृदय अज्ञान देखकर भर आता है। किसीको ज्ञानकी जरूरत है। ज्ञान भी रोटी और पानीकी तरह एक आदमीके द्वारा दूसरेको दिया जा सकता है।

*

भगवान् राम शिकारमें बलवान् और चतुर थे और उनका मन शिक्षण-कलामें बलवान् और चतुर था। जब वे जंगलमें जानवरोंका पीछा करते तो अपने साथ एक भाईको रखा करते थे। जब वे भोजन करते या आराम करते तो एक छोटा भाई उनके साथ रहता। और जब उन्होंने गुरुके घर जाकर चारों वेदोंका अध्ययन किया तो वह सब इस तरहसे सीख लिया मानों वह एक खेल या एक गान हो। जब उन्होंने वेद-पुराण आदि पढ़ लिये और उनका खजाना अपने अंदर जमा कर लिया तो उनकी यह इच्छा न हुई कि इस अमूल्य निधिको अपने पास ही छिपा कर रखें। उन्होंने अपने भाइयोंको भी शिक्षा दी।

जैसे भद्रता दूसरोंको अच्छा ज्ञान देना चाहती है उसी तरह वह अच्छे समाचार भी देना पसंद करती है। जब हनुमान दूसरोंको अच्छे समाचार दे सकते थे तो उनको कितना हर्ष होता था! सुनो :

भरत वनवासकी अवधिके पूरे चौदह वर्षतक रामके लिये प्रतीक्षा करते रहे। परम सुन्दर राम वन-वन मारे फिरे और लड़ाइयोंके संकटमेंसे गुजरते रहे। लेकिन भरतको मालूम न था कि रामपर क्या बीत रही है। जब चौदह वर्षकी अवधि समाप्त होनेको आयी तो विरहकी आग और भी भड़क उठी। रामका कहीं कोई समाचार न था।

बस, एक दिन और था चौदह वर्ष पूरे होनेमें। भरत कुशके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसनपर बैठे थे। उनका शरीर दुर्बल हो चुका था और बालोंकी जटाएं बन गयी थीं। वे बस "राम, राम, हा राम!" रटे जा रहे थे।

अचानक उनके सामने वानरप्रवर हनुमान आ खड़े हुए जिन्होंने इतनी लड़ाइयोंमें भगवान् रामका साथ दिया था, जो उनके कर्तव्यनिष्ठ सेवक थे। वे शुभ समाचार लेकर आये थे और हर्षके मारे स्वयं उनकी आंखें आंसुओंसे छलछला रही थीं। वे खुश थे कि वे भरतके दुःखको सुखमें, उनके आंसुओंको हास्यमें बदल सकेंगे।

उन्होंने कहा, "तुम जिनके विरहमें दिन-रात जलते हो वे आ गये हैं। शत्रुओंको युद्धमें पराजित करके, देवोंकी स्तुति स्वीकार करके भगवान् लक्ष्मण और सीताजीके साथ आ रहे हैं।"

भरत एकदम अपने दुःखदैन्यको भूल गये। उन्होंने पूछा, "यह शुभ समाचार लानेवाले तुम हो कौन?"

"मैं हूं पवनसुत हनुमान — भगवान् रामका एक सेवक।"

भरतने उन्हें गलेसे लगा लिया और बोले, "हां, सुनाओ, और सुनाओ रामके समाचार, मैं सब कुछ सुनना चाहता हूं।"

और हनुमानने उन्हें सारे समाचार सुनाये और अपने-आप भी बहुत प्रसन्न हुए कि आखिर वे भरतके मुरझाए शरीरमें फिरसे जान ला पाये।

*

और क्या आदमीका हृदय केवल आदमीके दुःखमें दुखी होता है और दया दिखाता है? नहीं, वह जानवरोंके दुःखमें भी दुखी और सुखमें सुखी होता है।

लोग एक स्त्रीकी ओर घृणासे देखकर निकल जाते थे। वे उसे पापी कहते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पापी स्त्रीने एक प्यासा कुत्ता देखा जिसकी जीभ लटक आयी थी। वह प्यासके मारे मरा जा रहा था। बिना आवाज किये बिचारा जानवर पानीके लिये प्रार्थना कर रहा था।

पापी स्त्रीने अपना जूता उतारा और उसे पासके कुएंमेंसे पानी-से भर लायी और वह पानी प्यासे कुत्तेके सामने रख दिया। प्यासेकी जान बच गयी।

लोगोंकी राय बदल गयी।

उन्होंने कहा, "भगवान्‌ने इसे क्षमा कर दिया है।"

वह पापी भले रही हो लेकिन वह मानवताका अर्थ समझती थी।

*

एक और सुनो:

एक आदमी हजरत मुहम्मदके पास आया। उसके हाथमें चिड़ियोंका एक घोंसला था। उसने हजरत मुहम्मदसे कहा। "हजरत, मैं एक जंगलमेंसे गुजर रहा था। मैंने इन चिड़ियोंकी चीं-चीं सुनी तो पेड़पर देखा। वहां यह घोंसला था।"

हजरतने कहा, "इसे जमीनपर रख दो।" घोंसला जमीनपर रख दिया गया और मां चिड़िया बड़ी प्रसन्नतासे चीं-चीं करती हुई अपने बच्चोंसे आ मिली।

हजरतने कहा, "अब इस घोंसलेको वहीं वापिस रख दो जहां यह था।"

फिर वे बोले, "सभी जानवरोंके साथ अच्छा व्यवहार करो, ऊंट जब स्वस्थ हों तो उनपर सवारी करो, पर वे थक जाएं तो उतर पड़ो। जब वे प्यासे हों तो उन्हें पानी दो।"

इस्लामकी हदीसों (धार्मिक ग्रंथों) में कहा गया है कि एक बार जन्नतके फरिश्तोंने खुदासे पूछा, "या अल्लाह, क्या दुनियामें चट्टानों-से भी सख्त कोई चीज है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां," खुदाने कहा, "लोहा चट्टानसे भी सख्त होता है, वह चट्टानको तोड़ सकता है।"

"और लोहेसे सख्त क्या है ?"

"आग, क्योंकि वह लोहेको पिघला सकती है।"

"और आगसे बढ़कर ?"

"पानी, वह आगको बुझा सकता है।"

"और पानीसे ज्यादा सख्त क्या है ?"

"हवा, क्योंकि वह पानीमें लहरें पैदा करती है।"

"और क्या उससे भी मजबूत कोई चीज है ?"

"हां, दयालु हृदय जो गुप्त रूपसे दान देता है, जिसके बाएं हाथको मालूम नहीं होता कि दायां क्या कर रहा है।"

आज दान देना ही दयाका मुख्य साधन नहीं है। हम कोमल हृदयसे दिये गये उपहारके द्वारा पड़ोसीकी मदद अब भी कर सकते हैं पर कहानीका मतलब यह है कि चाहे उपहार देकर हो या किसी और तरह, दूसरोंका स्नेह और मैत्री पानेके लिये दया या सौहार्द्र ही सबसे अच्छा साधन है।

अपने साथी प्राणीके दुःखसे दुःख और सुखसे सुख जागता है। सहानुभूतिका यही शानदार स्वभाव है।

हमारे सम्मेलन

(हम अपने सम्मेलनोंको ज्यादा अच्छा कैसे बना सकते हैं?)

कितनी ही समितियां बनती रहती हैं जो प्रायः देखते-ही-देखते समाप्त भी हो जाती हैं। इस विषयपर हमने एक दिन कहा था कि इनकी द्रुत मृत्युका कारण यह है कि इनके गठनमें कोई रूढ़िगत और अनियमित चीज आ जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तवमें इनका निर्माण एक ऐसे आदर्श रूपको सामने रखकर किया जाता है जो एक या अधिक मस्तिष्ककी उपज होता है, अथवा किसी ऐसे सूत्रके अनुसार किया जाता है जो सिद्धांत रूपमें तो अति सुन्दर होता है किंतु उन व्यक्तियोंकी अवहेलना करता है जो अपनी कठिनाइयों और दुर्बलताओंके साथ संगठनके सजीव कोष बनते हैं।

मेरे विचारमें किसी व्यक्ति या समूहको मनमाना रूप देना असंभव है। उसका रूप उसे बनानेवाले तत्त्वोंके गुणोंकी पूरी तरह बाहरी अभिव्यक्तिसे बनता है।

गठनके इस मूल नियमकी अवहेलनाके कारण ही एक-पर-एक असंख्य संगठन बनते रहते हैं और शीघ्र ही मृत्युको प्राप्त होते जाते हैं। क्योंकि वे ऐसे सजीव शरीर बननेके स्थानपर, जो स्वाभाविक वृद्धि, विकास और उन्नतिके योग्य हों, केवल जड़-तत्त्वोंका सम्मिश्रण बन जाते हैं जिनमें उन्नतिकी जरा भी संभावना नहीं रहती।

हमने यह निश्चय किया था कि हम इस नियमको ध्यानमें रखेंगे और अपनी इस छोटी-सी गोष्ठीके जीवनकी अवस्थाओंको पहलेसे ही निर्धारित करनेसे बड़ी सावधानीके साथ बचेंगे। पर इस गोष्ठीका तो अभी जन्म ही नहीं हुआ है, यह अभी मुश्किलसे गर्भकी आरंभिक अवस्थामें है। हमें इसके जीवनको नियमित रूप देनेसे पहले इसे अपने-आप निर्मित होनेके लिये और शनैः-शनैः खिलनेके लिये छोड़ देना चाहिये।

अतः इस गोष्ठीको किसी पूर्वनिर्धारित योजनाके अनुसार, या हममेंसे किसी एक या दूसरेके या फिर सबोंके सम्मिलित आदर्शके अनुसार बनानेका यत्न करना विनाशकारी मालूम होता है। ऐसा करनेसे हमारी गोष्ठी मतवादोंपर खड़ी कृत्रिम रचनाओंके समान होगी। इन रचनाओंकी आयु उन संस्थाओंसे कम होती है जो अपने सदस्योंकी विभिन्न प्रवृत्तियोंको एकत्रित करती हुई सहज-भावसे विकसित होती हैं।

निश्चय ही हमारी समिति विकसनशील होनी चाहिये, लंबी आयु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का आधार यही है। और यह तभी हो सकता है जब यह हममेंसे प्रत्येकको उन्नतिका अवसर प्रदान करे।

वास्तवमें यदि हम गभीर और सच्ची उन्नति चाहते हैं तो वस्तुतः यह हमारे ऊपर ही निर्भर है।

यदि हम अधिक ज्ञान, अधिक बुद्धिमानी प्राप्त करनेकी तीव्र अभीप्सा अपने साथ लायें तो यहां एक शांत अंतर्मुखी वातारण बनेगा जिसे मैं धार्मिक वातावरणका नाम देना चाहूंगी, यह वातावरण हमारी पूर्णताकी साधनाके बहुत अनुकूल होगा।

कई बार आध्यात्मिक वातावरण शब्दोंके आदान-प्रदानकी अपेक्षा कहीं अधिक सहायता पहुंचाता है। सुन्दर-से-सुन्दर विचार भी हमारी उन्नतिमें तबतक सहायक नहीं हो सकते जबतक कि हममें उन्हें अधिक उच्च भावनाओं, अधिक यथार्थ संवेदनों तथा अधिक श्रेष्ठ कार्योंमें उतारनेका दृढ़ संकल्प न हो।

अतएव हमारे संगठनके सुधारकी आवश्यक शर्त है हमारा अपना सुधार।

आओ, हम एक हों, अपनी चेतनाको अपने अंदरके भागवत 'मैं' से एकात्म कर लें, तब हमारा संगठन ऐक्यबद्ध हो जायगा। हम अपनी बौद्धिक शक्तियोंको उज्ज्वल करें, आलोकित करें, तब हमारा संगठन ज्योतिको अभिव्यक्त करेगा। हम निर्वैयक्तिक प्रेमको अपनी सारी सत्तामें व्याप्त होने दें, तब हमारा संगठन प्रेम विकीर्ण करेगा। और हम अपने-आपमें व्यवस्था स्थापित करें तो हमारा संगठन स्वतः व्यवस्थित हो जायगा, हमें उसके गठनमें मनमाना हस्तक्षेप करनेकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

संक्षेपमें, इस पृथ्वीपर जिस समष्टिगत जीवनकी सृष्टि करनी है हममेंसे प्रत्येक उसका एक-एक जीवंत कोष बने। साथ ही हम यह भी न भूलें कि इस सामूहिक गठनके अस्तित्व और कार्यका मूल्य तथा विश्व-संगतिके कार्यमें उसकी उपयोगिता पूरी तरहसे उसके कोषोंके गुणोंपर निर्भर होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धम्मपद

परे च न विजानन्ति मयमेत्थ यमामसे।
ये च तत्थ विजानन्ति ततो सम्मन्ति मेधगा॥६॥

अन्य लोग नहीं जानते कि हम यहां (संसार) से जानेवाले हैं। जो लोग इसे जानते हैं उनके मनके विकार शांत हो जाते हैं

जब तुम यह समझते हो कि अगले ही मुहूर्त्त तुम मर सकते हो तो तुरत तुम्हारे अंदर भौतिक वस्तुओंके प्रति अनासक्तिका भाव उदय हो जाता है; यह बिलकुल युक्तिसंगत बात है कि उसके बाद तुम केवल उसी बातका विचार करते हो जो इस भौतिक जीवनपर निर्भर नहीं करती और जो एकमात्र वह चीज है जो इस शरीरको छोड़ देनेके बाद भी तुम्हारी है, अर्थात् शाश्वत सत्ता है। बुद्ध "भगवान्" शब्दका व्यवहार नहीं करते, पर मूलतः यह वही वस्तु है।

पहले प्राचीन दीक्षाओंमें यह सोचना कि मैं अगले ही क्षण मर सकता हूं, साधनाका एक अंग था। इस साधनाका अनुसरण लोगोंको कुछ समयतक करना पड़ता था और इसका कारण यही था जिसका मैंने अभी वर्णन किया है, साथ ही यह भी कि मनुष्य मृत्युके समस्त भयको पार कर जाय और इस विषयमें अभ्यस्त हो जाय। जिस युगमें और जिस समय बुद्धने 'धम्मपद' की शिक्षा दी थी उस युगमें और उस समय पार्थिव अमरत्वकी संभावनाकी बात कभी व्यक्त नहीं की गयी थी, क्योंकि यह संभावना इतने सुदूर भविष्यके गर्भमें निहित थी कि उसके विषयमें कुछ कहनेका कोई मतलब ही नहीं हो सकता था।

आज श्रीअरविंद हमसे कहते हैं कि यह संभावना निकट आ गयी है और, बस, हमें इसकी तैयारी करनेकी आवश्यकता है। परंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार होनेकी संभावनाको भी ले आनेकी प्रधान शर्त्त यह है कि मृत्युके संपूर्ण भयको पूरी तरह निकाल दिया जाय।

तुम्हें न तो इससे डरना चाहिये और न इसकी कामना ही करनी चाहिये।

इससे ऊपर उठ जाओ, एक अखंड साम्यावस्थामें पहुंच जाओ, न तो इससे डरो न इसकी कामना करो।

४-१०-१९५७

सहनशीलता

सहनशीलता--प्रशंसाके लिये प्राणकी भूख--परिवर्तित प्राणके चिह्न

(जीवनमें कठिनाइयोंको सहना सीखो; सदा सफलताके पहले कठिनाइयोंका पहाड़ आता है। प्राणकी तुष्टिके लिये झूठी प्रशंसा नहीं, कड़वे सत्यका स्वागत करो; इससे प्राणका क्रमशः परिवर्तन होगा और कठिनाइयां अपेक्षया सरल हो जायंगी।)

सहनशीलता तुम्हारा आदर्श वाक्य हो। अपनी जीवनी-शक्तिको, अपनी प्राण-सत्ताको यह सिखाओ कि शिकायतें किये बिना महान् उपलब्धिके लिये आवश्यक सब प्रकारकी स्थितियोंको सह ले। शरीर बहुत सहनशील दास है। वह लद्दू जानवरकी तरह चुपचाप परि-स्थितियोंके भारको ढोता रहता है। प्राण-सत्ता ही हमेशा बेचैन रहती और बुड़बुड़ाती है। वह शरीरको बेहिसाब यातनाओं और दासतामें जकड़ती है। वह बेचारे शरीरको अपनी झक और तरंगके अनुसार कितना तोड़ती-मरोड़ती है और बड़े असंगत ढंगसे यह मांग करती है कि हर चीजको उसकी सनकके अनुसार रूप दिया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंतु सहनशीलताका सारतत्त्व यह है कि प्राण अपनी मनमानी पसंद-नापसंदको छोड़कर, अत्यंत कष्टकर स्थितियोंके बीच भी धीरज और समबुद्धि बनाये रख सके। यदि कोई तुम्हारे साथ बुरी तरह व्यवहार करे या तुम असुविधासे बचानेवाली किसी चीजसे वंचित रहो तो अपने-आपको घबराने न दो, हंसी-खुशीसे सह लो। कोई भी चीज तुम्हें जरा भी परेशान न करने पाये और जब कभी प्राण आडंबरपूर्ण अतिशयोक्तियोंके साथ अपनी छोटी-मोटी शिकायतोंका दफ्तर खोले तो जरा रुक जाओ और यह सोचो कि दुनियाके बहुत सारे लोगोंकी तुलनामें तुम कितने अधिक सुखी हो। क्षणभरके लिये सोचो पिछले युद्धमें जिन सैनिकोंने भाग लिया था उनपर क्या बीती थी। अगर तुम्हें इस प्रकारकी कठिनाइयां सहनी पड़तीं तो तुम्हें पता चलता कि तुम्हारा असंतोष कितना मूर्खतापूर्ण है। फिर भी मैं यह नहीं चाहती कि तुम्हें कठिनाइयोंका सामना करना पड़े। मैं सिर्फ इतना ही चाहती हूं कि तुम अपने जीवनकी जरा-सी नगण्य कठिनाइयोंको सहना सीखो।

सहनशीलताके बिना कभी कोई बड़ा काम पूरा नहीं किया जा सकता। अगर तुम महापुरुषोंके जीवन पढ़ो तो तुम्हें पता चलेगा कि उन्होंने अपने-आपको प्राणकी दुर्बलताओंके आगे कैसे चट्टानकी तरह निर्मम और कठोर बनाकर रखा था। आज भी हमारी सभ्यता-का असली अर्थ है प्राणके अंदर सहनशीलताके द्वारा भौतिकपर प्रभुत्व पाना। खेल-कूदकी भावना, साहस-कार्य और सब प्रकारकी कठिनाइयोंका बेधड़क सामना —— इसी सहनशीलताके आदर्शके भाग हैं। स्वयं भौतिक विज्ञानमें प्रगति सफलतासे पहले आनेवाली अनेक कठिनाइयों, परीक्षाओं और संकटोंपर निर्भर होती है। निश्चय ही हमने आश्रममें जिस महत्त्वपूर्ण कामको हाथमें लिया है, उसमें सहन-शीलताकी कम आवश्यकता नहीं है। तुम्हें करना यह चाहिये — जैसे ही तुम्हारा प्राण विरोध या प्रतिवाद करे उसे अच्छी तरहसे मार लगाओ। जहांतक भौतिकका संबंध है, सावधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहनेकी और कुछ लिहाज करनेकी जरूरत है लेकिन प्राणके साथ तो एक ही उपाय है, अच्छी तरहसे लात जमाओ। प्राण जैसे ही शिकायत करना शुरू करे कि उसे लात लगाओ क्योंकि उस तुच्छ चेतनामेंसे निकलनेका और कोई उपाय नहीं है जो सत्य और प्रकाश-की मांग करनेकी जगह सुख-साधनों और सामाजिक सुविधाओंको ही महत्त्व देती रहती है। प्राणकी सर्वसामान्य मांगोंमेंसे एक है प्रशंसा-की मांग। वह आलोचनासे घृणा करता है और ऐसा व्यवहार नहीं चाहता जिससे यह लगे कि उसका महत्त्व कम है। लेकिन उसे हमेशा झिड़की और निंदाके लिये तैयार रहना चाहिये और उन्हें पूरी शांतिके साथ सह सकना चाहिये। उसे प्रशंसाकी ओर ध्यान न देना चाहिये, यह न भूलना चाहिये कि आत्मतुष्टिकी हर गति मिथ्यात्वके स्वामियोंकी वेदीपर एक भेंट होती है। प्राण शक्तिके सूक्ष्म जगत्की सत्ताएं, जिनके साथ हमारे प्राणका संबंध होता है, अपने भक्तोंकी पूजापर ही जीती और पनपती हैं। इसीलिये वे हमेशा नये-नये मत-मतांतरों और धर्मोंकी प्रेरणा देती रहती हैं ताकि उनकी पूजा और ठकुर सुहातीका भोज कभी समाप्त न होने पाये। इसी तरह तुम्हारी अपनी प्राणमय सत्ता और उसके पीछे-की प्राणिक शक्तियां दूसरोंकी दी हुई खुशामदको हजम करके पन-पती हैं, अपने अज्ञानको हृष्ट-पुष्ट करती हैं। लेकिन तुम्हें याद रखना चाहिये तुम्हारी तरह ही अज्ञानके उसी स्तरपर रहनेवालोंकी प्रशंसाका वास्तवमें कोई मूल्य नहीं है, वे उनकी आलोचनाओंकी तरह ही व्यर्थ हैं। चाहे वे किसी भी स्रोतसे क्यों न आती हों वे बेकार और खोखली होती हैं। दुर्भाग्यवश प्राण एकदम गले-सड़े भोजनके लिये ही लालायित रहता है और इतना लोभी होता है कि वह एकदम अक्षमताकी मूर्तिसे भी प्रशंसा स्वीकार कर लेता है। यहां मुझे पैरिसकी कथा-प्रदर्शनीके वार्षिक उद्घाटनका ख्याल आ रहा है जहां गणतंत्रके राष्ट्रपति चित्रोंको देखते हैं और बड़े अर्थपूर्ण ढंगसे यह खोज करते हैं कि एक भद्दश्य है और दूसरा रूप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र और चित्रकलाके बहुत ही अंतरंग आत्मशोधवाले ज्ञानकी अदा-के साथ टिप्पणियां करते हैं। चित्रकार भली-भांति जानते हैं कि ये टीका-टिप्पणियां कितनी असंगत हैं, फिर भी अपनी प्रतिभाके प्रमाणस्वरूप राष्ट्रपतिके कथनको उद्धृत करनेका कोई मौका नहीं चूकते। मानवजातिका प्राण कीर्ति और ख्यातिके लिये बहुत अधिक भूखा होता है।

लेकिन जिस चीजका सचमुच मूल्य है वह है सत्यकी राय। जब कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसका भागवत सत्यके साथ संबंध हो और जो उसे अभिव्यक्त भी कर सके तब उसकी दी हुई राय कोरी प्रशंसा या आलोचना नहीं होती। उससे प्रकट होता है कि भग-वान् तुम्हारे बारेमें क्या सोचते हैं, तुम्हारे गुणोंका क्या मूल्य आंकते हैं, वह तुम्हारे प्रयासोंपर उनकी अचूक मुहर होती है। तुम्हारी यही इच्छा होनी चाहिये कि सत्यकी उक्तिके सिवाय किसी-का मान न करो और इस तरह अपना मानदंड ऊंचा करनेके लिये तुम्हें हमेशा अपने अंदर अग्निको, अंतरात्माकी रूपांतरकी ज्वालाको, प्रज्ज्वलित रखना चाहिये। यह ध्यान देने योग्य बात है कि जब यह अग्नि भड़क उठती है तो तुम्हारे अंदर उस सस्ती प्रशंसा-के लिये घृणा-सी पैदा हो जाती है जो पहले बहुत संतोषप्रद मालूम होती थी और तुम समझ जाते हो कि प्रशंसाके लिये हवस अरूपां-तरित प्रकृतिकी एक निम्नगति थी। तुम्हारे अंदर वर्तमान अपर्या-प्तताका तीव्र भान भरकर अग्नि तुम्हें यह दिखाती है कि तुम्हारे आगे विकासका कितना बड़ा क्षेत्र पड़ा है। तुम्हें अपने गुण-गान-के प्रति इतनी अरुचि हो जाती है कि जो तुम्हें हितैषी लगते थे उनके प्रति तुम्हारे अंदर कटुता आ जाती है और सभी आलोचना और निंदा सत्यके प्रति अभीप्सामें सुखद समिधाका रूप ले लेती है। तुम दूसरोंके विरोधके कारण अपमानित या खिन्न नहीं होते। क्यों-कि तुम कम-से-कम आसानीसे साथ उसकी उपेक्षा कर सकते हो और अधिक-से-अधिक तुम उसे अपनी वर्तमान पुनरुद्धार वंचित अव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थाका एक और प्रमाण मानते हो जो तुम्हें अपने-आपसे ऊपर उठाकर भगवान्‌के प्रति समर्पण करनेके लिये उत्तेजित करती है।

अग्निके प्रभावसे तुम्हारे प्राणके परिवर्तनका एक विशेष लक्षण यह है कि हंसते-हंसते कठिनाइयों और बाधाओंका सामना कर सकते हो। तुम अपनी भूलोंके लिये टाट ओढ़कर, भभूत लगाकर, रोने-धोने नहीं बैठ जाते, या इसी क्षण उच्च स्तरतक न पहुंच पानेके कारण एकदम हतोत्साह नहीं हो जाते। तुम खिन्नताको एक मुस्कानसे ही भगा देते हो। तुम्हारे लिये सौ भूलोंका भी बहुत महत्त्व नहीं होता। एक मुस्कानके साथ तुम पहचान लेते हो कि तुमने भूल की है और मुस्कानके साथ ही यह निश्चय कर लेते हो कि भविष्यमें यह मूर्खता फिरसे न दोहरायी जायेगी। सभी खिन्नता और विषादको विरोधी शक्तियां ही पैदा करती हैं। उन्हें तुम्हारे ऊपर उदासी फेंककर जितनी खुशी होती है उतनी और किसी चीजसे नहीं होती। नम्रता एक चीज है और खिन्नता एक दूसरी ही चीज। नम्रता एक दिव्य गति है और खिन्नता अंधकारमय शक्तियोंकी भौंड़ी अभिव्यक्ति है। इसलिये अपनी कठिनाइयोंका प्रसन्नताके साथ सामना करो, निरंतर प्रसन्नताके साथ रूपांतरके मार्गमें आनेवाली बाधाओंका मुकाबला करो। दुश्मनको खदेड़नेका सबसे अच्छा तरीका है उसके मुंहपर हंसना। तुम उसके साथ कई-कई दिनोंतक भिड़ते और टकराते रहो और उसकी शक्ति जरा भी कम होती हुई न दीखेगी। बस, एक बार उसके सामने हंस दो और वह दुम दबाकर भाग जायगा! आत्मविश्वास और भगवान्‌पर श्रद्धाभरी हंसी दुश्मनको सबसे अधिक नष्ट-भ्रष्ट कर देनेवाली शक्ति है। वह शत्रुके मोर्चेको तोड़ देती है, उसकी सेनाओंमें खलबली मचा देती है, और तुम्हें विजयीके रूपमें आगे बढ़ाती है।

परिवर्तित प्राण उपलब्धिकी प्रक्रियामें आनंदका अनुभव करता है। वह इस प्रक्रियामें आनेवाली कठिनाइयोंको बड़े उत्साहके साथ स्वी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार करता है। वह सबसे अधिक प्रसन्न तब होता है जब उसे सत्यके दर्शन कराये जायं और उसकी निम्न प्रकृतिमें मिथ्यात्वके खेलको खोलकर सामने रख दिया जाय। वह योग पीठपर भारी बोझ ढोनेके रूपमें नहीं, बल्कि एक आनंददायक कार्यके रूपमें करता है। वह अधिक-से-अधिक सहनेके लिये तैयार रहता है यदि यह सहना रूपांतरकी शर्त हो। वह बिना शिकायत किये, बिना बुड़-बुड़ाये खुशीसे सब कुछ सहता है, क्योंकि यह सहना भगवान्‌के लिये है। उसे अटल विश्वास होता है कि विजय प्राप्त की जायेगी। वह अपने इस विश्वासमें क्षणभरके लिये भी नहीं डिगता कि श्री-अरविंदने रूपांतरका जो महान् कार्य हाथमें लिया है उसकी पूर्णा-हुति सफलतामें ही होगी। क्योंकि यह वास्तवमें एक तथ्य है, हमने जो काम हाथमें लिया है उसके परिणामके बारेमें संदेहकी छायातक नहीं है। यह कोई परीक्षणभर नहीं है, बल्कि अतिमानस-की अनिवार्य अभिव्यक्ति है। परिवर्तित प्राणको विजयका पूर्ण बोध होता है, वह प्रगतिकी ओर संकल्प बनाये रहता है और कभी पीठ नहीं दिखाता। वह अपने-आपको ऐसी शक्तिसे भरा हुआ अनुभव करता है जो भगवान्‌की विजयके बारेमें निश्चिततासे आती है। उसे यह बोध होता है कि भगवान् उसके अंदर उपस्थित हैं और जो करना है वह कर रहे हैं और उसमें शत्रुओंका प्रतिरोध करने और अंतमें उनपर विजय पानेकी अविचल शक्ति भरते रहते हैं। वह निराश क्यों हो? शिकायत क्यों करे? रूपांतर होकर रहेगा। उसे कभी कोई न रोक सकेगा, सर्वशक्तिमानके आदेश-को कोई विफल नहीं कर सकता। इसके लिये शंका, संकोच और दुर्बलताको फेंक दो उस महान् दिवसके आनेतक, जब यह लंबा युद्ध चिरस्थायी विजयमें बदल जायेगा, बहादुरीके साथ सहनेका संकल्प कर लो।

(मातृवाणी, भाग ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयपर विजय

सहसा ठण्डी-ठण्डी तेज हवाओंका अप्रिय स्पर्श पा मैं कच्ची नींदमें चौंक पड़ी। दो-तीन बार पलकें झपकायीं और इर्द-गिर्द दृष्टि फेरी। पहले-पहल, सुनहले स्वप्नोंसे भीगे मेरे तन्द्रिल नयन उस ठोस और काले अंधकारका सामना न कर सके। लेकिन कुछ देरतक उसे घूरनेके बाद, एकाएक, खिड़कीके बाहर, रत्नजटित स्वर्गका एक टुकड़ा मेरे नयनोंके आगे नाच उठा। आह, कितनी रौनक, कितना लावण्य ! सभी तारे टिमटिमा रहे थे। लगता था काली, गहरी निशाको मण्डित करनेके लिये ब्रह्माने विशेष महार्घ रत्न चुने थे और चुनकर उन्हें सुव्यवस्थित करके रख दिया था। ऐसा प्रतीत होता था मानों धरापर प्राणियोंका सर्जन करके उन्हें संतोष न हुआ था। क्योंकि उन रत्नोंको लेकर उन्होंने एक और सृष्टि रच डाली थी। इधर, पूरबकी ओर एक नन्हें-से भालूका आकार दिखायी दे रहा था तो उधर कुछ ही दूरीपर एक शिकारी तैनात था। जिधर दृष्टि जाती उधर तरह-तरहके आकार खड़े थे। जानवरसे लेकर मनुष्य-तक — सभी विराजमान थे।

हवाका एक और तेज झोंका आया तो मेरा विचार-प्रवाह कट गया, मैं कांप उठी। आसमानके सभी तारे और जोरसे टिमटिमाने लगे। ऐसा लगता था मानों कोई दैत्य एक ही फूंकसे सब तारों-को बुझानेकी कोशिश कर रहा था और वे बेचारे उसका विरोध करनेके भरसक प्रयासमें लगे थे।

लेकिन . . . यह क्या ? अगले ही क्षण एक-एक करके सारे नक्षत्र बुझने लगे। आहिस्ता-आहिस्ता अंधकारने उनको हड़प लिया, उनके प्रकाशमय अस्तित्वको निगल गया। काले-काले विशालकाय मेघोंने दसों दिशाओंमें डग बढ़ा दिये। पलक झपकानेकी देर थी कि सर्वत्र अंधकार-ही-अंधकार छा गया। और उसके साथ-ही-साथ, रातकी नीरवताको चूर-चूर करती एक भयंकर कड़कड़ाहट सुनायी दी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली कौंधी। पलभरके लिये सब कुछ प्रकाशित हो गया लेकिन अगले ही क्षण फिरसे अंधकारका साम्राज्य ! और...मूसलाधार-का भयावह शोर...सचमुच तूफान पूरे जोरोंपर था...

*

डर मनुष्यका सबसे भयंकर शत्रु है। वह सुन्दरको कुरूप बना देता है, मनुष्योंको सत्यवादी बननेसे रोकता है, वीरोंमें वीरको कायर बना डालता है। वह एक बलवान् विरोधी शक्ति है जो धरा-को अपने वशमें करनेका दृढ़ प्रयास कर रही है। वह उस दिन-की प्रतीक्षामें है जब वह सभी सकारात्मक चीजोंको हड़प लेगी ताकि संपूर्ण धरापर उसीका राज्य हो सके।

लेकिन सब चीजोंको जन्म देनेवाले परमात्मा अपनी सृष्टिकी रक्षा करते हैं। उनका विधान है संतुलन। एक ओर यदि हैं लोभ, मिथ्यात्व, ईर्ष्या, अंधकार और कुरूपता जैसी विरोधी शक्तियां जो घमण्डमें आकर अपने-आपको सृष्टिका प्रभु मान बैठी हैं, और भग-वान्को माननेसे साफ इंकार करती हैं, तो दूसरी ओर हैं भगवान्की ओर जानेवाले मार्गको प्रशस्त करनेवाले प्रेम, सत्य, प्रकाश, आनंद और सौंदर्य।

जब अंधकार दूर-दूरतक फैल जाता है और धराको प्रकाश नहीं दिखायी देता तो वह भगवान्को पुकारती है और वे तुरन्त उसकी रक्षा करनेके लिये उसके वक्षःस्थलमें प्रकाशकी एक चिनगारी बो देते हैं।

जब मिथ्यात्व डग बढ़ाने लगे तो भगवान् सत्यके शस्त्रसे उसकी प्रगतिको रोक देते हैं।

अगर हम आंखें खोलकर देखें तो साधारण जीवनमें ऐसे सैंकड़ों उदाहरण मिल जायेंगे जहां हम जानबूझकर आंखोंपर पट्टी बांधकर चलना पसंद करते हैं।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी आंखोंके आगे वह भयावह दृश्य देख मैं मानों वहीं जम गयी। मेरे रोम-रोममें एक तीव्र स्पंदन दौड़ गया — भयका।

गरजते बादलका शोर, चुंधियानेवाली बिजलीके कोड़े, चीखती हुई, पागलोंकी तरह दौड़ी जाती तेज हवाएं और ऊपरसे मूसलाधार वर्षा !

मेरे दिलकी धड़कन तीव्र होती जा रही थी, मनमें एक-से-एक भयावह विचार चक्कर काट रहे थे, मेरा अंग-प्रत्यंग डरसे सिहर रहा था।

क्या भगवान्‌ने धरतीको भुला दिया था ? शायद इसीलिये वह किसी दैत्यके चंगुलमें जा फंसी थी जो दया नामकी चीजसे बिलकुल अपरिचित है, उसके पत्थर जैसे हृदयको तड़पती धरा देखकर आनन्द मिल रहा था। बादलोंका गर्जन था उसका अट्टहास और बिजलीकी कौंध उसकी क्रूरताभरी आंखोंकी चमक...।

कल्पनाओंसे जरा छुट्टी मिली तो मैंने देखा मैं अपने-आपको समझानेकी कोशिश कर रही थी, "इसमें डरनेकी क्या बात है ? कायर कहींकी ! बस, जरा-से तूफानसे डर गयी ? अगर तुझे अपने देशके लिये लड़ना पड़े तो क्या युद्धक्षेत्रसे नौ-दो-ग्यारह हो जायगी ? आखिर साहस नामकी कोई चीज भी तो होती है।"

लेकिन उपदेशकी बूंदें चिकने घड़ेपर गिर रही थीं। मैं अपने पलंगपर सिकुड़ी-सिमटी, मानव होते हुए भी भीगी बिल्ली बनी बैठी थी। मनमें सोच रही थी — अभय अमरता है और भय विनाश। मैं टूट रही हूं।

मैंने आंखें मूंदकर उस दृश्यको ओझल करना चाहा। लेकिन बिजलीकी चमकती सर्पिल रेखा मेरे मुंदे नयनोंके आगे भी नाचती रही। इसपर तुर्रा यह कि कल्पना फिरसे लौट आयी और लगी नये-नये महल बनाने।

दूसरी ओर मैंने सोचा, 'इस निराले भयका क्या कारण हो सकता है ? बिना विरोध किये मैं उसे क्यों अपने ऊपर अधिकार पा लेने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देती हूं? यह तो बहुत बुरी बात है। मेरी ओरसे विरोध तो होना ही चाहिये। भय दबे पैरों घुस आता है और मैं चूंतक नहीं करती। इस तरह तो इसका परिवार बढ़ता ही जायगा। हां, याद आ गयी, भयके कीटाणु अंधेरेमें ही पनप सकते हैं। श्रद्धाका प्रकाश आया नहीं कि सब समाप्त।"

यह सोचकर मैंने श्रद्धाकी अग्निमें भयकी आहुति दे डाली। मुझे ऐसा लगा मानों मेरे कंधोंसे कोई भारी बोझ हटा दिया गया है। मेरा मन शांत होने लगा। मेरी देह, भयके पंजोंसे मुक्त, आहिस्ता-आहिस्ता शिथिल होने लगी। मैंने अपनी नजर बाहर, आसमानकी तरफ घुमायी। वर्षा अभीतक हो रही थी। बादल और जोरसे गरज रहे थे, बिजली चमक रही थी, लेकिन मुझे डर न लग रहा था। मेरे ओठोंपर एक मुस्कान लहरा उठी और मैंने सोचा: "क्या मैं इससे डरा करती थी? कितना सुन्दर है यह दृश्य! ब्रह्मा सचमुच कलाकार हैं, यह कितना सजीव और मनोहर चित्र आंका है उन्होंने!" मैं धीरे-धीरे उठ खड़ी हुई और खिड़कीकी ओर बढ़ने लगी...

*

आज, जब भी वर्षा होती है तो मैं घरपर नहीं टिक सकती। कभी-कदास बैठूं भी तो दम घुटने लगता है और मैं तुरंत बाहर निकल पड़ती हूं। अपने शरीरपर पानीका शीतल और सुखद स्पर्श पाकर मैं पुलकित हो उठती हूं, बिजलीकी नाचती, चमकती रेखा कितनी मनोहर प्रतीत होती है, बादलोंका गर्जन मानों बधावे बजाता है।

इसी तरह छोटे पैमानेपर शुरू करके पृथ्वीसे सब बुरी शक्तियोंको भगाया जा सकता है ताकि धरती मातापर वह दिन जल्दी-से-जल्दी उगे जब सर्वत्र प्रेम, प्रकाश और परमानन्दका साम्राज्य हो सके।

—कनिष्ठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सरदार

जापानमें समुद्रके किनारे एक छोटा-सा गांव था जिसके दो तरफ दो पहाड़ियां थीं। एक पहाड़ीपर शिन्तो धर्मका मन्दिर था और दूसरीपर गांवके मुखिया हामा-गूची-गोहेका मकान था।

गांवके लोग हामा-गूची-गोहेसे बहुत प्यार करते थे। वह समझ-दार था, सबकी सेवा करता था, उनके प्रति सद्भाव रखता था और स्वभावसे उदार था। वह अमीर किसान था लेकिन अब वह बूढ़ा हो गया था। उसकी अवस्था सौसे ऊपर थी। अब उसके बेटे खेतका काम संभालते थे। गांवके लोग हामा-गूची-गोहेको बहुत आदरकी दृष्टिसे देखते थे। उनकी दृष्टिमें वह बहुत बड़ा सरदार था और जरूरत पड़नेपर वे उसके पास सलाह करने आया करते थे।

इस छोटे-से गांवमें लगभग पांच सौ आदमी रहते थे। वे सीधे-सादे और ईमानदार थे। उनका मुख्य पेशा खेती करना और मछली पकड़ना था।

एक दिन शिन्तो धर्मका कोई त्योहार था। सभी लोग अपने-अपने घर और मन्दिरको सजानेमें लगे थे। उन्होंने अपने घरोंमें रंग-बिरंगी कन्दीलें लगायी थीं और रास्तोंपर भी बांसोंपर कन्दीलों-की कतारें लगा दीं।

बूढ़ा हामा-गूची-गोहे पहाड़ीपरसे उतर न सकता था। वह अपने पोते चोशिरोको लिये अपने मकानके बरामदेमें बैठा गांवकी तैयारियां देख रहा था और अपने बचपनकी बातें सोच रहा था। उसके घरके और सब लोग उत्सवमें भाग लेनेके लिये गांव गये हुए थे।

अचानक हामा-गूची-गोहेने देखा कि समुद्र क्षितिजमें बढ़ रहा है। गांवके सभी लोगोंने यह देखा। उन्हें अचम्भा भी हुआ और मजा भी आया और सब-के-सब उल्लूकी तरह उसकी ओर दौड़े। पांच मिनटमें गांव खाली हो गया। समुद्र लगभग तीन किलोमीटर बढ़ आया था। लोग उसे देखनेके लिये भागे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हामा-गूची-गोहेको याद हो आयी, उसके बाबाने एक ऐसी ही घटना सुनायी थी जिसका अंत बहुत बड़ी मुसीबतमें हुआ था। उसने सोचा, "अब ज्यादा समय नहीं है, मुझे इन सबको पहाड़ीपर बुला लेना चाहिये। अगर मैं अपने पोतेको भेजूं तो वहांतक जाकर बुलानेमें बहुत अधिक समय लग जायगा। अगर मैं मंदिरकी घंटी बजवा दूं तो सब लौट तो आयंगे पर चोशीरोको पहाड़ीपरसे उतरकर मंदिरमें जानेमें बहुत देर लगेगी।"

अचानक उसे एक ख्याल आया। उसने चोशीरोको एक, मशाल लानेके लिये भेजा। जापानी लोग हमेशा मशाल तैयार रखते हैं क्योंकि समय-समयपर भूकम्प और तूफान आते रहते हैं और उस समय सब बत्तियां बुझ जाती हैं और केवल मशालसे ही रोशनी की जा सकती है।

चोशीरो एक बड़ी-सी मशाल ले आया। हामा-गूची-गोहेने उसे जलाया और घरके पीछेकी ओर चला। वहां धानका ढेर लगा था। यह सारे सालकी उपज थी। उसने मशालसे सारे धानमें आग लगा दी। चोशीरो यह देखकर रोने लगा। उसने समझा कि उसका बाबा पागल हो गया है। हामा-गूची-गोहे शांत था और एकके बाद एक ढेरमें आग लगाता जा रहा था। जब सब ढेरोंमें आग लग गयी तो वह चुपकेसे अपने स्थानपर वापिस आ गया और तमाशा देखने लगा। आग बढ़ रही थी और उसकी लपटें आकाशकी ओर लपलपा रही थीं।

गांवके लोगोंने नीचेसे देखा कि उनके प्यारे मुखियाके घरमें आग लगी है, वे उसे बचानेके लिये दौड़ पड़े। आगको देखकर सामनेकी पहाड़ीवाले मंदिरमें घंटी बजा दी गयी। सब लोगोंने दौड़ना शुरू कर दिया।

जो लोग आये वे गांवके मजबूत जवान लोग थे जो झपटकर पहाड़ीपर चढ़ सके। उन्होंने आते ही आग बुझाना चाहा लेकिन हामा-गूची-गोहेने उन्हें मना कर दिया और कुछ प्रतीक्षा करनेके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये कहा। उन लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ; लेकिन वे मुखियाका मान करते थे इसलिये चुप रह गये। चोशीरो फिरसे रो पड़ा। उसने लोगोंको सारी कहनी सुनायी और कहा कि इसके बाबाका दिमाग चल गया है।

अब बच्चोंकी बारी आयी। वे भी मुखियाके घरको बचानेके लिये बड़ोंकी मदद करने आये थे। उनके बाद आयीं स्त्रियां और फिर बूढ़े जो यह जाननेके लिये उत्सुक थे कि उनके मुखियाके यहां आग कैसे लगी। मुखियाने जोरसे पूछा, "सब आ गये? कोई बाकी तो नहीं रहा नीचे?"

"हां, सब आ गये।"

मुखियाने उंगलीसे समुद्रकी तरफ इशारा करते हुए कहा, "वह देखो, मैंने अपने धानमें आग क्यों लगायी थी, उसका कारण देख लो।"

सभी आंखें क्षितिजकी ओर मुड़ गयीं। समुद्र बड़ी तेजीके साथ, शोर मचाता हुआ आगे बढ़ा रहा था। पहली जबरदस्त लहरने गांवके सभी मकानोंको भूमिसात् कर दिया। कुछ भी बाकी न रहा। लहर पहाड़ीतक आ पहुंची और पानीकी फुहारोंने पहाड़ीपर खड़े लोगोंको भी भिगा दिया। दूसरी और तीसरी लहरोंने पानीका काम पूरा किया। पहलीने जो कुछ तोड़ा था ये उसे अपने साथ बहा ले गयीं। इसके बाद समुद्र शांत होने लगा। लोगोंने देखा जहां उनका गांव खड़ा था वहां अब खाली जमीन पड़ी थी लेकिन उनके मुखिया हामा-गूची-गोहेकी बुद्धिमत्तासे उनमेंसे एक भी आदमी नहीं मरा।

लोगोंने उसे बहुत धन्यवाद दिया लेकिन अब वह कंगाल हो गया था। उसके पास जो कुछ था सब जलकर राख हो चुका था। लोग उसकी सहायता करना चाहते थे लेकिन कैसे करते, उनका भी तो सब कुछ नष्ट हो चुका था।

हामा-गूची-गोहे प्रसन्न था कि उसने पांच सौ जानें बचा लीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ दिनोंके बाद सरकारको इस बरबादीका हाल मालूम हुआ तो वहांसे गांवको फिरसे बसानेके लिये सहायता आयी। गांव-वाले इस बातको नहीं भूले कि हामा-गूची-गोहेने उनके प्राण बचानेके लिये कितना बड़ा त्याग किया था। और आज भी बहुत-से बाबा अपने पोतोंको यह कहानी सुनाते हैं और बताते हैं कि उनके पूर्वजोंका जीवन हामा-गूची-गोहेने ही बचाया था।

मुखिया बनना आसान नहीं है। सच्चा मुखिया हमेशा अपने नागरिकोंकी भलाई करनेमें लगा रहता है। वह अपना अमूल्य समय देता है, अपना आराम, अपना संतोष और सुख, सब कुछ उनके लिये न्यौछावर कर देता है। उनके सुख-दुख अपने ऊपर ले लेता है और अपनी संपदा उन्हींके काममें लगा देता है। इतना ही नहीं, अपनी प्रजाके लिये अपने प्राणकी बाजी लगानेको तैयार रहता है। वह जिनपर शासन करता है उनके भलेके लिये अपना सब कुछ लगा देता है। उसे बस उनकी भलाईकी ही चिंता रहती है जैसे हामा-गूची-गोहेने पांच सौ आदमियोंको बचानेके लिये अपना सब कुछ कुरबान कर दिया।

सोसायटी समाचार

पहली और दूसरी दिसंबरको आश्रम स्कूल जो अब 'श्रीअरविन्द अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा केंद्र' कहलाता है, की वर्षगांठ मनायी जाती है। इस साल स्कूलकी तैंतीसवीं वर्षगांठ है। हर साल पहली दिसंबरको आश्रम रंगमंचपर एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है। पिछले साल श्रीअरविन्दका नाटक 'एरिक' किया गया था और इस बार उन्हींकी कविता 'लव ऐण्ड डेथ' पर आधारित नृत्य-नाटिका होगी।

दूसरी दिसंबरको शारीरिक शिक्षा विभागका वार्षिक कार्यक्रम होता है। लगभग ४०० सदस्य उसमें भाग लेते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५ और ९ दिसंबर श्रीअरविन्दकी महासमाधि दिवस हैं। पांच तारीखको सुबह श्रीअरविन्द-कक्षके दर्शनके बाद समाधिके चारों ओर ध्यान होता है। ९ तारीखको केवल ध्यान।

'आल्वेज़ बेटर, फार्वर्ड' सिद्धि-दिवसकी ५० वीं वर्षगांठके उपलक्ष्यमें सोसायटी द्वारा प्रकाशित एक परिचय पुस्तिका। मूल्य २), 'शब्द'से मिल सकती है।

अहमदाबादके 'गुजरात साहित्य परिचय' ने श्री पूजालालको 'सावित्री'का गुजरातीमें अनुवादके लिये पुरस्कार दिया है।

सिंगापुरमें श्रीअरविन्द और माताजीकी सभी मुख्य रचनाओं तथा आश्रमके अन्य प्रकाशनोंकी प्रदर्शनी हुई। इसके अतिरिक्त आश्रमके हाथ-बने कागजकी चीजें भी थीं।

१५ मई को **लंदन**में 'श्रीअरविन्द सोसायटी' की वार्षिक सभा हुई। सदस्य प्रत्येक मंगलवार और शनिवारको बैठक करते हैं। अन्य क्रिया-कलापोंके साथ-साथ आश्रम तथा ओरोवीलमें बनी चीजोंकी बिक्री होती है।

लुधियानामें कालेजके अध्यापकों और विद्यार्थियोंके लिये एक शैक्षिक शिविरकी तैयारी की गयी थी। पहले भाषण हुए, वृत्तचित्र दिखाये गये और अंतमें 'सावित्री' पर आधारित 'मृत्युंजय' नामका एक नाटक किया गया।

भुज (कच्छ, गुजरात) में 'श्रीअरविन्द प्रार्थना केंद्र' ने २४ दिसंबर से ३ अक्तूबरतक आश्रमकी पुस्तकों तथा आश्रममें बनी चीजोंकी प्रदर्शनी तथा बिक्री की। इसी केंद्रने 'बच्चोंके श्रीअरविन्द' तथा 'हमारी मां' पुस्तिकाओंकी २०० प्रतियां कच्छके स्कूलोंमें मुफ्त बांटीं; श्री-दयालाल देसाईकी गुजराती पुस्तिका 'श्रीअरविन्द जीवन गाथा' छापी।

बड़ौदामें २५ से २७ सितंबरतक एक कार्यक्रम हुआ, अध्यक्ष थे श्री रामभाई अमिन, मुख्य अतिथि थे आश्रमके श्री माधव पंडित। उन्होंने श्रीअरविन्दसंबंधित विभिन्न विषयोंपर भाषण दिये। उन्होंने

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

★

INDIAN TEA
STORAGE AGENCY

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079528

Best wishes from:

Swadeshi Cotton Mills Co. Ltd.

PONDICHERRY (South India)

(Regd. Office : Swadeshi House, Civil Lines, Kanpur.)

MANUFACTURERS OF QUALITY FABRICS:

Drills & Cellular :

Bleached, Dyed, Mineral Khaki, Mercerised

Poplins & Sheetings :

Bleached, Dyed, Plain & Printed, Mercerised

Canvas :

Water Repellent

and

Yarn :

In different counts

Leading Suppliers of textile stores to Defence and other Government departments.

Other Mills at:

Kanpur (Head Office), Naini, Maunath Bhanjan and Rae Bareli in the State of Uttar Pradesh and Udaipur in the State of Rajasthan

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनका प्रयोजन धन कमाना नहीं है। धनका प्रयोजन नये सृजन-के आगमनके लिये पृथिवीको तैयार करना है।

— श्रीमां

राहुल ट्रान्सपोर्ट प्रा. लिमिटेड

मुख्यालय

तखतमल इस्टेट,
अमरावती ४४४६०१
दूरभाष : २२३६

थाना बुकिंग

एम. श्री. भाटिया कम्पाऊण्ड,
सवानी ट्रान्सपोर्टके निकट,
पूर्वी राष्ट्रपथ
दूरभाष : ५९६००७

बंबई कार्यालय

१३२, परसेपोलिस
प्लाट क्रं. १००
कफ परेड,
बंबई–४००००५
दूरभाष : २१६१०८ व ५२२१६५

'अभीप्सा' अखिल भारत पत्रिका मराठी भाषामें पढ़िये।
संपर्क सूत्र — श्रीअरविन्द सोसायटी, २५-३०२ मोर्शी मार्ग,
अमरावती–४४४६०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'रोटरी क्लब' आदि अन्य स्थानोंपर भी कई वार्ताएं दीं।

शिमलामें डा. श्रीमती आस्तेर पटेलने 'शिक्षाके नये क्षितिज' तथा अन्य कई विषयोंपर भाषण दिये। भाषणोंके बाद प्रश्नोत्तर भी हुए।

इस प्रकार मुजफ्फरनगर, बेलोना (नागपुर), जोधपुर (राजस्थान), गोरी बिदानपुर (कर्नाटक) और गुण्टूर (आंध्र प्रदेश) में कार्यक्रम हुए और श्रीअरविन्दकी शिक्षाके संबंधमें भाषण।

विशेष सूचना :

१९७७ के लिये सदस्य कृपया अपनी सदस्यताका नवीकरण करा लें और अगर पिछले सालोंका चंदा पूरा न दिया हो तो कृपया उसे चुका दें। जो लोग वार्षिक नवीकरणसे बचना चाहते हों वे २५१.०० देकर आजीवन डोनर सदस्य बन सकते हैं और २५००.०० देकर डोनर कण्ट्रीब्यूटर सदस्य।

शिक्षक बंधुओंसे :

विश्वविद्यालय आयोग (यू. जी. सी.) ने अपने ८ सितंबरके परिपत्र, सं. एफ ११/८/७६ (एफ. आई. पी.) में सभी विश्वविद्यालयोंको यह सूचना दी है कि शिक्षा मंत्रालयके आदेशानुसार फरवरी ७७ में माताजीकी जन्म शताब्दी मनानेका निश्चय किया गया है। इस संबंधमें सम्मेलन, सेमिनार आदि किये जा सकते हैं। इनके लिये ३ विषय सुझाये गये हैं — १) माताजी और शिक्षा, २) माताजी और भारत, ३) माताजी और अतिमानसिक अभिव्यक्ति।

इन कार्यक्रमोंके लिये शिक्षा आयोगसे आर्थिक सहायता भी मिल सकती है। शिक्षक बंधु इस अवसरसे लाभ उठा सकते है।

नए प्रकाशन :

श्रीअरविन्द सर्कल — अंक सं. ३२ तथा श्रीअरविन्द वार्षिक सोसायटी १९७६। मूल्य ६.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70.
REGD. No. M. 8731

079508

Freedom does not come from outer circumstances but from inner liberation. Find your soul, unite with it, let it govern your life and you will be free

blessings

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar